कमाण्डर
करण
सक्सेना
telegram का
BOSS
SUBSCRIBE
कॉमिक्स ख़ज़ाना®
अमित खान
का बेहद तेजरफ्तार उपन्यास
7 तालों में बन्द मौत

7 तालों में बंद आदमी का बाहर निकलना आसान था-मगर उस 'कैदखाने' से बाहर निकलना आसान नहीं था।

आखिर कैसा था वो कैदखाना?

कमाण्डर की सारी हँसी एकाएक भक्क् से गायब हो गयी।

पनडुब्बी ने जोर से नीचे को गोता खाया था और फिर वह ऊपर की तरफ बड़े खतरनाक अंदाज में उछली।

"नहीं इ इ!" रचना मुखर्जी की चीख निकल गयी।

वह सीट से उछली और उसका सिर आगे नेवीगेटर से जाकर टकराया।

"य...यह आप क्या कर रहे हैं कमाण्डर!"

"मैं कुछ नहीं कर रहा—पनडुब्बी अपने आप उछली है।"

"अपने आप...।"

रचना मुखर्जी के अभी शब्द भी पूरे नहीं हुए थे कि पनडुब्बी फिर उसी भयावह अंदाज में उछल पड़ी, बल्कि इस बार जोर से नीचे गोता खाने के साथ-साथ वह फिरकनी की तरह घूमी तथा फिर ज़म्प लेकर बंदूक से छूटी गोली की तरह नीचे की तरफ भागी।

"कमाण्डर!" रचना मुखर्जी चिल्लाई—"हम कहाँ जा रहे हैं?"

कमाण्डर के हाथ जल्दी-जल्दी कंट्रोल पैनल के बटनों पर दौड़े।

"ओह माई गॉड!"

कमाण्डर करण सक्सेना के होश उड़ गये।

"क्या हुआ कमाण्डर?"

"पनडुब्बी मेरे काबू से बाहर हो चुकी है—कंट्रोल पैनल काम नहीं कर रहा।"

रचना मुखर्जी के भी होश उड़ गये।

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ जासूसी लेखक

अमित खान

का बेहद तेजरफ्तार उपन्यास

7 तालों में बन्द मौत

क्लोज-अप
कमाण्डर करण सक्सेना की धुंआधार जिन्दगी का एक धुंआधार कारनामा

एक संक्षिप्त परिचय

- वह भारत की सर्वोच्च जासूसी संस्था 'रॉ' के एजेण्ट हैं।
- वह काले रंग का लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हेट पहनते हैं।
- उन्हें .38 कैलीबर की कोल्ट रिवॉल्वर पसंद है—जिसे वह हमेशा अपने ओवरकोट की जेब में रखते हैं। जबकि दूसरी कोल्ट रिवॉल्वर अपने काले गोल क्लेंसी हेट की ग्लिप में फंसाकर रखते हैं जो—विपरीत परिस्थितियों में उनके बहुत काम आती है।
- कमाण्डर को आदत है कि वह रिवॉल्वर हाथ में आते ही उसे तीन बार अपनी उंगलियों के गिर्द घुमाकर उसे बैरल की तरफ से पकड़ते हैं—इसे 'जगलरी' करना कहा जाता है।
- कमाण्डर को 'डनहिल' सिगरेट पसंद है।
- सुंदर लड़कियों में उनकी विशेष दिलचस्पी है और देखा गया है कि सुंदर लड़कियाँ भी उनमें ख़ास रुचि रखती हैं।

अमित खान

का रहस्यमयी रचना संसार

कमाण्डर करण सक्सेना

वह समुद्र के नीचे बनी एक बिल्कुल नये तरह की दुनिया थी, जहाँ इस बार कमाण्डर करण सक्सेना इत्तेफाक से पहुँच गया।

7 तालों में बन्द मौत

अमित खान

पानी के खौफ को कागज़ के पन्नों पर महसूस कीजिये।

संभलकर बैठ जाइये—क्योंकि इस समय आपके हाथ में 'कलम के जादूगर' का उपन्यास है।

अमित खान—वह लेखक, जो आज न सिर्फ मुम्बई फिल्म इण्डस्ट्री में सक्रिय हैं बल्कि उनके उपन्यास हिन्दी के साथ-साथ 'अंग्रेजी' और 'मराठी' भाषा में भी प्रकाशित हो रहे हैं।

अब 'कमाण्डर करण सक्सेना' सीरीज एक नये अंदाज में आप तक पहुंचेगी।

प्रिय पाठको,

'7 तालों में बंद मौत' का कवर देखते ही आपको अंदाज हो गया होगा कि 'कमाण्डर करण सक्सेना' अपने नये अवतार में जन्म ले चुका है।

अब 'कमाण्डर करण सक्सेना' सीरीज के सभी उपन्यास आप को इसी कलेवर में मिलेंगे, जिन पर भरपूर मेहनत की गयी है। बदलते युग के हिसाब से उनमें भरपूर कांट-छांट की गयी है और उन्हें ज्यादा आधुनिक बनाया गया है।

यह 'कमाण्डर करण सक्सेना' की शौहरत का जहूरा ही है, जो कमाण्डर हर बार अपने अलग अंदाज में पाठकों से रू-ब-रू होता है। मुझे यह सोचकर आज जबरदस्त गर्व की अनुभूति होती है कि 'कमाण्डर करण सक्सेना' आज हिन्दी उपन्यास जगत में एक बड़ा मील का पत्थर बन चुका है और मेरे पास मुम्बई में आये दिन इस सीरीज पर 'फिल्म' और 'टी.वी. सीरियल' बनाने के ऑफर आते रहते हैं।

कमाण्डर करण सक्सेना—जो आज एक इतिहास है।

फिलहाल आप '7 तालों में बंद मौत' पढ़िये और आनंद लीजिये।

इस उपन्यास के संदर्भ में, मैं एक ही बात कहूँगा—यह कमाण्डर के पिछले कारनामों से बिल्कुल जुदा उपन्यास है। अलग है। इस उपन्यास में समुद्र का ऐसा विहंगमकारी वर्णन है, जो आपको एक अलग ही दुनिया में ले जायेगा। यह दुनिया जहाँ फेंटेसी से भरी है—वहीं बेहद रोमांचकारी भी। सबसे बड़ी बात यह है—इस सनसनीखेज़ मिशन में कमाण्डर करण सक्सेना के साथ रचना मुखर्जी भी शामिल हुई।

मेरे हाथ, मेरे हथियार

यह 'कमाण्डर करण सक्सेना' सीरीज़ का एक और अद्भुत उपन्यास है—जो जल्दी आपके हाथों तक पहुँचेगा।

फिलहाल मैं आपसे विदा लेता हूँ।

'7 तालों में बंद मौत' आपको कैसा लगा, इस सम्बन्ध में आप अपनी निष्पक्ष राय मुझे जरूर लिखकर भेजें।

आप मुझे 'ई-मेल' कर सकते हैं। मेरी 'वेबसाइट' पर जाकर लिख सकते हैं या फिर 'फेसबुक' पर मैसेज भी कर सकते हैं।

—अमित खान

मुम्बई—400104

ई-मेल : foramitkhan@gmail.com

वेबसाइट : www.amitkhan.com

फेसबुक : Author Amit Khan

कमाण्डर करण सक्सेना सीरीज़

7 तालों में बन्द मौत

अमित खान

वह 'रॉ' (रिसर्च एण्ड एनालाइसिस विंग) का हैडक्वार्टर था—जहां इस समय कमाण्डर करण सक्सेना मौजूद था और प्रॉजक्टर रूम के विशाल परदे पर हिन्द महासागर का अत्यन्त विहंगमकारी दृश्य देख रहा था।

चारों तरफ पानी-ही-पानी नज़र आ रहा था...उछालें भरता पानी!

लहरें जो समुद्र में इतनी ऊंची-ऊंची उठ रही थीं...जैसे आकाश छू लेना चाहती हों। कैमरा समुद्र में पैन होता हुआ इधर-उधर घूम रहा था...अलग-अलग जगह के शॉट दिखाई पड़ रहे थे।

"स्टॉप!" एकाएक फिल्म-रूम में गंगाधर महन्त की बहुत जोरदार आवाज गूंजी—"बस यहीं रोक दो।"

तुरन्त शॉट एक ही जगह रुक गया।

समुद्र का वह बहुत खास दृश्य था...जो इस समय परदे पर नज़र आ रहा था।

"करण!" गंगाधर महन्त ने फिर हवाना सिगार का कश लगाते हुए बहुत धीमी आवाज में कहा।

"यह चीफ!"

कमाण्डर करण सक्सेना भी वहीं गंगाधर महन्त के बराबर में कुर्सी पर पैठा था।

"हिन्द महासागर के इस स्थान को ध्यान से देखो करण!"

"मैं देख रहा हूं।" करण सक्सेना की निगाहें पूरी तरह परदे पर केन्द्रित होकर रह गयी थीं।

"यह जगह हिन्द महासागर के उत्तर-पूर्व में चालीस डिग्री अक्षांश पर स्थित है।" गंगाधर महन्त की आवाज प्रॉजक्टर रूम

में गूंज रही थी—"वह बो खतरनाक जगह है करण...यहां आज तक कई बड़ी दुर्घटनायें घटित हो चुकी हैं। तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा...खास इसी जगह पर कई बड़े-बड़े यात्रीवाहक जहाज डूब चुके हैं...नौकायें डूब चुकी हैं...स्टीमर डूब चुके हैं। उससे भी ज्यादा विस्मयपूर्ण बात ये है कि डूबने के बाद यहां से बहुत-से आदम भी गायब हो जाते हैं...जिनकी फिर लाशों का भी पता नहीं चलता। कई बार बड़ी-बड़ी नौकायें भी गायब हुईं...जिनका कुछ पता नहीं चला।"

"बड़े आश्चर्य की बात है!" करण सक्सेना हैरानी से परदे पर उछलती समुद्र की लहरें देखता हुआ बोला—"क्या खास इसी जगह यह दुर्घटनायें घटित होती हैं?"

"हां...इसी जगह यह दुर्घटनायें होती हैं। सबसे बड़ी बात ये है कि दुर्घटनाग्रस्त होने से पहले जहाज या स्टीमर में कोई खराबी भी नहीं होती...उसका इंजन वगैरह बिल्कुल ठीक काम कर रहा होता है। लेकिन फिर भी यह दुर्घटनायें हो जाती हैं। अभी तक भारत सरकार ने इन दुर्घटनाओं के ऊपर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था और इन्हें सिर्फ साधारण मामला समझकर नजरअंदाज किया जा रहा था—परन्तु एकाएक भारत सरकार का सारा ध्यान इस जगह पर केन्द्रित हो गया है और अब सरकार जल्द-से-जल्द यह जानने के लिये उत्सुक है कि आखिर इन दुर्घटनाओं के पीछे क्या वजह है? क्यों जहाज इसी जगह आकर डूबते हैं? और समुद्र में से जो आदमी गायब होते हैं...वो आखिर कहां जाते हैं?"

"भारत सरकार का सारा ध्यान जो एकाएक इस जगह पर आकर केन्द्रित हो गया है चीफ!" करण सक्सेना बोला—"क्या इसके पीछे कोई खास वजह है?"

"बहुत बड़ी खास वजह है माई सन!" गंगाधर महन्त ने हवाना सिगार का एक छोटा-सा कश और लगाया—"यूं समझो कि इन दुर्घटनाओं से हमारे देश का भविष्य आ जुड़ा है। तुम प्रोफेसर भट्ट के नाम से तो वाकिफ होओगे ही?"

"प्रोफेसर भट्ट...उनका नाम भला किसने नहीं सुना। परमाणु प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रोफेसर भट्ट एक बहुत बड़ा नाम हैं। वह हमारे देश के एकमात्र ऐसे न्यूक्लियर साइण्टिस्ट हैं...जो

भारत को अमरीका के समकक्ष लाकर खड़ा कर सकते हैं।"

"तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो करण!" गंगाधर महन्त गरमजोशी के साथ बोले—"दरअसल सारा मामला उन्हीं प्रोफेसर भट्ट से शुरू हुआ है।"

"कैसे?"

"आज से करीब बीस दिन पहले की बात है...प्रोफेसर भट्ट लंदन में हो रहे परमाणु प्रौद्योगिकी के एक विशाल सेमिनार में हिस्सा लेने वहां गये थे। अब तक उन्होंने परमाणु प्रौद्योगिकी पर जितनी भी रिसर्च की थी...वह सारी रिसर्च उनके पास एक कम्प्यूटर फ्लॉपी में मौजूद थी। फिर एक घटना घटी। सेमिनार तो बिल्कुल ठीक-ठाक निपट गया था। वहां प्रोफेसर भट्ट ने एक बड़ा प्रभावशाली भाषण भी पढ़ा और परमाणु प्रौद्योगिकी के बारे में ऐसी-ऐसी नवीन जानकारियां दुनिया के सामने रखीं...जिनकी न सिर्फ लंदन में, बल्कि सम्पूर्ण विज्ञान जगत में भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। सेमिनार के बाद प्रोफेसर भट्ट ने लंदन में ही कुछेक दिन और गुजारे तथा उसके बाद पानी के जहाज से वापस हिन्दुस्तान के लिये रवाना हुए। तभी वो वाकया पेश आया। लंदन से हिन्द महासागर तक वो जहाज बिल्कुल सही-सलामत आ गया। लेकिन फिर वो जहाज जैसे ही उत्तर-पूर्व के चालीस डिग्री अक्षांश पर स्थित समुद्र में इस मनहूस जगह पहुंचा... तभी घटना घट गयी।"

"क्या जहाज डूब गया?"

"हां।" गंगाधर महन्त गहरी सांस लेकर बोले—"जहाज डूब गया।"

"हुआ क्या था?"

"इसी बात का तो आश्चर्य है कि हुआ कुछ भी नहीं था। इंजन ठीक-ठाक काम कर रहा था। सारी मशीनरी ठीक थी। कण्ट्रोल-रूम से सम्पर्क बना हुआ था। नेवीगेटर भी बिल्कुल ठीक था। यानी हर चीज फिटफोर थी। लेकिन जहाज जैसे ही इस जगह की जद में आया...फौरन वह कण्ट्रोल से बाहर हो गया। इंजन ने काम करना बन्द कर दिया। जिस समय जहाज डूब रहा था...तो चालक दल ने इसकी सूचना कण्ट्रोल-रूम को भेजी। जहाज डूबने की खबर सुनकर कण्ट्रोल-रूम में भी बड़ा

जबरदस्त हड़कम्प मच गया। तत्काल चीख-चीखकर कण्ट्रोल-रूम से यह मैसेज रिले किया गया कि ज्यादा-से-ज्यादा यात्रियों को बचाया जाये। खास तौर पर प्रोफेसर भट्ट को बचाने का तो विशेष ही आग्रह किया गया। कोस्टल गार्ड्स और रेड क्रॉस के दस्ते-के-दस्ते इस दिशा में दौड़ पड़े। सबको इस बात की खास हिदायत दी गयी थी कि प्रोफेसर भट्ट को कुछ न होने पाये।''

''फिर क्या हुआ?''

''कोस्टल गार्ड्स ठीक वक्त पर डूबते हुए जहाज के करीब पहुंच गये।'' गंगाधर महन्त बोले—''और उन्होंने प्रोफेसर भट्ट को भी डूबते हुए जहाज से सकुशल निकालकर अपनी लाइफ बोट में बिठा लिया। इतना ही नहीं...उन कोस्टल गार्ड्स ने कण्ट्रोल-रूम को भी सूचित किया कि वह प्रोफेसर भट्ट को लेकर बहुत जल्द बंदरगाह पर पहुंच रहे हैं...कम-से-कम उनके लिये अब चिन्ता की कोई बात नहीं है।''

''और कम्प्यूटर फ्लॉपी?''

''कम्प्यूटर फ्लॉपी भी तब प्रोफेसर भट्ट के ही पास थी।''

''यानी तब तक प्रोफेसर भट्ट एकदम सकुशल थे?''

''बिल्कुल सकुशल थे। दूसरे कोस्टल गार्ड्स और रेड क्रॉस के मैम्बर जहां यात्रियों को बचाने में लग गये...वहीं दो कोस्टल गार्ड्स, प्रोफेसर भट्ट को लाइफ बोट में बिठाकर बंदरगाह की तरफ बढ़े। लाइफ बोट समुद्र में दौड़ी चली जा रही थी और उसका सम्पर्क निरंतर कण्ट्रोल-रूम से बना हुआ था। तभी एकाएक कण्ट्रोल सिस्टम पर घरघराहट की-सी आवाज सुनाई पड़ने लगी और बोट पर मौजूद कोस्टल गार्ड्स चीख-चीखकर बताने लगे...लाइफ बोट एकाएक उनके नियंत्रण से बाहर हो गयी है...वह अंजानी दिशा की तरफ दौड़ी चली जा रही है। कण्ट्रोल-रूम से खूब चीख-चीखकर कहा गया कि लाइफ बोट को कण्ट्रोल किया जाये। प्रोफेसर भट्ट की जान बचायी जाये। लेकिन तभी लाइफ बोट के अन्दर से कोस्टल गार्ड्स तथा प्रोफेसर भट्ट की हृदयविदारक चीखों की आवाज सुनाई पड़ी और फिर सब खत्म...सब! लाइफ बोट का सम्पर्क कण्ट्रोल-रूम से कट गया।''

''फिर?''

"फिर पता नहीं क्या हुआ?" गंगाधर महन्त शुष्क स्वर में बोले—"वह लाइफ बोट समुद्र में कहां गयी। उसे समुद्र निगल गया या आसमान खा गया। कोस्टल गार्ड्स और रेड क्रॉस के दस्तों ने प्रोफेसर भट्ट को हिन्द महासागर के चप्पे-चप्पे में खूब तलाश किया...लेकिन फिर प्रोफेसर भट्ट कहीं नहीं मिले। उनकी लाश भी नहीं मिली। अगर उनकी लाश ही मिल जाती...तो कम-से-कम भारत सरकार उन्हें मरा हुआ समझकर ही संतोष कर लेती।"

"और कम्प्यूटर फ्लॉपी?"

"फ्लॉपी भी गायब थी। जहां प्रोफेसर भट्ट थे...वहीं फ्लॉपी थी।"

"मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूं चीफ!" करण सक्सेना सामने परदे पर हिन्द महासागर के दृश्य को देखता हुआ बोला।

"पूछो।"

"प्रोफेसर भट्ट को पानी के जहाज से इण्डिया आने की क्या जरूरत थी...वह प्लेन से भी यहां आ सकते थे। अगर वह ऐसा करते...तो उनका कई घण्टे का मूल्यवान समय भी बच जाता और फिर शायद यह दुर्घटना भी न घटती हुई होती।"

"अच्छा प्रश्न है...लेकिन प्रोफेसर भट्ट के पानी के जहाज से आने के पीछे भी एक खास वजह थी।"

"क्या?"

"दरअसल, प्रोफेसर भट्ट पिछले पांच वर्ष से शिप से ही यात्रा करते थे और उन्होंने प्लेन से यात्रा करना बिल्कुल छोड़ दिया था। पांच वर्ष पहले उनका इकलौता लड़का आस्ट्रेलिया से आते समय प्लेन क्रेश में मारा गया था...बस तभी से प्लेन को देखते ही उनके ऊपर दहशत-सी सवार होती थी। वह प्लेन के मामले में फोबिया से ग्रस्त हो गये थे। उस दिन के बाद उन्होंने कभी प्लेन से सफर नहीं किया।"

"आई सी!" करण सक्सेना ने धीरे से अपनी गर्दन हिलाई।

वो जानता था...इस तरह की दुर्घटनाओं के बाद आम तौर पर ऐसा फोबिया लोगों को जकड़ लेता था।

वह कोई नई बात नहीं थी।

□□□
□□□

परदे पर अभी भी हिन्द महासागर का वही विहंगमकारी दृश्य चमक रहा था और लहरें आकाश छूती दिखाई पड़ रही थीं।

"एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न मेरे दिमाग को मथ रहा है चीफ!" करण सक्सेना अपलक हिन्द महासागर के उस हिस्से को देखता हुआ बोला।

"क्या?"

"आखिर ऐसी तमाम घटनायें इसी जगह पर क्यों घटित होती हैं?"

"यही सवाल तो सरकार के दिल-दिमाग को भी हिला रहा है।" गंगाधर महन्त हवाना सिगार का छोटा-सा कश लगाते हुए बोले—"क्योंकि कोई भी बुद्धिजीवी कम-से-कम इस बात को तो मानने के लिये हरगिज तैयार नहीं कि यह हिन्द महासागर का कोई शापग्रस्त क्षेत्र है और इसीलिये यहां इस तरह की घटनायें घटती हैं।"

"अगर यह शापग्रस्त क्षेत्र नहीं है।" करण सक्सेना बोला—"तो फिर यहां दुर्घटनायें क्यों होती हैं?"

"यही तो समझ नहीं आ रहा और फिलहाल यही पता लगाने के लिये भारत सरकार ने यह केस अब सी.आई.डी. डिपार्टमेण्ट को सौंपा है। हमने न सिर्फ इस गुत्थी को सुलझाकर दिखाना है कि हिन्द महासागर में खास इसी जगह दुर्घटनायें क्यों घटती हैं, बल्कि यह भी पता लगाना है कि समुद्र में डूबने के बाद प्रोफेसर भट्ट आखिर गये तो, गये कहां? कहीं ऐसा तो नहीं...समुद्र में नीचे-ही-नीचे से प्रोफेसर भट्ट का किसी दुश्मन ने अपहरण कर लिया हो? या फिर इसके पीछे कुछ और वजह है? करण...रहस्य की इन्हीं तमाम गुत्थियों को सुलझाने के लिये अब यह केस मैं तुम्हारे हवाले कर रहा हूं। अगर तुम इस केस से सम्बन्धित कोई सवाल पूछना चाहते हो...तो पूछ सकते हो।"

करण सक्सेना का दिमाग उस समय काफी तेज स्पीड से चल रहा था।

"नो सर!" करण सक्सेना काफी सोच-विचार कर बोला—"मुझे कोई सवाल नहीं पूछना।"

"फिर भी मेरी तुम्हें एक सलाह है।"

"क्या?"

"इस मिशन पर तुम्हारा अकेले रवाना होना मुनासिब नहीं करण!" गंगाधर महन्त बोले—"क्योंकि समुद्र की गहराइयों में जब तुम अकेले भटकोगे...तो जल्द ही बोर हो जाओगे। ऐसी परिस्थिति में तुम्हारा कोई सहयोगी अगर तुम्हारे साथ हो...तो ज्यादा मुनासिब रहेगा।"

"सहयोगी कौन?"

"मैं समझता हूं...इस मिशन के लिये रचना मुखर्जी सबसे बेहतर रहेगी। बल्कि इस सिलसिले में मैंने रचना मुखर्जी से बात भी कर ली है।"

"वो इस वक्त कहां है?"

"यहीं है।"

उसी पल रचना मुखर्जी मुस्कुराती हुई फिल्म-रूम में दाखिल हुई।

कमाण्डर करण सक्सेना भी उसे देखकर मुस्कुराया।

जो 'करण सक्सेना सीरीज' के पुराने पाठक हैं...वह रचना मुखर्जी से बाखूबी वाकिफ होंगे। रचना मुखर्जी के सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिये 'अमित खान' का पूर्व प्रकाशित उपन्यास "दोहरी चाल' अवश्य पढ़ें।

❑❑❑

❑❑❑

कमाण्डर करण सक्सेना को एक बार फिर बड़ा हंगामाई मिशन सौंपा गया था।

वह मिशन इसलिये और भी ज्यादा सनसनीखेज था...क्योंकि उस पूरे मिशन के दौरान करण सक्सेना ने समुद्र की खाक छाननी थी...उसकी गहराइयों में इधर-से-उधर घूमते हुए रहस्य की गुत्थी को सुलझाना था।

यानी...इस बार कमाण्डर करण सक्सेना ने जिन्दगी और मौत का खेल खेलना था।

करण सक्सेना...जिससे आप सब लोग परिचित ही हैं।

सी.आई.डी. का वह जांबाज जासूस...जिसके नाममात्र से ही आज दुनिया के बड़े-बड़े अपराधी और दुश्मन देश के जासूस

थर्रा उठते हैं। छः फुट से भी निकलता हुआ कद। गोरा-चिट्टा रंग। काला लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हैट पहनने का शौकीन। एक कोल्ट रिवॉल्वर अपने ओवरकोट की जेब में रखता है...जबकि दूसरी कोल्ट रिवॉल्वर अपने काले गोल क्लेंसी हैट की ग्लिप में। हैट की ग्लिप में मौजूद रिवॉल्वर किसी खतरनाक जगह फंसने पर उसके काफी काम आती है। वह अपने दिमाग की मांसपेशियों को जरा भी हरकत देता है...तो फौरन हैट की ग्लिप में फंसी रिवॉल्वर निकलकर खुद-ब-खुद उसके हाथ में आ जाती है।

गोली चलाने से पूर्व करण सक्सेना रिवॉल्वर के साथ 'जगलरी' भी करता है।

रिवॉल्वर उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमती है।

□□□
□□□

वह नौ सेना की 'सुपर 33' पनडुब्बी थी...जो इस समय हिन्द महासागर के अथाह जल को बेहद तूफानी स्पीड से चीरती हुई दौड़ी चली जा रही थी।

वह अत्याधुनिक उपकरणों से लैस पनडुब्बी थी और चारों तरफ से बिल्कुल बन्द थी...एकदम एयरटाइट!

रचना मुखर्जी करण सक्सेना के बराबर वाली सीट पर बैठी थी। चमड़े की बैल्ट उसके शरीर से बंधी हुई थी। जबकि करण सक्सेना पनडुब्बी के कण्ट्रोल पैनल को सम्भाले था। पनडुब्बी चूंकि अथाह पानी को चीरकर गहराई में उतर रही थी...इसलिये पनडुब्बी के ऊपर दबाव-सा बन गया था।

रचना मुखर्जी को ऐसा लग रहा था...जैसे उसे सांस लेने में भी कठिनाई हो रही हो।

"यह सिर्फ थोड़ी देर की बात है।" करण सक्सेना बोला—"जैसे ही पनडुब्बी समुद्र के तल में पहुंचेगी ओर सीधे-सीधे दौड़ने लगेगी...तो यह दबाव खुद-ब-खुद समाप्त हो जायेगा।"

"क्या हम इस समय उत्तर-पूर्व चालीस डिग्री अक्षांश की तरफ बढ़ रहे हैं?"

"हां...हम उसी तरफ बढ़ रहे हैं।" करण सक्सेना

बोला—"जिस जगह जहाज डूबा था।"

रचना मुखर्जी ने शीशे की खिड़की से बाहर की तरफ झांककर देखा...तो उसकी आंखों में आतंक की छाया दौड़ गयी।

दूर-दूर तक पानी-ही-पानी दिखाई पड़ रहा था।

समुद्री जीव दिखाई पड़ रहे थे।

भांति-भांति के जीव!

जिन्हें देखते ही शरीर में भय की सिहरन दौड़ती थी।

"लगता है...हम इस समय काफी नीचे आ चुके हैं कमाण्डर!"

"हां।" करण सक्सेना ने अपना काला गोल क्लेंसी हैट दुरुस्त किया और स्पीडोमीटर की तरफ देखा—"हम पांच किलोमीटर नीचे उतर आये हैं।"

"पांच किलोमीटर!"

"क्यों...इसमें आश्चर्य क्या है? अभी तो हम और काफी नीचे जायेंगे।"

"और भी नीचे!"

"हां। दरअसल हमारी मंजिल वो डूबा हुआ जहाज है...जिसमें प्रोफेसर भट्ट सफर कर रहे थे। हमारा मिशन उसी जहाज में खोजबीन करने के साथ शुरू होगा।"

"कमाण्डर...क्या आपको यह बात हैरान नहीं कर रही कि समुद्र में एक खास जगह पहुंचकर इस तरह की घटनायें घटती हैं?"

"बिना शक...यह हैरानी की बात है।" करण सक्सेना बोला—"लेकिन मैं कभी किसी बात को सोचकर इसलिये ज्यादा हैरान नहीं होता...क्योंकि यह दुनिया आश्चर्यजनक किंवदतियों से भरी हुई है और इस रहस्यमयी संसार में कुछ भी असम्भव नहीं।"

"आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं कमाण्डर!"

"फिर भी मैं एक बात जरूर मानता हूं माई हनी!"

"क्या?"

"हर बड़े-से-बड़े आश्चर्य के पीछे कोई-न-कोई वजह जरूर होती है।"

"इसके पीछे क्या वजह है?"

"यही पता लगाने के लिये तो हमें यह मिशन सौंपा गया है।"

रचना मुखर्जी के होंठों पर मुस्कान दौड़ गयी।

वो जानती थी...कमाण्डर के पास हमेशा हर सवाल का जवाब होता है।

वह समुद्र में अब काफी नीचे आ गये थे और थोड़े ही फासले पर बस तलहटी नजर आने लगी थी।

तभी पनडुब्बी को एक जोरदार झटका लगा और अभी तक वह पनडुब्बी जो समुद्र को चीरती हुई ऊपर से नीचे की तरफ दौड़ रही थी...वह अब सीधे-सीधे भागने लगी।

रचना मुखर्जी ने अपने ऊपर दबाव भी कुछ कम महसूस किया।

"हम अब किसी भी पल उस जहाज के नजदीक पहुंच सकते हैं।" करण सक्सेना बोला—"जो जहाज डूब गया था और जिसमें प्रोफेसर भट्ट सफर कर रहे थे।"

"क्या वो इसी तरफ है?"

"मैं स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कह सकता, मगर जहां तक मेरा अनुमान है...हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। आओ...अब मैं पनडुब्बी के भीतरी भाग से तुम्हारा परिचय करा दूं...क्योंकि तुमने आज तक जिन पनडुब्बियों में यात्रा की होगी, यह 'सुपर 33' पनडुब्बी उन सबसे बिल्कुल अलग है।" यह कहकर करण सक्सेना ने दो-तीन स्विच दबाये, कुछ स्विच घुमाये और फिर कैप्टन सीट से उठ खड़ा हुआ।

रचना मुखर्जी उसकी उस हरकत पर घबरा गयी।

"य...यह आप क्या कर रहे हैं कमाण्डर? पनडुब्बी को कण्ट्रोल कौन करेगा?"

करण सक्सेना मुस्कुराया।

"यह पनडुब्बी 'ऑटो कण्ट्रोल' है माई हनी! अब यह इसी स्पीड के साथ इसी दिशा में आगे बढ़ती रहेगी...जब तक हम खुद ही इसे न रोक दें या फिर इसकी दिशा न बदल दें।"

"यानी हमें कोई खतरा नहीं?"

"बिल्कुल नहीं।"

रचना मुखर्जी खुद को बेहद रोमांचित अनुभव करने लगी।

उस मिशन की शुरूआत ही उसे काफी रोंगटे खड़े कर देने वाली लग रही थी।

□□□

□□□

फिर कमाण्डर करण सक्सेना रचना मुखर्जी का हाथ पकड़ कर इंजन रूम से बाहर निकल आया और पनडुब्बी के उस भीतरी हिस्से में पहुंचा...जिसे वह केबिन कहता था।

वह केबिन दरअसल अच्छा-खासा एक बड़ा कमरा था और उसमें इंसानी जरूरत का लगभग हर सामान मौजूद था। लेटने के लिये जहां उसमें आरामदायक बिस्तर था...वहीं टी.वी. और फ्रीज जैसी वस्तुएं भी उसके अंदर थीं।

"यह पनडुब्बी अंतरिक्ष यान की तरह हवाबंद है।" करण सक्सेना ने बताया—"यानी इसमें जो ऑक्सीजन इस समय मौजूद है...वह खुद-ब-खुद साफ होती रहती है। हम इस पनडुब्बी में पूरे एक महीने तक बिना किसी कष्ट के रह सकते हैं...लेकिन हां एक महीने बाद इसका ऑक्सीजन बदलना जरूरी होगा।"

"जब मशीन से ऑक्सीजन साफ हो रही है।" रचना मुखर्जी ने पूछा—"तो फिर उसे बदलने की क्या जरूरत है?"

"मशीन से नहीं, बल्कि यह हवा कैमिकल से साफ हो रही है।" करण सक्सेना बोला—"जब हम सांस बाहर निकालते हैं...तो हवा में कार्बन डाइ-ऑक्साइड मिल जाती है। ये कैमिकल उसमें से कार्बन सोख लेते हैं और हवा फिर पहले की तरह इंसान के सांस लेने योग्य बन जाती है। धीरे-धीरे वह कैमिकल इतना कार्बन सोख लेते हैं कि फिर वह अतिरिक्त कार्बन सोखने लायक नहीं रहते और उसके बाद हवा गंदी होनी शुरू हो जाती है। यह पनडुब्बी चूंकि साधारण यात्रा के लिये बनायी गयी है...इसलिये इसके अन्दर हवा साफ करने वाली मशीन नहीं लगायी गयी।

"गोया हम इस पनडुब्बी के अंदर एक महीने तक बड़ी सहूलियत के साथ रह सकते हैं?"

"बिल्कुल। यहां फ्रीज में भी खाने-पीने का काफी सामान भरा हुआ है। इसके अलावा इस पनडुब्बी का यह केबिन सबसे

ज्यादा मजबूत धातु का बना हुआ है...अगर इसके ऊपर कोई बम भी फट पड़े, तब भी शायद इस केबिन का कुछ अहित न हो। समुद्र के पानी का जितना दबाव इस समय पनडुब्बी के ऊपर है...अभी यह पनडुब्बी उससे तीन गुना दबाव और सह सकती है।''

''ओह आश्चर्य!'' रचना मुखर्जी विस्मयपूर्वक बोली—''इसका मतलब यह एक मजबूत किले की तरह है...जिसमें कोई खतरा नहीं।''

''हां...यह मजबूत किले की तरह ही है।''

करण सक्सेना ने उस समय अपना चिर-परिचित काला लम्बा ओवरकोट पहना हुआ था...जिसमें वो काफी हैण्डसम दिखाई पड़ रहा था।

केबिन में दोनों तरफ गोल-मोल शीशे लगे हुए थे और उनके सामने परदे पड़े थे।

करण सक्सेना ने एक शीशे के ऊपर से परदा हटाकर कहा—''यह पोर्ट होल है...यहां से बाहर का दृश्य देखा जा सकता है।''

रचना मुखर्जी ने पोर्ट होल से बाहर झांका...तो उसे एक बार फिर चारों तरफ समुद्र-ही-समुद्र नजर आने लगा।

''फण्टास्टिक...सचमुच यह पनडुब्बी विज्ञान का एक जबरदस्त कारनामा है कमाण्डर!''

''इसमें कोई शक नहीं...यह विज्ञान का एक जबरदस्त कारनामा ही है।''

उसके बाद वह दोनों वापस कैप्टन वाली सीट पर आकर बैठ गये और करण सक्सेना ने पनडुब्बी का कण्ट्रोल अपने हाथ में ले लिया।

एक स्विच दबाने पर पनडुब्बी ने जोर से नीचे की तरफ गोता खाया और फिर वो पहले से भी ज्यादा द्रुतगति के साथ सामने की तरफ भागने लगी।

□□□

□□□

रचना मुखर्जी खुशी के मारे जोर से चिल्लायी।

''कमाण्डर...वह सामने की तरफ देखो, जहाज खड़ा है।''

करण सक्सेना ने भी कैप्टन सीट पर बैठे-बैठे अपने सामने की तरफ देखा और सामने की तरफ देखते ही उसकी आंखों में भी विलक्षण चमक उभर आयी।

सामने वो तीन मंजिला 'सिल्वर स्टार' नामक जहाज डूबा हुआ नजर आ रहा था...जिसमें प्रोफेसर भट्ट सफर कर रहे थे और जो कुछ दिन पहले ही दुर्घटनाग्रस्त हुआ था।

उस जहाज के चप्पे-चप्पे में पानी घुस गया था।

खिड़कियां टूट गयी थीं।

दरवाजे टूट गये थे।

ऊपर की तीसरी मंजिल भी आधे से ज्यादा टूटकर किसी झूमर की तरह आगे को झूल रही थी।

सबसे आश्चर्यजनक बात ये थी कि उस जहाज की बिजली व्यवस्था अभी भी नष्ट नहीं हुई थी और उसकी अलग-अलग मंजिलों पर कई जगह लाइटों का बहुत धूल-धूसिर-सा प्रकाश नजर आ रहा था।

जहाज को देखते ही करण सक्सेना ने कण्ट्रोल पैनल में लगा एक बटन दबाया।

तुरन्त पन्डुब्बी की रफ्तार बेहद धीमी हो गयी और अब वो सुस्त अंदाज में आगे की तरफ बढ़ने लगी।

जहाज के नजदीक पहुंचकर पन्डुब्बी रुकी।

"अब क्या करना है?"

"अब हमने पन्डुब्बी से निकलकर जहाज में दाखिल होना है।" करण सक्सेना बोला—"और वहां यह पता लगाने की कोशिश करनी है कि यह जहाज डूबा, तो क्यों डूबा?"

रचना मुखर्जी चौंकी।

"यानी हम पन्डुब्बी से बाहर समुद्र में निकलेंगे?"

"हां।"

"मगर यह मुमकिन कैसे होगा कमाण्डर...?"

"इसमें कुछ भी जटिल नहीं है। पन्डुब्बी में तैराकी का वो सारा सामान मौजूद है...जो बाहर समुद्र में हमारे लिये रक्षा कवच का काम करेगा।"

करण सक्सेना सीट छोड़कर खड़ा हो गया। फिर उसने वहीं इंजन रूम में बना एक छोटा-सा कप बोर्ड खोला और कप

बोर्ड खुलते ही रचना मुखर्जी को तैराकी का सारा सामान दिखाई पड़ गया।

कप बोर्ड में तैराकी की पोशाकों से लेकर ऑक्सीजन सिलेण्डर और ऑक्सीजन मास्क तक सब चीजें उपलब्ध थीं।

"गुड!" रचना मुखर्जी की आंखों में प्रशंसनीय भाव उभर आये।

फिर उन दोनों ने आनन-फानन तैराकी की पोशाकें पहनीं। पीठ पर ऑक्सीजन सिलेण्डर कसे और चेहरे पर मास्क लगाया...जिसने उनकी नाक और मुंह दोनों को कवर कर लिया। उसके बाद उन्होंने अपनी आंखों पर चश्मा भी चढ़ाया और फिर वह पनडुब्बी से बाहर समुद्र में कूद पड़े।

समुद्र का पानी बेहद ठण्डा था...जिसने थोड़ी देर के लिये उनके पूरे शरीर में कंपकंपी दौड़ा दी।

लेकिन उन्होंने परवाह न की और वह जल्दी-जल्दी पानी में हाथ-पैर मारते हुए जहाज की तरफ तैरते चले गये।

शीघ्र ही वह एक टूटे हुए दरवाजे में से गुजर कर जहाज के अंदर दाखिल हुए।

जहाज का अन्दर का दृश्य और भी ज्यादा विहंगमकारी था।

नीचे से ऊपर तक उसमें हर जगह पानी भरा हुआ था। जहाज का सामान इधर-से-उधर तैरा-तैरा फिर रहा था। कालीन-कुर्सियां... प्याले...गिलास...स्टेशनरी का सामान और अखबार के टुकड़े सब इधर-से-उधर तैर रहे थे। जहाज किसी छोटे-मोटे शहर की तरह विशालकाय था। उसमें सैकड़ों के हिसाब से कमरे थे। अंदर घुसते ही करण सक्सेना और रचना मुखर्जी को लॉबी दिखाई पड़ी और लॉबी में से ही उस तीन मंजिलें जहाज के सभी टैरेस भी दिखाई दिये। वहीं लॉबी में एक झाड़-फानूस भी लटक रहा था...जिसके कुछेक बल्ब अभी भी आश्चर्यजनक तौर पर जल रहे थे...जबकि कुछेक फ्यूज हो चुके थे।

वह दोनों सीधे शिप के इंजन रूम में पहुंचे।

इंजन रूम की उस समय जैसी हालत थी...उसे देखकर साफ पता चल रहा था कि कैप्टन ने जहाज को डूबने से बचाने की अपनी आखिरी सांस तक कोशिश की थी।

रेडियो सैट उखड़ा पड़ा था।

रिसीवर टूट गया था।

कैप्टन की सीट भी अपनी जगह से हिली हुई थी।

इसके अलावा मशीनरी के साथ जमकर छेड़खानी की गयी थी।

"ऐसा मालूम होता है।" करण सक्सेना इंजन रूम में पहुंचकर बोला—"कि कैप्टन जहाज को डूबते देखकर बौखला गया था और उसने हर कल-पुर्जे को झंझोड़कर यह पता लगाने की कोशिश की थी कि आखिर खराबी कहां हुई है।"

"क्या फिर वो खराबी के बारे में पता लगा सका कमाण्डर?"

"यह तो उसे ही बेहतर मालूम होगा।"

करण सक्सेना अब कण्ट्रोल बोर्ड पर झुक गया।

फिर वो स्पीड पाइप को चैक करने लगा। हालांकि झुंझलाहट में कैप्टन ने स्पीड पाइप उखाड़ डाला था...लेकिन फिर भी करण सक्सेना ने देखा कि उस पाइप की वायरें बिल्कुल ठीक थीं और उनके ऊपर इन्सुलेशन अभी भी चढ़ा हुआ था।

यही हालत नेवीगेटर और कण्ट्रोल पैनल की थी।

वह भी बिल्कुल ओके दिखाई पड़ रहा था।

करण सक्सेना लगभग आधा घण्टे तक इंजन रूम के एक-एक मशीनरी सिस्टम को बड़ी बारीकी से चैक करता रहा।

"कुछ पता चला कमाण्डर?" रचना मुखर्जी...जो मूकदर्शक बनी करण सक्सेना की एक-एक एक्टीविटी देख रही थी...काफी सस्पेंसफुल लहजे में बोली।

"नहीं।" करण सक्सेना कण्ट्रोल पैनल के साथ कुछ छेड़खानी करता हुआ बोला—"यहां तो सब कुछ ठीक दिखाई दे रहा है। ऐसा मालूम होता है...यह जहाज किसी मैकेनिकल प्रॉब्लम की वजह से नहीं डूबा।"

"फिर किस वजह से डूबा?"

"मालूम नहीं। मैं समझता हूं...इस मिशन के दौरान हमारे सामने कई बड़े-बड़े रहस्योद्घाटन होंगे, जो हमें चौंकायेंगे।"

रचना मुखर्जी अपनी आंखों का चश्मा ठीक करती हुई और पानी में ही हाथ-पैर मारती हुई करण सक्सेना के बिल्कुल बराबर

में पहुंची।

ऑक्सीजन सिलेण्डर का भार उस समय उसे काफी ज्यादा लग रहा था।

थोड़ी-बहुत देर तक वह दोनों इंजन रूम में और रहे...फिर जब वहां से उन्हें कोई मतलब की जानकारी प्राप्त होती न दिखाई पड़ी, तो वह बाहर निकल आये।

❑❑❑

❑❑❑

वह दोनों पानी के बीचो-बीच तैरते हुए वापस जहाज की लॉबी में पहुंचे।

"मैं समझता हूं।" करण सक्सेना के हाथ-पैर उस समय किसी बहुत कुशल तैराक की भांति हरकत कर रहे थे—"कि अभी जहाज में एक स्थान और ऐसा है...जहां से हमें अपने मिशन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है।"

"कौन-सा स्थान?"

"जहाज का वह कमरा...जिसमें प्रोफेसर भट्ट ठहरे हुए थे। सम्भव है...हमें उस कमरे के अन्दर से ही कुछ बरामद हो जाये।"

रचना मुखर्जी मुस्कुरायी।

"कमाण्डर...कहीं ऐसा तो नहीं कि आप उसके अंदर से प्रोफेसर की कम्प्यूटर फ्लॉपी बरामद होने की उम्मीद कर रहे हों?"

"ऐसा भी हो सकता है।"

"अगर आप ऐसा सोच रहे हैं तो यह आपकी बहुत बड़ी गलतफहमी है। मुझे तो नहीं लगता कि प्रोफेसर अपनी जिन्दगी की सारी मेहनत लाइफ बोट में भागने से पहले यहां छोड़ गये होंगे।"

"फिर भी हमारा क्या जाता है कि अगर हम एक बार जाकर उस कमरे की तलाशी ले लें।"

"क्या आपको मालूम है कि प्रोफेसर भट्ट यहां किस कमरे में ठहरे हुए थे?"

"हां...मालूम है। वो तीसरी मंजिल के रूम नम्बर पच्चीस

में ठहरे थे।"

"रूम नम्बर पच्चीस!"

"यस।"

वह दोनों अब तैरते हुए सीढ़ियों की तरफ बढ़ गये।

रचना मुखर्जी ने देखा...जहाज डूबने की वजह से कुछ सीढ़ियों की हालत काफी खस्ता हो गयी थी...लेकिन फिर भी वो अभी ऐसी स्थिति में नहीं पहुंची थीं कि तीसरी मंजिल तक न जाया जा सकता।

वह पानी को अपनी मजबूत बांहों से चीरते हुए और एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए ऊपर की तरफ बढ़ने लगे।

दूसरी मंजिल पर पहुंचकर उन्होंने देखा...सबसे ज्यादा तबाही वहां हुई थी। वहां कई कमरों की छतें गिर पड़ी थीं और कॉरीडोर का फर्श यूं फट गया था...जैसे कोई खाई बीच में से फट गयी हो।

वह काफी मेहनत-मशक्कत के बाद तीसरी मंजिल के रूम नम्बर पच्चीस में पहुंचे।

उस मंजिल के तो कई कमरे झूमर की तरह बाहर लटक रहे थे...लेकिन पच्चीस नम्बर कमरा, फिर भी अपनी जगह टिका था और सुरक्षित था।

उस रूम में घुसते ही करण सक्सेना को एक अटैची दिखाई पड़ गयी...जो जरूर प्रोफेसर भट्ट की थी।

करण सक्सेना ने सबसे पहले उस अटैची की ही तलाशी ली, परन्तु उसमें सिवाय कपड़ों और थोड़ी-बहुत किताबों के अलावा कुछ न था।

रचना मुखर्जी ने आगे बढ़कर वार्डरोब खोला...वहां प्रोफेसर भट्ट का हैंगर पर एक सूट टंग रहा था, जो उन्होंने जरूर आराम के क्षण गुजारने से पहले उतारकर टांगा था।

"अटैची में कुछ मिला?" रचना मुखर्जी सूट की तलाशी लेते हुए बोली।

"नहीं...और तुम्हें सूट के अंदर से?"

"नहीं। यहां भी कुछ नहीं है। सिर्फ कोट की जेब में एक रूमाल और टेलीफोन की छोटी-सी डायरी है।"

"बैड के बराबर में रखे कपाट को देखो।"

रचना मुखर्जी ऊपर से नीचे तक पानी से लबालब भरे कमरे में तैरती हुई कपाट की तरफ बढ़ी।

उसने कपाट की भी एक-एक चीज खंगाल डाली।

मगर कम्प्यूटर फ्लॉपी वहां से भी न मिली।

वह हताश मुद्रा में पच्चीस नम्बर कमरे से भी बाहर निकल आये।

फिर उन्होंने जहाज का कार्ड रूम, सेण्टर हॉल, क्लॉक रूम हर जगह खंगाल डाली, परन्तु उन दोनों को कहीं से भी ऐसी कोई वस्तु न मिली...जो उस मिशन में उनकी थोड़ी-बहुत मददगार साबित होती या फिर उससे यह पता चलता...वह जहाज डूबा क्यों है?

'सिल्वर स्टार' नामक उस जहाज में कई घण्टे गुजारने के बाद वह अन्ततः बाहर निकल आये।

उस समय वह दोनों ही निराश थे।

खास तौर पर कमाण्डर करण सक्सेना के चेहरे पर हताशा के चिन्ह थोड़े ज्यादा देखे जा सकते थे।

□□□
□□□

वह अत्याधुनिक पनडुब्बी समुद्र के गर्त में एक बार फिर पानी को चीर कर विद्युत् गति से भागी जा रही थी।

अनुमान के आधार पर उस पनडुब्बी की दिशा वही थी... जिधर वो लाइफ बोट गयी थी, जिसमें प्रोफेसर भट्ट सवार थे।

करण सक्सेना ने पहले की तरह कैप्टन सीट सम्भाली हुई थी और उसके शरीर पर उस समय तैराकी की पोशाक नहीं थी। वह बड़ी कुशलता से पनडुब्बी चला रहा था।

उसके बराबर वाली सीट पर रचना मुखर्जी बैठी थी। उसके हाथ में दूरबीन थी और वह हिन्द महासागर का बड़ी बारीकी से अवलोकन कर रही थी।

दोनों का तैराकी का सामान उतरा हुआ वहीं एक कोने में पड़ा था।

"मुझे तो नहीं लगता कमाण्डर!" रचना मुखर्जी दूरबीन से समुद्र की एक-एक जगह देखते हुए बोली—"कि हम इस तरह

प्रोफेसर भट्ट का कुछ पता लगा पायेंगे। यह तो अंधेरे में तीर मारने वाली बात है।''

''इस बात को मैं भी जानता हूं।'' करण सक्सेना की उंगलियां निरंतर कण्ट्रोल पैनल के बटनों पर घूम रही थीं—''लेकिन जब एक जासूस के सामने कोई रास्ता न हो...तो अंधेरे में तीर मारना भी एक बामाकूल वजह ही होती है। क्योंकि कभी-कभी अंधेरे में चलाया गया तीर भी एकदम सही, करेक्ट निशाने पर जाकर लगता है।''

रचना मुखर्जी के चेहरे पर प्रशंसनीय भाव उभर आये।

''सचमुच आप काफी हिम्मतवर आदमी हैं कमाण्डर!''

''क्यों?''

''क्योंकि विपरीत-से-विपरीत परिस्थिति में भी आप कोई-न-कोई बामाकूल वजह ढूंढ ही निकालते हैं।''

करण सक्सेना बहुत बुलंद आवाज में खिलखिलाकर हंसा।

लेकिन एकाएक उसकी सारी हंसी भक्क से गायब हो गयी थी।

वजह...कण्ट्रोल पैनल का बिना कोई बटन दबाये हुए उसकी पनडुब्बी ने जोर से नीचे को गोता खाया था और फिर वह ऊपर की तरफ बड़े खतरनाक अंदाज में उछली।

''नहीं इ इ!''

रचना मुखर्जी की चीख निकल गयी।

वह सीट से उछली और उसका सिर आगे नेवीगेटर से जाकर टकराया।

''य...यह आप क्या कर रहे हैं कमाण्डर!'' रचना मुखर्जी बौखलाते हुए बोली।

''मैं कुछ नहीं कर रहा...पनडुब्बी अपने आप उछली है।''

''अपने आप...!''

रचना मुखर्जी के अभी शब्द भी पूरे नहीं हुए थे कि पनडुब्बी फिर उसी अंदाज में उछल पड़ी।

बल्कि इस बार जोर से नीचे गोता खाने के साथ-साथ वह फिरकिनी की तरह चारों तरफ घूमी तथा फिर जम्प लेकर बंदूक से छूटी गोली की तरह और नीचे की तरफ भागी।

''कमाण्डर!'' रचना मुखर्जी चिल्लाई—''हम कहां जा रहे

हैं?''

करण सक्सेना के हाथ जल्दी-जल्दी कण्ट्रोल पैनल के बटनों पर दौड़े।

"ओह माई गॉड!"

करण सक्सेना के छक्के छूट पड़े।

"क्या हुआ कमाण्डर?"

"पनडुब्बी काबू से बाहर हो चुकी है...कण्ट्रोल पैनल काम नहीं कर रहा।"

"लेकिन यह कैसे हुआ?"

"मालूम नहीं।"

रचना मुखर्जी के भी होश उड़ गये।

उसके शरीर का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।

तभी पनडुब्बी ने फिर जोरदार ढंग से जम्प ली और वह पहले की तरह चक्कर काटकर ऊपर को उछली।

करण सक्सेना और रचना मुखर्जी चीखते हुए इंजन रूम की दीवारों में जाकर टकराये।

"कमाण्डर...जल्दी से कण्ट्रोल रूम से सम्पर्क स्थापित करो...उनसे मदद मांगो।"

करण सक्सेना किसी तरह उछलती हुई उस पनडुब्बी में चीजों को पकड़ता हुआ पैनल के पास पहुंचा और उसने हेडफोन उठाकर कान से लगाया तथा माइक हाथ में पकड़ा।

"हैलो...हैलो!"

फिर वह कण्ट्रोल रूम से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश में जुट गया।

जोर-जोर से प्लंजर दबाने लगा।

मगर दूसरी तरफ निस्तब्धता छाई रही।

गहरी खामोशी।

"ओह गॉड...यह भी खराब हो गया है।"

रिसीवर सेट के खराब होने की बात सुनकर रचना मुखर्जी और चिन्तित हो उठी।

"अब क्या करें?"

"सबसे पहले इस इंजन रूम से निकलकर पिछले केबिन में पहुंचो...फिलहाल हमारे लिये वही सबसे ज्यादा सुरक्षित स्थान

है।''

वह दोनों तुरन्त दौड़ते हुए पिछले केबिन में पहुंचे। इतना ही नहीं...केबिन में पहुंचते ही उन्होंने इंजन रूम और केबिन को आपस में जोड़ने वाला जो दरवाजा था...उसे अच्छी तरह कसकर वंद कर लिया और उसके वोल्ट कस लिये।

''मुझे तो लगता है।'' रचना मुखर्जी आतंकित मुद्रा में बोली--''हमारे साथ अव कुछ अनिष्ट होने वाला है।''

खुद करण सक्सेना को भी यही महसूस हो रहा था।

और!

जैसा वह दोनों सोच रहे थे...वैसा ही हुआ।

अनिष्ट हो गया।

अभी तक वह पनडुब्बी जो सही-सलामत थी...एकाएक उसके बाहर कहीं बड़ा जबरदस्त धमाका हुआ। धमाका इतना भूकम्पकारी था कि उसकी आवाजें उन्हें एयरटाइट केबिन में अंदर तक सुनाई पड़ीं और फिर पनडुब्बी इतना ऊपर उछली...जितना अभी तक नहीं उछली थी।

उन दोनों के सिर अलग-अलग पोर्ट होल से जाकर टकराये।

वह चीखे।

उसके बाद उन दोनों में से किसी को होश नहीं रहा कि क्या हुआ।

□□□
□□□

कुछ देर बाद कमाण्डर करण सक्सेना को होश आया।

उसने एक बार आंखें खोलकर देखा और फिर आंखें बन्द कर लीं।

उसे ऐसा लगा...जैसे वह कोई भयानक सपना देख रहा हो।

फिर एकाएक उसे ऐसा लगा...जैसे वह किश्ती में सवार हो और लहरों पर डोल रहा हो।

उसने दोवारा आंखें खोल दीं। कुछ सेकण्ड्स तक वह सोचता रहा कि वो कहां है? फिर अचानक उसको याद आ गया कि वह पनडुब्बी में था।

हिन्द महासागर की गहराइयों में था।

वह जल्दी से उठकर बैठ गया। उसके सिर में सख्त धमक थी और माथे पर बड़ा-सा गूमड़ था।

उसने रचना मुखर्जी की तरफ देखा।

रचना मुखर्जी भी वहीं पोर्ट होल के नीचे फर्श पर हाथ-पैर फैलाये पड़ी थी। उसका सिर एक तरफ झुका हुआ था और खून की एक पतली-सी लकीर उसके मुंह से निकलकर गर्दन तक आ गयी थी।

करण सक्सेना का कलेजा मुंह को आ गया।

कहीं उसे कुछ हो तो नहीं गया...सबसे पहले यही एक बात उसके दिमाग पर हथौड़े की तरह पड़ी।

"रचना!" उसने घबराकर उसे आवाज दी—"रचना!"

रचना मुखर्जी पर कोई प्रतिक्रिया न हुई...वो पहले की तरह अचेत पड़ी रही।

कमाण्डर करण सक्सेना ने तेजी के साथ रचना मुखर्जी की नब्ज पकड़कर देखी।

थैंक गॉड!

करण सक्सेना के चेहरे पर राहत के निशान उभरे।

शुक्र था...नब्ज चल रही थी।

इसके बाद करण सक्सेना ने रचना मुखर्जी का शरीर सीधा करके उसके सिर को टटोला। रचना मुखर्जी के सिर के पिछले भाग में एक काफी बड़ा गूमड़ था। वो समझ गया कि रचना मुखर्जी का सिर पोर्ट होल से नीचे वाली दीवार से जाकर टकराया है तथा फिर मुंह पथरीले फर्श से।

उस समय वह अपना कष्ट भूल गया था। उसे अभी तक पता नहीं था कि क्या दुर्घटना हुई थी?

उसने पोर्ट होल से बाहर झांककर देखा...तो पता चला कि पनडुब्बी उस समय समुद्र के गर्त में नहीं थी, बल्कि वो पानी की सतह पर किश्ती की तरह तैर रही थी।

करण सक्सेना को पोर्ट होल में से ही नीला आसमान भी दिखाई पड़ा।

रचना मुखर्जी सुरक्षित थी।

वो इत्मीनान के साथ उसके पास से उठ गया और फिर

केविन में उस जगह पहुंचा...जहां एक दरवाजा बना हुआ था और वो दरवाजा इंजन रूम में खुलता था।

उसने वह दरवाजा खोलकर देखा।

और बस उस दरवाजे को खोलकर एक नजर देखना ही काफी था। किसी प्रचण्ड धमाके के कारण उस पूरे इंजन रूम की धज्जियां बिखर गयी थीं।

अब वहां कुछ बाकी नहीं था।

सब कुछ नष्ट हो चुका था।

कमाण्डर करण सक्सेना कुछ देर बड़ी त्रस्त नजरों से वह दृश्य देखता रहा। उसे मालूम था...कभी-कभी समुद्र की लहरें ऐसा आंदोलित रूप धारण कर लेती हैं...जिसकी वजह से उस तरह की घटनायें घटती हैं। इंजन खराब होकर किसी बम की तरह फट पड़ते हैं।

करण सक्सेना के सारे शरीर में खौफ की हल्की-सी लहर दौड़ गयी।

अगर कहीं इंजन में विस्फोट के समय वह दोनों उसी इंजन रूम में होते...तो उनके शरीर की धज्जियां तक नहीं मिलनी थीं।

वह बस किस्मत की बदौलत ही बाल-बाल बचे थे।

करण सक्सेना ने दरवाजा बन्द कर दिया और फिर वो वापस पलटकर रचना मुखर्जी के पास पहुंचा। उसके बाद वो रचना मुखर्जी को होश में लाने का प्रयत्न करने लगा।

थर्मस से पानी लेकर उसने रचना मुखर्जी के मुंह पर छींटे दिये। थोड़े प्रयत्नों के बाद ही रचना मुखर्जी ने अपनी आंखें खोल दीं।

पहले वो बड़ी सूनी-सूनी निगाहों से करण सक्सेना को घूरती रही।

करण सक्सेना भी कुछ न बोला।

"क्या हुआ था?" फिर वो लेटे-लेटे बड़ी मरी हुई आवाज में बोली।

"कुछ नहीं हुआ था।" करण सक्सेना ने रचना मुखर्जी का हाथ अपने हाथ में लेकर बड़े अनुरागपूर्ण ढंग से कहा—"जो होना था...वह हो गया है। मुझे सबसे बड़ी खुशी इस बात

की है कि हम दोनों जीवित हैं। क्या तुम कोई परेशानी महसूस कर रही हो?"

"बस सिर में थोड़ा दर्द है।"

"मुझे शर्मिन्दगी है रचना...और मुझे दुःख है। आखिर तुम मेरे कारण ही तो इस मुसीबत में फंसी हो।"

रचना मुखर्जी ने उसके कंधे का सहारा लेकर उठकर बैठते हुए कहा—"यह आप कैसी बात कर रहे हैं कमाण्डर, आखिर आपने जानबूझकर तो कुछ नहीं किया। वैसे भी हम जासूसों की जिन्दगी में इस तरह के हादसे तो पेश आते ही रहते हैं। मुझे केवल इतना बताओ...क्या दुर्घटना घटित हुई है?"

"इंजन रूम की धज्जियां बिखर गयी हैं। शुक्र है...हम धमाके के वक्त इस बख्तरबंद केबिन में थे। वरना इस वक्त हमारी लाशें ही हिन्द महासागर में पड़ी होतीं।"

"यानी इंजन रूम तबाह हो गया?" रचना मुखर्जी के चेहरे पर खौफ के निशान उभरे।

"यस!"

"हे भगवान...फिर अब क्या होगा?" रचना मुखर्जी ने अपने सिर के पिछले भाग को भी स्पर्श करके देखा।

तुरन्त उसके हाथ में गूमड़ आ गया।

इसके अलावा उसमें हल्की-सी दुःखन भी हुई।

"अभी मैं कुछ नहीं कह सकता कि क्या होगा?" करण सक्सेना बोला—"फिलहाल मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि हम पूरी तरह सुरक्षित हैं। अगर हवा इसी प्रकार हमारे अनुकूल चलती रही...तो हम इसी केबिन में किनारे तक पहुंच सकते हैं।"

"यानी यह केबिन इस वक्त किश्ती का काम कर रहा है।"

"बिल्कुल।"

रचना मुखर्जी ने भी खड़े होकर पोर्ट होल से बाहर का दृश्य देखा।

तुरन्त दूर-दूर तक फैला हिन्द महासागर और उसकी उफनती लहरें रचना मुखर्जी की आंखों के सामने घूम गयीं।

"यह तो हम बुरी तरह फंस चुके हैं?"

"हां...फंस तो चुके हैं।"

"क्या इस पनडुब्बी में एमरजेन्सी के लिये कोई रेडियो सिस्टम नहीं था।" रचना मुखर्जी कुछ विचारकर बोली—"अगर ऐसा कोई रेडियो सिस्टम हो...तो आप उसके द्वारा खतरे का सिग्नल देकर मदद मंगा सकते हो।"

"गुड आइडिया!" करण सक्सेना की आंखें चमक उठीं—"यह तो मैं भूल ही गया था। ऐसा रेडियो सिस्टम तो इसी केबिन के अन्दर मौजूद है।"

करण सक्सेना बड़ी तेजी के साथ टेलीविजन सैट की तरफ बढ़ गया।

टेलीविजन सैट से ऊपर की तरफ दीवार में एक बहुत छोटी-सी आलमारी बनी हुई थी...जिसमें स्लाइडिंग डोर फिट था। करण सक्सेना ने उसका स्लाइडिंग डोर खोला...तो रेडियो सिस्टम चमक उठा।

कमाण्डर करण सक्सेना ने काफी तेजी के साथ रेडियो रिसीवर उठाकर स्विच ऑन कर दिया।

लेकिन रेडियो से कोई आवाज न निकली...रेडियो सैट बिल्कुल मुर्दा हालत में था।

कुछ देर करण सक्सेना स्विचों को घुमाता रहा। फिर उसने पेचकस से रेडियो खोलकर देखा।

मालूम हुआ...दुर्घटना में रेडियो के दो वाल्व टूट गये थे और अब रेडियो से काम नहीं लिया जा सकता था।

करण सक्सेना निराश मुद्रा में रचना मुखर्जी की तरफ घूम गया।

"क्या हुआ?"

"सॉरी...दुर्घटना में रेडियो भी बेकार हो चुका है।"

रचना मुखर्जी के चेहरे पर उम्मीद की जो हल्की-सी किरण चमकी थी...वह भी वापस बुझ गयी।

"अब क्या होगा?"

"अब तो केवल एक ही सूरत है माई हनी!"

"क्या?"

"हम किसी तरह किनारे तक पहुंचने की कोशिश करें और यह उम्मीद रखें कि ऊपर से गुजरता हुआ कोई प्लेन हमारा लहरों पर तैरता केबिन देखकर निकटवर्ती एयरपोर्ट को सूचना दे दे।

क्योंकि ऊपर से जो कोई भी इस केबिन को तैरता देखेगा...उसे आश्चर्य जरूर होगा।"

"ऑल राइट कमाण्डर!" रचना मुखर्जी पूरी गरमजोशी के साथ बोली—"फिर तो जो कुछ हम कर सकते हैं...वह हमें करना चाहिये।"

"राइट! तुम सचमुच बहुत बहादुर लड़की हो डियर!" करण सक्सेना ने भी उसे प्रशंसनीय नेत्रों से देखा—"तुम्हारे कारण मेरी हिम्मत भी बहुत बढ़ गयी है। फिलहाल हमें घबराने की जरूरत नहीं। इस केबिन में तीन-चार दिन का खाने का सामान भी है और पानी की टंकी भी है। इसके अलावा फर्स्ट-एड बॉक्स भी वह सामने रखा है। तुम पहले अपने जख्मों पर कुछ दवाई लगा लो। तब तक मैं जरा बाहर निकलकर देखता हूं कि किनारा किस तरफ है।"

"ओ.के. कमाण्डर! आप मेरी बिल्कुल फिक्र न करें...आप बस किसी तरह किनारे तक पहुंचने की कोशिश करें।"

"ठीक है।'

कमाण्डर करण सक्सेना रचना मुखर्जी को केबिन में अकेला छोड़कर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

अगले ही पल वो केबिन से बाहर निकला और फिर उछलकर केबिन की छत पर चढ़ गया।

छत पर चढ़ते ही हवा का एक तेज झोंका उसके शरीर से आकर टकराया।

उस समय हवा काफी तेज चल रही थी और केबिन किसी किश्ती की भांति डोलता हुआ एक दिशा में बह रहा था।

छत पर चढ़कर करण सक्सेना ने ध्यान से देखा कि जिस तरफ की हवा चल रही थी...उसी तरफ थोड़ा फासले पर खुश्की थी।

खुश्की को देखकर करण सक्सेना की आंखों में चमक कौंध उठी।

उसके चेहरे पर उम्मीद के भाव पैदा हुए।

"कमाण्डर!" तभी रचना मुखर्जी के जोर-जोर से पुकारने की आवाज उसके कानों में पड़ी—"कमाण्डर!"

करण सक्सेना ने नीचे की तरफ झांककर देखा।
रचना मुखर्जी दरवाजे में से गर्दन निकालकर ऊपर की तरफ ही देख रही थी।
"यस माई हनी...क्या बात है?"
"आप कहां है?"
"मैं यहां छत पर हूं और तुम्हारे लिये एक बहुत बड़ी खुशखबरी है।"
"क्या?"
"भाग्य हमारा साथ दे रहा है डियर! मुझे नजदीक में ही खुश्की नजर आ रही है और सबसे बड़ी बात ये है...हवा भी उसी तरफ को चल रही है।"
"क्या आप सच कह रहे हैं कमाण्डर?" रचना मुखर्जी खुशी से चिल्लाई।
"यस...मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं।"
"ओह माई गॉड! इसका मतलब हम जल्द ही तट पर पहुंच जायेंगे।"
"अगर हवा इसी वेग से चलती रही...तो हमें तट तक पहुंचने में मुश्किल से चार-पांच घण्टे लगेंगे।"
"सिर्फ चार-पांच घण्टे!"
"हां। तट कोई बहुत ज्यादा दूर नहीं है...मुझे यहां केबिन की छत से वो साफ नजर आ रहा है।"
भाग्य सचमुच उनका बहुत साथ दे रहा था।
थोड़ी देर बाद ही हवा और भी तेज हो गयी तथा लहरों पर खेलता केबिन पहले से भी ज्यादा तेज गति के साथ तट की तरफ बढ़ने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

वह दोनों मुश्किल से तीन घण्टे में ही खुश्की के निकट पहुंच गये।
लेनि जब वो खुश्की के और निकट पहुंचे...तो उनको पता चला कि वह किनारा नहीं था, बल्कि समुद्र के बीच में एक छोटा-सा टापू था।
दरअसल हिन्द महासागर का वह समुद्री क्षेत्र कभी मरुस्थल

था और वहां मोगा तथा पीगो नाम के दो बहुत छोटे-छोटे कबीले आबाद थे...लेकिन कुछ वर्ष पहले वो मरुस्थल हिन्द महासागर में डूबकर तबाह हो गया था और अब वहां सिर्फ समुद्र-ही-समुद्र नजर आता था। बस मरुस्थल की वही थोड़ी-सी जगह डूबने से बच गयी थी और इसलिये बच गयी थी...क्योंकि वो जगह मरुस्थल में जरा ऊंची थी।

करण सक्सेना ने देखा...उस निर्जन टापू पर कुछ पेड़ भी थे और कुछ झोंपड़ियां भी थीं।

रचना मुखर्जी भी अब कमाण्डर करण सक्सेना के पास वहीं केबिन की छत पर आ गयी थी।

"अरे!" वह दूर से झोंपड़ियों को देखकर चौंकी—"यहां तो कुछ झोंपड़ियां भी बनी हुई हैं कमाण्डर! हो सकता है...इन झोंपड़ियों में कुछ लोग भी रहते हों।"

"नहीं।" करण सक्सेना बोला—"जहां तक मैं समझता हूं...यह झोंपड़ियां खाली हैं।"

"खाली झोंपड़ियां!"

"हां, क्योंकि पहले कभी यहां गांव होगा, परन्तु जब पानी आना शुरू हुआ होगा...तो लोग गांव खाली करके सुरक्षित जगहों पर चले गये होंगे। जहां तक मुझे जानकारी है...इस मरुस्थल को समुद्र का हिस्सा बने तकरीबन तीन वर्ष हो चुके हैं। अगर लोग इन झोंपड़ियों में होते...तो वह तीन वर्ष तक इस बेहद निर्जन और पानी से घिरे टापू पर जीवित नहीं रह सकते थे। मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा हूं?"

"नहीं कमाण्डर...आपका अनुमान बिल्कुल ठीक है।"

टापू के नजदीक पहुंचकर केबिन के बहने की रफ्तार बहुत धीमी हो गयी थी।

अब वो बस धीरे-धीरे ही आगे को सरक रहा था।

"इसकी गति तो एकाएक बहुत मन्द पड़ गयी है कमाण्डर!" रचना मुखर्जी बोली।

"हां।" करण सक्सेना के चेहरे पर भी चिन्ता के भाव झलके—"अब बस एक ही तरीका हमारे पास है।"

"क्या?"

"हमें केबिन को किश्ती की तरह खेकर किनारे पर ले

जाना होगा।"

"लेकिन कैसे? हमारे पास केबिन को खेने के लिये पतवार कहां है!"

"उसका भी एक तरीका मेरे पास है।"

"क्या?"

"केबिन में नायलोन की एक मजबूत डोरी का काफी बड़ा लच्छा मौजूद है...मैं वो लच्छा लाता हूं। डोरी का एक सिरा केबिन में बांधकर मैं तैरते हुए उसे खेने का प्रयत्न करूंगा।"

रचना मुखर्जी की आंखें पुनः चमक उठीं।

कमाण्डर करण सक्सेना का हर विचार बेहद नायाब होता था।

बेहद अद्‌भुत!

करण सक्सेना अब छत से वापस नीचे केबिन में उत्तर गया।

शीघ्र ही जब वो पुनः छत पर लौटा...तो उसके हाथ में नायलोन की डोरी का वही काफी बड़ा लच्छा था।

डोरी की जहां लम्बाई खूब थी...वहीं वो मजबूत भी पूरी थी।

"अब इस डोरी को बांधोगे कहां?"

"वो भी देखती जाओ।"

करण सक्सेना की निगाह केबिन के एक टूटे हुए पाइप पर जाकर ठहर गयी। फिर उसने डोरी का एक सिरा उस टूटे हुए पाइप के साथ कसकर बांध दिया और फिर दूसरा सिरा पकड़कर वो पानी में कूद पड़ा।

पानी में उतरने के बाद उसको पता चला कि उस जगह पानी केवल सीने तक आता था।

यानी वहां खतरे जैसी कोई बात नहीं थी।

कोई डर नहीं था।

करण सक्सेना नायलोन की मजबूत डोरी का सिरा पकड़कर तट की तरफ चल दिया...शीघ्र ही वो तट पर पहुंच गया था।

तट पर रेत-ही-रेत थी।

ठण्डी रेत!

तट पर पहुंचते ही करण सक्सेना ने डोरी को अपने दोनों

हाथों के गिर्द कसकर लपेटा और फिर पनडुब्बी के भारी-भरकम केबिन को तट की तरफ खींच लिया।

केबिन बिल्कुल तट के साथ जा लगा।

उसके बाद करण सक्सेना ने डोरी वहीं एक पेड़ के कसकर बांध दी...ताकि केबिन अपने स्थान से थोड़ा-बहुत इधर-उधर न हिल सके।

"रचना!" फिर करण सक्सेना जोर से बोला—"अब .. मेरे पास आ सकती हो।"

रचना मुखर्जी किनारे की रेत पर कूद गयी।

वो धम्म् से नीचे गिरी...लेकिन गिरते ही वापस बड़ी फु के साथ उठ भी खड़ी हुई।

वह टापू कठिनता से सौ गज लम्बा और तकरीबन उत ही चौड़ा था। किसी जमाने में यह जगह मरुस्थल के बीच ए हरा-भरा प्रदेश होगी, क्योंकि झोंपड़ियों के बीच दस-पन्द्रह प भी थे।

"कमाण्डर!" रचना मुखर्जी अपने बिखरे बालों को ठी करते हुए बोली—"अब मुझे इस एडवेंचर में जरूरत से ज्याद आनन्द आ रहा है।'

"रियली?"

"रियली! आओ अब हम चलकर इन झोंपड़ियों को देख हैं। मुमकिन है!" फिर वो हंसकर बोली—"कि हमें इन झोंपड़ि में कोई खजाना ही मिल जाये।"

करण सक्सेना भी हंसा।

"खजाना तो क्या मिलेगा डियर!" करण सक्सेन बोला—"हां, कुछ टूटे-फूटे वर्तन और चारपाइयां जरूर मिल सकती हैं।"

"चलो...उन्हीं को चलकर देखें।"

"चलो।"

वह दोनों झोंपड़ियों की तरफ बढ़ गये।

उस समय वह दोनों बहुत खुश और उत्साह से भरे हुए थे।

उस क्षण वह कम-से-कम इस बात को तो बिल्कुल भूल चुके थे कि वह हिन्द महासागर जैसे अत्यन्त विशालकाय समुद्र

के बीच फंसे हुए हैं।

झोंपड़ियां तकरीबन सारी-की-सारी खण्डहर बनने लगी थीं और वह पूरी तरह खाली थीं।

इंसानों की बात तो बहुत अलग है...उन झोंपड़ियों में बर्तन और चारपाइयां भी नहीं थीं।

उन्होंने तीन-चार झोंपड़ियों की तलाशी ले डाली...सबका यही हाल था।

फिर वह जैसे ही एक दूसरी झोंपड़ी के नजदीक पहुंचे...तो एक आवाज ने उन्हें चौंका दिया।

"म्याऊं!"

सीधे वह आवाज उनके कानों में पड़ी।

स्वाभाविक रूप से वह एक बिल्ली की आवाज थी।

उस निर्जन टापू पर एक बिल्ली की कल्पना करना उन दोनों के लिये चौंकने जैसी बात थी। उन्होंने आवाज की तरफ देखा...तो एक बिल्ली उन्हें नजर आ गयी।

बिल्ली उस समय झोंपड़ी की एक टूटी हुई दीवार पर खड़ी थी और अपलक उन्हें ही देख रही थी।

"ओह बिल्ली!" रचना मुखर्जी खुशीभरे लहजे में बोली—"कमाण्डर...यहां बिल्ली कहां से आ गयी?"

"शायद यहां बसने वालों की पालतू बिल्ली होगी...बेचारी अकेली रह गयी है।"

"मगर यह अकेली तीन वर्ष से जीवित कैसे है कमाण्डर?" रचना मुखर्जी चौंककर बोली।

"जरूर यहां मरुस्थल के चूहे आदि होंगे...जिन्हें खाकर यह अभी तक जीवित है।"

रचना मुखर्जी ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाकर बड़े प्यार से कहा—"पूसी, पूसी! आओ, आओ!"

बिल्ली ने झट् से छलांग लगायी और वह एकदम रचना मुखर्जी की गोद में आ गयी।

ऐसा लगता था...जैसे वह न जाने कब से इंसानी आवाज सुनने के लिये बेचैन थी।

रचना मुखर्जी ने बड़े प्यार से उसको गोद में लेकर उसकी पीठ पर हाथ फेरा।

वह धीरे-धीरे उसे सहलाने लगी।

बिल्ली ने एक बार गुर्राकर उसे देखा और फिर वह धीरे-धीरे उसका हाथ चाटने लगी।

"आप ठीक कहते हो कमाण्डर! यह पालतू बिल्ली है...वरना इस तरह एकदम झट् से गोद में न आ जाती और यूं चाटने न लगती। हम इसे यहां से अपने साथ ले चलेंगे... इसे पाल लूंगी, वरना बेचारी यहां रहकर इंसानों की सूरत को भी तरस जायेगी।"

"बहुत फिक्र है इसकी?"

"हमें इन बेजुबान जानवरों की थोड़ी-बहुत फिक्र तो करनी ही चाहिये कमाण्डर!"

"लेकिन तुम एक बात नहीं जानतीं।" करण सक्सेना ने थोड़े शरारती अंदाज में उसकी तरफ देखा।

"क्या?"

"दो लेडीज का एक जगह रहना सदा खतरनाक होता है।"

"लेडीज के बारे में आपके विचार बहुत गलत हैं कमाण्डर!" रचना मुखर्जी ने भी मुस्कुराकर कहा, फिर वह बिल्ली के सिर पर बड़े स्नेहपूर्वक हाथ फेरते हुए बोली—"क्यों डियर...मैं ठीक कह रही रहूं न?"

बिल्ली ने तुरन्त 'म्याऊं' कहा।

"देखो...बिल्ली भी मेरी बात से सहमत है।"

करण सक्सेना हंस पड़ा।

बिल्ली हालांकि काली थी...लेकिन फिर भी बहुत खूबसूरत थी।

विशेष रूप से उसकी आंखों में तो गजब का आकर्षण था।

"हम इसको क्या कहकर पुकारें कमाण्डर?" रचना मुखर्जी ने पूछा।

करण सक्सेना सोचने लगा।

"इसका नाम 'सुंबा' रख दो।" फिर वो काफी सोच-विचारकर बोला।

"सुंबा!" रचना मुखर्जी को वह नाम बड़ा अजीब लगा—"सुंबा क्यों?"

"तुम्हें शायद मालूम नहीं...पीगो और मोगो कबीले

सुंबा नाम की एक देवी है। उस देवी की ख़ासियत ही ये है कि उसका शरीर इंसानों जैसा है और सिर बिल्ली जैसा। यह दोनों कबीले इस देवी को शक्ति की देवी समझते हैं तथा बड़े दिलोजान से उसकी पूजा करते हैं।''

''ठीक है...तो फिर हम आज से इसे 'सुंबा' ही कहेंगे।''

इस तरह उस बिल्ली का नाम 'सुंबा' पड़ गया।

सुंबा!

जो देवी थी।

तभी करण सक्सेना को एक बहुत बड़ी खास बात और याद आयी। उसे याद आया...उसके ओवरकोट की गुप्त जेब में भी उसका ट्रांसमीटर सैट पड़ा हुआ था। जिसकी फ्रीक्वेंसी अच्छी-खासी थी। वह उस ट्रांसमीटर के द्वारा भी अपने चीफ से बात करके वहां मदद बुला सकता था।

करण सक्सेना ने बड़ी फुर्ती के साथ अपनी जेब से ट्रांसमीटर सैट निकाला।

फिर उसे ऑन किया।

ट्रांसमीटर ऑन करते ही उसके चेहरे पर गहरी निराशा पुत गयी।

''क्या हुआ?'' रचना मुखर्जी बोली।

''यह भी खराब हो गया है। पनडुब्बी के इंजन रूम में हुए धमाके से इसकी फ्रीक्वेंसी प्रभावित हुई है और शायद कोई तार वगैरह अपनी जगह से हिल गया है या फिर कुछ और खराबी हो गयी है।''

''ओह...यानी ट्रांसमीटर भी हमारे किसी काम का नहीं रहा?''

''नहीं।''

वह आखिरी उम्मीद भी खत्म हो गयी।

कमाण्डर करण सक्सेना ने ट्रांसमीटर सैट अपने ओवरकोट की गुप्त जेब में रख लिया।

''कमाण्डर!'' रचना मुखर्जी बोली—''मेरा ख्याल है...अब हमें वापस केबिन में चलना चाहिये और कुछ खाने की व्यवस्था

करनी चाहिये। मुझे बड़े जोरों की भूख लग रही है।''

''हां, चलो...केबिन में चलते हैं। सुंबा भी भूखी होगी...न जाने कब से बेचारी को अच्छा खाना न मिला होगा।''

वह वापस केबिन की तरफ चल दिये।

□□□

□□□

धीरे-धीरे शाम होने लगी थी।

जैसे-जैसे शाम घिरती आ रही थी...ठीक उसी अनुपात में समुद्र का पानी भी काला पड़ने लगा था।

केबिन में पहुंचकर उन्होंने फ्रीज में से खाना निकालकर 'डिनर' तैयार किया।

उस समय उन्हें वह खाना संसार के बेहतरीन खानों से भी ज्यादा स्वादिष्ट लगा।

सुंबा को भी उन्होंने खाना दिया।

वह सचमुच बहुत भूखी थी...तुरन्त वह सारा खाना जल्दी-जल्दी चट् कर गयी।

खाना खाने के बाद रात उन्होंने तट पर ही गुजारी। सुंबा सारी रात रचना मुखर्जी की गोद में सिमटी पड़ी रही।

लेटते ही कमाण्डर करण सक्सेना और रचना मुखर्जी को कब नींद आ गयी...पता न चला। वह सारा दिन के काफी थके-हारे थे।

दूसरे दिन रचना मुखर्जी ने पेड़ों के सूखे पत्ते और झोंपड़ियों का फूंस जमा करके जलाया तथा गरम कॉफी बनायी, नाश्ता किया।

गरमा-गरम कॉफी ने उनके अंदर ताजगी की लहर पैदा कर दी।

कमाण्डर करण सक्सेना 'डनहिल' सुलगाकर वहीं अध लेटी-सी मुद्रा में पसर कर बैठ गया।

''रचना...अब हमारे सामने दो सवाल हैं।'' करण सक्सेना 'डनहिल' का कश लगाते हुए बड़े इत्मीनान से बोला—''या तो हम यहीं रहकर किसी सहायता के पहुंचने की प्रतीक्षा करें या फिर बड़े भू-खण्ड से मिलाने वाले किसी किनारे

की तलाश में चल पड़ें।"

"क्या मदद मिलने की कोई आशा है?"

"कुछ नहीं। मैं पहले ही कह चुका हूं कि यदि कोई ऊपर उड़ता हुआ जहाज हमें देख ले, तभी सहायता की उम्मीद की जा सकती है।"

"और अगर किसी की निगाह हमारे ऊपर न पड़े तब?"

"तब कुछ नहीं होगा। इसके अलावा एक प्रॉब्लम और है...जो हमारे सामने आ सकती है।"

"क्या?"

"फ्रीज में बहुत ज्यादा दिन का खाना नहीं है। अगर हमने जल्द ही इस मौजूदा संकट का कोई हल न तलाश किया...तो हमारे खाने के भी लाले पड़ जायेंगे।"

"यह तो निश्चय ही एक बड़ी प्रॉब्लम होगी।" रचना मुखर्जी के माथे पर चिन्ता की लकीरें उत्पन्न हुईं।

"बिल्कुल।"

"फिर तो हमें निश्चय ही किनारे की तलाश में चल देना चाहिये...यहां मदद की प्रतीक्षा करना बिल्कुल बेकार है।"

"यही मैं सोच रहा था।" करण सक्सेना 'डर्नहिल' का कश लगाते हुए बोला।

"बस तो चलो।"

"जस्ट ऐ मिनट...इस बार यात्रा शुरू करने से पहले हमें कुछ तैयारियां कर लेनी चाहियें माई हनी!"

"कैसी तैयारियां?"

"केबिन में एक काफी बड़ी तिरपाल है।" करण सक्सेना ने बताया—"हम यहां से एक लम्बी-सी लकड़ी काटकर उस तिरपाल से बादवान बना सकते हैं।"

"उससे क्या होगा?"

"उससे केबिन की रफ्तार बढ़ जायेगी।"

रचना मुखर्जी की आंखों में एक बार फिर करण सक्सेना के प्रति प्रशंसा के भाव उभर आये।

"गुड आइडिया...यह तो आपने वाकई बहुत बेहतर बात सोची है कमाण्डर! इस तरह बादवान बांधकर चलने में तो बड़ा आनन्द आयेगा। बिल्कुल ऐसा लगेगा...जैसे हम दो हजार वर्ष

पहले के इंसान हैं और पाल वाली किश्ती में यात्रा कर रहे हैं।"

"ठीक कहा।"

"हमें जल्द-से-जल्द बादबान बनाने की तैयारी शुरू करनी चाहिये।"

करण सक्सेना को भी वही उपयुक्त लगा।

वह 'डनहिल' के छोटे-छोटे कश लगाता हुआ चीते जैसी फुर्ती के साथ उठकर खड़ा हो गया और फिर झोंपड़ियों की तरफ बढ़ गया।

जल्द ही वो तीन-चार छोटी-बड़ी लकड़ियां तलाश कर ले आया था। फिर उसने तिरपाल निकालकर उसको लकड़ियों में बांधा और उन लकड़ियों को बड़े हिसाब से केबिन की छत के साथ बांध दिया।

करण सक्सेना को बादबान बनाने में काफी वक्त लग गया।

चार घण्टे से भी ज्यादा...अब दोपहर होने लगी थी। अलबत्ता इस काम में रचना मुखर्जी ने भी उसकी काफी हैल्प की।

दोपहर के कोई साढ़े बारह बज रहे थे...जब उन्होंने केबिन को पानी में धकेलकर बादबान खोल दिया।

बादबान वाकई लाजवाब बना था।

वो शीघ्र ही हवा से भर गया और केबिन तेजी के साथ एक अंजानी दिशा की तरफ चल पड़ा।

❑❑❑

❑❑❑

चार घण्टे यात्रा बड़ी शांति से होती रही।

उसमें कहीं कोई रुकावट न आयी...कहीं कोई अवरोध उत्पन्न न हुआ।

हवा आज काफी अच्छी चल रही थी।

इसके अलावा समुद्र की लहरों में भी आज पिछले दिनों की अपेक्षा कुछ तेजी थी।

रचना मुखर्जी ने पलटकर देखा।

टापू उनकी नजरों से ओझल हो चुका था और अब चारों तरफ पानी-ही-पानी नजर आ रहा था।

दूर-दूर तक कल-कल करता हिन्द महासागर था...जिसका कहीं कोई छोर दिखाई नहीं पड़ रहा था।

"कमाण्डर!" रचना मुखर्जी उस पानी को देखकर एक पल के लिये सिहर उठी—"सचमुच यह एडवेंचर से भरा मिशन है।"

"इसमें कोई शक नहीं।"

"क्या हम जानते हैं...हम किस दिशा की तरफ बढ़ रहे हैं?"

"नहीं...फिलहाल हमें कुछ पता नहीं है। यह एक अज्ञात दिशा है। आने वाले कुछ क्षणों में क्या होने वाला है...यह कोई नहीं जानता।"

केबिन की छत पर खड़े-खड़े करण सक्सेना ने एक 'डनहिल' और सुलगा ली।

प्रोफेसर भट्ट!

फिर वो नाम उसके दिमाग में अपने आप कौंध उठा।

वह प्रोफेसर भट्ट के बारे में सोचने लगा।

कहां होंगे इस समय प्रोफेसर भट्ट?

किस हाल में होंगे?

वह जीवित थे या मर गये थे...अभी तो यह भी स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता था।

और इतने बड़े हिन्द महासागर में उन्हें तलाश करना भी तो कुछ आसान काम न था।

सचमुच वह एक जटिल मिशन था।

जटिल भी और ख़तरे से भरा हुआ भी।

करण सक्सेना जितना प्रोफेसर भट्ट के बारे में सोच रहा था...उतना उसके चेहरे पर चिन्ता के बादल घिर रहे थे।

तभी एक समुद्री घटना और घटी।

ऐसी घटना...जिसने कमाण्डर करण सक्सेना जैसे आदमी के भी होश उड़ाकर रख दिये।

उसे दहशतजदा कर दिया।

सूर्यास्त होने से एक घण्टा पहले रचना मुखर्जी केबिन के भीतर रात के डिनर की तैयारी कर रही थी। वह जिस तरफ जाती थी...सुंबा उसके साथ-साथ चलती थी, जबकि कमाण्डर करण

सक्सेना उस समय केबिन की छत पर बैठा हुआ बादबान की देखभाल कर रहा था।

तब तक सब कुछ ठीक था।

बिल्कुल ठीक।

अचानक एक आवाज ने करण सक्सेना को चौंका दिया।

उसने जल्दी से घूमकर आवाज की तरफ देखा...बायीं ओर कुछ फासले पर ही दो ऊंची-ऊंची लहरें टकराई थीं और अब वहां पानी का चक्राकार बन रहा था।

जैसे वहां कोई भंवर हो।

देखते-ही-देखते भंवर गहरा होने लगा तथा फिर चारों तरफ फैलता चला गया।

गहरा।

और गहरा।

समुद्र का इधर-उधर का पानी भी अब भंवर की तरफ खिंचने लगा था और थोड़ी देर में ही भंवर एक बहुत गहरे कुएं में तब्दील हो गया।

इसके अलावा एक काम और हुआ।

भंवर में पानी घूमने से एक विचित्र तरह की आवाज पैदा हो गयी थी।

आवाज बिल्कुल ऐसी थी...जैसे ऊपर से नीचे की तरफ कोई जबरदस्त झरना गिर रहा हो।

झरना गिरने जैसी आवाज केबिन के अन्दर रचना मुखर्जी ने भी सुन ली थी।

केबिन का रुख यद्यपि भंवर की तरफ नहीं था...लेकिन भंवर की ओर पानी इस तेजी के साथ खिंच रहा था कि करण सक्सेना ने महसूस किया...उनका केबिन धीरे-धीरे भंवर की ओर खिसकने लगा है।

उसके माथे पर चिंता की सिलवटें पड़ गयीं...वह एक दहला देने वाला मामला था।

वो सोचने लगा...अगर केबिन भंवर में जा पड़ा, तो क्या होगा?

तभी करण सक्सेना के दिमाग में एक विचार आया...उसने बादबान को सख्ती के साथ पकड़ लिया, ताकि केबिन का रुख

न बदल सके, लेकिन भंवर बड़ी तेजी से बढ़ता जा रहा था और चकरा रहा था।

जल्दी ही उसकी वो कोशिश भी बेकार हो गयी।

कुछ मिनट बाद ही केबिन बड़ी तेजी से अपने आप भंवर की तरफ बहने लगा था और बादबान की प्रतिकूल हवा भी केबिन को न रोक सकी।

कमाण्डर करण सक्सेना को यकीन हो गया कि अब केबिन को भंवर से बचाना नामुमकिन है।

"कमाण्डर!" उसी समय रचना मुखर्जी ने दरवाजे से झांककर पूछा—"यह आवाज कैसी है?"

"यह भंवर की आवाज है।" करण सक्सेना चिल्लाकर बोला—"समुद्र में आगे पानी बड़ी तेजी से चक्राकार बन रहा है।"

"भंवर!" रचना मुखर्जी भी 'भंवर' के नाम दहल उठी—"मैं ऊपर आती हूं कमाण्डर!"

"नहीं...ऊपर मत आना। अन्दर ही रहो...मैं भी वहीं आ रहा हूं।"

करण सक्सेना ने जब देखा कि उसके बादबान पकड़ने का कुछ फायदा नहीं है...तो उसने बादबान छोड़ दिया।

फिर वह कूदकर केबिन में अन्दर की तरफ आ गया और उसने सख्ती के साथ दरवाजा बंद कर लिया।

"ओह कमाण्डर!" रचना मुखर्जी एकदम उससे कसकर लिपट गयी—"यह सब क्या हो रहा है?"

"मुझे खुद कुछ नहीं मालूम कि हालात हमें किस तरह ले जा रहे हैं।"

करण सक्सेना, रचना मुखर्जी के साथ शीशे की उन गोल खिड़कियों के नजदीक पहुंचा...जो पोर्ट होल थे।

"उस तरफ देखो रचना!" करण सक्सेना ने एक पोर्ट होल की तरफ इशारा किया।

रचना मुखर्जी ने पोर्ट होल के रास्ते बाहर झांककर देखा और तत्काल दहशत से उसकी आंखें फट पड़ीं।

भंवर का दहाना बिल्कुल साफ नजर आ रहा था और केबिन बड़ी तेजी के साथ उसी दहाने की तरफ बढ़ रहा था।

"ओह कमाण्डर!" रचना मुखर्जी उस दृश्य को देखकर

और भी ज्यादा डर गयी–"अब क्या होगा?"

"कुछ नहीं कहा जा सकता रचना! ऐसा लगता है कि इस जगह जमीन की तह फट गयी है और तेजी से पानी भीतर जा रहा है। सम्भव है...यहां जमीन के नीचे किसी प्रकार की गुफायें आदि हों। यह केबिन बहुत मजबूत है और एयरटाइट भी। अगर भंवर में गिरने पर और पानी के दबाव से केबिन में कोई दरार न पड़ी...तो हम सुरक्षित हैं, वरना खत्म!"

"हे भगवान!" रचना मुखर्जी सहम गयी।

"आओ।" करण सक्सेना ने उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा–"हमें अपने शरीर पर सैफ्टी बेल्ट कस लेनी चाहिये। इससे ये होगा कि अगर केबन भंवर के कुएं में गिरा, तो हम सुरक्षित रहेंगे।"

वहीं केबिन में चार कुर्सियां पड़ी हुई थीं...जिन पर बैल्टें लगी थीं।

वह दोनों उन कुर्सियों पर बैठ गये और उन्होंने अपने शरीर के गिर्द सैफ्टी बैल्ट कस लीं।

अभी करण सक्सेना और रचना मुखर्जी ने बैल्ट कसी ही थीं कि केबिन भंवर के दहाने पर पहुंच गया। पहले वो एक तरफ को झुका और फिर उस गहरे कुएं में गिरता चला गया।

"क...कमाण्डर!"

रचना मुखर्जी की हृदयविदारक चीख निकल गयी।

करण सक्सेना के शरीर को भी जोरदार झटका लगा। अगर उसने सैफ्टी बैल्ट ने कसी हुई होती तो अब तक वह केबिन में कई कलाबाजी खा जाता।

❑❑❑

❑❑❑

केबिन उस भंवर में गिरता जा रहा था।

गिरता ही जा रहा था।

घूमता हुआ।

चक्कर काटता हुआ।

रचना मुखर्जी की चीखें निकल रही थीं...वो गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रही थी।

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना को ऐसा महसूस हो रहा

था...जैसे वह अंतरिक्ष में हो और उसके शरीर के अन्दर कोई भार ही न रहा हो और वो केबिन भंवर में सैकड़ों वर्षों से गिरता चला जा रहा हो।

हालांकि केबिन के गिरने का समय केवल कुछ सेकण्ड्स था...लेकिन करण सक्सेना को वह समय सदियों जैसा लग रहा था।

उस समय करण सक्सेना के दिमाग में दो ही सवाल थे।

बस दो ही सवाल!

'क्या केबिन इस दुर्घटना से बच सकेगा?'

'क्या वह लोग बचेंगे?'

करण सक्सेना की आंखों के सामने मौत नाच रही थी।

साक्षात् मौत!

फिर वो क्षण भी आया...जब केबिन उस भंवर की तह में पहुंच गया।

वो तह किस जगह थी...इस बारे में किसी को कुछ मालूम न था।

करण सक्सेना ने अपने दिमाग को झटका दिया और वह अपने आसपास की स्थिति का अवलोकन करने के प्रयास में जुट गया। फिर उसे ऐसा लगा...जैसे उनके ऊपर झरना गिर रहा हो। झरना बहुत बड़ा और मोटी धार वाला था...जो पड़-पड़ करके बह रहा था।

केबिन बिल्कुल कागज की किश्ती की तरह नाचने लगा—कलाबाजियां खाने लगा और उछलने लगा।

यदि करण सक्सेना और रचना मुखर्जी उस समय बैल्टों से कसे हुए न होते, तो केबिन की छत और फर्श के बीच उछल-उछल कर मर जाते।

न जाने कितनी देर तक वह केबिन इसी प्रकार उछलता रहा।

बड़ी मुश्किल से झटके और हिचकौले खत्म हुए तथा केबिन शांत हो गया।

केबिन में उस समय अंधेरा था।

घुप्प अंधेरा!

उसने हाथ बढ़ाकर एक स्विच दवाया...तो फौरन धीमी

रोशनी का एक बल्ब प्रकाशित हो गया।

शीशे की खिड़कियों के बाहर उस समय बिल्कुल घुप्प अंधेरा था। करण सक्सेना इस बात को लेकर बहुत हैरान था...यह अंधेरा क्यों है?

अगर भंवर खत्म हो गया था...तो उनको समुद्र तल पर होना चाहिये था और पोर्ट होल के बाहर रोशनी दिखाई पड़नी चाहिये थी।

इसके अलावा करण सक्सेना को एक बात और बड़ी विचित्र लग रही थी।

केबिन जितनी देर उस भंवर के कुएं में गिरता रहा था...हिन्द महासागर की गहराई उतनी नहीं होनी चाहिये थी।

वह जरूरत से ज्यादा गहराई थी।

फिर वह सब क्या था?

क्या वाकई जमीन की तह फट गयी थी और उस जगह अयाह गहराई हो गयी थी?

करण सक्सेना को अचानक रचना मुखर्जी का ख्याल आया।

उसने गर्दन घुमाकर रचना मुखर्जी की तरफ देखा...वह होश में थी। अलबत्ता उसका चेहरा कागज की तरह सफेद झक्क पड़ा हुआ था और वह पस्ती जैसे आलम में थी।

शब्द तो उसके मुंह से मानो फूट ही नहीं रहे थे।

करण सक्सेना ने उसकी तरफ देखा...तो रचना मुखर्जी ने भी बड़ी सहमी-सहमी नजरों से उसे देखा...फिर मुस्कुराने की असफल चेष्टा करते हुए बड़ी मरी-मरी आवाज में बोली—"क्या हम बच गये कमाण्डर?"

"हां।" करण सक्सेना ने धीरे से गर्दन हिलाई—"फिलहाल तो हम जीवित ही हैं और स्वर्ग या नरक जैसी किसी जगह नहीं आ गये हैं।"

"ओह माई गॉड...यह इस मिशन के दौरान क्या हो रहा है?"

"मुझे खुद कुछ नहीं मालूम...क्या तुम कुर्सी से खड़ी हो सकती हो?"

"हां।"

रचना मुखर्जी ने धीरे से अपना सिर हिला दिया।

वह आहिस्ता-आहिस्ता अपनी पूर्ववत् अवस्था में लौट रही थी।

करण सक्सेना अपनी सैफ्टी बैल्ट खोलकर खड़ा हुआ तथा फ़िर उसने रचना मुखर्जी की भी बैल्ट खोली। इतना ही नहीं...उसने रचना मुखर्जी को सहारा देकर कुर्सी से भी खड़ा किया।

"रचना...हालांकि हम अभी तक जीवित हैं।" करण सक्सेना गम्भीरतापूर्वक बोला—लेकिन मैं कुछ नहीं जानता कि अब हमारे साथ क्या होने वाला है? प्रकृति हमारे साथ बड़ा अजीब-सा खेल खेल रही है।"

"कैसा खेल?"

"क्या जो कुछ हमारे साथ हो रहा है...वो भयंकर खेल नहीं है? किसी भी समय यह केबिन फट सकता है और हम मर सकते हैं। इसके अलावा मैं तुम्हें एक जानकारी और देना चाहूंगा।"

"क्या?"

"मुझे शक है डियर...हम इस समय समुद्र की तह के नीचे हैं।"

"समुद्र की तह के नीचे!" रचना मुखर्जी की चीख निकल गयी।

"हां।"

"मगर यह कैसे हो सकता है?"

"मैं समझता हूं...ऐसा हो चुका है। जरूर समुद्र की तह फट गयी है और उसी कारण यह भंवर बना है।"

"नहीं!"

रचना मुखर्जी एकाएक बहुत डरी-डरी दिखाई पड़ने लगी।

वह समुद्र की तह के नीचे हैं...इस बात ने उसके और होश उड़ाकर रख दिये।

वह सचमुच बहुत खतरनाक मामला बन गया था।

न जाने कितनी देर बाद वो एकाएक 'म्याऊं' की आवाज सुनकर चौंक पड़े।

"ओह मेरी सुंवा!" रचना मुखर्जी सब कुछ भूलकर बड़ी

तेजी के साथ बिल्ली की तरफ झपट पड़ी और उसने बिल्ल. अपनी गोद में उठा लिया।

बिल्ली भी सहमी-सहमी-सी उससे कसकर चिपट गयी।

केबिन जिस भयानक अंदाज में गर्त के अन्दर गिरा था... उसने बिल्ली को भी दहशतजदा कर दिया था।

"न जाने यह बेचारी अब तक कहां थी?" रचना मुखर्जी बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली—"और इसके साथ क्या गुजरी है?"

"तुम सुंबा का ख्याल करो।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला—"तब तक मैं जरा कोई बल्ब तलाश कर लूं... इस बल्ब की रोशनी बहुत कम है।"

यह कहकर वो केबिन के सामान में से बल्ब तलाश करने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

सौ वाट का एक बल्ब और लगाने पर केबिन में प्रकाश तो हो गया... लेकिन केबिन के बाहर फिर भी अंधेरा दिखाई पड़ रहा था।

घुप्प अंधेरा।

दूर-दूर तक कहीं कुछ नजर नहीं आ रहा था।

इसके अलावा आश्चर्य की बात यह थी कि केबिन की हरकत से महसूस हो रहा था... जैसे केबिन चल रहा है... आगे बढ़ रहा है।

कमाण्डर करण सक्सेना ने केबिन के सामने लगी सर्चलाइट का बटन दबाया।

लेकिन कुछ न हुआ।

सर्चलाइट ने जली।

केबिन के आसपास बिल्कुल पूर्व की भांति ही घुप्प अंधेरा छाया रहा था।

करण सक्सेना ने जल्दी से स्विच बोर्ड खोलकर उसके तारों को देखा।

तुरन्त सर्चलाइट न जलने की वजह सामने आ गयी... दरअसल केबिन को झटके लगने की वजह से कई तार

टूट गये थे।

करण सक्सेना ने तार जोड़ने शुरू किये।

कोई पन्द्रह मिनट की कोशिशों के बाद वो तार जोड़ने में कामयाब हो पाया...फिर उसने दोबारा स्विच पुश किया।

इस बार सर्चलाइट की तेज धारा अंधेरे को चीरती चली गयी।

चारों तरफ रोशनी-ही-रोशनी हो गयी।

तब पहली बार उन्होंने देखा कि वे वास्तव में पानी की सतह पर थे और पानी की धारा के साथ एक दिशा में बहे जा रहे थे।

लेकिन एक बात की गारण्टी थी...अब वो समुद्र तल पर नहीं थे।

उनके दाहिनी तरफ काले रंग की एक दीवार-सी थी...जो बड़ी तेजी के साथ पीछे की तरफ दौड़ती नजर आ रही थी...यानी वह आगे बढ़ रहे थे।

सब कुछ बड़ा सस्पैंसफुल था।

करण सक्सेना भी अपने शरीर में अजीब-सा रोमांच अनुभव करने लगा।

वो कहां थे?

किधर जा रहे थे?

कुछ मालूम नहीं था।

रचना मुखर्जी ने पोर्ट होल से बाहर झांकते हुए पूछा—"यह हम कहां आ गये हैं कमाण्डर?"

"मैं खुद यही सोच रहा हूं और केवल एक ही बात मेरे अब तक समझ आती है।"

"क्या?"

"जिस जगह भंवर बना था...वहां जमीन की परत टूट गयी है और उसी परत के नीचे शायद कोई भूमिगत झील है या फिर ये भी सम्भव है कि वह लम्बी-चौड़ी गुफायें हों और अब उनमें पानी भर गया हो।"

"माई गॉड...यानी हम इस समय किसी झील या गुफा में हैं।"

"हां। इतना ही नहीं...अब हमारे ऊपर जमीन की मोटी

परत है...जो कभी मरुस्थल थी और इस परत पर समुद्र है शायद इस छेद से निरंतर पानी भीतर आ रहा है...जिसके का हम इस धारा के साथ बह रहे हैं।"

"फिर अब क्या होगा?"

"मालूम नहीं।"

"क्या यह भी नहीं मालूम कि यह झील या पानी की धारा किसी जगह जाकर बाहर निकलेगी या नहीं?"

"मैं सिर्फ इतना जानता हूं माई हनी!" करण सक्सेना बोला–"कि हम अब किसी तरह भी समुद्र तल पर नहीं पहुंच सकते।"

"यह आप क्या कह रहे हैं कमाण्डर?"

"मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं।"

"और इस पानी की अगर कहीं बाहर की तरफ निकासी न हुई...तब क्या होगा?"

"तो फिर हमारी मृत्यु अवश्यम्भावी है, क्योंकि ऐसी पोजीशन में समुद्र का पानी भीतर इस भूमिगत गुफा में आता रहेगा...यहां तक कि पूरी गुफा भर जायेगी और हमारा जहाज इस गुफा की छत से अटककर रह जायेगा। फिर न हम आगे बढ़ सकेंगे...न पीछे। इस केबिन में कुछेक दिन का ऑक्सीजन और है। उसके बाद यह हमारे ऊपर निर्भर होगा कि हम इस केबिन में बन्द होकर मरें या फिर बाहर पानी में निकलकर तैरते हुए डूबकर।"

रचना मुखर्जी के पूरे शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी।

मौत का बड़ा खौफनाक अहसास उसे डरा गया।

"आप मुझे भयभीत करना चाहते हो?" रचना मुखर्जी बोली।

"नहीं...मैं सच्चाई बयान कर रहा हूं।"

केबिन उसी रफ्तार से बड़ी तेजी के साथ एक तरफ को बहा जा रहा था।

अभी तक उन दोनों को सिर्फ एक दीवार नजर आ रही थी और उन्हें कुछ पता नहीं था कि ऊपर क्या है?

कमाण्डर करण सक्सेना जो कुछ कह रहा था...वह सिर्फ अंदाजा था।

अंदाजा!

जो सही भी हो सकता था और गलत भी।

थोड़ी देर बाद उन्हें दूसरी तरफ भी दीवार नजर आने लगी...वह दीवार भी गहरे काले रंग की थी और उस पर बुरी तरह 'काई' जमी हुई थीं।

रास्ता अब संकरा हो गया था।

थोड़ी देर बाद ही वह गुफा सचमुच एक सुरंग की तरह रह गयी और अब वह उस सुरंग में तेजी से बह रहे थे।

सुरंग!

यानी वो सुरंग ही थी...जिसमें वो बहे जा रहे थे।

पानी की सुरंग!

इस मामले में शक-शुब्ह की अब कहीं कोई गुंजायश न थी।

हर बार कमाण्डर करण सक्सेना को यही डर लगा कि केबिन सुरंग की दीवार से टकराकर टूट जायेगा।

मगर किस्मत इतनी बेरहम न थी।

हर बार केबिन पानी की धारा के साथ घूमता गया और सुरंग में आगे बहता गया।

तभी एक घटना और घटी।

इस बार हालात उम्मीद बनकर फूटे थे।

पानी की धारा के साथ बहता हुआ केबिन जैसे ही चौथे या पांचवें मोड़ पर घूमा...तो पोर्ट होल में से बाहर का दृश्य देखती रचना मुखर्जी की खुशी से भरी किलकारी छूट पड़ी—"कमाण्डर...वह सामने की तरफ देखो, रोशनी नजर आ रही है।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने चौंककर सामने की तरफ देखा।

और!

तुरन्त ही उम्मीद उसके चेहरे पर भी नजर आने लगी?

बहुत दूर फासले पर रोशनी का एक धब्बा-सा नजर आ रहा था...जो पता नहीं उनकी सर्चलाइट का था या नहीं था।

"मुझे तो लगता है।" करण सक्सेना बोला—"यह हमारे प्रकाश का प्रतिबिम्ब है।"

"नहीं।" रचना मुखर्जी ने तुरन्त जवाब दिया—"हमारी

सर्चलाइट का प्रकाश पीले रंग का है कमाण्डर...जबकि आप देख ही रहे हैं कि सामने जो प्रकाश नजर आ रहा है, उसका रंग हरा है।''

''फिर तो यह बड़ी अजीब बात है।''

''हां...अजीब तो है।''

केबिन थोड़ा और आगे बढ़ा...तो पहली बार उनको मेहराब का-सा एक साया नजर आया।

बिल्कुल ऐसा लग रहा था...जैसे सुरंग में एक बहुत ऊंची मेहराब कटी हुई है और उस मेहराब के दूसरी तरफ हरा प्रकाश है।

वह दोनों सांस रोके उस मंजर को देख रहे थे।

केबिन सुरंग के बीचो-बीच से गुजरता हुआ जब उस मेहराब से होता हुआ प्रकाश के निकट पहुंचा...तो वह दोनों आश्चर्य से बुत बनकर रह गये।

अभी तक दोनों तरफ सिर्फ दीवारें ही नजर आ रही थीं...लेकिन अब छत भी एकाएक बहुत साफ दिखाई पड़ने लगी। इतना ही नहीं...वो यह देखकर हैरान रह गये कि छत में एक ग्लोब भी लटका हुआ था और उसी में से वो हरा प्रकाश बाहर निकल रहा था।

हरा प्रकाश...जो बिल्कुल ठण्डा था।

शीतल!

करण सक्सेना ने ग्लोब को ध्यानपूर्वक देखा।

ग्लोब शीशे का बना हुआ मालूम होता था...क्योंकि भीतर प्रकाश का गोला नजर नहीं आ रहा था।

कुछ देर वह दोनों पोर्ट होल के सामने खड़े उस विचित्र दृश्य को देखते रहे।

फिर रचना मुखर्जी ने आश्चर्य मिश्रित आवाज में कहा–''नहीं...यह असम्भव है कमाण्डर...बिल्कुल असम्भव!''

मेहराब के दूसरी तरफ फिर एक लम्बी-चोड़ी गुफा थी...जिसका आकार अच्छा-खासा नजर आ रहा था।

वह गुफा दूर तक फैली हुई थी...इसके अलावा उसकी छत भी बहुत ऊंची थी और छत में थोड़े-थोड़े फासले पर वे ग्लोब लगे हुए थे...जो हरे रंग का प्रकाश बिखेर रहे थे।

"कमाण्डर!" रचना मुखर्जी मंत्रमुग्ध-सी नजरों से उस दृश्य को देखते हुए बोली—"क्या हम नींद में कोई सपना देख रहे हैं...या फिर यह कुछ और है?"

"मुझे खुद पता नहीं...ऐसा लग रहा है, जैसे हम किसी बहुत बड़े तिलिस्म में आ गये हों।"

"तिलिस्म!"

"हां...तिलिस्म।"

"लेकिन यह जगह क्या हो सकती है कमाण्डर!" रचना मुखर्जी का स्वर उलझा हुआ था—"हम इस वक्त समुद्र के नीचे, जमीन की तह से भी नीचे हैं। यहां यह प्रकाश कैसे है? और...और यह ग्लोब आखिर किसने यहां लटकाये हैं तथा क्यों लटकाये हैं?"

करण सक्सेना के पास किसी भी सवाल का जवाब न था। वो खुद विस्मित-सा खड़ा था।

"एक बात बहुत साफ है।" करण सक्सेना बहुत गौर से उन ग्लोबों को देख रहा था और उसकी बुद्धि काफी तेज स्पीड से चल रही थी—"यह ग्लोब इंसानी हाथों के बनाये हुए हैं और निश्चय ही किसी उद्देश्य से यहां लगाये गये हैं।"

"लेकिन वो उद्देश्य क्या हो सकता है कमाण्डर?" रचना मुखर्जी के चेहरे पर पुनः सवालिया निशान तैरे।

"काश...मुझे उद्देश्य मालूम होता!" करण सक्सेना ने बड़ी गहरी सांस छोड़ी।

केविन अभी भी धारा के साथ-साथ आगे-ही-आगे बढ़ता जा रहा था।

उसकी रफ्तार ज्यों-की-त्यों बनी हुई थी।

अब वो साफ-साफ किसी तंग सुरंग में दिखाई पड़ रहा था।

"कमाण्डर!" एकाएक रचना मुखर्जी ने करण सक्सेना की बांह पकड़ते हुए कहा—"वह देखो...ऊपर दीवार की तरफ देखो।"

करण सक्सेना ने दीवार की तरफ देखा।

और!

फौरन उसके नेत्र फैल गये।

वहां एक नया आश्चर्य मौजूद था...अद्भुत आश्चर्य।
पानी की सतह से केवल कुछ फुट ऊपर दीवार में थोड़े-थोड़े फासले पर गुफाओं के दहाने बने हुए थे...जैसे वह किसी तरफ जाने के लिये दरवाजे हों।

"रचना!" करण सक्सेना कौतूहलतापूर्वक बोला—"मुझे तो ऐसा लगता है...जैसे हम किसी जादूनगरी में आ गये हैं। अगर हम इस समय सपना नहीं देख रहे डार्लिंग...तो मैं कहूंगा कि हम इस संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य देख रहे हैं। ऐसा आश्चर्य...जिससे बढ़कर कहीं कुछ हो ही नहीं सकता।"

"आखिर यह गुफायें कैसी हैं?" रचना मुखर्जी किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी अवस्था में बड़बड़ा रही थी—"और इसमें रोशनी करने वाले कौन लोग हैं?"

"अब तो यह सब पता लगाने का मुझे सिर्फ एक ही तरीका दिखाई देता है।"

"क्या?"

"हम मौत का खौफ अपने दिल से बिल्कुल निकालकर इन चीजों को नजदीक से जाकर देखें।" करण सक्सेना बोला—"अगर तुम कहो...तो मैं तैरकर एक गुफा में पहुंचने का प्रयत्न करता हूं।"

"लेकिन फिर इस केबिन का क्या होगा? यह तो पानी की धारा के साथ लगातार बह रहा है...अगर हम इस केबिन से बाहर निकले, तो यह बहता हुआ आगे चला जायेगा और फिर शायद ही हमारे हाथ कभी आये।"

"इसका भी एक इलाज मेरे पास है।"

"क्या?"

"तुम केबिन की छत पर चढ़कर पाइप के साथ बंधी डोरी मेरी तरफ फेंक देना...मैं उस डोरी का अगला सिरा गुफा में किसी चीज के साथ बांध दूंगा। फिर हम देखेंगे कि यह सब क्या तिलिस्म या रहस्य है।"

"यह बात ठीक है।"

"तो फिर निकला जाये?"

"हां।" रचना मुखर्जी पूरी दिलेरी के साथ बोली।

कमाण्डर करण सक्सेना ने दरवाजा खोला और पानी में

कूदकर बड़ी तेजी के साथ एक गुफा की तरफ तैरने लगा।

पानी उस जगह का भी बहुत ठण्डा था।

ऐसा मालूम हो रहा था...जैसे उस जगह के पानी में बड़ी तादाद में बर्फ मिली हुई हो।

तब तक रचना मुखर्जी डोरी लेकर केबिन की छत पर चढ़ गयी। उस जगह पानी का बहाव बहुत कम था...इसलिये केबिन बहुत धीरे-धीरे बह रहा था।

उधर कमाण्डर करण सक्सेना पानी में हाथ-पैर मारता हुआ आखिरकार एक गुफा के दहाने तक पहुंच ही गया और फिर किनारा पकड़कर छलांग लगाता हुआ गुफा में दाखिल हो गया।

"क्या मैं डोरी फेंकूं?" रचना मुखर्जी केबिन की छत पर चढ़े-चढ़े बोली।

"हां...फेंको।"

रचना मुखर्जी ने तुरन्त अपनी पूरी शक्ति से उस डोरी का एक सिरा करण सक्सेना की तरफ उछाल दिया था...जिसे करण सक्सेना ने बड़ी कुशलतापूर्वक लपक लिया।

तत्काल ही उस केबिन का पानी की धारा के साथ बहना रुक गया।

करण सक्सेना ने डोरी पकड़ने के बाद उस केबिन को खींचकर बिल्कुल किनारे से लगा दिया। उस गुफा के भीतर भी बिल्कुल वैसे ही ग्लोब लगे थे...जो हल्के हरे रंग का प्रकाश बिखेर रहे थे। हरे रंग के प्रकाश में करण सक्सेना ने देखा कि भीतर तक एक सुरंग-सी चली गयी थी। सबसे बड़ी बात ये थी...सुरंग देखकर पता चलता था कि वह प्राकृतिक नहीं है, वल्कि इंसानी हाथों से उसे तराश कर तैयार किया है। यह भी मुमकिन है...पहले वो संकरी और प्राकृतिक हो और बाद में किसी ने उसे काट-छांटकर चौड़ा कर दिया हो।

तभी करण सक्सेना की निगाह एक पत्थर पर पड़ी...जो सुरंग के कोने में फंसा हुआ था।

वह पत्थर नुकीला भी था और अपनी जगह मजबूती के साथ फंसा भी हुआ था।

करण सक्सेना ने डोरी का सिरा उसी पत्थर के साथ कसकर बांध दिया।

"रचना!" फिर उसने केबिन की छत पर खड़ी रचना को जोर से आवाज दी।

"यस कमाण्डर!"

"अब तुम भी यहां आ सकती हो।"

"ओ०के०।"

रचना मुखर्जी केबिन की छत से कूदकर उसी के पास सुरंग में आ गयी।

सुरंग दूर तक बिल्कुल सीधी चली गयी थी और उसके बाद दाहिनी तरफ को मुड़ गयी थी।

सबसे बड़ा आश्चर्य वह ग्लोब पैदा कर रहे थे...वह थोड़े-थोड़े फासले पर लगे हुए थे और आखिर तक प्रकाशित थे।

"कमाण्डर!" रचना मुखर्जी अभी भी बहुत विस्मित निगाहों से उस सुरंग को ही देखे जा रही थी—"एक बात मैं गारण्टी के साथ कह सकती हूं।"

"क्या?"

"यह सुरंग जरूर कहीं जाकर निकलती होगी और चूंकि इस सुरंग को इंसानों ने बनाया हुआ है...इसलिये मुझे पूरा भरोसा है कि अब हम बच जायेंगे।"

"लेकिन मुझे इस मामले में थोड़ा संदेह हो रहा है रचना!"

"कैसा संदेह?"

"मुझे न जाने क्यों ऐसा लग रहा है कि हम दोनों किसी बहुत अज्ञात और रहस्यमयी जगह में फंस गये हैं।"

"आपको ऐसा क्यों लग रहा है?"

"क्योंकि तुमने अभी तक इन ग्लोबों से निकलने वाले प्रकाश को बहुत ध्यान से नहीं देखा।"

रचना मुखर्जी की निगाह अब उन ग्लोबों पर जाकर टिक गयी—जो हरे रंग का प्रकाश बिखेर रहे थे।

"मुझे तो इनके प्रकाश में कुछ भी खास बात नजर नहीं आ रही कमाण्डर!"

"लेकिन मुझे आ रही है। अगर तुम हरे रंग के इस प्रकाश को ध्यान से देखो...तो तुम्हें महसूस होगा कि इन ग्लोबों से निकलने वाला प्रकाश बिजली के प्रकाश जैसा नहीं है।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो कि यह प्रकाश बिजली के

प्रकाश जैसा नहीं है?"

"क्या तुम्हें किसी जगह कोई तार नजर आ रहा है?"

"सम्भव है कमाण्डर!" रचना मुखर्जी बोली—"तार सुरंग की छत में भीतर कहीं छिपे हुए हों।"

"मुझे इस बात पर विश्वास नहीं। यह प्रकाश बड़ा विचित्र है। ठण्डा और हरा...जैसे फॉस्फोरस का प्रकाश होता है।"

"अब जो भी हो।" रचना मुखर्जी बोली—"हमें आगे चलकर देखना चाहिये कि आगे क्या है?"

"तुम बिल्कुल ठीक कहती हो...लेकिन हमें एक काम और करना चाहिये रचना!"

"क्या?"

"हमें चूंकि इस बारे में कुछ मालूम नहीं है कि आगे क्या होगा...इसलिये हमें खाने-पीने का सामान अपने साथ ले लेना चाहिये।"

"ठीक है, लेकिन एक सम्भावना पर आप विचार नहीं कर रहे कमाण्डर!"

"किस सम्भावना पर?"

"मुमकिन है...आगे बहुत-सी सुरंगें हों और हम रास्ता भूल जायें। ऐसी हालत में हमारे लिये अपने इस केबिन को तलाश करना बहुत कठिन हो जायेगा।"

"अब ऐसी तमाम बातें अपने दिमाग से निकाल दो और बेखौफ होकर आगे बढ़ने की तैयारी करो।"

"ओ०के०!"

वह दोनों फिर केबिन में गये।

इस बार उन्होंने खाने का कुछ सामान प्लास्टिक के थैलों में भरकर अपने साथ लिया—कुछ पानी लिया। रचना मुखर्जी की निगाह पुनः बिल्ली पर पड़ी...जो एक कुर्सी पर अपने दोनों अगले पंजे सिकौड़े बैठी थी और टुकुर-टुकुर कभी रचना मुखर्जी को देखने लगती थी...तो कभी करण सक्सेना को।

"सुंबा का क्या करें?"

"इसे भी अपने साथ ले लो।" करण सक्सेना बोला—"अब इसकी किस्मत भी हमारी किस्मत के साथ जुड़ चुकी है।"

रचना मुखर्जी ने आगे बढ़कर सुंबा को अपनी गोद में उठा लिया—वह पुनः उसकी छातियों के साथ कसकर चिपट गयी।

लम्बे एकान्तवास ने उस बिल्ली को खामोश और इंसानी प्यार का भूख बना दिया था।

जब सारा सामान लेकर वह दोनों चलने लगे, तो करण सक्सेना एकाएक बड़ी तेजी से बोला—"ठहरो...मैं यहां एक सबसे जरूरी चीज तो भूल ही गया।"

"वह क्या?"

कमाण्डर करण सक्सेना ने आगे बढ़कर एक ड्राज खोली...तो उसमें उसकी दोनों कोल्ट रिवॉल्वरें चमक उठीं। जिन्हें उसने पानी में खराब हो जाने के डर से वहां छुपा दिया था।

"र...रिवॉल्वर!"

"यस माई हनी! हथियार भी अब हरदम हमारे साथ रहने चाहियें, क्योंकि हमें कुछ पता नहीं कि अब आगे किस प्रकार का खतरा हमारी प्रतीक्षा में होगा।"

करण सक्सेना ने वह दोनों रिवॉल्वर अपने पास रख लीं और कारतूसों के कई पैकिट भी जेब में रख लिये।

उसके बाद वह दोनों फिर सुरंग में आ गये।

सुरंग में पहुंचते ही बिल्ली ने 'म्याऊं' किया।

"यह शायद इस तंग जगह को देखकर घबरा रही है...क्योंकि यह अभी तक टापू जैसी खुली जगह पर रही थी।

"यही बात है।"

"बहरहाल अब जैसा भी है...हम तीनों के भाग्य एक-दूसरे के साथ जुड़ चुके हैं।" रचना मुखर्जी बोली—"अब चाहे जो कुछ भी हो...हम मरेंगे तो यह भी मरेगी और यह भी मुमकिन है कि इसी के कारण कहीं हमारी जान भी बच जाये।"

"ऑल राइट। क्या हम आगे बढ़ें?"

"मैं तैयार हूं।" रचना मुखर्जी ने जवाब दिया।

उसके बाद वह दोनों केबिन पर आखिरी नजर डालकर आगे की तरफ चल पड़े।

❑❑❑

❑❑❑

वह दोनों सुरंग में अभी दस कदम ही और आगे बढ़े होंगे

कि अचानक एक जबरदस्त धमाके की आवाज सुनकर वह चौंके।

धमाके की आवाज बहुत तेज थी।

ऐसी तेज...जैसे बम फटा हो।

वह दोनों चलते-चलते एकाएक रुक गये और भयभीत होकर एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

"यह क्या हुआ था?" रचना मुखर्जी बोली।

"पता नहीं। ऐसी आवाज थी...जैसे पहाड़ की कोई चट्टान टूटकर गिरी हो।"

वह दोनों फिर वापस लौट आये और उन्होंने गुफा के मुंह पर खड़े होकर देखा।

एक नजर देखना ही काफी था।

जिस रास्ते से वह आये थे...वह रास्ता अब बन्द हो चुका था। जमीन का बहुत बड़ा भाग टूटकर नीचे आ पड़ा था...जिसने सुरंगनुमा मार्ग को बन्द कर दिया था।

"माई गॉड!" रचना मुखर्जी बोली—"यह एक नई आफत आयी।"

"सचमुच यह एक बड़ी आफत है, अगर अब हम इस मार्ग से वापस भी जाना चाहें...तो नहीं जा सकते।"

"लेकिन हम इस मार्ग से वापस जा भी कहां सकते थे कमाण्डर?"

"यह भी ठीक है।"

"आओ...हम आगे की तरफ ही चलते हैं।"

वह फिर चल पड़े।

सुरंग काफी लम्बी थी और बिल्कुल सुनसान थी। कहीं से भी कोई आहट नहीं मिल रही थी।

वहां सन्नाटा था।

गहरा सन्नाटा!

"मुझे इस समय दो ही बातें परेशान कर रही हैं रचना!" करण सक्सेना चलते-चलते बोला।

"क्या?"

"तुम देख रही हो कि यहां हवा बिल्कुल साफ है और इसमें ताजगी का अहसास हो रहा है। इसका मतलब है...इस सुरंग में ताजी हवा आने-जाने का कोई मार्ग है और उसी तरफ से

यह ताजी हवा अंदर आ रही है।"

"मुमकिन है कमाण्डर!" रचना मुखर्जी बोली—"यह सुरंग कहीं बाहर निकलती हो।"

"जरूर यही बात है। यह सुरंग बाहर ही निकलती होगी और उसी तरफ से यह हवा अंदर आ रही होगी। परेशानी की बात हवा नहीं, बल्कि ये है कि यह द्वीप हजारों वर्षों से हिन्द महासागर के नजदीक था और इस द्वीप पर मोगो तथा पीगो जाति भी हजारों वर्षों से ही आबाद थी, लेकिन आज तक कभी किसी ने यह नहीं सुना था कि इस मरुस्थल के नीचे सुरंगें हैं और उनमें प्रकाश की व्यवस्था भी है। न ही कभी इस क्षेत्र में किसी खान का पता चला था...जो यह समझ लिया जाता कि कोयला या लोहा निकालने के लिये यह सुरंगें बनायी गयी होंगी।"

"फिर यह सुरंगें किसने बनायीं?" रचना मुखर्जी ने पूछा—"इन सब बातों से क्या साबित होता है?"

"इन सब बात्तों से केवल एक ही चीज साबित होती है।"

"क्या?"

"यही कि जिन लोगों ने यह सुरंगें बनायी हैं और यह ग्लोब लगाये हैं...उन्होंने इनको सदा रहस्य में रखा है। और अगर वे लोग अभी भी हैं...तो इन्हें अब भी रहस्य में रखना चाहेंगे।"

"यानी आपका मतलब ये है कमाण्डर!" रचना मुखर्जी ने भयभीत स्वर में कहा—"कि यदि वह लोग हमें मिल गये...जिन्होंने यह सुरंगें बनायी हैं, तो वह हमारी हत्या कर देंगे...ताकि हम बाहर जाकर किसी को यहां का रहस्य न बता सकें?"

"मेरा कुछ अनुमान ऐसा ही है।" करण सक्सेना बोला—'इसीलिये मैं रिवॉल्वर अपने साथ लेकर आया हूं।"

"लेकिन आखिर वो कौन लोग हो सकते हैं कमाण्डर...आपको कुछ अंदाजा है?"

"नहीं...इस बारे में कोई अंदाजा नहीं। वह कोई भी लोग हो सकते हैं। इंसान भी या फिर किसी दूसरे ग्रह के वासी भी। इसके अलावा वो किसी विशेष प्रकार के इंसान भी हो सकते हैं और ये भी सम्भव है...यह समुद्री डाकुओं का कोई भूमिगत

अह्वा हो।"

"लेकिन यहां एक सवाल और पैदा हो रहा है कमाण्डर!"

"क्या?"

"यह भूमिगत झीलें कैसी हैं...यह पानी कहां से आ रहा है?"

"जहां तक मैं समझता हूं...।" करण सक्सेना खूब सोच-विचार कर बोला—"ये झीलें नहीं हैं।"

"फिर क्या हैं?"

"तुमने देखा है कि हमारा केबिन सुरंगों और मेहराबों से गुजरकर आया है तथा यह सुरंग जिसमें हम चल रहे हैं...पहली सुरंग से ऊपर की सतह पर स्थित है। क्यों...मैं ठीक कह रहा हूं न?"

"हां...लगता तो यही है।"

"मेरा ख्याल है कि यह सुरंगें यहां तह-दर-तह बनी हुई हैं। यानी पहली तह वो है...जिसमें अब पानी भरा हुआ है। इसके अलावा दूसरी तह वो है...जिसमें अब हम चल रहे हैं। इसी प्रकार शायद हमारे ऊपर भी कुछ तहें होंगी। पहले ऊपर केवल मरुस्थल था...इसलिये कोई खतरा नहीं था। अब समुद्र है। हिन्द महासागर का पानी रेत से गुजरकर जमीन की सतह फोड़कर नीचे घुस गया...इसीलिये हिन्द महासागर में वो भंवर बना हुआ था। यह वही पानी है...जो इन सुरंगों और गुफाओं में भर गया है और झील की तरह दिखाई दे रहा है।"

"यही बात मालूम होती है।" रचना मुखर्जी ने कहा—"बहरहाल, अब मुझे विश्वास हो गया है कि अगर हम जीवित वापस अपने संसार में जा सकें...तो शायद संसार को एक विचित्र कहानी सुना सकें।"

कमाण्डर करण सक्सेना चलते-चलते रुका, तो रचना मुखर्जी ने कहा—"क्या हुआ?"

"एक ख्याल मेरे दिमाग में आया है।"

"क्या?"

उसने ऊपर की तरफ देखा।

सुरंग की छत मुश्किल से आठ-दस फुट ऊंची होगी...जिसमें वे प्रकाश के ग्लोब लगे थे।

"रचना...तुम्हें एक काम करना होगा।"

"क्या?"

"मैं दीवार से दोनों हाथ टिकाकर खड़ा हो जाता हूं...तुम मेरे कंधों पर चढ़ जाओ।"

"उससे क्या होगा?"

"तुम मेरे कंधों पर चढ़कर एक ग्लोब उतारने की कोशिश करो।"

"ओ०के० कमाण्डर...मैं समझ गयी कि तुम ग्लोब उतारकर क्या करना चाहते हो।" रचना मुखर्जी की आंखों में भी अब हल्की-सी चमक पैदा हो गयी थी।

उसने बिल्ली को अपनी गोद में से उतार कर वहीं एक पत्थर पर खड़ा कर दिया।

"माई स्वीट हार्ट सुंबा!" फिर वह बिल्ली को चुमकारते हुए बोली–"तुम अच्छी बच्चियों की तरह थोड़ी देर यहीं खड़ी रहो।"

बिल्ली 'म्याऊं' करके उसी पत्थर पर बैठ गयी।

वह मानो रचना मुखर्जी की हर बात समझ रही थी।

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना अपने दोनों हाथ बड़ी मजबूती के साथ दीवार पर टिकाकर खड़ा हो गया।

"क्या मैं आपकी पीठ पर चढ़ जाऊं कमाण्डर?"

"हां...चढ़ जाओ।" करण सक्सेना ने अपने हाथ दीवार पर और मजबूती के साथ टिकाये।

"रेडी!"

"यस...आई एम रेडी।"

रचना मुखर्जी तुरन्त उसकी पीठ पर पांव रखकर ऊपर चढ़ गयी।

करण सक्सेना जरा भी टस-से-मस न हुआ।

वह मानो पत्थर की शिला में परिवर्तित हो चुका था।

उसकी पीठ पर चढ़ी रचना मुखर्जी बड़ी देर तक ग्लोब को इधर-से-उधर घुमाने का यत्न करती रही...लेकिन ग्लोब अपने स्थान से हिला तक नहीं।

"क्या बात है?" करण सक्सेना नीचे खड़ा-खड़ा बोला–"क्या ग्लोब उतर नहीं रहा है?"

"उतरना तो बहुत दूर की बात है कमाण्डर...वह अपने स्थान से हिल भी नहीं रहा।"

"जरा ध्यान से देखो...उसमें पेंच वगैरह लगे हो सकते हैं।"

रचना मुखर्जी ने उंगली से टटोला कि शायद उसमें पेंच आदि लगे हों।

लेकिन ग्लोब में ऐसा कुछ नहीं था।

पेंच तो बहुत दूर की बात है...उसमें कहीं कोई जोड़ तक दिखाई नहीं पड़ रहा था। उन्हें देखने पर बिल्कुल ऐसा महसूस होता था...जैसे ग्लोब छत में जड़ हुए हों।

आखिर में रचना मुखर्जी ने झुंझलाकर ग्लोब में एक घूंसा भी जड़ा...मगर कुछ न हुआ।

उल्टे उसका हाथ ही झनझना उठा।

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं।" रचना मुखर्जी बोली–"मैं अब नीचे उतर रही हूं।"

"क्या ग्लोब नहीं उतरा?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"नीचे उतरकर मैं कारण बताऊंगी।"

"तो तुम शीशा तोड़कर देखो...इसका राज खुलना बहुत जरूरी है।"

"लेकिन शीशा मैं किस चीज से तोड़ूं?"

करण सक्सेना ने इधर-उधर देखा, फिर उसने रचना मुखर्जी का और अपने शरीर का सारा भार एक हाथ पर डालकर दूसरे हाथ से रिवॉल्वर जेब से निकालकर रचना मुखर्जी की तरफ बढ़ायी।

"यह लो...इसकी बैरल का प्रहार ग्लोब पर करो।"

रचना मुखर्जी ने रिवॉल्वर ले ली।

फिर उसने एक हाथ दीवार पर टिकाकर अपनी पूरी शक्ति से रिवॉल्वर की बैरल का प्रचण्ड प्रहार ग्लोब पर किया।

बिल्कुल ऐसी आवाज पैदा हुई...जैसे किसी धातु से कोई चीज टकराई हो–परन्तु ग्लोब का शीशा फिर भी न टूटा।

रचना मुखर्जी ने चार-पांच बार रिवॉल्वर की बैरल का प्रहार ग्लोब पर किया।

परन्तु ग्लोब उसी तरह कायम रहा।

उसमें कहीं मामूली-सी खरोंच तक न आयी।

आखिरकार रचना मुखर्जी थक-हारकर पीठ से नीचे उतर आयी और करण सक्सेना को रिवॉल्वर वापस करते हुए बोली—"इस ग्लोब को तोड़ना असम्भव है...यह किसी बहुत विचित्र किस्म के शीशे का बना हुआ है।"

"बशर्ते कि वह शीशा हो।"

"है तो वह शीशा ही।" रचना मुखर्जी पूरे कॉन्फिडेंस के साथ बोली—"क्योंकि उससे प्रकाश बाहर आ रहा है, लेकिन अब एक बात का संदेह मुझे भी हो रहा है—और बहुत पुरा सन्देह हो रहा है कमाण्डर!"

"कैसा संदेह हो रहा है?"

"यही कि ग्लोब में से निकलने वाला प्रकाश बिजली का प्रकाश नहीं है।"

"फिर किस चीज का प्रकाश है?"

"मालूम नहीं...किस चीज का प्रकाश है।"

"तुम्हें इस बात पर संदेह क्यों है?"

"क्या कभी आपने बिजली के बल्ब पर चढ़े हुए ग्लोब को छूकर देखा है?"

"हा...कई मर्तबा छूकर देखा है।"

"फिर आपने क्या महसूस किया?"

"यही महसूस किया कि अगर बल्ब देर से प्रकाशित है...तो ग्लोब में हल्की-सी गर्मी आ जाती है।"

"बिल्कुल ठीक...जबकि यहां सारा मामला एकदम उल्टा है कमाण्डर! यह ग्लोब बर्फ की तरह ठण्डा पड़ा हुआ है।"

उस रहस्योद्घाटन पर करण सक्सेना के नेत्र आश्चर्य से फैल गये।

वह एक हैरान कर देने वाला मामला था।

"बड़ी विचित्र बात है।" करण सक्सेना बोला—"इसका मतलब है...इस ग्लोब के अंदर बल्ब मौजूद नहीं है और न खुद यह ग्लोब ही बल्ब है।"

"यह निश्चित बात है कि इसके अन्दर बल्ब नहीं है...वरना इसे गरम होना चाहिये था।"

"यह एक नई उलझन पैदा हुई।"

"वाकई यह एक बड़ी गहरी उलझन है कमाण्डर...जिसके बारे में सोच-सोचकर मैं भी परेशान हो रही हूं। मैं आपको एक सलाह देना चाहती हूं।"

"बोलो।"

"अब हमें ग्लोब वाले इस मामले को भूलकर किसी तरह वह मार्ग तलाश करना चाहिये...जिधर से हवा आ रही है। अगर हमने वो मार्ग तलाश कर लिया...तो हमारे सारे संकट एक ही झटके में खत्म हो जायेंगे।"

"शायद तुम ठीक कह रही हो।"

करण सक्सेना उस सुरंग में दोबारा आगे की तरफ बढ़ गया। सुंबा भी फौरन ही उछलकर रचना मुखर्जी की गोद में आ गयी थी। उसके बाद रचना मुखर्जी भी करण सक्सेना के पीछे-पीछे सुरंग में आगे बढ़ी।

□□□

□□□

वह सुरंग में चलते रहे।

चलते रहे।

सुरंग में चलते-चलते काफी देर बाद वह एक कमरेनुमा गोल गुफा में पहुंच गये। वह कमरेनुमा गोल गुफा बड़े हिसाब से तराशी गयी थी और वहां से आगे सुरंग दो भागों में बंट गयी थी।

एक सुरंग...जो बिल्कुल सीधे जाती थी।

दूसरी सुरंग...जो बायीं तरफ को चली गयी थी।

अपने सामने दो-दो सुरंग देखकर अब उन दोनों की खोपड़ी चकरघिन्नी की तरह घूमी।

"यह एक नई मुश्किल आयी।" करण सक्सेना ठहरकर बोला—"अब हम किस तरफ जायें?"

"यहां भी मैं आपको एक सलाह देती हूं कमाण्डर!"

"क्या?"

"हमारे लिये दोनों रास्ते बराबर हैं कमाण्डर!" रचना

मुखर्जी ने जवाब दिया—"हम चाहे जिस तरफ जा सक हैं...हमारे ऊपर कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। अच्छा है...हम सिक्का उछालकर देख लें। हमारा भाग्य जिस तरफ ले जायेगा...हम उसी तरफ खुशी-खुशी चले जायेंगे।"

"ऑल राइट...यह ठीक है। इस तरह हमारे बीच अच्छा-खासा खेल भी हो जायेगा।"

"यस कमाण्डर!"

करण सक्सेना ने अपनी जेब से अब तक एक सिक्का निकाल लिया...फिर वह वो सिक्का रचना मुखर्जी के सामने करता हुआ बोला—"यदि 'हैड' सामने आया...तो हम सीधे चलेंगे और अगर 'टेल' आया...तो हम बायीं तरफ वाली सुरंग में घूम जायेंगे। करैक्ट?"

"करैक्ट।"

करण सक्सेना ने सिक्का उछाला।

सिक्का टन्न् की आवाज करता हुआ नीचे फर्श पर गिरा।

'हैड' ऊपर था।

'हैड...बस तय हो गया।" रचना मुखर्जी तुरन्त बोली—"हम सीधे-सीधे सामने वाली सुरंग में चलेंगे...फिर यह सुरंग हमें चाहे कहीं भी ले जाये।"

"चलो।"

वह एक बार फिर सीधी जा रही सुरंग में आगे की तरफ चल पड़े।

अब वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जा रहे थे...हवा में नमी का अहसास बढ़ता जा रहा था और एक विचित्र तरह की बू उन्हें महसूस होने लगी थी...जैसी बरसात में फफूंदी लगने पर आती है।

लगभग डेढ़ फर्लांग के बाद अचानक सुरंग खत्म हो गयी और वह एक बहुत लम्बी-चौड़ी गुफा में निकल आये।

इस गुफा में कदम रखते ही एक बार फिर उनकी आंखें आश्चर्य से फैली-की-फैली रह गयीं।

यह गुफा बड़ी विचित्र थी।

इसकी छत बहुत ऊंची थी...जैसे पुराने जमाने के महलों की पाई जाती है और छत में थोड़े-थोड़े फासले पर बिल्कुल वैसे

ही ग्लोव लगे हुए थे...जो हरे रंग का प्रकाश बिखेरते थे। इसके अलावा फर्श पर जहां तक नजर जाती थी, छतरियां-सी खड़ी थीं...रंग-बिरंगी छतरियां...ऊदी, नीली, मटियाली, कत्थई!

उनके रंग बड़े-बड़े अजीब थे।

परन्तु करण सक्सेना और रचना मुखर्जी ने गौर से देखने पर पाया कि वह छतरियां नहीं थीं, बल्कि किसी किस्म के पेड़ थे...जिनके तने बहुत ज्यादा मोटे थे।

छतरीनुमा वह पेड़ दो-दो गज से भी ज्यादा चौड़े मालूम होते थे।

इसके अलावा वह पेड़ इतने बड़े थे कि छः फुट कद का करण सक्सेना भी उनके नीचे बड़े आराम से खड़ा हो सकता था।

कुछ देर तक वह दोनों आश्चर्य से उस लम्बी-चौड़ी गुफा को देखते रहे।

"मशरूम!" फिर एकाएक करण सक्सेना के मुंह से खुद-ब-खुद निकला—"छत्रक!"

"यह तो वाकई ऐसी छतरियां लगती हैं।" रचना मुखर्जी भी बोली—"जो बरसात में कूड़े के ढेरों पर या नमी की जगहों पर पैदा हो जाती हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि वह मात्र कुछ इंच लम्बी होती हैं और यह आठ-आठ, नौ-नौ फुट ऊंची हैं।"

"इसमें शक नहीं कि ये मशरूम (कुकुरमुत्ते) हैं...इसके अलावा क्या तुमने एक और खास बात महसूस की रचना?"

"क्या?"

"अगर तुम्हें ध्यान हो...तो हमें रास्ते में ऐसी कोई चीज नहीं मिली थी, जबकि अचानक यहां चारों तरफ यही ग्रांडियल मशरूम खड़े हैं। इसका मतलब समझती हो?"

"क्या मतलब' है?" रचना मुखर्जी के चेहरे पर असमंजसतापूर्ण भाव पैदा हुए।

"इसका मतलब है...मशरूम का यह जंगल यहां खास तौर पर उगाया जाता है। शायद वह लोग जिन्होंने इन मशरूमों को उगाया है...इन्हें खाते हों। तुम्हारी जानकारी के लिये बता दूं कि यूरोप और अमेरिका में मशरूम पकाकर खाये जाते हैं।"

"लेकिन क्या इतने बड़े-बड़े मशरूम पकाकर खाये जा

सकते हैं, कमाण्डर?''

रचना मुखर्जी के चेहरे पर आश्चर्य था।

घोर आश्चर्य!

वह फटे-फटे नेत्रों से लगातार मशरूम की उन विशालकाय छतरियों को देखे जा रही थी।

''यदि यह मशरूम खाने के लिये नहीं हैं।'' करण सक्सेना बोला—''तो फिर इन्हें यहां उगाने से क्या फायदा और इनका दूसरा कोई इस्तेमाल भी क्या हो सकता है?''

''कमाण्डर!'' रचना मुखर्जी बड़े भाव-विभोर अंदाज में उन मशरूमों को देखते हुए बोली—''जानते हो...इन्हें देखकर मुझे अपना बचपन याद आ रहा है।''

''वह कैसे?''

''बचपन में मैंने एक कहानियों की किताब पढ़ी थी। उस किताब में चित्र भी बनाये गये थे। दरअसल इंग्लैण्ड की दादी-अम्मायें यह कहानी आज भी अपने बच्चों को सुनाती हैं कि किसी देश में बड़े-बड़े पेड़ों की तरह छतरीदार मशरूम होते हैं और बौने मशरूमों के उस जंगल में रहते हैं।''

''तुम ठीक कहती हो...मैंने भी अपने बचपन में यह कहानी पढ़ी थी। चलो...जरा आगे चलकर देखते हैं कि मशरूमों के यह पेड़ कैसे हैं?''

यह कहकर कमाण्डर करण सक्सेना एक पेड़ की तरफ बढ़ा और उसने उसे छूकर देखा।

उस पेड़ का तना बिल्कुल रबड़ की तरह मुलायम था।

इसके अलावा हल्के हरे प्रकाश में मशरूम के वह पेड़ अजीब भी काफी लग रहे थे।

बिल्कुल ऐसा लग रहा था...जैसे वह परियों के किसी देश में आ गये हों।

या फिर वह कोई बहुत तिलिस्मी जगह हो।

वह दोनों कुछ देर तक पेड़ों के बीच घूमते रहे...फिर उनको एक पेड़ अलग-थलक खड़ा नजर आया।

कमाण्डर करण सक्सेना ने उस पेड़ को देखते ही अपनी जेब से एक लम्बे फल वाला चाकू निकाल लिया।

चाकू काफी नुकीला था और उसका दस्ता तांबे का

था...जिस पर बड़ी खूबसूरत नक्काशी की गयी थी।

"तुम जरा दूर खड़ी हो जाओ।" करण सक्सेना, रचना मुखर्जी से बोला—"मैं इस पेड़ को चाकू से काटकर देखता हूं।"

रचना मुखर्जी पीछे रह गयी।

जबकि करण सक्सेना ने आगे बढ़कर मशरूम के तने में जोर से चाकू मारा।

तुरन्त चाकू उसके अन्दर इस तरह घुसता चला गया था...जैसे वह तना किसी बहुत नरम और गुदगुदी-सी चीज़ का बना हो।

दो-तीन चाकू मारने पर ही तना कट गया और पूरा पेड़ धब्ब से जमीन पर आ पड़ा। नीचे गिरते ही उसकी छतरी टूटकर लुढ़कती हुई दूर चली गयी और एक जगह जाकर ठहर गयी।

करण सक्सेना टूटी हुई छतरी के पास पहुंचा और उसने लम्बे फल वाले चाकू से उसका कुछ भाग काटा। वह पाव रोटी की तरह बहुत नरम और छेददार था।

"कमाण्डर!" रचना मुखर्जी बोली—"हमें इसे खाकर देखना चाहिये।"

"यही मैं सोच रहा हूं।"

करण सक्सेना ने उसका जरा-सा टुकड़ा अपने मुंह में रखा और फिर उसे आहिस्ता से चबाकर देखा।

"कैसा है?"

"स्वाद हल्का मीठा-सा है।" करण सक्सेना बोला—"और उसमें से बरसाती मशरूम की बू आ रही है। लो...तुम भी खाकर देखो।"

रचना मुखर्जी ने भी मशरूम का छोटा-सा टुकड़ा अपने मुंह में रखा और उसे चबाया।

उसका स्वाद बिल्कुल वैसा ही था...जैसा करण सक्सेना ने बताया था।

अभी रचना मुखर्जी धीरे-धीरे उस टुकड़े को चबा ही रही थी कि एकाएक वो चौंक पड़ी।

उसके चेहरे पर भय के निशान पैदा हुए और वह मुंह चलाना मानो बिल्कुल भूल गयी।

"क...कमाण्डर!" उसके मुंह से घुटी-घुटी-सी आवाज

निकली।

"क्या हुआ?"

"लगता है, मैं पागल हो गयी हूं...मेरा दिमाग चल गया है।"

"लेकिन हो क्या गया है?"

"वह सामने की तरफ देखो...बौना! कहानी का बौना!"

करण सक्सेना ने तुरन्त उस तरफ देखा...जिधर रचना मुखर्जी ने इशारा किया था और उस तरफ देखते ही उसके नेत्र भी फटे-के-फटे रह गये।

तीन-चार गज के फासले पर मशरूम के पेड़ के नीचे एक बौना खड़ा था।

उसका कद ज्यादा-से-ज्यादा साढ़े चार फुट होगा। उसके शरीर पर कमर से घुटनों तक कपड़े जैसी कोई चीज बंधी थी। उसका शरीर भूरे रंग का था और बड़ी-बड़ी काली आंखें थीं...जो खूबसूरत होने के बजाय भयानक मालूम होती थीं।

लेकिन उन आंखों में उदासी जैसे भाव थे।

चुप-चुप जैसे भाव थे।

करण सक्सेना अभी उस बौने को ध्यान से देख ही रहा था कि रचना मुखर्जी जोर से बोली—"कमाण्डर...वह देखो...एक और बौना!"

करण सक्सेना ने अपनी गर्दन घुमाकर देखा...तो और दूसरा बौना भी नजर आ गया।

वह एक दूसरे पेड़ की आड़ में खड़ा था और खाली-खाली निगाहों से उन्हीं दोनों को देख रहा था।

"एक और!" रचना मुखर्जी फिर चिल्लाई।

और फिर उसके बाद तो जैसे वह पूरा जंगल बौनों से भरा हुआ नजर आने लगा।

□□□

□□□

हर तरफ अब बौने-ही-बौने दिखाई पड़ रहे थे।

दस!

पन्द्रह!

बीस!

उनकी अब भीड़-की-भीड़ नजर आ रही थी।
ईश्वर जाने वह कितने थे।
तकरीबन हर मशरूम की आड़ से एक बौना निकलकर सामने आ गया था।
उनमें एक बात को लेकर समानता थी।
वह सब-के-सब बड़ी खामोश और उदास-उदास नजरों से उन्हें घूर रहे थे। जबकि रचना मुखर्जी उन बौनों को देखकर इतना डर गयी थी कि वह करण सक्सेना के पीछे जाकर छुप गयी और उसने अपने एक हाथ से उसका ओवरकोट पकड़ लिया।
करण सक्सेना ने फौरन अद्वितीय फुर्ती के साथ अपने ओवरकोट की जेब से एक कोल्ट रिवॉल्वर निकाल ली।
रिवॉल्वर हाथ में आते ही उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकिनी की तरह घूमी और उंगली ट्रेगर की तरफ झपटी।
"नहीं कमाण्डर!" रचना मुखर्जी चिल्लाई—"नहीं...गोली मत चलाना।"
"लेकिन क्यों?"
"क्योंकि यह बौने सूरत से खतरनाक नजर नहीं आते...ऐसा नहीं लगता कि यह हमें कोई नुकसान पहुंचायेंगे।"
"फिर भी हमें सतर्क रहना चाहिये डार्लिंग!" करण सक्सेना रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े बोला—"बेहतर है कि हम सुरंग में वापस चलें।"
"ठीक है...चलो।"
उन दोनों की निगाहें पूरी मुस्तैदी के साथ उन बौनों के ऊपर टिकी हुई थीं...उनके ऊपर निगाह गड़ाये-गड़ाये वह बहुत धीरे से दो कदम पीछे हटे।
और!
उनके पीछे हटते ही बौनों में जैसे जीवन आ गया। एकदम पूरे जंगल से सरसराहट की आवाजें आने लगीं और वह बौने उनकी तरफ बढ़ने लगे।
"क...कमाण्डर!" रचना मुखर्जी फुसफुसायी—"यह हमारी तरफ ही बढ़ रहे हैं।"
"मैं देख रहा हूं।"
वह दो कदम और पीछे हटे।

बौनों की रफ्तार और तेज हो गयी।

"भागो!" करण सक्सेना एकाएक हलक फाड़कर चिल्लाया—"रचना...भागो।"

वह दोनों अपनी पूरी ताकत से सुरंग की तरफ भागे।

उनके पीछे जोर-जोर से नंगे पैरों की सरसराती आवाजें आने लगीं...जो बौनों के दौड़ने की आवाजें थीं।

उन्हें डर था...कहीं बौने उन तक न पहुंच जायें, क्योंकि उनकी संख्या काफी ज्यादा थी।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

वह भागते हुए किसी तरह सुरंग के मुहाने तक पहुंच गये...वहां अब वो कुछ सुरक्षित थे।

"कमाण्डर!" रचना मुखर्जी चीखी—"बौने हमारी तरफ बढ़े चले आ रहे हैं...उन्हें किसी तरह रोको।"

करण सक्सेना एकदम बौनों की तरफ पलटा और उसने अपने हाथ में मौजूद कोल्ट रिवॉल्वर उनकी तरफ तान दी। वह एक बार फिर करण सक्सेना की उंगलियों के गिर्द फिरकिनी की तरह घूमी थी।

रिवॉल्वर तानने का अप्रत्याशित रिजल्ट निकला।

शायद बौने जानते थे कि रिवॉल्वर एक हथियार है...इसलिये रिवॉल्वर के तनते ही वह सब-के-सब अपनी जगह ठिठक गये।

"खबरदार...कोई आगे नहीं बढ़े!" करण सक्सेना उन्हें चेतावनी देता हुआ गुर्राया—"कोई नहीं! हम बाहर जाना चाहते हैं...ऊपर!"

वह सब खाली-खाली नजरों से उन्हें घूरते रहे। ऐसा लग रहा था...जैसे करण सक्सेना की कोई बात उनके समझ नहीं आयी थी।

वह उस भाषा से अनभिज्ञ थे।

यह बात करण सक्सेना ने भी महसूस की।

इस बार उसने उन्हें इशारों से अपनी बात समझाने की कोशिश की।

"मैं!" करण सक्सेना ने अपने सीने पर हाथ रखकर कहा और फिर ऊपर की तरफ इशारा किया—"ऊपर जाना चाहता

हूं...समुद्र तल पर।"

बौनों में फिर भी कोई हरकत न हुई और न ही उनके मुंह से कोई आवाज निकली।

वह बिल्कुल गूंगे बने खड़े थे।

रचना मुखर्जी जो बिल्ली को गोद में लिये अभी तक करण सक्सेना के पीछे खड़ी थी...वह अब घूमकर उसके सामने आ गयी और बोली—"यह हमारी भाषा नहीं समझ रहे हैं...आप इनसे अलग-अलग लेंग्यूवेज में बात करके देखो कमाण्डर!"

"शायद तुम ठीक कहती हो...इनसे अलग-अलग लेंग्यूवेज में बात करके ही देखना चाहिये।"

❑❑❑

❑❑❑

तभी बौनों के अन्दर हरकत पैदा हुई।

और जिस वजह से हरकत पैदा हुई...वह बहुत आश्चर्यजनक मामला था।

दरअसल, रचना मुखर्जी करण सक्सेना के पीछे से निकलकर जैसे ही सामने आयी...तो उसके सामने आते ही यकायक बौनों में जोश और हलचल-सी पैदा हो गयी।

वह तरकीबन सौ के लगभग थे और उनमें पांच फुट कद से ज्यादा कोई नहीं था।

रचना मुखर्जी को देखते ही वह उंगलियों से उसकी तरफ इशारा करते हुए आपस में कुछ कहने लगे।

वो क्या कह रहे थे...यह दोनों में से किसी के समझ न आया।

अलबत्ता करण सक्सेना ने अनुभव किया कि वह रचना मुखर्जी से ज्यादा बिल्ली को देखकर जोश में आये थे।

फिर एक काम और हुआ।

वह सब-के-सब अपने सिर झुकाकर उनकी तरफ दौड़ पड़े।

करण सक्सेना ने घबराकर फायरिंग शुरू कर दी। एक पिस्टल रचना मुखर्जी के पास भी थी...वह भी गोलियां चलाने से नहीं चूकी।

धांय!

धांय!!

धाय!!!

पूरा जंगल मानो गोलियों की आवाज से थर्रा उठा।

जो सात-आठ बौने दौड़ने वालों में सबसे आगे थे...वह गिरकर तड़पने लगे और जोर-जोर से चिल्लाने लगे...जबकि शेष बौने अपनी-अपनी जगह रुक गये थे।

गिरने और गोलियों से मरने वाले बौने बिल्कुल बच्चों की तरह मासूम महसूस हो रहे थे।

जैसे कोई बहुत अबोध बच्चे हों।

वह अपनी उदास-उदास आंखों से करण सक्सेना तथा रचना मुखर्जी की तरफ देख रहे थे और मर रहे थे।

"ओह कमाण्डर!" रचना मुखर्जी एकाएक बहुत भाव-विह्वल अंदाज में बोली—"वह मरते हुए बिल्कुल बच्चों की तरह लग रहे हैं...हमें उनके ऊपर गोलियां नहीं चलानी चाहिये थीं।"

"लेकिन गोलियां चलाने के अलावा हमारे सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं था डार्लिंग!" करण सक्सेना बोला—"क्योंकि हमें कुछ मालूम नहीं कि यह किस किस्म के लोग हैं और हमारी तरफ क्यों दौड़े चले आ रहे हैं?"

करण सक्सेना और रचना मुखर्जी अब सुरंग के अन्दर थे और वह बौने सुरंग के मुहाने पर खड़े होकर दोबारा अर्द्धवृत्त की सूरत में अपने ग्रुप को क्रम देने लगे थे।

"यह क्या कर रहे हैं?"

"लगता है...वह दोबारा हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहते हैं।" करण सक्सेना बोला—"और उसी की तैयारी कर रहे हैं।"

"माई गॉड...तब तो हमें यहां से भागकर केबिन में ही पहुंचने का प्रयत्न करना चाहिये।"

"रचना...भागो!" एकाएक करण सक्सेना चिल्ला पड़ा।

वह दोनों फिर भागने लगे।

धुआंधार स्पीड से।

बेतहाशा।

उनके कदमों की आवाजें सुरंग में धमाकों की तरह गूंज रही थीं...जैसे बम फट रहे हों।

उनके भागते ही बौने भी उनके पीछे-पीछे अपनी पूरी ताकत से भागने लगे।

करण सक्सेना ने सुरंग में भागते-भागते फिर कुछ गोलियां चलायीं।

गोलियों के चलते ही रचना मुखर्जी ने पुनः कुछ बौनों के चिल्लाने की आवाज सुनी।

वह चीखे और गिर पड़े।

कई बौने और मर गये थे।

"क...कमाण्डर!" एकाएक रचना मुखर्जी बड़े दहशतजदा अंदाज में फुसफुसाई—"वह समाने की तरफ देखो।"

करण सक्सेना ने सामने की तरफ देखा और एक क्षण के लिये तो उस जैसे हिम्मतवर आदमी का दिल भी बैठता चला गया।

वह दृश्य ही ऐसा था।

सुरंग के दूसरी तरफ से भी बौनों की एक फौज उनकी ओर बढ़ रही थी।

"हे भगवान...यह तो हम बुरी तरह फंस गये हैं।"

"यस कमाण्डर!"

सचमुच अब उनके भाग निकलने का कोई मार्ग नहीं था।

करण सक्सेना और रचना मुखर्जी ने सुरंग के दोनों तरफ अब अंधाधुन्ध फायरिंग शुरू कर दी।

बौने चीखने लगे।

परन्तु वो भला आखिर कब तक गोली चला सकते थे और गोलयों से कितने बौनों को रोक सकते थे।

आखिर वह लोग दोनों तरफ से मधुमक्खियों के झुण्ड की तरह उनके ऊपर टूट पड़े।

"न...नहीं।"

रचना मुखर्जी की एक बहुत हृदयविदारक चीख निकली और वह धड़ाम् से जमीन पर जा गिरी।

पन्द्रह-बीस बौने एकदम से उसके ऊपर चढ़ गये थे और उन्होंने उसकी दुर्गति कर डाली थी।

यही हाल करण सक्सेना का हुआ।

उसके ऊपर भी पन्द्रह-बीस बौने एकदम से टूट पड़े और

अपने छोटे-छोटे हाथों से उस पर घूंसों की वर्षा करने लगे।

करण सक्सेना ने उनका जमकर मुकाबला किया। मगर मुश्किल ये थी...बौनों की संख्या हर पल बढ़ती जा रही थी। वह झुण्ड-के-झुण्ड के रूप में वहां जमा होते जा रहे थे और सबसे बड़ी बात ये थी कि वो घबराये हुए बिल्कुल नहीं थे।

जल्द ही करण सक्सेना की सहनशक्ति जवाब दे गयी।

फिर उसकी आंखों के सामने अंधेरा घिरता चला गया...घुप्प अंधेरा!

❑❑❑

❑❑❑

दूसरी बार कमाण्डर करण सक्सेना की आंख खुली...तो उसे ऐसा लगा जैसे वह कई सदियों की नींद सोकर उठा हो। उसका पूरा शरीर एकदम बेजान था और दिमाग पर एक परदा-सा पड़ा हुआ था...काला परदा।"

उस समय करण सक्सेना को कुछ मालूम नहीं था...वो कहां है?

किस जगह है?

आंख खुलते ही उसने छत की तरफ देखा।

छत बहुत ऊंची थी और थोड़ी गोलाकार थी...उस छत के बीच में वही ग्लोब लटका हुआ था, जो ठण्डा हरा प्रकाश बिखेर रहा था।

उस तरह के ग्लोब वहां जगह-जगह थे।

वो छत इंसानी हाथों से बनायी हुई नहीं थी, बल्कि उसमें हर जगह ऊबड़-खाबड़ पत्थर-ही-पत्थर नजर आ रहे थे...जैसे वह कोई प्राकृतिक गुफा हो। अलबत्ता उस गुफा को थोड़ा-बहुत तराश कर इंसानी हाथों ने एक कमरे की शक्ल दे दी थी।

दीवारों में भी पत्थर-ही-पत्थर नजर आ रहे थे और उन पत्थरों पर काफी अजीब-अजीब किस्म के चित्र बने थे।

चित्र सिर्फ तीन रंग से बनाये गये थे।

अलबत्ता चित्र देखकर यह साफ पता चलता था कि वह किसी नौसिखिये आर्टिस्ट ने बनाये हैं...जिसका हाथ अभी साफ नहीं है।

चित्र अलग-अलग आकृति लिये हुए थे।

उनमें जहां कुछ मशरूम के जंगलों के चित्र थे...वहीं कुछ बौनों के भी चित्र थे और कुछ आम इंसानों के चित्र थे...जिनके रंगों से उनकी जाति का पता चलता था।

वह चित्र देखते-देखते अचानक करण सक्सेना को सुरंग की दुर्घटना याद आ गयी और बौनों के झुण्ड-के-झुण्ड याद आये।

इसके साथ ही उसे रचना मुखर्जी का ख्याल आया।

और!

रचना मुखर्जी का ख्याल आते ही उसकी समस्त सोई हुई इन्द्रियां एकदम से जाग उठीं।

"रचना!" उसने रचना मुखर्जी को जोर से आवाज दी—"रचना!"

करण सक्सेना को हैरानी हुई कि उस समय उसकी आवाज बहुत कमजोर थी और किसी बीमार आदमी जैसी थी।

उसने गर्दन घुमाकर इधर-उधर देखा...रचना मुखर्जी वहां कहीं नहीं थी और वो कमरेनुमा गुफा एक बिल्कुल आम कमरे के बराबर थी।

उसमें एक तरफ दरवाजा भी काटकर बनाया हुआ था...लेकिन उस दरवाजे में किवाड़ फिट नहीं था।

दरवाजा खुला था।

करण सक्सेना ने देखा...वो पत्थर की एक चिकनी और लम्बी-सी सिला पर लेटा हुआ था, जो दीवार के साथ ही पत्थर काटकर बनायी गयी थी। उसके सामने वाली दीवार में एक वैसी ही पत्थर की बैंच बनी थी। उसके नीचे कोई गुदगुदी चीज थी...जो एक इंच चौड़ी किसी चीज से बुनकर बनायी गयी थी।

वहां मौजूद हर चीज ऐसी लग रही थी...जैसे सैकड़ों वर्ष पहले के इंसानों द्वारा बनायी गयी हो।

करण सक्सेना के बिल्कुल बराबर में एक गोल कटा हुआ पत्थर रखा था और उस पत्थर पर ही पत्थर का एक प्याला मौजूद था...जिसको शायद घिसकर पॉलिश किया गया था।

पॉलिश उस पर वाकई बड़े नफीस ढंग से की गयी थी।

करण सक्सेना ने देखा...प्याले में पानी था।

उसने उठना चाहा...तो उसे महसूस हुआ कि वह बहुत कमजोर हो गया। उसके शरीर में इतनी भी ताकत नहीं थी कि

वो उठकर दरवाजे तक जा सके।

करण सक्सेना का हाथ अपने चेहरे से जाकर टकराया तो उसे पता चला कि उसके माथे पर पट्टी भी बंधी हुई थी। उसने सोचा...वह न जाने कितने दिन बेहोश रहा है और रचना मुखर्जी न मालूम कहां होगी!

रचना मुखर्जी!

वह रचना मुखर्जी के बारे में सोच-सोचकर परेशान होने लगा।

पानी को देखकर उसके अन्दर कुछ प्यास भी लगने लगी थी।

करण सक्सेना बड़ी मुश्किल के साथ उठकर बैठा और उसने प्याला उठाकर पानी पीया।

पानी का जायका कुछ अजीब-सा था। अलबत्ता पानी पीते ही उसे अपने अंदर कुछ जान-सी आती महसूस हुई।

उसकी आंखें चमक उठीं।

और सोचने-समझने की सलाहियत एकाएक काफी बढ़ गयीं। उसका दिमाग अब पूरी तरह जाग उठा था।

एक बात करण सक्सेना के पूरी तरह समझ आ चुकी थी कि वो अभी तक उसी भूमिगत संसार में है।

थोड़ी देर बैठने के बाद जब उसको अपने भीतर कुछ साहस और शक्ति अनुभव होने लगी...तो वह उठा, परन्तु पैरों पर खड़े होते ही उसको बड़े जोर का चक्कर आया...वह जल्दी से फिर वापस बैठ गया।

कमजोरी उसके शरीर में अभी तक बरकरार थी।

इसी तरह दो-तीन बार कोशिश करने के बाद वो कहीं चलने योग्य हो सका। चलते हुए उसकी टांगें बुरी तरह लड़खड़ा रही थीं।

और!

कठिनता के साथ वह दरवाजे तक पहुंच पाया।

फिर उसने दरवाजे से बाहर झांककर देखा।

बाहर एक बहुत लम्बा कॉरीडोर था और इस समय उस कॉरीडोर में भी हल्के हरे रंग का वही प्रकाश बिखरा था...जो ग्लोब में से निकल रहा था।

वहां गहन सन्नाटा व्याप्त था।

करण सक्सेना दीवार का सहारा लेकर बहुत धीरे-धीरे आगे चलने लगा।

उसके चलने की गति कितनी धीमी थी...इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वह आधा घण्टे में चालीस-पचास गज का फासला ही तय कर सका।

फिर पहली बार उसने ऐसी आवाजें सुनीं...जैसे बहुत-से लोग बोल रहे हों।

लेकिन आवाजें स्पष्ट नहीं थीं।

करण सक्सेना को संतोष हुआ कि वो वहां अकेला नहीं है।

वो धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा।

लगभग सत्तर गज चलने के बाद कॉरीडोर खत्म हो गया और वह अकेला ही एक हॉल जैसी गुफा के सामने पहुंचा।

हॉल जैसी गुफा!

जो बहुत बड़ी थी।

करण सक्सेना ने देखा कि बहुत-से लोग उस हॉल से एक पुल जैसी सुरंग के द्वारा कहीं जा रहे थे।

सबसे बड़ी बात ये थी...वह बौने नहीं थे।

वह सब इंसान थे।

उसी जैसे इंसान!

अपने जैसे इंसानों को देखकर करण सक्सेना का हौसला बहुत बढ़ गया।

"ठहरो भाइयों...ठहरो!" करण सक्सेना गुफा के दरवाजे पर पहुंचकर ठिठक गया और उसने उन्हें जोर से आवाज देनी चाही।

मगर!

उसमें कमजोरी इतनी आ गयी थी कि उसके मुंह से आवाज भी न निकल सकी।

"ट...ठहरो।" उसने फिर पूरे जोर लगाकर आवाज दी।

परन्तु नतीजा फिर शून्य।

अलबत्ता इस बार उसे जोर का चक्कर आ गया। उसे ऐसा लगा...जैसे जबरदस्त भूकम्प आ रहा हो।

हर चीज करण सक्सेना को डोलती महसूस होने लगी...वह सम्भलने की कोशिश करता. उससे पहले ही उसके घुटने मुड़ते चले गये और वो जमीन पर गिर पड़ा।

□□□

□□□

परन्तु कमाण्डर करण सक्सेना इस बार बेहोश नहीं हुआ था...लेकिन हल्की बेहोशी जरूर उसके ऊपर तारी थी।

उसकी आंखें उनींदी-सी हो गयी थीं।

वह सब कुछ देख रहा था...मगर कुछ समझ नहीं पा रहा था।

उसने देखा कि कुछ हाथों ने उसको उठाया और फिर वह उसे लेकर एक दिशा में चल पड़े।

वह उसे लेकर कहां जा रहे थे...कुछ मालूम न था।

करण सक्सेना को सिर्फ इतना अहसास हुआ कि उसके शरीर को एक बहुत गुदगुदे बिस्तर पर ले जाकर लिटा दिया गया था।

"कोई हिन्दुस्तानी आदमी मालूम होता है।" करण सक्सेना के कानों में आवाज पड़ी।

वह अंग्रेजी में बोल रहा था।

"बेचारा यह भी फंस गया।"

"क्या तुम होश में हो?" तभी किसी ने करण सक्सेना के कन्धे पकड़कर बुरी तरह झंझोड़े।

"ह...हां।" करण सक्सेना के हलक से बहुत घुटी-घुटी सी आवाज निकली—"ह...हां।"

"होश में है...हमें इसे पिलाना चाहिये।"

फिर करण सक्सेना को अपने सामने एक हाथ में प्याला नजर आया...वह मिट्टी का प्याला था।

उसके जिस्म को थोड़ा-सा उठाकर वह प्याला उसके होंठों से लगा दिया गया और फिर किसी ने अंग्रेजी में ही कहा—"पियो।"

करण सक्सेना अपने होंठ खोलते हुए थोड़ा हिचकिचाया।

न जाने वह क्या बला थी...जो उसे पिलाई जा रही थी।

"डोन्ट वरी जेन्टलमैन!" वह एक दूसरी आवाज

थी—"बेहिचक पियो...यह तुम्हारे अच्छे के लिये है।"

करण सक्सेना ने हिम्मत करके उस प्याले में मौजूद तरल पदार्थ का एक घूंट भरा।

वह कोई गाढ़ी-गाढ़ी गरम चीज थी...जिसमें कच्ची मिट्टी की-सी खुशबू थी और स्वाद हल्का-सा खारापन लिये मीठा-सीठा-सा था।

एक घूंट पीते ही करण सक्सेना को अपने पूरे शरीर में आग-सी जलती महसूस हुई और जान-सी आती चली गयी।

उसे अपने जिस्म के स्नायु-यंत्र जागते महसूस हो रहे थे।

करण सक्सेना ने दो घूंट और पिये तथा फिर कुछ देर आंखें बन्द किये पड़ा रहा।

फिर उसने आंखें खोलकर देखा।

अब कमाण्डर करण सक्सेना पूरी तरह होश में आ चुका था और वह सब कुछ बिल्कुल साफ-साफ देख रहा था। उसने देखा...तीन आदमी उसके नजदीक खड़े थे।

वह तीनों सामान्य मनुष्य दिखाई दे रहे थे। उनके शरीर पर पैबन्द लगे पुराने कपड़े थे...जबकि दो आदमियों के चेहरों पर लम्बी-लम्बी दाढ़ियां थीं।

"र...रचना कहां है?" उसने एक आदमी के चेहरे पर नजरें जमाकर थोड़ी कमजोर आवाज में कहा।

"कौन कहां है...अभी एकदम से यह सब जानने की जरूरत नहीं है।" वह शब्द एक लम्बे कद के आदमी ने कहे, जो नख-सिख से यूरोपियन मालूम होता था—"अभी तुम्हें आराम की बहुत सख्त जरूरत है जेन्टलमैन! अभी तुम सो जाओ। आंखें बन्द कर लो।"

"लेकिन...।"

"डोन्ट वरी...तुम्हारे हर सवाल का जवाब दिया जायेगा।"

खुद करण सक्सेना को भी यही महसूस हो रहा था कि उसे आराम की सख्त जरूरत है।

उसने आंखें बन्द कर लीं।

और यह शायद उस गरम और गाढ़ी चीज का ही प्रभाव था कि उसको तुरन्त नींद आने लगी।

कुछ ही देर बाद करण सक्सेना गहरी नींद सो गया।

❑❑❑

❑❑❑

न जाने कितनी देर बाद किसी ने उसको जगाया।

उसे सोते हुए कितना समय गुजर गया था...इसका खुद करण सक्सेना को भी अंदाजा न था।

उसने आंखें खोलकर देखा। उसके सामने एक आदमी खड़ा था।

वह उन्हीं तीनों में से एक था...जो सोने से पहले उसके नजदीक खड़े थे।

वह शक्ल-सूरत से हिन्दुस्तानी मालूम हो रहा था और उसके हाथ में दो प्याले थे।

प्यालों में क्या है?"

यह करण सक्सेना को भी मालूम न था।

"म...मैं इस वक्त कहां हूं?" उसने आंख खुलते ही सबसे पहले यही पूछा।

"सवाल बाद में करना...पहले यह खा लो।" उस आदमी ने एक प्याला उसकी तरफ बढ़ा दिया।

वह गारण्टी से कोई हिन्दुस्तानी था।

क्योंकि वह शब्द उसने शुद्ध हिन्दी में कहे थे।

करण सक्सेना ने देखा...उस प्याले में भी कोई खीर जैसी चीज थी और दूसरे प्याले में पानी था।

"यह क्या है?" करण सक्सेना ने उस खीर जैसी चीज की तरफ इशारा किया।

"नाम तो मुझे भी इसका नहीं मालूम।" वह बोला—"बस यहां खाने के लिये यही दिया जाता है।"

"इसको खाने से कुछ नुकसान तो नहीं होगा?"

"नहीं...कोई नुकसान नहीं होगा। मैं खुद कई सालों से यही सब खाता आ रहा हूं और मुझे आज तक कोई प्रॉब्लम नहीं हुई। तुम बेहिचक इसका सेवन कर सकते हो।"

करण सक्सेना ने जरा-सी वह चीज खाकर देखी।

उसका स्वाद न अच्छा था...न बुरा! बल्कि सच तो ये है कि उसमें कोई स्वाद ही न था। फिर भी करण सक्सेना ने

खीर जैसी वह चीज खा ली...क्योंकि उसका पेट खाली था और उसे बड़े जोर की भूख लग रही थी।

फिर उसने पानी पिया।

पेट भरने पर करण सक्सेना को अपने भीतर शक्ति-सी आती अनुभव हुई।

जब दोनों प्याले खाली हो गये, तो उसने मुंह साफ करते हुए कहा—"आल राइट! अब मुझे बताओ कि रचना कहां है?"

"क्या रचना नाम की वह लड़की तुम्हारे साथ थी?" उस आदमी ने पूछा।

"हां।" करण सक्सेना थोड़ा उत्साहित हुआ—"तुमने उसे देखा है?"

"नहीं...देखा तो नहीं है, लेकिन मैंने उस लड़की के बारे में सुना जरूर है।"

करण सक्सेना के चेहरे पर निराशा पुत गयी।

"वो इस वक्त कहां है?"

"मुझे नहीं मालूम कि वो इस वक्त कहां है। कम से कम वो लड़की यहां तो नहीं है।"

"यहां नहीं है!" करण सक्सेना आश्चर्यपूर्वक बोला—"यह आखिर कौन-सी जगह है?"

"अभी सवालों के जवाब जानने में बहुत ज्यादा जल्दी मत करो नौजवान! क्योंकि अभी तुम्हें यहां रहकर बहुत कुछ जानना सीखना है। हां...तुम्हारी दिल की तसल्ली के लिये मैं एक बात जरूरत बता सकता हूं।"

"क्या?"

"तुम रचना नाम की जिस लड़की का ज़िक्र कर रहे हो...वह तुम्हारी पत्नी या प्रेमिका चाहे जो हो, वह लड़की अगर जीवित थी...तो अब भी जीवित और सुरक्षित होगी।"

"लेकिन कहां होगी?" करण सक्सेना व्याकुल होकर बोला—"तुम पहेलियों में बातें कर रहे हो। आखिर तुम मुझे बताते क्यों नहीं कि यह कौन-सी जगह है?"

"तुम यहां आने वाले नये आदमी हो। इसलिये पहले तुम मुझे बताओ कि तुम यहां कैसे आये?"

"लेकिन...।"

"जैसा मैं तुमसे कह रहा हूं...वैसा करो।"

उसकी आवाज में सख्ती थी।

अजीब मामला था।

करण सक्सेना हर पल खुद को अजीब-सी परिस्थिति प घिरा अनुभव कर रहा था।

तंग आकर उसने शुरू से अंत तक की अपनी सारी कहानी उस आदमी को कह सुनायी।

उसकी कहानी सुनने के बाद वह आदमी काफी गम्भीर हो उठा।

वह शायद कुछ सोच रहा था।

"हूं!" फिर वो गहरी सांस लेकर बोला—"तो यह बात है। समुद्र का पानी जमीन की परत तोड़कर इन गुफाओं और सुरंगों में भर रहा है...इसीलिये वह परेशान नजर आते हैं।"

"लेकिन वह है कौन?" करण सक्सेना बोला—"किन की बात कर रहे हो तुम?"

"मैं बौनों की बात कर रहा हूं...वह आजकल काफी परेशान हैं और शायद इसी वजह से हैं।"

"ओह!"

करण सक्सेना उससे कोई और सवाल करता...तभी उस कमरे में दो आदमी और अंदर दाखिल हुए।

उनमें से एक आदमी गौरे रंग का कोई अंग्रेज था...जबकि दूसरे का रंग तांबे जैसा था।

वह सब-के-सब सभ्य संसार के लोग मालूम होते थे। यह बात दीगर है कि उनके देश और संस्कृति अलग थी।

करण सक्सेना उन सबके चेहरों को ध्यान से देखने लगा।

"कम से कम अपना परिचय तो मुझसे करा दो?" करण सक्सेना ने उस हिन्दुस्तानी से कहा।

"मेरा नाम सुधाकर है।" पहले आदमी ने कहा—"और जैसा कि मेरी बोल-चाल से ही मालूम चल रहा होगा कि मैं हिन्दुस्तानी हूं। जबकि चार्ल्स फ्रांसीसी है और किसी जमाने में यह आर्कियोलोजिस्ट (पुरातत्ववेत्ता) था, यांनी मुर्दा कौमों और उनकी सभ्यताओं पर जगह-जगह भटक कर रिसर्च करता था। ये यहां मरुस्थल में एक जगह खुदाई कर रहा था, जहां हजारों

वर्ष पहले किसी जाति के खण्डहर थे। खुदाई करते-करते ही यह समुद्र में गिर गया और यहां आ फंसा...अब यह हमारी तरह ही है।''

''ओह!''

करण सक्सेना की निगाह चार्ल्स पर ठिठक कर रह गयी।

फिर सुधाकर ने तीसरे आदमी की तरफ इशारा किया—''और इनसे मिलो...यह मिस्टर वरीस अहमद हैं। यह मिस्र के निवासी हैं और वरीस अहमद की अपेक्षा यह अपने उपनाम वरीस गड़बड़ से ज्यादा मशहूर हैं। इनके नाम के साथ 'गड़बड़' नाम जुड़ने के पीछे भी कई मजेदार किस्से मौजूद हैं। जैसे मिस्र के जिस शहर में यह पैदा हुए...इनके पैदा होते ही उस शहर में गड़बड़ हो गयी। वहां जातीय दंगे भड़क उठे। कर्फ्यू लग गया और दर्जनों लोग कत्लोगारत में मारे गये, फिर जिस दिन इनके अब्बूजान ने बड़े प्यार से इनका नाम वरीस अहमद रखा...उसी दिन इनके बड़े भाई साहब पतंग उड़ाते-उड़ाते अपनी छत से नीचे गिर पड़े और टांग तुड़वा बैठे। फिर जिस स्कूल में इनका एडमिशन हुआ...एडमिशन होने के बाद पहले दिन ही उस स्कूल के प्रिंसिपल साहब इन्तकाल फरमा गये। तब तक इनके नाम के साथ गड़बड़ नाम चस्पां हो गया था। ऐसी और ऐसी न जाने कितनी कहानियां इनके साथ जुड़ी हुई हैं। यहां तक कि जब जवान होने पर इन्हें विदेश भ्रमण का शौक चर्राया...तो यह अपने कुछ दोस्तों के साथ हिन्दुस्तान की तरफ रवाना हो गये और सबके साथ इस एक और जंजाल में आ फंसे।''

''यानी एक और गड़बड़!''

''बिल्कुल!'' सुधाकर मुस्कुराया—''यह गड़बड़ के ही बने हुए हैं। जहां ये होंगे...वहां गड़बड़ जरूर होगी।''

''यहां क्या गड़बड़ हुई?''

''अभी तक तो कुछ गड़बड़ नहीं हुई...लेकिन अंदेशा पूरा-पूरा है कि इस जगह भी गड़बड़ जरूर होगी।''

वरीस गड़बड़ के चेहरे पर शर्मिंदगी के भाव दिखाई पड़ने लगे।

''आप सुधाकर की बातों की तरफ ज्यादा तवज्जो मत

दीजिये जनाब!" वरीस गड़बड़ बोला–"अपने सुधाकर भाई को बोलने की जरा कुछ ज्यादा आदत है। आप सब अपने बारे में कुछ बताइये...जैसे आपका नाम बगैरा क्या है?"

"मेरा नाम करण है...करण सक्सेना।"

"आप हिन्द महासागर में क्या करने आये थे?"

"मैं एक मिशन से सम्बंधित कुछ जांच-पड़ताल करने आया था।"

सुधाकर उन शब्दों को सुनकर चौंका।

"करण सक्सेना...कहीं आप कमाण्डर करण सक्सेना तो नहीं?" सी.आई.डी. इंस्पेक्टर करण सक्सेना!"

"हां...मैं वही हूं।"

"ओह माई गॉड!"

सुधाकर अपने स्थान पर विस्मित-सा खड़ा रह गया।

कमाण्डर करण सक्सेना!

वह नाम सुनकर चार्ल्स और वरीस गड़बड़ भी चौंके।

वो नाम भला किसका सुना हुआ नहीं था।

करण सक्सेना के प्रति अब सबकी आंखों में बहुत सम्मान के भाव उभर आये थे और वह उसे यूं देख रहे थे...जैसे उनके बीच काफी बड़ा आदमी आ गया हो।

करण सक्सेना ने एक 'डनहिल' निकालकर सुलगाई और उसके छोटे-छोटे दो कश लगाये।

करण सक्सेना ने उन तीनों को सिगरेट ऑफर की...तो उन तीनों ने ही लगभग झपटकर एक-एक सिगरेट सुलगा ली। वह बिल्कुल भूखों की तरह सिगरेट पर झपटे थे और जंगयिलों की तरह उसके कश लगाने लगे।

साफ लग रहा था...उन्हें सिगरेट जैसी चीज वर्षों बाद मिली है।

"मैं आप लोगों से एक बहुत खास बात पूछना चाहता हूं।" करण सक्सेना उन तीनों के चेहरे काफी ध्यान से पढ़ता हुआ बोला।

"पूछिये. कमाण्डर!"

"आप सब लोग यहां क्यों मौजूद हैं और यहां क्या कर रहे हैं?"

"हम सब यहां रहते हैं।"

करण सक्सेना के नेत्रों में आश्चर्य उबल पड़ा।

"इन गुफाओं में रहते हो?"

"हां।"

"क्यों?"

"इसलिये कि अगर हम यहां से बाहर जाना भी चाहें...तब भी नहीं जा सकते। हम सब यहां कैदी हैं।"

"कैदी!"

"यस कमाण्डर!"

लेकिन आप लोग यहां किसके कैदी हैं?"

"यहां जो बौने रहते हैं।" वरीस गड़बड़ बोला—"उनके कैदी हैं?"

"बाई गॉड!" करण सक्सेना 'डनहिल' का एक और कश लगाकर बोला—"आप लोग यहां इस हालत में कब से हो...मेरा मतलब है कितना समय गुजर गया?"

वरीस गड़बड़ दायें-बायें बगलें झांकने लगा।

करण सक्सेना के उस सवाल का एकाएक उससे कोई जवाब न दिया गया।

"यह कौन-सी तारीख है कमाण्डर?" चार्ल्स ने पूछा।

"सौलह सितम्बर को मेरे साथ हिन्द महासागर में दुर्घटना घटी थी।" करण सक्सेना बोला।

"सौलह सितम्बर!"

"हां।"

"मैं तारीख और महीना नहीं, बल्कि सन् जानना चाहता हूं कमाण्डर! हम तो जब से यहां आकर कैद हुए हैं...तब से हमें तो सन् भी याद नहीं रहा।"

"यह उन्नीस सौ पिचयान्वे है।"

"उन्नीस सौ पिचयान्वे!"

"यस!"

"हे जीसस!" चार्ल्स के चेहरे पर भूकम्प जैसे भाव उभरे—"इसका मतलब मुझे यहां आये हुए छह वर्ष हो चुके हैं।"

"और मुझे सात वर्ष।" वरीस गड़बड़ बोला।
"जबकि मुझे पांच वर्ष हुए हैं।" सुधाकर बोला।
करण सक्सेना आश्चर्य से उन तीनों को देखता रह गया।
"कमाल है...तुम लोगों को यहां रहते हुए इतने वर्ष गुजर चुके हैं।"
"हां।"
"मैं एक बात नहीं समझ सका।"
"क्या?"
"तुम यहां कैद कैसे हो...आखिर यहां से बाहर निकलने का कोई-न-कोई रास्ता तो जरूर होगा।"
"इसमें कोई शक नहीं कि रास्ते हैं।" सुधाकर बोला—"परन्तु मुश्किल ये है कि न तो हमें उन रास्तों की कोई जानकारी ही है और न ही हम उन तक पहुंच सकते हैं।"
"क्यों नहीं पहुंच सकते? आखिर तुम लोग यहां तक किसी रास्ते से ही तो पहुंचे होंगे।"
"बिल्कुल किसी-न-किसी रास्ते से ही यहां पहुंचे हैं...लेकिन अपने आप नहीं पहुंचे और न ही अपनी इच्छा से पहुंचे हैं।"
"फिर?"
"आपकी तरह दुर्घटना का शिकार होकर हम सब यहां पहुंचे हैं कमाण्डर!" चार्ल्स ने कहा।
"मैं कुछ समझा नहीं।"
"मैं आपको विस्तार से समझाता हूं कमाण्डर!" सुधाकर बोला—"मैं एक इंजीनियर हूं। और दिलचस्प बात ये है कि मैं सुरंगें बनाने का इंजीनियर हूं। मैं एक कॉण्ट्रेक्ट पर हिन्दुस्तान से दुबई जा रहा था...जहां जाकर मैंने एक कई किलोमीटर लम्बी सुरंग का अपनी देखरेख में निर्माण कराना था। लेकिन जिस शिप में, मैं यात्रा कर रहा था...वह शिप हिन्द महासागर के भंवर में फंसकर डूब गया। सभी यात्री मारे गये...केवल मैं बचा। मैं भी शायद इसलिये बचा...क्योंकि मैं बहुत अच्छा तैराक था और योग द्वारा काफी देर तक अपनी सांस रोकने की मैंने प्रैक्टिस की हुई थी। मैं समुद्र के अथाह सागर में हाथ-पैर मारता हुआ नीचे से ऊपर आने की कोशिश कर रहा था कि रात के समय

में अकस्मात् एक गुफा में दाखिल हो गया। वो गुफा बहुत लम्बी-चौड़ी सुरंग की तरह थी। मैं चूंकि काफी देर से पानी में था...इसलिये गुफा में पहुंचकर मुझे बड़ा चैन मिला। काफी देर तक तो मैं पत्थरों पर ही पड़ा हुआ अपने फेफड़ों को सुसंयत करता रहा...जिनमें हवा और पानी दोनों बड़ी तादाद में भर गये थे। जब मेरी तबीयत थोड़ी संभली...तो मेरे दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि मैं गुफा में अन्दर जाकर देखूं...उसमें क्या है? मैं गुफा में घुसता चला गया। फिर किसी खास जगह जाकर एकाएक मेरा पांव फिसला और मैं धड़ाम् से नीचे गिरा...मैं नीचे गिरा, तो फिर और नीचे गिरता ही चला गया। सौभाग्य से मैं पानी में आकर गिरा—इसलिये बच गया। वो एक भूमिगत नदी थी। मैं पानी से निकलकर एक जैसी जगह में कपड़े सुखा रहा था कि तभी एकाएक इन बौनों ने मेरे ऊपर आक्रमण कर दिया और अब मैं यहां हूं।''

''यानी तुम भी एक हादसे के बाद ही यहां पहुंचे।'' करण सक्सेना बोला।

''बिल्कुल।''

''और तुम?'' करण सक्सेना ने चार्ल्स की तरफ देखा।

''मेरी कहानी भी लगभग ऐसी ही है।'' चार्ल्स बोला—''मैं भी हिन्द महासागर के पास एक मरुस्थल के अंचल में खुदाई कर रहा था। वहीं हमारा कैंप था। दरअसल काम के प्रति शुरू से ही मेरे में बड़ी दीवानगी रही है। एक रात उसी जगह के बारे में सोचते-सोचते मुझे नींद न आयी और मैं कैंप से निकलकर अकेला ही उस खुदी हुई जगहों में टहलने लगा। मेरे चारों तरफ पुराने खण्डहर थे। टहलते-टहलते मेरी नजर एक ऐसे काफी बड़े पत्थर पर पड़ी कमाण्डर...जो एक दीवार पर टिका हुआ था। मैंने उस पत्थर को यूं ही जरा-सा धकेला...तो वह पत्थर लुढ़क गया। उसके साथ ही वह दीवार भी धड़ाम् से नीचे गिर पड़ी और दीवार के दूसरी तरफ मैंने जो दृश्य देखा...उसे देखकर मैं विस्मित रह गया।''

''ऐसा क्या दृश्य देखा तुमने?'' करण सैक्सेना 'डनहिल' का कश लगाते-लगाते ठिठका।''

''मैंने देखा...दीवार के पार एक काफी बड़ी सुरंग थी।''

चार्ल्स बोला–"सुरंग देखकर मैं विस्मित रह गया। जानते हो कमाण्डर...उस सुरंग को देखकर मेरे दिमाग में सबसे पहले क्या बात कौंधी?"

"क्या कौंधी?"

"मैंने समझा...वह प्राचीन निवासियों का कोई गुप्त मार्ग होगा। चार्ल्स ने सिगरेट का एक लम्बा कश लगाकर कहा–"मैं टॉर्च लेकर उस सुरंग में घुसता चला गया। सुरंग ढलवान थी और नीचे-ही-नीचे चली जा रही थी। मेरा अनुमान है कि मैं कोई ढाई सौ फुट नीचे पहुंच चुका होऊंगा कि अचानक न जाने कहां से वह बौने उबल पड़े और उन्होंने मुझे बेकाबू करके यहां पहुंचा दिया।"

चार्ल्स की कहानी सुनकर अकस्मात् करण सक्सेना को याद आया कि छः-सात वर्ष पूर्व उसने अखबारों में एक खबर पढ़ी थी कि फ्रांस का एक प्रसिद्ध आर्कियोलोजिस्ट हिन्द महासागर के नजदीक से गायब हो गया।

करण सक्सेना ने सोचा...निश्चय ही वो खबर चार्ल्स के बारे में होगी।

"जहां तक मैं समझता हूं।" करण सक्सेना ने 'डनहिल' का अंतिम कश लगाकर उसका टोटा फेंकते हुए कहा–"मैंने तुम्हारे गायब होने की खबर अखबार में पढ़ी थी। लेकिन मुझे आश्चर्य सिर्फ इस बात का है कि जब वह पत्थर हटाने से सुरंग का मुंह खुल गया था, तो दूसरे दिन खुदाई करने वालों को वह सुरंग जरूर मिली होगी।"

"नहीं मिली।"

"क्यों नहीं मिली?"

"ये बौने हद से ज्यादा चालाक हैं।" बरीस गड़बड़ बोला–"उन्होंने चार्ल्स के मिलते ही उस सुरंग का मुहाना बंद कर दिया होगा...ताकि बाहर के संसार के और लोग भीतर न आ सकें। मैं ठीक कह रहा हूं न चार्ल्स!"

"जरूर यही बात है।" चार्ल्स बोला–"जरूर बौनों ने यही सब किया होगा।"

"सच तो ये है कमाण्डर!" बरीस गड़बड़ ने कहा–"मेरी कहानी भी इन सब लोगों से मिलती-जुलती है...जो यहां कैद

हैं। मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ पर्यटन के लिये हिन्दुस्तान आया था। मुझे पहाड़ी दृश्य देखने का बड़ा शौक है। हम शिप में सफर कर रहे थे कि तभी गड़बड़ हो गयी। शिप डूब गया। मैं और मेरे साथी समुद्र में डूब रहे थे कि तभी हमें नीचे चट्टानों के बीच में बनी एक दरार दिखाई दी। हम उस दरार में घुस गये। दरार काफी गहरी थी। हम सब भीतर तक घुसते चले गये...तो हमें चट्टान में एक छोटा-सा छेद नजर आया। यह छेद इतना बड़ा था कि एक आदमी उसमें बैठकर आसानी से अंदर घुस सकता था।''

''फिर क्या हुआ?''

''फिर एक गड़बड़ और हुई कमाण्डर...और बड़ी भयानक गड़बड़ हुई।''

''कैसी गड़बड़?''

''दरअसल जिस तरफ मैं घुसा था...उस तरफ न जाने कैसे एक चट्टान टूट गयी और वह दरार के मुंह पर आ पड़ी। गोया हमारे बाहर निकलने का जो इकलौता रास्ता था...वह भी बंद हो गया।''

''फिर?''

''अब मेरे दोनों तरफ लगभग पचास-पचास फुट ऊंची सीधी दीवारें थीं कमाण्डर!'' बरीस गड़बड़ बोला—''हम डरकर उस छेद में घुस गये। भीतर से वह छेद इतना चौड़ा था कि मैं सीधा खड़ा हो सकता था। डरते-डरते हम और भीतर घुसे...तो हमने देखा कि वह एक सुरंगनुमा मार्ग था और ढलवां होता चला गया था। चार्ल्स की तरह हम सब भी उस ढलवान सुरंग में उतरते चले गये। फिर हम ऐसी जगह पहुंच गये...जहां कई सुरंगें मिलती थीं और उन सुरंगों में प्रकाश था। हमने समझा शायद यह किसी किस्म की खान है और मजदूर यहां काम कर रहे होंगे। हम एक नई सुरंग में दाखिल होकर कुछ दूर ही गये होंगे कि अचानक ये बौने कहीं से निकल पड़े और उन्होंने हमें पकड़कर यहां पहुंचा दिया।

करण सक्सेना विस्मित-सा अपनी जगह खड़ा रहा।

हैरान-सा।

बरीस गड़बड़ अब खामोश हो गया था।

सचमुच उसकी पूरी जिंदगी इतनी गड़बड़ों से भरी हुई थी कि अब वो खुद गड़बड़झाला बन गया था।

"विचित्र बात है!" करण सक्सेना बहुत संजीदा अंदाज में बोला–"सब लोगों की कहानी तकरीबन एक जैसी ही है...कहीं कोई फेरबदल नहीं।"

"सिर्फ हमारी कहानी ही एक जैसी नहीं है कमाण्डर!" सुधाकर बोला–"बल्कि यहां जितने लोग हैं...सबकी कहानी एक जैसी है। सब संयोग से या किसी-न-किसी पहाड़ी गुफा या छेद से होकर भीतर दाखिल हुए हैं और इन बौनों के हाथ पड़ गये हैं।"

"यानी सब किस्मत के मारे हुए ही हैं...जो यहां मौजूद हैं।"

"इसमें कोई शक नहीं।"

"मेरे एक प्रश्न का जवाब और दो।"

"पूछिये कमाण्डर!"

"आखर ये बौने कौन लोग हैं और यहां क्या करते हैं?" करण सक्सेना ने सवाल किया।

"हमें इस बारे में कुछ मालूम नहीं। अलबत्ता चार्ल्स की इन बौनों के विषय में एक थ्यौरी है।"

"कैसी थ्यौरी?"

"वो थ्यौरी अभी नहीं बल्कि फिर कभी सुनना।" बरीस गड़बड़ बीच में टोककर बोला–"क्योंकि चार्ल्स अपनी थ्यौरियां जब एक बार सुनानी शुरू करता है...तो फिर उसे समय का अंदाजा नहीं रहता। उसकी थ्यौरियां बहुत लम्बी होती हैं और दिमाग घुमा देने वाली होती हैं। वैसे भी यहां कुछ रोज रहने के बाद आदमी समय को भूल जाता है। यहां रात-दिन कुछ नहीं होते,..बस चौबीस घण्टे एक जैसे ही रहते हैं। यहां कोई घड़ी या कैलेण्डर नहीं रखता...क्योंकि सौ-पचास घण्टे बाद ये चीजें पागल करने लगती हैं। अभी आप कमजोर हो, इसलिये मेरा सुझाव है कि आप इस बारे में ज्यादा मत सोचो। आराम करो और संतोष करो। यहां जो लोग ज्यादा भावुक होते हैं...वह या तो पागल हो जाते हैं या फिर मर जाते हैं।"

"तुम तो इस तरह बात कर रहे हो।" करण सक्सेना

बोला—"जैसे अब सारा जीवन मुझे यहीं गुजारना पड़ेगा और मैं यहां से कभी बाहर नहीं निकलूंगा।"

"अभी मैं कुछ नहीं कहना चाहता कमाण्डर!" वरीस गड़बड़ बोला—"अभी मैं कुछ कहूंगा...तो आपको मेरी किसी भी बात पर यकीन नहीं होगा बल्कि आप उल्टा बहस करेंगे। जबकि कुछेक रोज में धीरे-धीरे आपको खुद ही सब कुछ मालूम हो जायेगा।"

"मेरे तो कुछ समझ नहीं आ रहा।" करण सक्सेना बोला—"तुम आखिर कहना क्या चाहते हो?"

"वरीस गड़बड़ ठीक कह रहा है कमाण्डर!" सुधाकर भी बोला—"कुछेक दिन में खुद ही आपको सब कुछ मालूम हो जायेगा। फिलहाल आप सोने की कोशिश करो...हम चलते हैं।"

"गुड बाय कमाण्डर!" चार्ल्स ने भी कहा।

फिर वह तीनों कमाण्डर करण सक्सेना को वहां अकेला छोड़कर चले गये।

परन्तु!

करण सक्सेना की नींद अब उड़ चुकी थी।

एकाएक हजारों तरह के भय और आशंकायें उसके दिल में जन्म लेने लगे थे।

उन तीनों की बातों से ऐसा लगता था कि वह सब सचमुच सदा-सदा के लिये वहां कैद हो गये थे और अब कभी वहां से बाहर नहीं निकलेंगे।

करण सक्सेना जितना उस रहस्यमयी जगह के बारे में सोच रहा था...उतनी उसके दिमाग में नई-नई बातें आ रही थीं।

उसे हैरानी केवल इस बात की थी कि अगर उस जगह से बाहर निकलने के रास्ते हैं...तो वह लोग बाहर जाने की कोशिश क्यों नहीं करते?

हिम्मत हारकर वहीं क्यों पड़े हुए हैं?

उस बारे में सोच-सोचकर उसके दिमाग में अजीब-अजीब तरह की उलझनें पैदा होने लगीं।

फिर सोचते-सोचते और छत को ताकते-ताकते करण सक्सेना को कब नींद आ गयी...उसे खुद पता न चला।

वो एक बार फिर गहरी नींद सो चुका था।

❑❑❑

❑❑❑

कमाण्डर करण सक्सेना की जब अगली बार आंख खुली...तो वह अकेला था।

लेकिन अब उसके अंदर कुछ जान आ गयी थी और वह हालातों से लड़ने में खुद को समर्थ पा रहा था।

वह गुदगुदा बिस्तर छोड़कर खड़ा हो गया और गुफा से बाहर निकला।

बाहर सन्नाटा था और वहां कॉरीडोरनुमा रास्ता बना हुआ था।

करण सक्सेना उसी रास्ते पर चल पड़ा।

वो काफी देर तक चलता रहा।

इस बीच उसे एक रहस्य का और पता चला। उसके पास जो दो कोल्ट रिवॉल्वरें थीं...वह दोनों कोल्ट रिवॉल्वरें नदारद थीं और कारतूसों का पैकिट भी अब उसकी जेब में नहीं था।

जरूर वह बौनों का काम था।

उन्होंने ही वो सारा सामान निकाल लिया था।

करण सक्सेना इससे और खिन्न हो उठा। उसके साथ अभी तक जो कुछ हो रहा था...हो रहा था...लेकिन यूं बिल्कुल ही निहत्था हो जाना और भी बड़े संकट की बात थी। इतना ही नहीं...उसके ओवरकोट की गुप्त जेब से उसका ट्रांसमीटर सैट भी नदारद था।

बौनों ने उसके पास कुछ नहीं छोड़ा था।

कुछ नहीं।

करण सक्सेना उस कॉरीडोरनुमा रास्ते पर चलता-चलता एक काफी बड़ी गुफा में पहुंचा...जो किसी हॉल कमरे की तरह विशालकाय थी।

वहां पहुंचकर करण सक्सेना को पहली नजर में तो ऐसा अहसास हुआ...जैसे वो गुफा खाली है।

परन्तु जल्द ही उसे उस गुफा के एक कोने में दो स्त्री-पुरुष नजर आ गये...जो बिल्कुल नग्न थे और रतिक्रीड़ा कर रहे थे।

पुरुष की उम्र कोई अड़तीस साल के करीब थी...जबकि

स्त्री मुश्किल से बाईस-तेईस साल की थी।

दोनों की उम्र में हालांकि जमीन-आसमान का फर्क था।

मगर!

सैक्स की भूख ने उन्हें एक-दूसरे का दीवाना बना डाला था।

जबरदस्त दीवाना!

दोनों सैक्स के उन्माद में पागल हो रहे थे।

उनके जिस्म एक-दूसरे से टकराकर चिंगारी-सी पैदा कर रहे थे और हर पल उनकी दीवानगी बढ़ रही थी।

पुरुष के काले भुरभुरे से दोनों हाथ लड़की की जांघों पर टिके हुए थे और उसकी सांसें गर्दन से टकरा रही थीं।

लड़की की जांघें एकदम गोरी-चिट्टी थीं।

दूध जैसी सफेद।

इसके अलावा वो मांसल भी खूब थीं।

यही हालत उसके वक्षस्थलों की थी...वह कटोरे जितने बड़े थे और तने हुए थे।

वक्षस्थलों पर उभरी नीली-नीली नसें दूर से ही चमक रही थीं।

पुरुष का चेहरा उस समय लड़की की गर्दन के पास था।

परन्तु!

फिर वह थोड़ा नीचे को सरक आया।

उसके बाद पुरुष के होंठ लड़की के वक्षस्थलों को बुरी तरह मसलने लगे।

लड़की के शरीर में और भी ज्यादा जबरदस्त सनसनी मच गयी।

ऐसी सनसनी...मानो किसी ने उसके शरीर में बिजली प्रवाहित कर दी हो।

पुरुष के जिस्म की तमाम नसों में भी अब तनाव आ गया था। और वह आखिरी चाल चलने के लिये तैयार था।

उसने लड़की की दोनों जांघें और भी ज्यादा कसकर अपनी मुट्ठी में जकड़ लीं तथा फिर वह घुटने फर्श पर टिकाकर थोड़ा ऊंचा उठ गया।

आगे का दृश्य देखना करण सक्सेना को मुनासिब न लगा।

तभी लड़की की निगाह करण सक्सेना पर पड़ गयी थी...मगर उसने परवाह न की।

पुरुष ने भी करण सक्सेना को देखा।

यही हालत पुरुष की रही...उसने भी करण सक्सेना की उपस्थिति की कोई परवाह न की और अपने क्रियाकलापों में मग्न रहा।

वहां के एकरसतापूर्ण माहौल ने इंसानों को पूरी तरह जंगली बना डाला था।

करण सक्सेना खुद ही उस हॉल से बाहर आ गया।

बाहर निकलते ही उसने वरीस गड़बड़ को तेज-तेज कदमों से कहीं जाते देखा...शायद वह कोई काम निपटाता घूम रहा था।

"मिस्टर वरीस!" करण सक्सेना ने उसे जोर से पुकारा।

वरीस गड़बड़ चलते-चलते ठिठक गया और उसने पलटकर करण सक्सेना की तरफ देखा।

"हैलो कमाण्डर!"

"हैलो!"

वरीस गड़बड़, करण सक्सेना के नजदीक आया।

"आप जाग गये?"

"हां...अभी थोड़ी देर पहले ही आंख खुली हैं।"

"अब आपको कैसा लग रहा है...आपके सिर वगैरह में तो दर्द नहीं है?"

"नहीं...पहले से तो काफी बेहतर हूं। खुद को हल्का-फुल्का भी महसूस कर रहा हूं।"

"गुड!"

"लेकिन मैं अभी अंदर गुफा में गया था।" करण सक्सेना की आवाज एकाएक काफी धीमी हो गयी और वह आगे को झुककर फुसफुसाया—"वहां एक आदमी और एक लड़की... ।"

"ओह...वह जरूर घाला और मोकी होंगे। वो हमेशा यहां नंगे घूमते हैं...इस समय भी उनके शरीर पर कपड़े नहीं होंगे।"

"न सिर्फ कपड़े नहीं हैं बल्कि वो... ।"

"मैं समझ गया।" वरीस गड़बड़ हंसा—"वह क्या कर रहे हैं? वह दोनों बेचारे आधे पागल हैं और यहां के खतरनाक माहौल

ने उनके सोचने-समझने की शक्ति कुन्द करके रख दी है।''

''क्या वो काफी पहले से यहां हैं?''

''हां...मेरे आने से तो पहले से ही हैं बल्कि काफी पहले से हैं। वह दोनों यहां तक किस तरह पहुंचे...यह किसी को मालूम नहीं। वह दूसरों से बहुत कम बात करते हैं और अगर बात करते भी हैं...तो कोई उनकी बात समझ नहीं पाता।''

''क्या यहां औरतें भी हैं?'' करण सक्सेना ने थोड़े विस्मय से पूछा।

उसके स्वर में हैरानी थी।

''बिल्कुल हैं...औरतें भला क्यों नहीं हैं! अलबत्ता औरतों की तादाद यहां बहुत ज्याद नहीं है...इसलिये हमेशा किसी-न-किसी औरत को लेकर यहां झगड़े होते रहते हैं।''

''तुम तो इस तरह बात कर रहे हो।'' करण सक्सेना बोला—''जैसे यहां बहुत-से कैदी हों।''

''बिल्कुल...इसमें शक भी क्या है! यहां काफी सारे कैदी हैं।''

''कितने?''

''जहां तक मैं समझता हूं।'' वरीस गड़बड़ मुस्कराकर बोला—''यहां पंद्रह सौ कैदी तो जरूर होंगे।''

''पंद्रह सौ!'' करण सक्सेना ने चौंककर कहा—''यहां इतने कैदी मौजूद हैं?''

''बिल्कुल हैं।''

''और वह सब-के-सब इन बौनों के कैदी हैं।''

''यस कमाण्डर! और अगर वो चाहें भी...तब भी यहां से बाहर नहीं निकल सकते।''

''बड़ी आश्चर्यजनक बात बता रहे हो।'' करण सक्सेना विस्मयपूर्वक बोला—''अगर पंद्रह सौ कैदी चाहें...तो इन बौनों से लड़-भिड़कर बड़ी आसानी के साथ बाहर निकल सकते हैं। आखिर पंद्रह सौ आदमियों की ताकत कुछ कम तो नहीं होती...इतने आदमी अगर एक जगह जमा हो जायें, तो एक बड़ी फौज-सी दिखाई पड़ने लगेगी।''

''यह बात आप इसलिए कह रहे हो कमाण्डर!'' वरीस गड़बड़ बोला—''क्योंकि अभी आप यहां के हालातों से अच्छी

तरह वाकिफ नहीं हो। कसम खुदा की...यहां तो कदम-कद पर गड़बड़ है। मेरी जिंदगी में बहुत गड़बड़ हुई...परन्तु मे' जिंदगी की सबसे बड़ी गड़बड़ ये थी कि मैं ऐसी गड़बड़ वा- जगह आकर फंसा।"

"मुझे यहां की गड़बड़ों के बारे में विस्तारपूर्वक समझाओ मिस्टर वरीस! वरना अगर हालात ऐसे ही बने रहे...तो हो सकता है, मैं भी पागल हो जाऊं।"

"पागल होने से काम नहीं चलेगा कमाण्डर! बल्कि सच तो ये है...जब से आप यहां आये हैं और हमें यह पता चला है कि आप कमाण्डर करण सक्सेना हैं...तब से हमारे हौसल भी बहुत बढ़ गये हैं और हमें लगने लगा है कि शायद अब क हल निकल आये। बहरहाल मैं आपको कुछ समझाने की कोशि करता हूं। क्या आप अनुमान लगा सकते हो कि इस वक्त अ किस जगह पर हो?"

"किस जगह से तुम्हारा क्या मतलब है...सबको माल है कि मैं इस वक्त सुरंगों में हूं।"

"सुरंगों में तो हो...लेकिन क्या आपको याद है कमाण्डर, बौनों ने आपके ऊपर किस जगह हमला किया था?"

"बिल्कुल याद है।" करण सक्सेना बोला–"जिस जगह बौनों ने हमला किया था...वह भी एक सुरंग ही थी और उस सुरंग के सामने कुकुरमुत्ते का एक बाग या जंगल था।"

"वह दरअसल बौनों के रहने की जगह थी कमाण्डर!" वरीस गड़बड़ बोला–"इन सुरंगों की दो तहें हैं। एक तह तो वो है...जिसमें बौने रहते हैं। इसके अलावा दूसरी तह वो है...जिसमें हम इस समय खड़े हैं। यह पहली तह से लगभग सवा सौ फुट नीचे गहराई में है।"

"सवा सौ फुट!"

"यस कमाण्डर! इसके अलावा एक महत्वपूर्ण बात और है।"

"क्या?"

"इन दोनों परतों या मंजिलों के बीच आने-जाने का कोई मार्ग नहीं है।"

करण सक्सेना चौंका।

"अगर दोनों परतों के बीच आने-जाने का कोई मार्ग नहीं है।" करण सक्सेना बोला—"तो हम यहां किस तरह आये?"

"बौनों ने इसके लिये एक बड़ा अनोखा तरीका खोजा हुआ है।"

"क्या?"

"दरअसल जब बौने किसी कैदी को यहां भेजना चाहते हैं...तो वह एक लम्बी-सी रस्सी में कैदी को बांधकर ऊपर चिकनी चट्टान से नीचे लटका देते हैं और फिर रस्सी को कुछ इस तरह झटका देते हैं कि गांठ खुद-ब-खुद खुल जाती है तथा कैदी धड़ाम् से नीचे आकर गिरता है।"

"और अगर वह किसी को वापस ऊपर बुलाना चाहें तो?" करण सक्सेना ने सवाल किया।

"कम-से-कम आज तक तो उन्होंने किसी को वापस ऊपर नहीं बुलाया।"

"क्या उस चिकनी चट्टान तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं?"

"आप खुद सोचिये कमाण्डर...सौ फुट ऊंची बिल्कुल सपाट और चिकनी दीवार पर भला कौन चढ़ सकता है। दो-एक बार कुछ कैदियों ने ऊपर जाने का प्रयत्न किया था...लेकिन वो नाकाम रहे। उस दीवार में आज भी पांव टिकाने और सहारा लेने के लिये वह गड्ढे मौजूद हैं...जो एक कैदी ने ऊपर वाली तह पर जाने के लिये बनाये थे। लेकिन मालूम है...उसका क्या हुआ?"

"क्या हुआ?"

करण सक्सेना की आवाज सस्पैंसफुल थी।

रहस्यमयी!

"वह बौने ऊपर चिकनी चट्टान के पास हर समय पहरेदारी करते हैं।" वरीस गड़बड़ ने बताया—"उस कैदी को उन्होंने आधी दीवार तक बड़े इत्मीनान के साथ चढ़ने दिया...उससे कुछ नहीं कहा। फिर उन्होंने बस एक काम किया।"

"क्या?"

"उन्होंने एक बड़ा-सा पत्थर उसके सिर पर लुढ़का दिया और बस उसका किस्सा वहीं खत्म हो गया।"

"इसी तरह एक बार एक कैदी ने यहां से भाग निक
का इससे भी ज्यादा दिलचस्प ढंग सोचा।"

"उसने क्या सोचा?"

करण सक्सेना के चेहरे पर उत्सुकता के भाव दिखाई दे
रहे थे।

वह सचमुच एक नये तरह की दुनिया थी।

"वो कैदी दरअसल इस इंतजार में था कमाण्डर!" बरीस गड़बड़ बोला—"कि कब यहां कोई नया कैदी लाया जाता है? और जब एक बार एक कैदी यहां लाया गया और बौनों ने उसे रस्सी से बांधकर ऊपर से नीचे लटकाया तथा झटका देकर उसे नीचे फेंका...तो उसे पुराने कैदी ने एकदम चीते जैसी फुर्ती के साथ झपटकर वह रस्सा पकड़ लिया तथा फिर बड़ी तेजी के साथ ऊपर चिकनी चट्टान की तरफ चढ़ने लगा।"

"बौने तो तब ऊपर ही खड़े होंगे?"

"बिल्कुल खड़े थे।"

"उन्होंने कुछ नहीं कहा?"

"थोड़ी देर तो उन्होंने कोई आपत्ति नहीं की। वह बस खामोशी से उसे ऊपर चढ़ता हुआ देखते रहे कमाण्डर...लेकिन जब वह कोई तीन-चौथाई रास्ते पर चढ़ गया, तो उन्होंने रस्सा काट डाला।"

"बाई गॉड!" करण सक्सेना ने कहा—"इसका मतलब ये बौने काफी क्रूर हैं।"

"इसमें क्रूरता की कोई बात नहीं है कमाण्डर...दरअसल बौने हम कैदियों को इस तरह रखने पर मजबूर हैं। सच तो ये है...अगर बौनों की जगह हम होते, तो हम भी यही करते।"

करण सक्सेना चौंका।

"वह कैदियों को इस तरह रखने के लिये मजबूर क्यों हैं?" करण सकसेना की आंखों में ढेरसारे प्रश्नचिन्ह थे।

"दरअसल बौने अपना रहस्य छिपाकर रखना चाहते हैं। क्योंकि वह इस बात को भली-भांति जानते हैं कमाण्डर...अगर एक भी इंसान इन गुफाओं और सुरंगों से निकलकर बाहर चला गया, तो सभ्य संसार उन पर आक्रमण कर देगा और उनकी

संस्कृति नष्ट कर देगा। यह बात साफ है कि इन सुरंगों और गुफाओं में हवा आने के लिये जगह-जगह पहाड़ी गुफाओं तक मार्ग बने हुए हैं। लेकिन उन मार्गों के बारे में बौनों के सिवाय किसी को कोई ज्ञान नहीं। और आम तौर पर वह मार्ग सीधे हैं...जिन पर चढ़ना कठिन है। इसके अलावा वो मार्ग इतने गुप्त हैं कि किसी को उनके बारे में आसानी से जानकारी नहीं मिल पाती। फिर भी सात-आठ महीने में किसी-न-किसी शिप के डूबने के कारण या फिर किसी और दुर्घटना की वजह से कोई आदमी गलती से किसी ऐसी गुफा में दाखिल हो जाता है...जिसमें वह मार्ग बना हुआ है, तो वह अपनी उत्सुकता के कारण उन मार्गों पर चल पड़ता है और यहां पहुंचकर कैदी बन जाता है। फिर वह वापस अपने संसार में नहीं जा सकता।''

''मॉई गॉड! यह तो बड़ा भयानक मामला है मिस्टर वरीस...आखिर यह सिलसिला कब से जारी है?''

''इस सिलसिले को चलते हुए आज सैकड़ों वर्ष हो चुके हैं।'' वरीस गड़बड़ ने बताया।

''सैकड़ों वर्ष।''

''यस कमाण्डर! यहां जो बूढ़े कैदी हैं...यह बताते हैं कि जब वो जवानी में आये थे...तो उनसे पहले यहां बूढ़े कैदी मौजूद थे। और वह बूढ़े कैदी बताते थे कि उनमें से भी पहले बूढ़े कैदी यहां थे। इस मामले में चार्ल्स की थ्यौरी बहुत साफ है तथा समझ आने वाली है।''

''चार्ल्स की थ्यौरी क्या है?''

''चार्ल्स का कहना है...यह बौने भी, हमारी तरह इंसान ही हैं और बाहर रहने वाले जंगली कबीलों की तरह ये भी अपनी संस्कृति तथा सभ्यता को दूसरों से अच्छा समझते हैं और दूसरे इंसानों में घुलना-मिलना नहीं चहाते।''

''बौने इन भूमिगत गुफाओं में कब से रहते हैं?'' करण सक्सेना के दिमाग में नये-नये सवाल जन्म ले रहे थे।

''कुछ नहीं कहा जा सकता।'' वरीस गड़बड़ बोला-''कि इन लोगों ने इन भूमिगत गुफाओं और सुरंगों में कब से रहना शुरू किया। लेकिन सिर्फ अनुमान के आधार पर ही कहा जा सकता है कि यह हजारों वर्षों से यहां रहते होंगे। एक अनुमान

और इन गुफाओं तथा सुरंगों के बारे में लगाया जाता है।"

"क्या?"

"ख्याल ये है कि हिन्द महासागर के नजदीक ये गुफायें और सुरंगें प्राकृतिक थीं...लेकिन इस शक्ल में नहीं थीं, जिसमें अब हैं। हजारों वर्ष पहले बौनों ने वर्षा, तूफान और सागर की दूसरी आपदाओं से बचने के लिये इन भूमिगत गुफाओं में रहना शुरू किया होगा। जिस तरह पृथ्वी पर सभ्यता से पहले इंसान गुफाओं में रहता था और पत्थरों के हथियार इस्तेमाल करता था...उसी प्रकार यह लोग अभी तक दिमागी तौर पर उसी जमाने में रहते हैं। यहां रहकर इन्होंने इन प्राकृतिक गुफाओं को काट-काटकर रहने के योग्य बनाया और सुरंगों को काटकर मार्ग बनाये। पीढ़ी-दर-पीढ़ी रहने के बाद उन्होंने समुद्र के नीचे यह पूरा नगर बसा लिया...जिसमें उनकी पूरी जाति आबाद है।"

"क्या यह बाहर के संसार में नहीं जाना चाहते?" करण सक्सेना बोला।

"नहीं...बिल्कुल नहीं। सच तो ये है...अब यह लोग बाहर के संसार से भयभीत हैं। इसलिये जब कभी कोई बाहर के संसार का आदमी संयोग से या गलती से उनके संसार में आ जाता है...तो यह बौने उसकी हत्या तो नहीं करते। हां...उसको यहां वो इस तरह कैद जरूर कर देते हैं कि वो फिर जाना भी चाहे...तो यहां से नहीं जा सकता। इसीलिये आज तक सभ्य संसार इन भूमिगत बौनों से परिचित नहीं हो सका।"

"यह बातें समझ आती हैं।" करण सक्सेना गंभीरतापूर्वक बोला—"क्या यहां अक्सर नये कैदी आते रहते हैं?"

"नहीं।" वरीस गड़बड़ बोला—"नये कैदी तो यहां कभी-कभार ही आते हैं। साल-छः महीने में ही यहां कोई एकाध कैदी आता है और कभी-कभार तो दो-चार वर्षों में भी। सबसे ज्यादा जल्दी इस बार आप यहां आये हो कमाण्डर!"

"मैं!"

"यस!"

"क्यों...मेरे से पहले इधर कौन कैदी आया था?" करण सक्सेना ने पूछा।

"अभी कुछ दिन पहले ही तो यहां एक और नया कैदी

आया है।"

"कौन?"

"एक अधेड़-सी उम्र का व्यक्ति है और आंखों पर चश्मा लगाता है। उसके बाल भी थोड़े-थोड़े सफेद हैं। वो आपके मुल्क का ही रहने वाला है।"

"हिन्दुस्तान का।"

"यस कमाण्डर!"

"उसका नाम क्या है?" करण सक्सेना ने उत्सुकतावश पूछा।

"नाम तो उसका नहीं मालूम...हां, शक्ल से वह कोई बड़ा जहीन आदमी मालूम देता है। दरअसल जब यहां कोई नया कैदी आता है कमाण्डर...तो पुराने कैदियों में कुछ रोज के लिये बड़े जोशो-खरोश जैसी हालत हो जाती है। वह सब जानना चाहते हैं कि नया कैदी कौन है और किस तरह यहां तक आया है? वह उससे बाहरी संसार के हालात पूछते हैं...साल, महीना पूछते हैं। उसके बाद धीरे-धीरे यह दिलचस्पी खत्म हो जाती है तथा फिर लोग पूर्ववत् उदास और निरुद्देश्य जीवन गुजारने लगते हैं।"

"हूं!"

करण सक्सेना वहां के हालात अब धीरे-धीरे समझ रहा था।

सचमुच वह लोग बड़ी भयानक जिंदगी बसर कर रहे थे...उस जिंदगी की कल्पना करने से ही मन में खौफ की लहर दौड़ती थी।

ऊपर ठाठें मारता समुद्र था और नीचे आदिमानवों से भी ज्यादा बदतर जिंदगी गुजारते वह लोग थे।

"कमाण्डर!" वरीस गड़बड़ बोला—"कुछ तो इस माहौल में रहकर पूरी तरह पागल ही हो जाते हैं। इसके अलावा जो जरा कुछ ज्यादा ही भावुक किस्म के आदमी होते हैं...वो परिस्थितियों से घबराकर आत्महत्या कर लेते हैं।"

"क्या यहां कुछ लोगों ने आत्महत्या भी की है?" करण सक्सेना बोला।

"एक क्या, यहां दर्जनों लोगों ने आत्महत्या की है। कई तो मेरे सामने ही मरे हैं। एक तो यहां के हालातों से इतनी बुरी

तरह घबरा गया था कि उसने अपना सिर एक पत्थर पर इतनी जोर से पटक कर मारा कि फौरन उसकी खोपड़ी बताशे की तरह खील-खील होकर बिखर गयी। वह तुरन्त मर गया। आपको जानकार आश्चर्य होगा कमाण्डर...इस समय यहां जो पंद्रह सौ कैदी हैं, उनमें से ऐसे कैदी कठिनता से तीन-चार सौ ही होंगे, जिनके होश-हवास ठीक हैं... । बाकी तो यहां सब बूढ़े, सनकी, पागल और नीम पागल हैं...जो बस सारा दिन खामखाह इधर-से-उधर भटकते रहते हैं। वह जब एक बार हंसना शुरू करते हैं...तो इतनी जोर-जोर से हंसते हैं कि उनकी हंसी सुनकर आदमी के कानों के पर्दे फट जायें। यही हालत उनकी तब होती है...जब वो रोते हैं। सारा-सारा दिन रोते हैं और ऐसे हलक फाड़कर रोते हैं...जैसे उनका कोई बहुत करीबी रिश्तेदार मर गया हो।''

''यानी यहां मौजूद लोगों की हालत काफी नाजुक है।''

''यस कमाण्डर!''

करण सक्सेना और वरीस गड़बड़ अभी गुफा के सामने खड़े बात कर ही रहे थे कि तभी उन्हें सामने से सुधाकर और चार्ल्स आते दिखाई पड़े।

वह टहलते हुए आ रहे थे और आपस में कुछ बात कर रहे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने उनकी एक्टीविटी देखकर अनुमान लगाया कि वह तीनों वहां रहते हुए आपस में काफी अच्छे मित्र बन गये थे और अब प्रायः दूसरे कैदियों से अलग-थलग ही रहते थे।

यह उन तीनों के लिये बेहतर ही था।

क्योंकि इससे उनके पागल या नीम पागल होने के अंदेशे काफी कम हो गये थे।

वैसे भी वो इस तरह दायरे में बंधकर काफी बेहतर जिंदगी गुजार सकते थे।

''हैलो कमाण्डर!'' सुधाकर ने करण सक्सेना को देखकर दूर से ही भारी गरमजोशी के साथ कहा—''क्या हाल हैं आपके?''

''पहले से बेहतर हैं। मैं दरअसल मिस्टर वरीस के यहां के हालात समझने की कोशिश कर रहा था।''

करण सक्सेना की बात सुनकर सुधाकर जोर से खिलखिलाकर हंस पड़ा।

चार्ल्स भी मुस्कराया।

"कमाण्डर...आप इस मामले में काफी जल्दबाजी से काम ले रहे हैं।"

"क्यों?"

"क्योंकि यहां के हालात को समझने के लिये आपके पास केवल समय-ही-समय है, और कुछ नहीं! अगर आते ही सारे काम इतनी स्पीड से करेंगे...तो बाकी समय कैसे गुजरेगा?"

"बाकी समय के बारे में भी देखा जायेगा।" करण सक्सेना ने सुधाकर की बात पर कोई खास तवज्जो नहीं दी—"तुम यह बताओ...क्या बाकी सब कैदी भी इसी हिस्से में रहते हैं?"

"हां...रहते तो इसी हिस्से में हैं।" सुधाकर ने कहा...लेकिन आप इस हिस्से को कोई छोटा-मोटा न समझें...यह काफी बड़ा है।"

"यह चाहे कितना ही बड़ा हिस्सा क्यों न हो।" करण सक्सेना बोला—"परन्तु मैं एक बार यहां के तमाम कैदियों को देखना चाहता हूं।"

"क्यों?"

"रचना मुखर्जी को ढूंढने के लिये।"

"वही लड़की...जो आपके साथ थी?"

"हां।"

"वो यहां नहीं है।"

"यह बात तुम इतने विश्वासपूर्वक कैसे कह सकते हो?" करण सक्सेना के नेत्र सिकुड़े।

"क्योंकि जब कोई नया कैदी यहां आता है कमाण्डर...तो सब कैदियों को मालूम पड़ जाता है। क्या आपको वरीस गड़बड़ ने बताया नहीं कि नया कैदी यहां किस तरह भेजा जाता है?"

"बताया है।"

"फिर तो आपको खुद ही समझ लेना चाहिये था कि अगर वो लड़की यहां आती...तो किसी से छुपने वाला नहीं था। हम सबको खुद-ब-खुद ही मालूम पड़ जाता कि कोई लड़की भी यहां

आयी है।''

सुधाकर ठीक कह रहा था।

उसकी बात में दम था।

वाकई अगर रचना मुखर्जी वहां लायी जाती...तो उनसे छुपा न रहता।

''फिर रचना मुखर्जी कहां है?''

''इसके पीछे दो ही सूरतें हो सकती हैं कमाण्डर!'' इस मर्तबा चार्ल्स बोला।

''क्या...क्या?''

''या तो वह लड़की मर चुकी है या फिर उसको बौनों ने ऊपर की मंजिल में रखा हुआ है।''

ऊपर की मंजिल पर?''

''यस कमाण्डर! यद्यपि यह बात मेरी समझ में इसलिये नहीं आती...क्योंकि उन्होंने आज तक ऐसा नहीं किया।'' चार्ल्स बोला—''वह बाहरी संसार के किसी भी इंसान पर यकीन नहीं करते और उन ठिकानों में उसे बिल्कुल नहीं रखते...जहां वो खुद रहते हैं—बल्कि उसको पकड़कर तुरन्त कैदखाने वाली इस तह में डाल देते हैं।''

''तो क्या रचना मुखर्जी मर चुकी है?'' करण सक्सेना का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

''अभी इस बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। दोनों ही बातें संभव हैं...वो जीवित भी हो सकती है और यह भी मुमकिन है कि वो मर गयी हो।''

रचना मुखर्जी की मौत के नाम से करण सक्सेना को अजीब-सा अहसास हो रहा था।

सच तो ये है...वह इस बात की कल्पना ही नहीं कर पा रहा था कि रचना मुखर्जी मर सकती है।

बौनों से लड़ते हुए उसने जब आखिरी बार गिरते-गिरते रचना मुखर्जी की तरफ देखा था...तो बौने रचना मुखर्जी को सिर्फ चारों तरफ से पकड़े हुए थे। उसे मार नहीं रहे थे।

फिर रचना मुखर्जी कैसे मर सकती थी?

कुछ नये सवाल जहां अब करण सक्सेना के दिमाग में जन्म ले रहे थे...वहीं कुछ पुराने सवालों की धुंध उसके मस्तिष्क

से छंटने भी लगी थी।

जैसे यह रहस्य अब करण सक्सेना की समझ में आ गया था कि क्यों हिन्द महासागर के उत्तर-पूर्व में चालीस डिग्री अक्षांश पर वह दुर्घटनायें होती थीं। चूंकि उस जगह की जमीन फट गयी थी और वहां बड़ा भयंकर भंवर बन गया था...तो उसी भंवर के कारण वहां जहाज, नौकायें या स्टीमर वगैरह डूब जाते थे।

इसके अलावा हिन्द महासागर के अंदर से आदमी जो गायब होते थे...वह रहस्य भी अब खुल गया था।

वह सब उसी जगह कैद थे।

बौनों की कैद में थे।

□□□

□□□

अगले दिन वह तीनों कमाण्डर करण सक्सेना को कैदियों की सुरंगें और गुफायें दिखाने के लिये ले गये।

वह सुरंगें और गुफायें मीलों-मील लम्बी थीं तथा चारों तरफ फैली हुई थीं। करण सक्सेना ने देखा...वहां कैदी या तो निरुद्देश्य इधर-से-उधर घूमते रहते थे या फिर पड़े रहते थे।

इसके अलावा करण सक्सेना ने जगह-जगह चार-चार या फिर छह-छह के समूहों में भी कैदी देखे।

अलवत्ता औरतें वहां वाकई बहुत कम थीं और जो थीं...वह सैक्स की मारी हुई थीं। वह रोजाना किसी-न-किसी की हवस का शिकार बनती थीं। एक-दो जगह तो करण सक्सेना ने उन्हें घाला और मोकी की तरह बेधड़क होकर सैक्स करते भी देखा। सचमुच सभ्य संसार की बातें वहां मौजूद कैदियों के अंदर से नष्ट हो चुकी थीं।

वहां लगभग हर अवस्था के कैदी थे।

बूढ़े...जो मरने के निकट थे, सनकी आधे पागल, पूरे पागल...यानी हर तरह के कैदी!

तभी करण सक्सेना की निगाह एक ऐसे अधेड़ कैदी पर पड़ी...जिसके चेहरे पर सूर्य जैसा तेज था। बाल पके हुए थे और आंखों पर नजर का चश्मा था। वह कैदी उस समय बिल्कुल तन्हा एक कोने में बैठा था और एक छोटी-सी डायरी में कुछ पढ़ रहा था।

करण सक्सेना उस कैदी को देखते ही चौंका...वह प्रोफेसर भट्ट थे।

"भट्ट साहब!" करण सक्सेना तेजी से उनकी तरफ लपका।

"आप!"

प्रोफेसर भट्ट ने अपना नाम सुनकर डायरी से निगाह हटाई और करण सक्सेना की तरफ देखा।

करण सक्सेना को देखते ही वो भी चौंके।

आखिर वो 'कमाण्डर' को पहचानते थे।

"क...कमाण्डर!"

वह यूं उछलकर खड़े हुए...जैसे उनके शरीर में जान आ गयी हो।

फिर वह करण सक्सेना के नजदीक आकर उससे लिपट गये तथा बिल्कुल बच्चों की तरह फफक उठे।

"कमाण्डर...मुझे यहां से निकालिये। मुझे इस नरक से निकालिये।" प्रोफेसर भट्ट फफकते हुए बोले—"अगर मैं कुछ दिन और यहां रहा...तो विश्वास जानिये, मैं मर जाऊंगा।"

"रिलैक्स प्रोफेसर...रिलैक्स!" करण सक्सेना ने बड़े यकीन के साथ उनकी पीठ थपथपाई—"आपको कुछ नहीं होगा...अब मैं आ गया हूं। दरअसल मुझे हिन्द महासागर में आपको ही ढूंढ निकालने का मिशन सौंपा गया था...लेकिन मेरी पनडुब्बी दुर्घटनाग्रस्त हो गयी और मैं भंवर में गिरकर यहां आ फंसा। सच तो ये है...यहां आने के बाद से मैं बहुत अपसेट था और अपने मिशन को लगभग पूरी तरह भूल चुका था। लेकिन अब आपको देखकर लग रहा है कि अच्छा ही हुआ...मैं भी यहां आ गया। वरना मैं शायद ही कभी आपको ढूंढ पाता।"

"लेकिन इस कैदखाने से निकलना कोई आसान बात नहीं है कमाण्डर!" प्रोफेसर भट्ट भयभीत मुद्रा में बोले—"हम इस वक्त यूं समझिये कि सात तालों में बंद हैं।"

"वह सब मैं सुन चुका हूं।" करण सक्सेना ने कहा—"परन्तु मुझे अपने आप पर और ईश्वर पर पूरा भरोसा है। अगर मैं आपको ढूंढता-ढूंढता सात तालों के पार यहां तक आ पहुंचा हूं...तो अब यहां से निकलने का भी कोई-न-कोई

जरिया बनेगा।''

''मुझे आप पर विश्वास है कमाण्डर!'' प्रोफेसर भट्ट उत्साहपूर्वक बोले—''मैं जानता हूं...आप घनघोर अंधेरे में भी रोशनी की किरण बनकर चमकते हैं। जहां कोई कामयाब नहीं होता...वहां कमाण्डर करण सक्सेना कामयाब होता है। आप यहां भी कामयाब होंगे। आप इस कैदखाने को तोड़कर भी बाहर निकलेंगे।''

''मैं पूरी कोशिश करूंगा प्रोफेसर!'' करण सक्सेना के अंदर भी अब अजीब-सा उत्साह दिखाई पड़ने लगा था।

प्रोफेसर भट्ट को वहां देखकर उसे जो खुशी मिली थी...उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

''क्या वह कम्प्यूटर फ्लॉपी भी आपके पास है...जिसमें आपकी सारी जिंदगी की रिसर्च फीड थी?''

''हां...वह कम्प्यूटर फ्लॉपी भी मेरे ही पास है। भला मैं उसे अपने से अलग कैसे होने दे सकता था कमाण्डर!''

प्रोफेसर भट्ट ने अपने कपड़ों के अंदर बहुत छुपाकर रखी कम्प्यूटर फ्लॉपी निकाली और उसे कमाण्डर करण सक्सेना को दिखाई।

''गुड!''

उस कम्प्यूटर फ्लॉपी को देखकर करण सक्सेना की आंखों में और भी तेज चमक दौड़ी।

''और वह दोनों कोस्टल गार्ड्स कहां हैं?'' करण सक्सेना ने पूछा—''जो आपको लाइफ बोट में लेकर भागे थे?''

''दरअसल हम तीनों लाइफ बोट में बिल्कुल सुरक्षित थे।'' प्रोफेसर भट्ट ने बताया—''और कोस्टल गार्ड्स ने मुझे डूबते हुए जहाज में अंदर से सकुशल निकाल लिया था। हम उस वक्त बड़ी तेजी के साथ मुम्बई बंदरगाह की तरफ बढ़ रहे थे कि तभी एकाएक आफत का पहाड़ हमारे ऊपर टूट पड़ा।''

''कैसा पहाड़...?''

''हमारी लाइफ बोट एक बड़े खतरनाक भंवर में फंस गयी थी कमाण्डर...और भंवर में फंसते ही वह आऊट ऑफ कंट्रोल हो गयी। हमारा रडार से सम्पर्क कट हो गया। कंट्रोल-रूम से सम्पर्क कट हो गया। लाइफ बोट की मशीनरी ने हरकत करनी

बंद कर दी। वह मौत के क्षण थे कमाण्डर...कुछ भी हमारे काबू में नहीं रह गया था। जहाज को डूबते देखकर मेरी इतनी भयंकर चीखें नहीं निकली थीं...जितनी लाइफ बोट को भंवर में गोल-गोल चक्कर काटते देखकर निकल गयीं। वह तूफानी स्पीड से घूमती हुई नीचे समुद्र तल की तरफ दौड़ी जा रही थी और फिर वह समुद्र की फटी हुई तह में से गुजर कर नीचे पहुंच गयी। तब तक उस लाइफ बोट की धज्जियां बिखर गयी थीं और वह बिल्कुल अस्थि-पंजर समान हो चुकी थी। तह के नीचे पहुंचते ही लाइफ बोट टूट गयी। तभी हम तीनों को एक सुरंग का दहाना दिखाई पड़ा और हम उस दहाने में घुस गये। वह पतली-सी सुरंग थी और हम उस सुरंग में आगे बढ़े चले जा रहे थे कि उसी क्षण हमारे साथ एक दुघर्टना पेश आ गयी।''

''कैसी दुर्घटना?'' करण सक्सेना की आवाज सस्पैंसफुल थी।

''दरअसल एक छोटी-सी चट्टान हमारे ऊपर आ गिरी।'' प्रोफेसर भट्ट ने बताया-''दोनों कोस्टल गार्ड्स उस विकट परिस्थिति में भी मेरा जरूरत से ज्यादा ख्याल रखे हुए थे...उन्होंने जैसे ही चट्टान को गिरते देखा, तो चीखते हुए मुझे आगे की तरफ धक्का दे दिया...परन्तु वह खुद को न बचा सके। चट्टान उन दोनों के ऊपर आ गिरी और वो वहीं उसके नीचे कुचल गये। उसी सुरंग में कुछ देर बाद मेरे ऊपर कुछ बौनों ने आक्रमण कर दिया था और फिर जब मेरी आंख खुली...तो मैं सात तालों से भी ज्यादा भयंकर इस कैदखाने में बंद था...जहां से बाहर निकलना कम-से-कम मेरे जैसे आदमी के लिये तो असंभव ही था।''

प्रोफेसर भट्ट की कहानी सुनकर करण सक्सेना ने गहरी सांस छोड़ी।

सुधाकर, वरीस गड़बड़ और चार्ल्स भी तब वहीं थे और प्रोफेसर भट्ट की एक-एक बात बहुत ध्यानपूर्वक सुन रहे थे।

प्रोफेसर भट्ट की कहानी कोई नई कहानी नहीं थी...वो वही कहानी थी, जो वहां मौजूद तकरीबन हर आदमी की कहानी थी।

बहरहाल उस पल के बाद से प्रोफेसर भट्ट भी उनके ग्रुप

में शामिल हो गये।

□□□
□□□

फिर वह पांचों एक साथ थोड़ा और आगे बढ़े।

प्रोफेसर भट्ट के चेहरे पर अब हताशा के चिन्ह नहीं थे बल्कि वो बड़े विश्वास से भरे नजर आ रहे थे।

उसके बाद एक गुफा में से गुजरते हुए करण सक्सेना की निगाह एक ऐसे नवयुवक कैदी पर पड़ी...जिसकी अवस्था मुश्किल से बीस-बाइस वर्ष होगी।

उसके शरीर पर बहुत कम कपड़े थे...लगभग न होने की बराबर।

इसके अलावा उसके शरीर का रंग भूरा था...बिल्कुल बौनों की तरह।

मगर उसका कद छः फुट के करीब था...यानी वो अच्छा खासा लम्बा था।

''मिस्टर चार्ल्स!'' करण सक्सेना ने चलते-चलते चार्ल्स के कंधे पर हाथ रखकर कहा—''यह नवयुवक कौन है और किस जाति का है?''

''यह देशी वासी है।'' चार्ल्स ने थोड़ा मुस्कराकर कहा।

''देशी? मैं समझा नहीं।' करण सक्सेना का स्वर उलझ गया—''क्या यह बौनों की जाति से है?''

''आधा!''

''आधा...क्या मतलब?''

''दरअसल इसके माता-पिता बाहरी संसार के कैदी हैं कमाण्डर!'' चार्ल्स बोला—''लेकिन चूंकि ये यहीं पैदा हुआ है...इसलिये देशी है। इसीलिये इसकी त्वचा का रंग भूरा है...क्योंकि इसके शरीर पर कभी सूर्य की किरण नहीं पड़ी। इसने ग्लोब में चमकते इन हरे प्रकाशों के अलावा कोई प्रकाश नहीं देखा। इसे जमीन की ऊपरी सतह के बारे में कुछ ज्ञान नहीं है...पृथ्वी पर क्या-क्या करिश्में हैं, यह कुछ नहीं जानता। यहां तक कि चाँद-सितारे भी इसके लिये बेमानी चीज है।''

चार्ल्स की बात सुनकर कमाण्डर करण सक्सेना हैरान रह गया।

विस्मित!

प्रोफेसर भट्ट भी इस जानकारी पर चौंके थे और आश्चर्यचकित से उस नौजवान को देखते रह गये।

"क्या ऐसे कुछ और लोग भी यहां हैं?" प्रोफेसर भट्ट ने पूछा।

"बहुत लोग हैं।" चार्ल्स बोला—"जब यहां औरत और मर्द रहेंगे तथा उनके बीच सैक्स होगा...जैसा कि आप देख ही रहे हैं...तो स्वाभाविक है, यहां बच्चे भी पैदा होंगे।"

"ओह!"

"सचमुच यह बड़े भाग्यहीन बच्चे हैं।" प्रोफेसर भट्ट बेइन्तहां अफसोसनाक लहजे में बोले।

"भाग्यहीन ये नहीं हैं प्रोफेसर!" चार्ल्स बोला—"बल्कि भाग्यहीन अगर कोई है...तो हम हैं।"

"हम? हम भाग्यहीन क्यों हैं? आखिर हमने संसार जैसी खूबसूरत चीज देखी है...जबकि इन बेचारे भाग्यहीन बच्चों को तो आंखें खोलने के बाद सिवाय इन सुरंगों के अलावा कुछ भी देखने को नहीं मिला...इन्हें तो यह भी नहीं मालूम कि ऊपर पृथ्वी पर कैसी-कैसी सुंदर वस्तुएं हैं।"

"आप एक बात भूल रहे हो प्रोफेसर!"

"क्या?"

"इंसान ने जो चीज कभी देखी नहीं, जो आनंद कभी लिया नहीं...उसके न मिलने का उसे कभी अफसोस नहीं होता। क्योंकि न वह उस आनंद से परिचित है और न उस चीज की खूबसूरती से। कष्ट उस समय होता है...जब इंसान से वह आनंद छीन लिया जाये, जिससे वह परिचित हो।"

प्रोफेसर भट्ट अब हैरानी से चार्ल्स की तरफ देखने लगे।

उसके तर्क सचमुच वास्तविकता के बेहद नजदीक और चौंका देने वाले थे।

"जैसे जो लोग अंधे होते हैं प्रोफेसर...उन्हें कोई दुःख नहीं होता।" चार्ल्स आगे बोला—"उन्हें केवल कभी-कभी यह सोचकर हीन भावना का अनुभव होता है कि कोई खास चीज उनके पास नहीं है, परन्तु जो लोग आंखों वाले होकर अचानक किसी दुर्घटना में अंधे हो जाते हैं...उनके दुःख का आप अनुमान

नहीं लगा सकते। या फिर मैं कुछ गलत कह रहा हूं प्रोफेसर?''

''नहीं।'' प्रोफेसर भट्ट ने चार्ल्स को प्रशंसनीय नजरों से देखा–''तुम ठीक कहते हो मिस्टर चार्ल्स! परन्तु सवाल ये है कि यह सारा जीवन किस तरह गुजारेंगे?''

''इसमें जीवन गुजारने जैसी कोई बात नहीं है...जीवन तो इनका गुजर ही रहा है। यह नौजवान नये नहीं हैं। यहां कुछ बूढ़े भी ऐसे हैं...जो इन्हीं सुरंगों में पैदा हुए, यहीं जवान हुए, यहीं बूढ़े हुए और यहीं मर जायेंगे।''

''मेरा मतलब है...चूंकि यहां करने को इनके लिये कुछ नहीं, कोई मनोरंजन नहीं, कोई खेल-कूद का साधन नहीं, यह बेकारी और जीवन की एकरसता ये लोग आखिर किस तरह सहन करते हैं?''

''ऐसे तमाम लोग ऐसी चीजों के आदी हो चुके हैं प्रोफेसर!'' चार्ल्स बोला।

''आदी!''

''हां, प्रोफसर!'' लेकिन एक बात है।''

''क्या?''

''जो लोग कुछ करना चाहते हैं...उनके लिये यहां परिश्रम करने के अवसर भी हैं।''

''परिश्रम करने के क्या अवसर हैं?'' करण सक्सेना ने पूछा।

उन कैदियों की जिंदगी और उनके रहन-सहन के तौर-तरीके अब करण सक्सेना को भी प्रभावित करने लगे थे।

सचमुच उनके बारे में जानने को अभी काफी कुछ था।

''जैसे हम कैदी अपनी खुराक के लिये मशरूम (कुकुरमुत्ता) यहां स्वयं उगाते हैं और यह काम काफी मेहनत का भी है। मशरूम के बाग उगाने के लिये यहां बाकायदा जमीन खोदनी पड़ती है और फिर उन खेतों में काम करना होता है। इसके अलावा जब मशरूम उग आते हैं...तो फिर उनसे खुराक तैयार करने के लिये भी काफी मेहनत करनी होती है।''

''क्या यह सारे काम कैदी ही करते हैं?'' करण सक्सेना ने अचरज से पूछा।

''बिल्कुल...और भला यहां कौन करेगा! आपको सुनकर हैरानी होगी कमाण्डर...यहां के कैदियों ने मशरूम से शराब तक बनाने का तरीका इजाद कर लिया है।''

''शराब!''

''यस कमाण्डर!'' और आपको सुनकर आश्चर्य होगा...मशरूम से बनायी गयी वह शराब होती भी काफी उम्दा क्वालिटी की है। आप भी पियेंगे...तो आपको भी वह शराब पसंद आयेगी।''

करण सक्सेना को अब वहां की बहुत-सी बातें प्रभावित कर रही थीं।

जहां वो एक बहुत खतरनाक जगह थी...वहीं उस जगह रोमांचकारी तथा हैरत में डाल देने वाली बातें भी कई थीं।

''इसके अलावा यहां बहुत-से लोग आर्ट की तरफ भी ध्यान देते हैं कमाण्डर!'' चार्ल्स ने एक नया रहस्योद्घाटन किया।

''यानी यहां आर्टिस्ट भी हैं?''

करण सक्सेना चौंका।

''बिल्कुल...और वो अच्छे-खासे आर्टिस्ट हैं। आइये...मैं आपको यहां आर्ट के कुछ नमूने भी दिखाता हूं।''

''चलो।''

वह सब चार्ल्स के साथ-साथ चल पड़े।

❑❑❑

❑❑❑

कई सुरंगों में से गुजर कर वह एक गुफा में पहुंचे।

वह गुफा दूसरी गुफाओं से बिल्कुल अलग थी। पहली नजर देखते ही वो कला का एक अद्वितीय शाहकार नजर आती थी।

करण सक्सेना ने देखा...उस गुफा में दीवारों पर पत्थरों को खोदकर चित्र बनाये गये थे।

''कमाण्डर!'' चार्ल्स ने उस गुफा में चारों तरफ हाथ घुमाते हुए कहा—''कहा जाता है कि इस गुफा में ये चित्र बौनों ने बनाये हैं...क्योंकि यह उनके देवताओं के चित्र हैं। इन चित्रों में उनका इतिहास, उनकी संस्कृति दिखाई गयी है।''

करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट ने निकट जाकर उस

एक-एक चित्र को ध्यानपूर्वक देखा।

वह चित्र बड़े विचित्र थे।

जैसे उनमें शरीर इंसानों के थे और सिर पशुओं के...जो बड़े ही भौंडे तरीके से बनाये गये थे।

हर चित्र में दिखाया गया था कि वह बौने या तो किसी देवता के कदमों पर झुके हुए थे या फिर उसके गिर्द नाच रहे थे।

उन चित्रों के द्वारा एक बात बड़े डंके की चोट पर साबित होती थी।

वो यह कि बौनों में भक्ति भाव बहुत था।

वह अपने देवताओं पर अंधविश्वास करते थे और उन्हें खूब मानते थे।

करण सक्सेना के कदम एक चित्र के सामने जाकर ठिठक गये।

वह चित्र दूसरे चित्रों के मुकाबले कुछ बड़ा था और उसे बनाने में भी काफी मेहनत की गयी थी। उस चित्र में भी शरीर तो इंसान का ही था...लेकिन चेहरा बिल्ली का बनाया गया था।

बिल्ली!

करण सक्सेना के दिमाग में छनाका-सा हुआ।

वह कुछ देर आश्चर्य से उस चित्र को देखता रहा और फिर उसके मुंह से खुद-ब-खुद निकला–"सुंबा।"

"हां, यह सुंबा ही है।" करण सक्सेना के पीछे खड़े सुधाकर ने कहा–"सुंबा देवी! बौने इस सुंबा देवी को बहुत मानते हैं।"

"मिस्टर चार्ल्स!" करण सक्सेना एकाएक चार्ल्स की तरफ घूमकर बोला–"क्या तुम इन बौनों के इतिहास से वाकिफ हो या फिर इनके कल्चर से परिचित हो?"

"हां...थोड़ा-बहुत तो हूं।" चार्ल्स बोला–"जैसे मोगो और पीगो नाम के जो कबीले थे...यह बौने उन्हीं के वशंज हैं। मोगो कबीले के लोग लम्बे-तडंगे होते हैं और पीगो लोग बौने! यह लोग अफ्रीका के पिगमी वासियों की तरह होते हैं...लेकिन

इन दोनों कबीलों के कल्चर में ज्यादा अंतर नहीं है। जैसे इनके देवी-देवता एक हैं...खान-पान के तरीके एक हैं...इसके अलावा और भी ढेरों बातें हैं, जो इनकी एक समान हैं। हजारों वर्षों से ये लोग इन देवी-देवताओं की पूजा करते चले आ रहे हैं। सुंबा भी इनकी एक देवी है...जो शक्ति की देवी मानी जाती है।''

''शक्ति की देवी!''

''यस कमाण्डर!''

''क्या जो बात तुम कह रहे हो मिस्टर चार्ल्स, वह तुम्हारी थ्यौरी ही है...या फिर इसके पीछे कुछ सच्चाई भी है?''

''वैसे तो यह मेरी थ्यौरी ही है।'' चार्ल्स ने बेहिचक कबूल किया-''परन्तु मेरी यह थ्यौरी इन चित्रों से ठीक साबित हो जाती है कमाण्डर! मेरा ख्याल ये है कि यह भूरे बौंने दरअसल सतह पर रहने वाले पीगो कबीले की जाति से हैं। या पीगो कबीले के लोग इस जाति से हैं...दोनों में से कोई भी बात हो सकती है। आप ध्यान से देखोगे कमाण्डर...तो महसूस करोगे कि इन बौनों के कद और नख-शिख पीगो लोगों से मिलते हैं। इनके देवता भी वहीं हैं अंतर सिर्फ इतना कि इन बौनों का रंग भूरा है...जबकि पीगो लोगों का रंग भूरा नहीं था।''

''क्यों!'' करण सक्सेना ने पूछा-''जब यह लोग एक ही जाति के हैं...एक ही कबीले के हैं...तो फिर इनकी रंगत में ही क्यों फर्क है?''

''इसके पीछे एक साइंटिफिक वजह है।''

''क्या?''

''दरअसल यह बौने चूंकि समुद्र तल के नीचे इन बंद गुफाओं और सुरंगों में रहते हैं।'' चार्ल्स ने बताया-''तो उस कारण इनके शरीर पर सूर्य का प्रकाश नहीं पड़ता और इसीलिये इनके शरीर की रंगत भूरी है। जबकि जो लोग ऊपरी सतह पर भूमध्य रेखा के निकट रहते हैं...उनके शरीर सूर्य की अल्ट्रा-वायलेट किरणें ज्यादा संख्या में सोखते हैं और इसी कारण उनकी त्वचा के पिगमेंट काले हो जाते हैं। यही वजह है कि पीगों कबीले के लोगों और इन बौनों की रंगत में फर्क है...इसके पीछे कोई दूसरी वजह नहीं है।''

"मिस्टर चार्ल्स ठीक कह रहे हैं।" प्रोफेसर भट्ट ने भी अब चार्ल्स को प्रशंसनीय नजरों से देखा—"जरूर रंगत में फर्क के पीछे यही वजह होगी...इसके अलावा कोई दूसरी वजह नहीं हो सकती। सूर्य की अल्ट्रा-वायलेट किरणों से ही जिस्म की रंगत स्याह पड़ती है।"

करण सक्सेना भी जानता था...वाकई चार्ल्स ठीक कह रहा है।

सचमुच उसकी थ्यौरियों में दम होता था।

"कमाण्डर...अब से सैकड़ों वर्ष पहले यह जाति या तो इन गुफाओं में रहती थीं।" चार्ल्स ने आगे कहा—"और बाद में इनमें से कुछ लोग सतह पर जाकर रहने लगे तथा पीगो कहलाने लगे। या फिर एक दूसरी बात भी मुमकिन है।"

"क्या?"

"मुमकिन है...पहले यह तमाम लोग सतह पर ही रहते हों और फिर कुछ ऐसी समुद्री आपदा हुई हों, जिनसे घबराकर यह इन गुफाओं में आकर रहने लगे। बहरहाल कुछ भी हो...कम-से-कम इन देवताओं के चित्रों से तो यह जरूर ही साबित होता है कि इन लोगों का कल्चर एक है। लेकिन अब यह बौने अपनी स्वजाति पीगो वासियों से भी मिलना पसंद नहीं करते और इन्होंने इन्हीं गुफाओं में अपना एक अलग संसार बसा लिया है। अब यह बाहरी संसार से भयभीत रहते हैं।"

"मिस्टर चार्ल्स!" करण सक्सेना बोला—"तुम्हारी बातें अब काफी कुछ मेरे समझ आ रही हैं।"

"चलो शुक्र है।" चार्ल्स ने मुस्कराते हुए कहा—"मेरी थ्यौरियां किसी के तो समझ आयीं। वरना जब मैं यहां किसी को अपनी थ्यौरी सुनाता हूं...तो लोग या तो मुझे पागल कहते हैं या फिर ये कहते हैं कि जल्द ही यह पागल होने वाला है।"

"दोनों में से कोई भी बात नहीं है।"

"थैंक्यू कमाण्डर!"

"बल्कि तुम्हारी थ्यौरियां सुनकर अब एक नया ख्याल मेरे दिमाग में भी आ रहा है मिस्टर चार्ल्स!"

"वह क्या?"

"जब मैं और रचना मुखर्जी उस ऊपर वाली सुरंग में दाखिल

हुए थे, तो हमारे साथ एक बिल्ली थी...जिसे रचना ने अपनी गोद में ले रखा था। शुरू में बौनों ने बिल्ली • देखा था। लेकिन जैसे ही उनकी नजर बिल्ली पर पड़ी...तो भीतर अचानक एक हलचल-सी पैदा हो गयी थी और • तेजी के साथ रचना मुखर्जी की तरफ बढ़े थे। मैंने उन पर फा की। उनमें से बहुत- से मर गये। इसीलिये उन्होंने मुझे पकड़ घूंसों और लातों से मारना शुरू कर दिया था। लेकिन होते-होते मैंने देखा कि वह रचना मुखर्जी को केवल पकड़ थे...उसे मार नहीं रहे थे। इसके अलावा इस चित्र से है कि बिल्ली इनकी देवी है और बिल्ली रचना मुखर्जी की गोद में थी। तो क्या यह मुमकिन है कि उन्होंने रचना मुखर्जी को भी पवित्र मान लिया हो और इसीलिये उसको ऊपर रोककर रखा हो?''

''हां...यह संभव है।'' चार्ल्स ने एकाएक बहुत उत्साहित होकर कहा–''यह जंगली लोग श्रद्धा के बड़े कच्चे होते हैं। बहुत मुमकिन है...अब ऊपर रचना मुखर्जी की पूजा की जा रही हो।''

वह शब्द सुनकर करण सक्सेना की आंखों में भी चमक आ गयी।

वो बेपनाह उत्साह से भर उठा।

''अगर यह बात सच है।'' करण सक्सेना कौतूहलतापूर्वक बोला–''अगर वास्तव में ही ऊपर रचना मुखर्जी की पूजा की जा रही है...तो वो मुझे यहां से बाहर निकालने के लिये कोई-न-कोई हथकण्डा जरूर इस्तेमाल करेगी।''

''रचना मुखर्जी चाहे कुछ भी करें।'' चार्ल्स ने अपने कंधों को उचकाकर कहा–''लेकिन मैं एक बात जानता हूं और खूब अच्छी तरह जानता हूं।''

''क्या?''

''यह लोग तुम्हें या रचना मुखर्जी को बाहर सतह पर जाने की आज्ञा नहीं दे सकते...क्योंकि उन्हें मालूम है कि अगर एक भी इंसान जीवित बाहर चला गया, तो उनका भेद खुल जायेगा कमाण्डर! वो भेद...जिसे वे हजारों वर्षों से अब तक सफलतापूर्वक छिपाये चले आ रहे हैं।''

तब तक करण सक्सेना गुफा के सारे चित्र देख चुका था।

उसे मालूम था...चार्ल्स की वो बात भी किसी हद तक ठीक ही है।

सचमुच बौने उन्हें आसानी से बाहर नहीं निकलने देंगे।

"तुम मुझे शायद किसी आर्टिस्ट से मिलाने चल रहे थे।" करण सक्सेना ने चार्ल्स से एकाएक थोड़ा रुककर कहा।

"हां...आओ आर्टिस्ट के पास चलते हैं।"

वह सब फिर गुफा से निकलकर एक कॉरीडोरनुमा सुरंग में चल दिये।

□□□

□□□

वो सब उस सुरंग में चले जा रहे थे।

बिल्कुल खामोश!

चुप!

रास्ते में चलते-चलते एकाएक करण सक्सेना पुनः बोला—"मिस्टर चार्ल्स!"

चार्ल्स ने तुरन्त करण सक्सेना की तरफ देखा।

उसकी आवाज में तत्परता थी।

"आपने अभी बताया था मिस्टर चार्ल्स!" करण सक्सेना बोला—"कि आप लोगों को मशरूम उगाने के लिये खेतों और बागों में खुद ही काम करना पड़ता है।"

"जी हां।"

"क्या आप लोगों को खेतों की खुदाई भी करनी पड़ती है?" करण सक्सेना ने पूछा।

"हां।"

"खुदाई आप किन चीजों से करते हैं? क्या यहां फावड़े और बेलचे आदि हैं?"

"फावड़े आदि तो नहीं हैं।" चार्ल्स बोला—"हां, नोकदार पत्थरों से बने हुए कुछ औजार जरूर हैं...जिनसे जमीन खोदी जाती है और मशरूम काटे जाते हैं।"

"कुछ भी सही...यानी आप लोगों के पास ऐसे हथियार हैं, जिनसे जमीन की खुदाई तक हो सकती है।"

"बिल्कुल...ऐसे काफी औजार हमारे पास हैं।" चार्ल्स

ने कबूल किया।

"जब आपके पास ऐसे औजार हैं मिस्टर चार्ल्स...तो फिर आप लोग सुरंग क्यों नहीं खोदते? ऐसे हथियारों की मार्फत तो सुरंग बड़ी आसानी से बनायी जा सकती है। फिर आपके पास तो यहां मेन पॉवर भी बड़ी तादाद में है...आखिर डेढ़ हजार कैदी यहां मौजूद हैं। वह सब मिलकर इन औजारों से ऊपर जाने के लिये एक सुरंग का निर्माण करेंगे...तो क्यों सुरंग नहीं बनेगी। अगर थोड़ी-थोड़ी भी सुरंग रोज बनायी जाये...तो पांच-छः वर्ष में जमीन की सतह तक सुरंग बड़ी सहूलियत से बनायी जा सकती है और सब लोग अपने-अपने देश वापस जा सकते हैं।"

"लेकिन सुरंग बनाने में एक परेशानी है और बड़ी भयंकर परेशानी है।"

"क्या?"

"इतनी लम्बी सुरंग बनाने के लिये काफी टाइम चाहिये।" चार्ल्स बोला–"और इस बीच अगर बौनों को पता चल गया कि हम सुरंग बना रहे हैं...तो वे कभी भी उस सुरंग को पूरी न होने देंगे।"

"यह तो है।"

"फिर सुरंग बनाने में हमारे सामने एक मुश्किल और है कमाण्डर!"

"क्या?"

"हमें बौनों के बारे में भी कुछ मालूम नहीं है कि ऊपर की तह पर वह कौन-कौन से और कितने बड़े हिस्से में फैले हुए हैं। यहां से जो सुरंग बनायी जायेगी...वह ऊपर उनकी सुरंग की परत से होकर जरूर गुजरेगी और अगर वह ठीक उस जगह से गुजरी...जहां बौने हैं, तो उसी क्षण हंगामा हो जायेगा।"

करण सक्सेना के नेत्र सिकुड़ गये।

"यानी इस बारे में पहले ही काफी कुछ सोचा जा चुका है।" करण सक्सेना ने निराश मुद्रा में कहा।

"एक बार नहीं, बल्कि इस विषय में कई बार सोचा जा चुका है कमाण्डर!" चार्ल्स ने जवाब दिया–"और हर बार हमें हताशा ही हाथ लगी है।"

"एक बात मेरी और समझ नहीं आयी।" करण सक्सेना

काफी सोच-विचारकर बोला—"और उस बात को लेकर मैं अभी भी काफी उलझन में हूं।"

"क्या बात?"

"यह बौने अभी तक पत्थरों के औजार और हथियार इस्तेमाल करते हैं...ठीक?"

"ठीक!"

"इनके पत्थरों के औजार इस्तेमाल करने तथा खान-पान के तरीके को देखकर यह अहसास होता है कि अभी ये काफी पिछड़े हुए हैं और आदिमानव की तरह जिंदगी बसर कर रहे हैं, परन्तु इन्होंने गुफाओं और सुरंगों में जो ग्लोब फिट किये हुए हैं...उन्हें देखकर बिलकुल उलटा अहसास होता है।"

"कैसा अहसास?"

"उन ग्लोबों को देखकर पता चलता है कि इन लोगों की साइंस बहुत एडवांस है। ग्लोबों में से जो हरा प्रकाश निकलता है...उसे देखकर हैरानी होती है। मैं आज तक नहीं समझ पाया...इन ग्लोबों में से निकलने वाला यह प्रकाश कैसा है? यह ग्लोब कैसे हैं? बिना बिजली पैदा किये, बिना तारों के, हजारों वर्षों से वह इन सुरंगों को प्रकाशित रखे हुए हैं। क्या यह विचित्र बात नहीं?"

"यह वास्तव में बहुत विचित्र बात है।" चार्ल्स ने जवाब दिया—"सच तो ये है कमाण्डर...मुझे भी यह ग्लोब देखकर आश्चर्य हुआ था। इतना ही नहीं...मैंने एक बार इस रहस्य की तह में भी जाने की कोशिश की थी कि आखिर बिना बिजली के यह ग्लोब जलते कैसे हैं?"

"इनके रहस्य क़ी तह तक पहुंचने के लिये तुमने क्या किया?"

"इसके लिये एक मर्तबा मैंने एक ग्लोब को तोड़कर देखा कमाण्डर!"

"ओह...फिर क्या नतीजा निकला?"

"सबसे पहला नतीजा तो यही निकला।" चार्ल्स बोला—"कि ग्लोब वस्तुतः किसी शीशे का बना हुआ नहीं है।"

"फिर किस चीज का बना हुआ है?" करण सक्सेना की आवाज में भी आश्चर्य कूट-कूटकर भरा था।

और!

यही हालत प्रोफेसर भट्ट की थी।

वो भी बड़ी हैरत के साथ उस अद्‌भुत संसार की बातें सुन रहे थे।

"बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कमाण्डर...यह मैं भी नहीं बता सकता कि वह ग्लोब किस चीज़ का बना हुआ है। यह तो किसी वैज्ञानिक लैबोरेट्री में टैक्ट करके ही पता लग सकता है। मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि मैंने जब ग्लोब तोड़ा था...तो वह शीशे की तरह नहीं बिखरा था और न ही उसमें दरारें पड़ी थीं।"

"फिर?"

"वह ग्लोब बिल्कुल किसी धातु की तरह टूटा था...जैसे कोई मजबूत धातु टूटती है।"

"और उस ग्लोब के अंदर क्या था?"

"ग्लोब टूटने पर उसके भीतर से हरे रंग की कोई गाढ़ी-गाढ़ी चीज निकली थी और जमीन पर गिरते ही वह चीज कुछ सेकण्ड्स में ही भाप बनकर गायब हो गयी थी।"

"इसका क्या मतलब है।" करण सक्सेना ने चौंककर पूछा—"वह हरे रंग की गाढ़ी-गाढ़ी चीज भाप बनकर क्यों उड़ गयी?"

"इसका मतलब मैं समझता हूं।" प्रोफेसर भट्ट तुरन्त बोले।

"क्या मतलब है?"

"जहां तक मेरा अनुमान है।" प्रोफेसर भट्ट ने कहा—"हरे रंग की जिस गाढ़ी-गाढ़ी चीज का जिक्र मिस्टर चार्ल्स कर रहे हैं...वह फॉस्फोरस है।"

"फॉस्फोरस...लेकिन फॉस्फोरस प्रकाश कैसे दे सकता है?" करण सक्सेना बोला।

"इसमें कोई शक नहीं कमाण्डर...फॉस्फोरस प्रकाश नहीं दे सकता, लेकिन अगर फॉस्फोरस में यूरेनियम को मिला दिया जाये...तो वह बिलकुल ऐसा ही हरे रंग का प्रकाश देगा, जैसे ग्लोव देते हैं। और चूंकि यह ग्लोव चारों तरफ से बंद हैं...इसलिये इनमें से कोई भी चीज खत्म नहीं होती।"

"आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं प्रोफेसर!" चार्ल्स गरमजोशी के साथ बोला—"हरे रंग की उस गाढ़ी चीज को देखकर मैंने भी यही अंदाजा लगाया था कि वह जरूर फॉस्फोरस और यूरेनियम का मिश्रण है...जो प्रकाश दे रहा है।"

"लेकिन सवाल ये है कि यह ग्लोब आखिर बनाये किसने?" करण सक्सेना एक-एक शब्द पर जोर देकर बोला—"यह फॉस्फोरस किसने तलाश किया? किसने यह समझा कि फॉस्फोरस यूरेनियम के साथ मिलकर हरा प्रकाश दे सकता है?"

"इस बारे में भी मेरी एक थ्यौरी है कमाण्डर!" चार्ल्स ने कहा।

"वो क्या?"

"संभव है कि अब से हजारों वर्ष पहले इस जाति की साइंस एडवांस हो। या इनमें कुछ वैज्ञानिक पैदा हुए हैं और अब यह लोग विज्ञान को भूल चुके हों।"

"यह नामुमकिन है।" सुधाकर ने पुरजोर लहजे में कहा—"विज्ञान ऐसी चीज नहीं चार्ल्स भाई...जिसे इतनी आसानी से भुलाया जा सके।"

चार्ल्स के होटों पर मुस्कराहट आ गयी।

हल्की-सी मुस्कराहट।

"हम यह बात कहते हुए अपने ही मानव-इतिहास को भूल रहे हैं सुधाकर!"

"वो कैसे?"

"अगर तुम्हें इतिहास में थोड़ी-बहुत भी दिलचस्पी रही है...तो शायद तुमने पढ़ा होगा कि अब से दो हजार वर्ष पहले सिकंदरिया के एक आदमी 'हीरो' ने एक स्टीम इंजन बनाया था...जो भाप से काम करता था। लेकिन उसके बाद लोग उस इंजन को भूल गये। दो हजार वर्ष बाद यूरोप में दोबारा भाप का इंजन बनाने का काम शुरू हुआ और इसीलिये यूरोप के वैज्ञानिक इसे आज भी अपनी ईजाद समझते हैं। इसके अलावा हजारों वर्ष पहले ऐसी मशीनें भी बनाई गयी थीं...जो बिना किसी बाहरी शक्ति के हरकत करती थीं। यानी वह हरकत के मोमेंटम यानी धक्के वाले सिद्धान्त पर खुद-ब-खुद चलती रहती थीं। और

एक पहिया घूमता रहता था। आज के वैज्ञानिक वह मशीन नहीं बना सकते या मैं गलत कह रहा हूं?''

''नहीं...बात बिल्कुल ठीक है।'' प्रोफेसर भट्ट ने भी कबूल किया–''आज के वैज्ञानिक सचमुच उस तरह की मशीनें नहीं बना सकते।''

''सिर्फ मशीनें ही नहीं बना सकते प्रोफेसर...बल्कि कुछ वैज्ञानिक तो इस बात का भी दावा करते हैं कि ऐसी मशीनें बन ही नहीं सकतीं। वो इस बात को भी कहते हैं कि जिन लोगों ने भूतकाल में ऐसी मशीनें बनाने का दावा किया था...वह झूठ बोलते थे। या ये बात नहीं है?''

''नहीं।'' प्रोफेसर भट्ट बोले–''यह सारी बातें सच हैं।''

''अब आप खुद बताइये प्रोफेसर...कौन विश्वासपूर्वक कह सकता है कि वह आदमी झूठ बोलते थे या सच बोलते थे। क्या पता भूतकाल में वास्तव में ही ऐसी मशीन बन गयी हो, जिसका रहस्य हम तक नहीं पहुंच सका। इंसान का स्वभाव है कि जो काम वह स्वयं नहीं कर सकता...उसको असंभव समझ लेता है। अब से दो सौ वर्ष पहले तक कौन सोच सकता था कि इंसान चाँद पर पहुंच सकता है या फिर हवाई जहाज और टेलीविजन जैसी चीजों की कल्पना करनी भी किसके लिये आसान थी। उस समय यह बात असंभव थी...लेकिन अब संभव है। इसी तरह आज ऐसी मशीन बनाना असंभव है...लेकिन कल को अगर कोई जीनियस इंजीनियर ऐसी मशीन बना लेता है...तो संभव हो जायेगा।''

करण सक्सेना एक बार फिर चार्ल्स को प्रभावित निगाहों से देखे बिना न रह सका।

सचमुच उस आदमी की तर्कशक्ति अद्भुत थी।

वो बुद्धिमान था।

''दरअसल प्राचीन काल के इंसानों में एक खराबी यह थी कमाण्डर!'' चार्ल्स बोला–''कि वह विज्ञान की बातों को रहस्य की तरह छिपाकर रखते थे और केवल अपनी संतान को ही वह रहस्य बताकर जाते थे...ताकि वह दूसरे आम इंसानों में अपनी श्रेष्ठता बनाकर रख सकें। संभव है...इसी तरह स्वचालित मशीनों का रहस्य उस जमाने के लोग अपने सीने में लेकर मर

गये हों। और संभव है कि इन बौनों मे भी कभी कुछ वैज्ञानिक पैदा हुए हों, जिन्होंने यह ग्लोब बनाये हों...इनमें प्रकाश देने वाले तत्वों का रहस्य समझा हो और फिर वह लोग यह रहस्य अपने सीने में लेकर ही मर गये हों।''

''यह बात मानने को हालांकि दिल नहीं चाहता मिस्टर चार्ल्स!'' करण सक्सेना कुछ सोचकर बोला—''लेकिन फिर भी इसमें एक 'लॉजिक' जरूर दिखाई पड़ता है।''

वह पांचों अब आपस में बात करते हुए कॉरीडोर के बिल्कुल आखिरी सिरे पर पहुंच गये थे।

आगे रास्ता बंद था।

अब वहां एक बहुत चौड़ा मेहराबनुमा दरवाजा दिखाई पड़ रहा था।

वह किसी गुफा का दरवाजा था। और उस गुफा के इधर-उधर काफी 'काई' जमी हुई थी, जो सीलन की वजह से पैदा हुई थी।

''जकिल! जकिल!'' चार्ल्स ने उस मेहराबदार दरवाजे के नजदीक पहुंचकर ऊंची आवाज में पुकारा—''क्या तुम भीतर हो जकिल?''

''हां, चार्ल्स...मैं हूं।'' तुरन्त ही भीतर से किसी पुरुष की आवाज आयी—''अन्दर आ जाओ।''

वह सब उस मेहराबदार दरवाजे में दाखिल हुए।

और!

अंदर कदम रखते ही मानो गजब हो गया।

कमाण्डर करण सक्सेना हक्का-बक्का-सा उस जगह को देखता रह गया था।

❑❑❑

❑❑❑

वह एक बहुत ऊंची छत की गुफा थी...जिसमें उस वक्त वह पांचों खड़े थे।

उस गुफा को काटकर एक बहुत खूबसूरत चौकोर कमरे की शक्ल दे दी गयी थी।

यह कमरा हॉल की तरह खूब लम्बा-चौड़ा और उस कमरे की सारी दीवारें असंख्य चित्रों से भरी हुइ थीं।

चारों तरफ चित्र-ही-चित्र थे।

तरह-तरह के चित्र!

सामने दीवार के नजदीक ही ऊंचे-से पत्थर पर लम्बा-तड़ंगा-सा एक आदमी खड़ा था।

उसका रंग 'काला' था।

गहरा काला।

जैसे वह कोई अफ्रीकन हो।

उस काले भर्राट आदमी के हाथों में ब्रुश जैसी कोई चीज थी और नीचे पत्थर के प्यालों में घुले हुए रंग रखे थे।

वह काला अफ्रीकन-सा आदमी उन लोगों को देखकर पत्थर से उतरकर नीचे आ गया और फिर चार्ल्स के सामने आकर बहुत गरमजोशी के साथ बोला—"हैलो चार्ल्स!"

"हैलो!"

"तो यह नये आये हैं?"

"हां...इनका नाम कमाण्डर करण सक्सेना है।" चार्ल्स ने परिचय कराया—"और यह प्रोफेसर भट्ट हैं।"

"प्रोफेसर से मैं पहले ही मिल चुका हूं।"

"ओह...मैं भूल गया था। कमाण्डर...इनसे मिलिये, यह मिस्टर जकिल हैं और नैरोबी के रहने वाले हैं।"

"हैलो मिस्टर जकिल!"

"हैलो!"

कमाण्डर करण सक्सेना और जकिल के हाथ भारी गरमजोशी के साथ मिले।

उसके हाथ मुलायम थे।

जैसे अमूमन कलाकारों के पाये जाते हैं।

"मिस्टर जकिल यहां तक किस तरह पहुंचे?" करण सक्सेना ने पूछा।

"उसी तरह पहुंचे...जैसे हम सब यहां आये हैं। यह समुद्र में मछली पकड़ते हुए तफरीह कर रहे थे कि इनकी बोट दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। फिलहाल इनको इस खौफनाक जेल में रहते हुए दस साल से भी ज्यादा गुजर चुके हैं।"

"यानी यहां आप सबसे पहले से इधर हैं?"

"यस कमाण्डर!"

करण सक्सेना की निगाह जकिल के चेहरे पर जाकर ठहर गयी।

जकिल की कनपटी के बाल सफेद होने लगे थे और उसके चेहरे पर उदासी थी। वह उदासी...जो उस खौफनाक जगह रहते हुए पैदा हुई थी।

करण सक्सेना ने देखा...लेकिन फिर भी जकिल की आंखों में प्रतिभा की चमक थी।

करण सक्सेना ने परिचय के बाद दीवारों की तरफ संकेत करते हुए कहा–"क्या यह सारे चित्र आपने बनाये हैं मिस्टर जकिल!"

"हां...मैंने ही बनाये हैं।" जकिल ने जवाब दिया–"और शायद मैं इसीलिये आज तक जीवित हूं। अगर मैं यहां रहकर अपना सारा ध्यान इन पेन्टिंग्स की तरफ न लगा लेता...तो निश्चित रूप से मैं अब तक या तो आत्महत्या कर चुका होता या फिर पागल हो जाता। यहां का दिमाग को भन्ना देने वाला माहौल ही ऐसा है...जो इंसान को कहीं का नहीं छोड़ता।"

"मैं एक सवाल पूछूं?"

"पूछिये।"

"जब आप नैरोबी में रहते थे...क्या तब भी आपकी चित्रकारी में दिलचस्पी थी?"

"हर्गिज़ नहीं। पहले तो कभी मैंने ब्रुश को अपने हाथ में भी पकड़कर नहीं देखा था।"

"तब तो मैं यही कहूंगा कि आप जन्मजात आर्टिस्ट हैं मिस्टर जकिल! अगर यह चित्र किसी तरह हमारे संसार में प्रदर्शनी के लिये रख दिये जायें...तो आपको शायद 'पिकासो' से बड़ा आर्टिस्ट मान लिया जायेगा।"

"आप मजाक कर रहे हैं कमाण्डर!"

"नहीं...मैं ठीक कह रहा हूं मिस्टर जकिल!" करण सक्सेना पूरी संजीदगी के साथ बोला–"ऐसे घटिया रंगों से इस तरह के चित्र बना लेना साबित करता है कि आप जीनियस हैं।"

जकिल के होठों पर हल्की-सी मुस्कान दौड़ गयी। ऐसा मालूम होता था...वह आदमी वर्षों बाद मुस्कराया था।

"थैंक्स कमाण्डर...अगर आप यह बात दिल से कह रहे

हैं...तो वैरी-वैरी थैंक्स!"

"कमाण्डर!" सुधाकर उत्साहपूर्वक बोला–"आपको अभी मिस्टर जकिल की एक खूबी तो और पता नहीं है।"

"क्या?"

"यह केवल ब्रुश के ही धनी नहीं हैं बल्कि इनमें एक खूबी और भी है।"

"क्या?"

"यह मूर्तिकार भी हैं...और बहुत अच्छे मूर्तिकार हैं। बराबर वाली गुफा में इनकी तराशी हुई ढेरों मूर्तियां हैं...जो इन चित्रों की तरह ही आपको बहुत-बहुत पसंद आयेंगी।"

वह सब जकिल के साथ अब बराबर वाली गुफा की तरफ बढ़े।

उस गुफा में पहुंचते ही करण सक्सेना एक बार फिर चौंका।

वहां चारों तरफ मूर्तियां-ही-मूर्तियां थीं।

ढेरों मूर्तियां!

उनमें से बहुत-सी मूर्तियां बौनों की थीं और उनके देवी-देवताओं की भी थीं।

करण सक्सेना उन मूर्तियों को देखने में खो गया।

सचमुच वह मूर्तियां शाहकार थीं।

अद्‌भुत शाहकार!

वह जकिल की कारीगरी का बेहतरीन नमूना थीं।

"मारवलस मिस्टर जकिल!" करण सक्सेना मुक्त कण्ठ से उसकी प्रशंसा करता हुआ बोला–"मारवलस! इन मूर्तियों को देखने के वाद वास्तव में ही साबित हो गया है कि आप एक बेहतरीन आर्टिस्ट हैं।"

"थैंक्यू!"

करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट काफी देर तक उन मूर्तियों का अवलोकन करते रहे।

तभी जकिल उन सबके लिये छोटे-छोटे प्यालों में कुछ ले आया...जो शरबत की तरह था।

"लीजिये...आप लोग पीयें।"

"यह क्या है?"

करण सक्सेना ने चौंककर उन प्यालों की तरफ देखा।
वह प्याले भी पत्थर के ही बने हुए थे।
"फैनी...यह फैनी है कमाण्डर!" जकिल ने बताया-"और इसे मैंने खुद अपने हाथों से तैयार किया है।"
"वह फैनी...जो गोवा की प्रसिद्ध शराब है!" करण सक्सेना आश्चर्यपूर्वक बोला।
"जी नहीं।" सुधाकर पुनः बोला-"यह मशरूम की ही बनाई हुई शराब है...जिसे हम लोग हाथ से खींच-खींचकर तैयार करते हैं।"
"ओह!"
"लेकिन आप पीयें...यह शराब आपको अच्छी लगेगी।"
करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट ने पत्थर का वह एक-एक प्याला उठा लिया तथा फिर एक घूंट शराब चखी।
शराब बेहद कड़वी थी।
लेकिन फिर भी इतना स्वाद उसमें था...जो उसे पीया जा सके। खास तौर पर उस जैसी जगह तो वह शराब वैसे ही अमृत तुल्य थी।
करण सक्सेना और प्रोफेसर उस 'फैनी' की चुसकियां ले-लेकर पीने लगे।
"मशरूम की इस शराब को पीते हुए मुझे कुछ याद आ रहा है।" करण सक्सेना बोला।
"क्या?"
"दरअसल जब पहले दिन मुझे यहां होश आया था...तो मुझे एक गाढ़ी-सी चीज पिलाई गयी थी, जिसे पीकर मुझे नशा-सा हो गया था।"
"उसमें फैनी ही मिलाई गयी थी कमाण्डर!" सुधाकर बोला-"ताकि आपको नींद आ जाये।"
उसी समय बाहर से एक बड़ी भद्दी-सी आवाज आयी।
"जकिल...ओ होए जकिल! क्या तुम भीतर हो?"
"यह कौन बदतमीज है।" करण सक्सेना बोला।
इससे पहले जकिल कोई जवाब देता...छह-साढ़े छह फुट लम्बा एक आदमी अंदर आ गया।
उसके पुट्ठे बहुत मजबूत थे और जबाड़े की हड्डी कसी

हुई थी। उसके शरीर पर भी वर्दीनुमा कपड़े थे...जो अब अप
रंग खो चुके थे।

उसके साथ तीन-चार आदमी और थे...जो सेवकों
भांति आदरपूर्वक पीछे ही रह गये थे और अब बहुत तने ह
दरवाजे पर खड़े थे।

उस लम्बे-चौड़े आदमी को देखकर चार्ल्स और जकिल की
नजरें मिलीं।

करण सक्सेना ने फौरन अनुभव किया कि उस आदमी
के आते ही पूरे वातावरण में तनाव पैदा हो गया था। और य
करण सक्सेना से गलती नहीं हो रही थी...तो उसने उस आद
के आते ही जकिल की आंखों में सख्त घृणा की झलक भी देखी
थी।

परन्तु!

उस आदमी ने किसी बात की परवाह न की।

''हैलो जकिल!'' वह अंदर आते ही बड़ी बेतकल्लुफी के
साथ बोला–''भई, एक प्याला फैनी मैं भी पियूंगा।''

करण सक्सेना को जकिल की आंखों में ऐसा लगा...जैसे
वो अभी उस नये आने वाले आदमी की हत्या कर देगा। उसका
जो हाथ खाली था...उसकी मुट्ठी कस गयी थी। लेकिन फिर
भी जकिल ने किसी तरह अपने गुस्से पर जब्त किया।

काबू किया।

उसके बाद वो उस आने वाले आदमी के लिये भी फैनी
लेने चला गया।

''हैलो आर्कियोलॉजिस्ट!'' तब वो आने वाला आदमी
चार्ल्स के निकट आया और फिर जोर से उसके कंधे पर हाथ
मारता हुआ बोला–''क्या आजकल कोई नई थ्यौरी सोची है?''

''यहां इंसान थ्यौरियां सोचने के अलावा और भला कर
भी क्या सकता है?''

चार्ल्स की आवाज में बेबसी घुली थी।

साफ लग रहा था...उसने बहुत मजबूरी में जवाब दिया
है।

इस बीच जकिल फैनी का प्याला लेकर आ गया।

जकिल को उस लम्बे-चौड़े आदमी से यह कहने की जरूरत

नहीं पड़ी कि वो 'फैनी' ले ले...उससे पहले ही उसने आगे बढ़कर वह प्याला उठा लिया था और फिर एक घूंट भी भरा।

फैनी पीते हुए वह कमाण्डर करण सक्सेना के सामने आकर रुका तथा उसको देखकर जोर से ठठाकर हंसा—"तो यह हमारे कैदखाने के नये कैदी हैं।"

"हां।" चार्ल्स ने जवाब दिया।

उस आदमी के आने के बाद से यहां का माहौल अजीव-सा तल्खीभरा हो गया था।

"मैंने सुना है।" वो निरंतर फैनी पीता हुआ बोला—"यह किसी पनडुब्बी से आये हैं?"

"हां।" चार्ल्स ने फिर जवाब दिया—"यह पनडुब्बी से ही आये हैं।"

करण सक्सेना अब बिल्कुल खामोश खड़ा था।

और!

यही हालत प्रोफेसर भट्ट की थी।

वह भी खामोश थे।

"कमाण्डर!" फिर चार्ल्स, करण सक्सेना को उस नये आदमी का परिचय देता हुआ बोला—"यह मारकोस हैं। किसी जमाने में मिस्टर मारकोस फ्रांस की फौज में कर्नल थे...लेकिन अब हमारी तरह ही कैदी हैं।"

"फ्रांस की फौज में कर्नल थे!"

"यस कमाण्डर!"

"इन्हें यहां आये हुए कितना समय हो गया?" करण सक्सेना अपलक मारकोस को देखता हुआ बोला।

"दो साल हो चुके हैं।"

करण सक्सेना चुप रहा।

मारकोस!

तो उस आदमी का नाम मारकोस था और वो फ्रांस की फौज में कर्नल था।

करण सक्सेना ने देखा कि मारकोस के शरीर पर जो घिसी-पिटी-सी ड्रेस थी...वह एक फ्रांसीसी कर्नल की ही वर्दी थी। जबकि मारकोस अपने परिचय की उपेक्षा करके पुनः चार्ल्स से ही सम्बोधित हुआ—"तो तुम इनको यहां घुमा रहे हो।"

"हां।"
"नाम क्या है इनका?"
"करण सक्सेना।"
मारकोस पुनः बहुत जोर से ठाकर हंसा।
लगता था...दूसरों का मजाक उड़ाने की उसे कुछ खास आदत थी।
"नाम तो काफी जबरदस्त है।"
"सिर्फ नाम ही जबरदस्त नहीं है।" वरीस गड़बड़, जो काफी देर से चुप था...एकाएक बोला–"बल्कि यह आदमी भी जबरदस्त हैं मिस्टर मारकोस!"
"अच्छा! वैरी गुड...वैरी गुड, तब तो मजा आयेगा। मुझे आपसे मिलकर अच्छा लगा मिस्टर करण!"
उसने करण सक्सेना से भारी गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया।
"वैसे कुछ लोग इन्हें कमाण्डर भी कहते हैं।" चार्ल्स मारकोस की हरकत पर थोड़ा तुनककर बोला।
"कमाण्डर!"
"यस!"
"ओ०के०...ओ०के०!" मारकोस पुनः करण सक्सेना से सम्बोधित हुआ–"कमाण्डर...उम्मीद है, जो कुछ आपने यहां देखा...वह पसंद आया होगा। बहरहाल अब यह संसार आपका है और आपने यहीं जीवन बिताना है।"
"अभी मैंने यहां बहुत कुछ नहीं देखा है।" करण सक्सेना ने जवाब दिया।
मारकोस पुनः बहुत जोर से ठहाका लगाकर हंस पड़ा।
"यह आप कैसी बात कर रहे हैं कमाण्डर!" मारकोस बोला–"आपने जकिल का चित्रों और मूर्तियों से भरा यह भयानक म्यूजियम देख लिया...यही बहुत है। क्यों चार्ल्स?"
वह दुष्ट आदमी जकिल का साफ-साफ मजाक उड़ा रहा था।
"इसमें क्या शक है!" चार्ल्स ने नहले पर दहला मारा–"आखिर यहां जकिल के चित्रों और मूर्तियों के अलावा देखने के वास्ते और है ही क्या?"

मारकोस एक पल के लिये सकपकाया।

''है क्यों नहीं?'' वह तुरन्त बोला–''आखिर यहां और भी देखने के वास्ते मशरूम की गुफायें हैं...पानी के नाले हैं।''

''धीरे-धीरे कमाण्डर वह सब भी देख लेंगे।''

''इसके अलावा और भी बहुत सारी चीजें यहां हैं...जो देखने लायक हैं।''

''और क्या चीजें हैं?'' चार्ल्स ने सस्पैंसफुल अंदाज में पूछा।

लेकिन फिर मारकोस ने उसके सवाल का कोई जवाब नहीं दिया।

''कमाण्डर!'' वह सीधा करण सक्सेना की तरफ घूमा और उसके कंधे पर हाथ रखकर बड़े अर्थपूर्ण लहजे में बोला–''याद रहे...यहां अभी देखने के लिये बहुत कुछ है। मैं पिछले दो साल से इधर हूं...परन्तु अभी यहां कई चीजें ऐसी हैं, जो मैंने भी नहीं देखीं। लेकिन एक बात का दावा जरूर करता हूं।''

''किस बात का?''

''मैं एक-न-एक दिन उन सब चीजों को देख जरूर लूंगा।''

आखिरी वाक्य कहते हुए उसने चार्ल्स की तरफ बड़ी विचित्र नजरों से देखा था। उसके बाद स्वयं ही एक जोरदार कहकहा लगाया और अपना प्याला कुछ ही घूंट में खाली किया।

''आओ दोस्तों!'' फिर वो प्याला रखकर अपने साथियों से सम्बोधित हुआ–''अब हम चलते हैं।''

फिर मारकोस जिस तरह अचानक वहां आया था...उसी तरह वहां से चला भी गया।

❑❑❑
❑❑❑

मारकोस तो चला गया...परन्तु उस आदमी ने अपने पीछे जो सन्नाटा छोड़ा, वह कितनी ही देर बरकरार रहा।

वह चुप खड़े रहे।

अलबत्ता कमाण्डर करण सक्सेना एक बात पहली ही बार में बहुत अच्छी तरह समझ गया था।

वो यह कि मारकोस और उन लोगों के बीच सम्बन्ध अच्छे नहीं थे।

दोनों तरफ से दिलों में घृणा थी।

''चार्ल्स!'' उसके जाते ही जकिल चार्ल्स के नजदीक आकर खड़ा हो गया और धीमी आवाज में बोला।

''हां, जकिल!''

''मुझे आसार अच्छे नजर नहीं आते दोस्त! तुमने देखा...वो हरामजादा इशारों में बात कर रहा था। वह जरूर किसी चक्कर में है।''

''मुझे भी यही लगता है।''

''हमें आज रात को एक मीटिंग करनी चाहिये।''

''ठीक है...मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा।''

''गुड बाय!''

''गुड बाय।''

हम सब मूर्तियों वाली उस गुफा से निकलकर वापस चल पड़े।

मारकोस के अचानक आ जाने के कारण। वह सब एकाएक बहुत चिन्तित हो गये थे। चिन्ता की क्या वजह थी...इसका करण सक्सेना अंदाजा न लगा सका।

मामला जो भी था...पेचीदा था।

हंगामे से भरा।

अलबत्ता करण सक्सेना चलते-चलते बोला–''मैं एक बात और पूछना चाहता हूं।''

''पूछिये कमाण्डर!'' सुधाकर बोला।

''यहां जो देशी कैदी हैं...यानी जो बाहरी लोगों के बच्चे हैं और यहीं पैदा हुए हैं, क्या उनके दिलों में यहां से बाहर जाने की इच्छा नहीं होती?''

''बिल्कुल नहीं।''

''क्यों?''

''क्योंकि वो यहीं खुश हैं कमाण्डर!'' सुधाकर बोला–''और मैं समझता हूं कि अगर वह ऊपर जमीन पर गये, तो शायद जीवित भी न रहें।''

''क्यों?'' करण सक्सेना चौंका–''ऊपर जाकर वह जीवित क्यों नहीं रहेंगे?''

''क्योंकि ऊपर सूर्य है और सूर्य का तेज प्रकाश वह सहन

नहीं कर सकेंगे। उनका पालन-पोषण जमीन की तह के नीचे इस नमी वाली जगह पर हुआ है कमाण्डर...ऊपर जाकर वह जरूर अंधे हो जायेंगे और सूर्य की अल्ट्रा-वायलेट किरणें उनको वैसे भी नुकसान पहुंचायेंगी। मेरा विचार है...इसीलिये ये बौने भी बाहर के संसार से भयभीत हैं। इसके अलावा आपने एक बात की तरफ ध्यान नहीं दिया कमाण्डर!"

"किस बात की तरफ?"

"संसार के सभी प्राचीन कबीलों और जातियों में किसी-न-किसी जमाने में सूर्य की पूजा होती रही है...क्योंकि सूर्य हमें प्रकाश देता है।" सुधाकर बोला—"मोगो और पीगो कबीले में भी सूर्य देवता की महानता के गुणगान किये जाते हैं...सूर्य को पूजा जाता है, परन्तु इन भूरे बौनों के यहां कोई सूर्य देवता नहीं है। बल्कि सच तो ये है...एक तरह से सूर्य इनका शत्रु है।"

"अब मैं इन लोगों को और यहां के हालात को कुछ-कुछ समझने लगा हूं।" करण सक्सेना ने जवाब दिया—"एक तरह से यहां के कैदियों को दो भागों में बांटा जा सकता है।"

"दो भागों में!"

"हां। एक बाहरी संसार के कैदी और दूसरे देशीय कैदी।"

"कमाण्डर...इस हिसाब से तो कैदियों को दो ग्रुपों में नहीं बल्कि तीन ग्रुपों में बांटा जा सकता है।"

"यह तीसरा ग्रुप कौन-सा है?"

"यहां के असली बौनों का ग्रुप कैदियों का तीसरा ग्रुप है।" सुधाकर बोला।

"क्या कहा?" करण सक्सेना के मुंह से आश्चर्यचकित स्वर निकला।

"क्या असली बौने भी यहां कैदियों में शामिल हैं?"

"हां...साठ-सत्तर बौने भी कैदियों में शामिल हैं। हमारा ख्याल है कि उन्होंने अपनी सोसायटी में कोई जबरदस्त अपराध किया है...जिसका उनको दण्ड दिया गया है। वे भी यहीं हमारे साथ रहते हैं...लेकिन उनका ग्रुप हम से अलग रहता है। हमें उनके बारे में बहुत कम ज्ञान है...हां, एक बात जरूर है।"

"क्या?"

''वरीस गड़बड़ और वह दुष्ट मारकोस उन बौने कैदियों के बारे में हम सबसे ज्यादा जानते हैं।''

''क्यों?''

''क्योंकि यहां मौजूद कैदियों में यही दोनों आदमी ऐसे हैं कमाण्डर!'' सुधाकर ने एक नया रहस्योद्घाटन किया—''जिन्होंने उन बौने कैदियों के साथ रहकर उनकी जबान सीख ली है और वह अक्सर उनसे बातें करते रहते हैं।''

''रिअली!''

करण सक्सेना ने अब अपने साथ-साथ चल रहे वरीस गड़बड़ को बड़ी विस्मित निगाहों से देखा।

''क्या तुम सचमुच बौने कैदियों की जबान जानते हो मिस्टर वरीस?''

''यस कमाण्डर!'' वरीस गड़बड़ होठों-ही-होठों में धीरे से मुस्कुराया।

''वैरी गुड! चलिये इस तरह कैदियों के तीन ग्रुप हो गये।'' करण सक्सेना बोला।

''और इसके बाद इन ग्रुपों को भी दो-दो भागों में बांटा जा सकता है कमाण्डर!''

''वह क्यों...और कैसे?'' करण सक्सेना ने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

''उदाहरण के तौर पर हम बाहरी संसार के कैदी इस समय यहां दो ग्रुपों में हैं।''

''दो ग्रुपों में!''

''यस कमाण्डर! लेकिन खैर छोड़िये। एक ही दिन में अगर आप सब कुछ समझ लेंगे...तो फिर शेष समय कैसे गुजारेंगे? यह डिटेल मैं आपको फिर कभी बताऊंगा।''

करण सक्सेना ने भी फिर ज्यादा बहस नहीं की।

प्रोफेसर भट्ट भी खामोश थे। उनकी आंखें बता रही थीं कि वह चुप रहकर पूरी स्थिति का अवलोकन कर रहे हैं।

बातें करते-करते वह सब उस गुफा तक पहुंच गये...जिसमें अभी तक करण सक्सेना ठहरा हुआ था।

वह गुफा के अंदर दाखिल हुए...तो उन्होंने देखा कि वहां चार नये आदमी और बैठे हुए थे।

"हैलो एवरीबडी!" उनमें से एक उन सबको देखते ही बोला-"आप सब कहां चले गये थे...हम काफी देर से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"मैं जरा कमाण्डर करण सक्सेना को अपने संसार में घुमाने ले गया था।" चार्ल्स ने मुस्कराकर कहा।

उन चारों अजनबियों की निगाहें अब करण सक्सेना पर आकर ठहर गयीं और वह बड़ी निरीक्षणात्मक नजरों से उसे देखने लगे।

"तो यह वही हैं।" उनमें से एक बोला।

"हां...यह नये कैदी हैं और इनका नाम कमाण्डर करण सक्सेना है। लेकिन आप लोग इन्हें सिर्फ 'कमाण्डर' भी कह सकते हैं। ओ०के०?"

"ओ०के०।"

करण सक्सेना समझ गया...वह चारों भी उनके साथी हैं।

उनके दोस्त!

❑❑❑

❑❑❑

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है...वहां मौजूद कैदियों को रात-दिन का अहसास नहीं होता था। वह तो सचमुच जैसे सात तालों में बंद हो गये थे।

वह सिर्फ अंदाजे से ही रात-दिन का अनुमान लगाते थे।

वो ऐसी ही एक रात थी...जब उन सबकी उसी गुफा में एक मीटिंग हुई।

सब लोग बेचैन थे।

सच बात तो ये है...मारकोस से मुलाकात के बाद से ही उनके बीच जो बेचैनी फैली थी, वो अभी तक बरकरार थी। वरीस गड़बड़ गुफा में पहुंचने के बाद से ही गायब हो गया था।

वो कहां गायब हुआ?

यह करण सक्सेना को कुछ मालूम न हो सका।

बस वरीस गड़बड़ तथा चार्ल्स के बीच आपस में कुछ बातें हुई थीं और फिर वरीस गड़बड़ वहां से चला गया। उसके बाद वो मीटिंग शुरू होने से बस चंद सेकण्ड्स पहले ही वापस लौटा।

तभी जकिल के भी वहां कदम पड़े।

उसके बाद वह सब गुफा के उस हॉलनुमा कमरे में गोल दायरा-सा बनाकर बैठ गये। करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट भी उनके बीच सम्मिलित थे।

"मिस्टर वरीस!" चार्ल्स ने वरीस गड़बड़ की तरफ देखा–"क्या कोई जानकारी मिली?"

"हां, चार्ल्स...मुझे कुछ बड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां मिली हैं।"

"तो फिर जल्दी से बताओ...हम सब लोग तुम्हारी बातें सुनने के लिये बेचैन हैं।"

वरीस गड़बड़ ने एक नजर वहां मौजूद तमाम लोगों पर दृष्टि फिराई...उसके बाद उसने बोलना शुरू किया–"जैसा कि आप सब लोग जानते हैं...मैं इस समय सीधा कैदी बौनों से मिलकर आ रहा हूं। मैं आज जानबूझकर उनके पास इसलिये गया था...क्योंकि मैं यह जानना चाहता था कि वह दुष्ट मारकोस क्यों आजकल हम लोगों में घुसने की कोशिश कर रहा है। आपको मालूम ही है कि मारकोस भी उनकी जुबान जानता है और बौने कैदियों का दोस्त है। मुझे उन बौने कैदियों से आज दो बड़ी महत्वपूर्ण बातें मालूम हुई हैं।"

"क्या बातें मालूम हुई हैं?" सुधाकर के चेहरे पर भी कौतूहलता के भाव पैदा हुए।

जबकि करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट भी अलर्ट हो चुके थे तथा उस मीटिंग में उनकी दिलचस्पी जाग उठी थी।

"पहली महत्वपूर्ण बात तो ये है।" वरीस गड़बड़ इत्मीनान से बोला–"कि ऊपर की तह पर रहने वाले बौने आजकल पानी से बहुत भयभीत हैं।"

"क्यों...वह पानी से क्यों भयभीत हैं?"

सबकी नजरें उस समय वरीस गड़बड़ के चेहरे पर ही टिकी थीं।

"दरअसल हिन्द महासागर का पानी अब जगह-जगह से जमीन तोड़कर अंदर सुरंगों और गुफाओं में घुस रहा है। पहले ये पानी रिस-रिसकर बहुत धीरे-धीरे अंदर आ रहा था। फिर अचानक कुछ साल पहले एक जगह जमीन की तह तोड़कर यह भीतर घुस आया...जिसके कारण इन बौनों को अपनी सुरंगों

का काफी बड़ा भाग छोड़कर दूसरी तरफ जाना पड़ा। लेकिन पानी अब भी निरंतर रिस रहा है और अब वे भयभीत हैं।''

''क्या उस पानी रिसने का बौनों ने कुछ इंतजाम नहीं किया?''

''इंतजाम भी किया।''

''कैसा इंतजाम?''

''बौनों ने बहुत-सी जगह अपनी सुरंगें गिराकर पानी के मार्ग को बंद करने की कोशिश की।'' वरीस गड़बड़ बोला–''कई जगह जहां वो अपनी इस कोशिश में कामयाब हुए...वहीं कुछ जगह नाकाम भी रहे। बहरहाल इन तमाम कोशिशों के बावजूद कई जगह समुद्र का खारा पानी उनके मीठे पानी के भंडारों में मिल गया है। उन्हें भय है कि अगर समुद्र का पानी सब जगह फैल गया...तो क्या होगा? इसलिये बौने अब उत्तरीय गुफाओं में जाने के बारे में सोच रहे हैं...जिनको वह सदियों पहले खाली कर आये थे। यह उत्तरीय गुफायें दरअसल उनकी वर्तमान सतह से ऊपर स्थित हैं और हिन्द महासागर से अलग हटकर ठोस जमीन के नीचे हैं, परन्तु उन उत्तरीय गुफाओं में एक प्रॉब्लम है।''

''क्या?''

''वह उत्तरीय गुफायें चूंकि समुद्र के नीचे नहीं हैं...इसलिये वहां नमी नहीं है। और नमी न होने के कारण वहां मशरूम बेहतर ढंग से नहीं उगाये जा सकते। इसीलिये कभी उनके पुरखे उन गुफाओं को खाली करके इस निचली सतह पर आये थे। लेकिन अब वे पानी से भयभीत होकर फिर उन गुफाओं में जाने के बारे में सोच रहे हैं।''

वरीस गड़बड़ की बातें सब बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

खास तौर पर कमाण्डर करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट के लिये तो वह बातें जबरदस्त कौतूहलता का कारण बनती जा रही थीं।

उन्होंने सोचा भी न था...हिन्द महासागर की अथाह गहराई से भी और नीचे, जमीन की तहों के पार कोई ऐसा हंगामाखेज घटनाक्रम भी चल रहा होगा।

पानी को लेकर जिंदगी और मौत की ऐसी लड़ाई भी जारी

होगी।

"बौने समुद्र के पानी को लेकर इस समय बहुत डरे हुए हैं।" वरीस गड़बड़ बोला–"और सच बात तो ये है दोस्तों...अगर हम इस सारे हालात का जायजा लें, तो सात तालों में बंद होने के बावजूद मौत तो हमारे सिर पर भी मंडरा रही है।"

"क्यों?" चार्ल्स बोला–"मौत हमारे सिर पर क्यों मंडरा रही है?"

"जरा सोचिये...अगर हिन्द महासागर जगह-जगह से जमीन की परत को तोड़कर अंदर घुस आया, तो सिर्फ बौने ही नहीं मरेंगे बल्कि हम सब भी यहीं पानी में दफन हो जायेंगे...फिर हम सबकी भी मौत निश्चित है।"

सब अपनी-अपनी जगह सन्न बैठे रह गये।

बिल्कुल सन्न!

मौत का खौफ इस समय उन सबके चेहरों पर देखा जा सकता था।

वाकई पानी के रूप में एक बड़ी आफत उन सबकी तरफ बढ़ रही थी।

वह सब खतरे में थे।

"इसमें कोई शक नहीं।" सुधाकर सारी स्थिति भांपकर शुष्क लहजे में बोला–"अगर हिन्द महासागर का पानी अंदर आ गया...तो हम सब चूहों की तरह यहीं डूबकर मर जायेंगे...हम में से कोई नहीं बचेगा...कोई भी नहीं।"

"हे भगवान!" तभी उन चारों में से एक बोला–"वह मौत कितनी डरावनी होगी!"

"क्या हम सब किसी तरह बच नहीं सकते?"

"बचने का एक ही तरीका है।" सुधाकर ने वह शब्द काफी सोच-विचारकर कहे।

"क्या?"

"हमें अपने काम की रफ्तार डबल कर देनी चाहिये...हम अब सतह से ज्यादा दूर...।"

"सुधाकर...तुम मूर्ख हो।" तभी उन चारों में से एक उसकी बात काटकर सख्त लहजे में बोला–"तुमसे कितनी बार

कहा है...तुम अपनी जबान पर काबू रखा करो। तुम हर जगह चाहे कुछ भी बकना शुरू कर देते हो।"

उन सबकी नजरें कुछ देर के लिये कमाण्डर करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट पर जम गयीं।

"देखिये...आप लोग इन्हें गलत समझ रहे हैं।" चार्ल्स गंभीरतापूर्वक बोला–"कमाण्डर करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट बहुत गणमान्य हस्तियां हैं तथा इन पर पूरा-पूरा विश्वास किया जा सकता है।"

"हमारा भी यही ख्याल है।" सुधाकर और वरीस गड़बड़ ने कहा–"इन दोनों पर हम अपने आपसे भी ज्यादा भरोसा कर सकते हैं।"

साफ जाहिर था...अगर उन सबको उन पर यकीन था, तो उन्हें भी था।

"फिर भी मैं एक बात जरूर कहूंगा।" वरीस गड़बड़ बोला।

"क्या?"

"हमें अब और भी ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है...क्योंकि दूसरी बात जो मैंने बौनों से मालूम की है, वो बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है और वो मारकोस के बारे में है।"

"मारकोस के बारे में!"

चार्ल्स सहित सब सतर्क होकर बैठे।

"हां।"

"मारकोस के बारे में क्या महत्वपूर्ण जानकारी है?"

"दरअसल मुझे बौने कैदियों से मालूम हुआ है?" वरीस गड़वड़ बोला–"कि मारकोस को हमारी सुरंग के बारे में मालूम हो गया है।"

"सुरंग के बारे में!" सुधाकर चौंका–"यह क्या कह रहे हो तुम!"

"मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं।"

सुरंग!

सबके दिमाग में धमाके से हुए।

"लेकिन गारकोस को हमारी सुरंग के बारे में कैसे पता चला?" चार्ल्स बोला।

"यह मालूम नहीं कि उसे यह कैसे पता चला...मगर यह कन्फर्म है कि उसे इस बाबत जानकारी हो गयी है। उसके सामने बस एक प्रॉब्लम है।"

"क्या?"

"उसे अभी यह पता नहीं है सुरंग कहां है।"

"ओह!"

"और सच बात तो ये है दोस्तों...वो इसीलिये बहुत ज्यादा परेशान है। वह किसी तरह हमारी सुरंग का रहस्य जानने की कोशिश कर रहा है...इसीलिये वह आजकल हम लोगों से मिलने-जुलने का भी प्रयत्न कर रहा है। अब मारकोस के बारे में एक धमाकाखेज न्यूज और सुनो...वह सबसे ज्यादा गड़बड़ वाली बात है।"

"कैसी धमाकाखेज न्यूज?"

"दरअसल उस दुष्ट मारकोस ने!" बरीस गड़बड़ आगे को झुक गया और बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया—"ऊपर की तह पर रहने वाले बौनों से एक गुप्त संधि कर ली है।"

"गुप्त संधि!" सब चौंके—"कैसी संधि?"

"उसने बौनों से कहा है कि वो उन्हें हमारी सुरंग का पता लगाकर बता देगा।"

"माई गॉड!" चार्ल्स बोला—"उसने ऊपर की तह पर रहने वाले बौनों को भी बता दिया कि हम लोग सुरंग बना रहे हैं!"

"हां...और एक खास मकसद से उसने बौनों को यह बात बतायी है। दरअसल इसके बदले मारकोस यह चाहता है कि उसको कैदियों के बजाय ऊपर की सतह पर यानी बौनों के साथ ही रहने की अनुमति दे दी जाये और बौनों ने उसकी यह बात मान ली है।"

"ओह!"

सचमुच वो बड़ी खतरनाक बात थी।

बौनों को यह पता चल जाना ही बेहद डेंजर था कि वह लोग सुरंग बना रहे हैं।

"साला!" गद्दार!" चार्ल्स दांत किटकिटाकर बोला।

"प्लीज...अगर आप लोग मेरे ऊपर विश्वास ही कर रहे हैं।" करण सक्सेना जो बहुत देर से खामोश था...एकाएक

बोला—"तो मुझे जरा विस्तार से बताइये कि सारा मामला क्या है...शायद मैं आप लोगों की कुछ मदद कर सकूं।"

"ठीक है कमाण्डर!" चार्ल्स बोला—"मैं आपको सब कुछ बताता हूं।"

करण सक्सेना अब थोड़ा संभलकर बैठ गया।

प्रोफेसर भट्ट ने भी ऐनक दुरुस्त करके अपने दोनों कान चौकस किये।

❑❑❑
❑❑❑

"बात असल में ये है कमाण्डर!" चार्ल्स ने कहना शुरू किया—"हम यहां से बाहर निकलने के लिये बेहद गुप्त रूप से एक सुरंग बना रहे हैं।"

सुरंग!

करण सक्सेना को उनके सुरंग बनाने का अहसास तो अब तक के वार्तालाप से ही हो गया था।

"हम से आपका क्या मतलब है?" करण सक्सेना ने पूछा—"क्या आप सिर्फ पांच-छह आदमी मिलकर ही सुरंग बनाने का यह काम कर रहे हैं?"

"नहीं...हम सिर्फ पांच-छह आदमी नहीं हैं।"

"फिर?"

"हम तकरीबन डेढ़ सौ आदमी हैं और खास बात ये है कि यह सुरंग बनानी हम लोगों ने शुरू नहीं की बल्कि हमें कुछ मालूम नहीं कि दस-बीस वर्ष या सौ-दो सौ वर्ष पहले कब यह सुरंग बनानी शुरू की गयी थी? जाति-दर-जाति यह काम हो रहा है। मगर सुरंग बनाने में हम लोगों के सामने एक बहुत बड़ी कठिनाई है।"

"कैसी कठिनाई?"

"दरअसल हमारे पास औजार नहीं हैं। हमें नुकीले पत्थरों के औजार इस्तेमाल करने पड़ते हैं। फिर सुरंग से निकलने वाली मिट्टी को छिपाना होता है और इस बात की खास ऐहतियात रखनी होती है कि बौनों को सुरंग के विषय में मालूम न हो। इसीलिये काम बहुत सुस्त रफ्तार से चल रहा है...लेकिन फिर भी अब वो सुरंग काफी दूर पहुंच चुकी है और उम्मीद है कि

जल्द ही वो किसी जगह सतह पर जाकर निकलेगी।''

''यानी अब आप लोग कामयाबी के बहुत नजदीक हैं।'' प्रोफेसर भट्ट बोले।

''हां।''

प्रोफेसर भट्ट की आंखों में आश्चर्य के चिन्ह उभर आ सचमुच वो बड़ी बात थी कि उन लोगों ने पत्थरों के अ बना-बनाकर ही एक इतनी लम्बी-चौडी सुरंग खोद डाली

''सुरंग बनाने का यह काम सालों से इसी तरह लगा चल रहा है।'' चार्ल्स बोला-''और सुरंग खोदने वाले हर जा में कुछ लोग रहे हैं। जब हम लोग यहां आये थे...तो देखभाल और जांच-पड़ताल के बाद ही हमें इस रहस्य में श किया गया था। सुरंग बनाने के इस कार्य में बहुत विश्वस्त लोगों को लगाया जाता है...ताकि सुरंग का यह रहस्य खुल जाये। इसीलिये यह कार्य बहुत सुस्त रफ्तार से भी चल रहा जब से मिस्टर सुधाकर आये हैं...सबने इनको अपना लीडर मा लिया है, क्योंकि मिस्टर सुधाकर सुरंग बनाने के इंजीनियर हैं।

''हूं।''

करण सक्सेना एक-एक बात ध्यानपूर्वक सुनता रहा।

''यानी अब सुरंग मिस्टर सुधाकर के अण्डर में खोदी जा रही है?''

''यस कमाण्डर!''

करण सक्सेना फिर चुप हो गया।

''सच तो ये है...हम लोग भी हर आदमी पर यकीन नहीं करते कमाण्डर!'' चार्ल्स बोला-''क्योंकि कुछ पता नहीं कि इ लोगों में कौन गद्दार साबित हो या फिर कोई नीम-पागल कब हमारा रहस्य खोल दे। इसीलिये हमें बहुत सावधान रह पड़ता है। मारकोस जब यहां आया था...उसी समय से वो ह अच्छा आदमी मालूम नहीं हुआ...क्योंकि उसमें ईगो-प्रॉब्ल बहुत है...वो खुद को हमेशा आम इंसानों से बेहतर समझ है तथा हमसे अलग-थलग रहता है। अब हम सोचते हैं कि हमने मारकोस को भेदिया न बनाकर अच्छा ही किया। क्योंकि वह कितना खुदगर्ज आदमी है...उसका यह राज अब खुल ही चुका है। वो हरामजादा अपनी जान बचाने के लिये शेष सब लोगों

से गद्दारी करने को तैयार है।''

करण सक्सेना के दिमाग में अब काफी बातें और भी साफ होने लगी थीं।

जैसे वो समझ गया था कि जकिल की गुफा में मारकोस के आ जाने पर माहौल में एकाएक तनाव क्यों पैदा हो गया था।

तनाव की यही वजह थी।

उनमें से काई भी उस पर यकीन नहीं करता था।

''आप लोगों को इस बारे में थोड़ा-बहुत तो अनुमान होगा!'' करण सक्सेना ने पूछा-''कि सुरंग कितनी ऊंची जा चुकी है?''

''नहीं...इस बारे में एकदम स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।''

''क्यों?''

''क्योंकि सुरंग ढलवान है और इसीलिये कुछ अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि वो किधर जा रही है और फिलहाल हम सतह से कितनी दूर हैं? बहरहाल हमारा काम जारी है...लेकिन अब हमारे सामने यह खतरा पैदा हो गया है कि अगर मारकोस को उस सुरंग का पता चल गया, तो हंगामा हो जायेगा।''

''बिना शक...मारकोस को सुरंग का पता चलना खतरनाक है।'' करण सक्सेना भी बोला-''अगर उसे सुरंग का पता चला...तो इन हालात में वो सबसे पहले बौनों को ही जाकर बतायेगा।''

''यही खतरा हमें है कमाण्डर! और बौनों को जैसे ही सुरंग का पता चलेगा...तो वह कुछ रोज में ही हमारी वर्षों की मेहनत को नष्ट कर डालेंगे। सच तो ये है...हमें पूरा यकीन है कि अब हम सतह से ज्यादा दूर नहीं हैं। मेरे दिमाग में तो अब एक ख्याल आ रहा है।''

''क्या?''

''हमें अपने काम की रफ्तार डबल कर देनी चाहिये...ताकि जल्द-से-जल्द सुरंग खोदी जा सके।''

करण सक्सेना शान्त बैठा रहा।

''परन्तु काम की रफ्तार डबल करने में भी एक प्रॉब्लम

।"

"क्या?"

"उस हालत में सुरंग का रहस्य खुलने की संभावनायें भी बहुत बढ़ जायेंगी।"

"सच तो ये है कमाण्डर!" वरीस गड़बड़ बोला—"मैं मारकोस की तरफ से भी उतना चिंतित नहीं हूं। वह अकेला कुछ नहीं कर सकता...मगर एक बड़ी भारी मुश्किल और है।"

"क्या?"

"उसने पचास-साठ कैदी अपने दोस्त बना रखे हैं।" वरीस गड़बड़ एक नया रहस्योद्घाटन करता हुआ बोला—"उन लोगों की मदद से वह सुरंग का पता लगा सकता है। हमें कुछ मालूम नहीं कि कैदियों में उसके दोस्त कौन-कौन लोग हैं। इसीलिये मैंने कहा था कि भविष्य में हमें सुरंग का उल्लेख करते हुए बहुत सतर्क रहना चाहिये।"

"मेरा ख्याल है।" करण सक्सेना काफी सोच-विचारकर बोला—"सबसे पहले तो अब आप लोग इस बात को अपने दिमाग से निकाल दें कि सुरंग का रहस्य अब कोई रहस्य रह गया है।"

"क्यों?"

सब चौंके।

सबने हैरानी से करण सक्सेना की तरफ देखा।

"क्योंकि जब उस दुष्ट मारकोस को ही यह मालूम हो गया है दोस्तों!" करण सक्सेना बोला—"कि गुप्त रूप से कोई सुरंग बन रही है...तो रहस्य तो खुल ही गया समझो। और सबसे बड़ी बात ये है...मारकोस की मार्फत अब यह बात बानों को भी मालूम हो चुकी है कि हम लोग कोई सुरंग बना रहे हैं। अब तो उन लोगों को मात्र यह मालूम करना शेष रह गया है कि सुरंग का दहाना कहां है।"

करण सक्सेना की बात सुनकर सबने एक-दूसरे की तरफ देखा।

उसके तर्क में जान थी।

"आप ठीक कहते हो कमाण्डर!" चार्ल्स ने कहा—"सचमुच सुरंग का रहस्य अब रहस्य नहीं रह गया है...अब तो हमारे सामने

बस एक ही तरीका है।"

"क्या?"

"हम पहले से कहीं ज्यादा सतर्क होकर सुरंग की खुदाई का काम जारी रखें और काम करने के घण्टों की संख्या थोड़ी बढ़ा दें...जिससे खुदाई का काम जल्द-से-जल्द निपटे।"

"बेहतर बात है...तुम अपने शेष सब साथियों को बुलाकर ये हालात समझा दो और उनसे काम की रफ्तार बढ़ाने के लिये कहो। बस एक बात का ध्यान रहे...सुरंग में काम करने वाले तमाम आदमी बहुत भरोसे के हों।"

"उससे आप बेफिक्र रहें कमाण्डर...मैं खुद इस बात की खास एहतियात रखता हूं और मैं अभी यही काम करने के लिये जा रहा हूं।" फिर चार्ल्स ने उठते हुए कहा–"क्या तुम सब लोग भी चल रहे हो?"

"हां...हम भी चल रहे हैं।" सुधाकर और बरीस गड़बड़ ने भी उठते हुए कहा।

उनके साथ-साथ बाकी चारों व्यक्ति भी उठे।

जबकि चार्ल्स, कमाण्डर करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट से सम्बोधित होकर बोला–"बेहतर है...आप दोनों कुछ घण्टों के लिये सो जायें। क्योंकि जो काम हम करने जा रहे हैं...वह कोई बहुत खास काम नहीं है। अलबत्ता कल से हमें पूरी शक्ति के साथ काम शुरू कर देना होगा।"

"कल?" करण सक्सेना मुस्कराकर बोला–"क्या यहां आज और कल भी होते हैं?"

"यहां तो समय ठहरा हुआ है कमाण्डर! फिर भी हम जरूरत के अनुसार समय को बांट लेते हैं...सोने का समय, काम का समय, आराम का समय।"

"अब कौन-सा समय है?"

"यह काम का समय है।"

"आल राइट! आप लोग काम करें...मैं थोड़ी देर की नींद लूंगा। क्या आप भी कुछ देर सोना पसंद करेंगे प्रोफेसर?"

"हां...मैं भी सोऊंगा।" प्रोफेसर भट्ट बोले–"सच तो ये है...जब से मैं यहां आया था, तभी से मैं खुद को बड़ा अकेला-अकेला महसूस कर रहा था...मगर अब हिम्मत बंधी

है। अब शायद मैं थोड़ी-बहुत देर के लिये सुकून की नींद सकूं।''

''ठीक है...आप सोइये।''

इसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट वहां छोड़कर वह सब लोग चले गये।

उनके जाने के बाद करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट क गुफा में अलग-अलग बिस्तरों पर लेट गये थे।

करण सक्सेना अकेला लेटकर हालातों पर गौर करने लगा।

उसने सोचा...यह लोग सचमुच बहुत साहसी और बहादुर थे, जो ऐसे हालातों में भी वहां बिना थके वर्षों से काम कर रहे थे। उसको अगर इतने दिन वहां कैद रहना पड़ता...तो वह निःसन्देह पागल हो जाता।

वहां के हालातों पर गौर करते-करते करण सक्सेना को कब नींद आ गयी...उसे पता न चला।

प्रोफेसर भट्ट भी सो गये।

❑❑❑

❑❑❑

न जाने कितनी देर सोने के बाद करण सक्सेना की स्वयं ही आख खुल गयी।

प्रोफेसर भट्ट भी उठ चुके थे और उस समय वह बहुत तरोताजा नजर आ रहे थे।

''क्या आपको नींद आयी प्रोफेसर?''

''हां।'' प्रोफेसर भट्ट बोले-''मैं आज काफी देर सोया हूं, और अपने शरीर में नई स्फूर्ति अनुभव कर रहा हूं।''

''गुड!''

''सचमुच अगर आप यहां नहीं आते कमाण्डर...तो मैं अधिक दिन जिंदा नहीं रहता।''

''ऐसा नहीं बोलते प्रोफेसर! अभी तो आपने काफी समय जीवित रहना है और अपने देश की सेवा करनी है।''

''काश मैं ऐसा कर पाऊं।'' प्रोफेसर भट्ट ने गहरी सांस छोड़ी।

''ऐसा होगा...जरूर होगा।''

प्रोफेसर भट्ट कुछ न बोले।

वह बस खाली-खाली नजरों से गुफा की दीवारें देखते रहे।

कमाण्डर करण सक्सेना को अब अपने आसपास की जगहों का काफी अच्छा ज्ञान हो चुका था।

जिस गुफा में वह सोये थे...उस गुफा से बस थोड़ा फासले पर ही एक छोटा-सा हौज बना हुआ था...जो नहाने के काम आता था।

करण सक्सेना ने उस हौज में जाकर स्नान किया।

स्नान करने से करण सक्सेना की तबीयत और भी फ्रेश हो गयी।

फिर प्रोफेसर भट्ट भी उस हौज में नहाये।

"अगर आप कहें...तो अब थोड़ा-बहुत भोजन भी कर लिया जाये प्रोफेसर?" करण सक्सेना हौज के नजदीक ही खड़ा हुआ बोला।

"क्यों नहीं...मेरे पेट में भी काफी चूहे कूद रहे हैं।"

उसके बाद वह दोनों बावर्चीखाने वाली गुफा की तरफ बढ़ गये।

उस गुफा में हर समय पत्थरों से काटे हुए बड़े-बड़े देगचों में मशरूम का खाना पकता रहता था और प्रायः बूढ़े कैदी बावर्चीखाने के इंचार्ज रहते थे।

आग के लिये वह लोग हमेशा मशरूम के सूखे तने जलाते थे।

इसके अलावा बावर्चीखाने की गुफा विशेष रूप से बनायी गयी थी...क्योंकि उसकी छत में कई छोटे-छोटे छेद थे, जिनसे धुआं निकल कर कहीं ऊपर चला जाता था।

वहां खाने में आम तौर पर गाढ़ा-गाढ़ा खीर जैसा मशरूम होता था...जिसका स्वाद हमेशा एक ही जैसा रहता था। इसके अलावा वहां खाने पर भी कोई प्रतिबंध नहीं था। जो जितना चाहता था...लेकर खा सकता था।

सच तो ये है...वहां प्रतिबंध की आवश्यकता भी नहीं थी, क्योंकि हर आदमी बहुत भूखा होने पर ही वह स्वादहीन खाना खाना पसंद करता था।

बावर्चीखाने में पहुंचकर उन दोनों ने भरपेट भोजन किया और फिर वह अपनी गुफा में आ गये।

लगभग आधा घण्टा प्रतीक्षा करने के बाद वहां चार्ल्स, सुधाकर और वरीस गड़बड़ आये।

"क्या आप लोग तैयार हैं?" चार्ल्स आते ही बोला।

"यस!" करण सक्सेना ने जवाब दिया—"हम लोग पूरी तरह तैयार हैं।"

"बस तो चलो...हम लोग चलते हैं।"

करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट उन तीनों के साथ चल दिये।

"अब हम लोग कहां जा रहे हैं?" करण सक्सेना ने बाहर आकर पूछा।

"मशरूम बाग में।"

मशरूम बाग वहां का बहुत प्रसिद्ध बाग था और वहां चारों तरफ मशरूम-ही-मशरूम थे।

बड़े-बड़े मशरूम!

वह कुछ ही दूर गये होंगे कि उन्होंने देखा...एक बड़ी-सी गुफा में पचास-साठ कैदी जमा थे।

उनके बीच से गुजरते हुए चार्ल्स ने काफी ऊंची आवाज में कहा—"कमाण्डर...अब समय आ गया है कि आप भी मशरूम बाग में हमारे साथ काम करना शुरू कर दो।"

"ओ०के०...ऐसा ही होगा।"

करण सक्सेना की आवाज में बेहद गरमजोशी थी।

करण सक्सेना समझ गया कि चार्ल्स यह बात सिर्फ उन कैदियों को सुनाने के लिये कह रहा है।

वह और आगे बढ़े।

इस बार मार्ग बहुत लम्बा था...मशरूम बाग वाकई काफी दूर था।

पहली बार करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट ने लगभग सब कैदियों को देखा।

वहां सचमुच काफी सारे कैदी थे।

कैदियों के बहुत-से ग्रुप उनको रास्ते में मिले...लेकिन किसी ने उनकी तरफ ज्यादा ध्यान न दिया।

वहां एक-दो औरतें बच्चे भी गोद में लिये हुए थीं। उन बच्चों के शरीर की रंगत एकदम भूरी थी।

इसके अलावा कुछ बारह-तेरह वर्ष के बच्चे भी थे...जो सुरंगों में नंगे भागे-भागे फिर रहे थे।

उनके शरीर की रंगत भी भूरी थी।

फिर वह एक गुफा के नजदीक से गुजरे...वहां करण सक्सेना ने दूसरी बार बौने देखे।

"यह शायद बौने कैदी हैं?" करण सक्सेना ने पूछा।

"हां...यह बौने कैदी ही हैं। दरअसल कैदखाने के इस भाग में यह हम लोगों से अलग-थलग रहते हैं। हालांकि वे भी यहां कैदी ही हैं...लेकिन उनमें एक तरह की अहं भावना है, इसलिये वो हम लोगों में घुलना-मिलना पसंद नहीं करते।"

रास्ते में एक जगह उन्हें नदी के ऊपर से भी गुजरना पड़ा।

वह मीठे पानी की नदी थी।

और!

उस नदी का पानी बहुत साफ था। वही पानी जहां ज्यादातर पीने के काम आता था।

दरअसल उस मीठे पानी की नदी के ऊपर पत्थर का एक प्राकृतिक मेहराब-सा बना था...जो पुल का काम देता था। उसी मेहराब के ऊपर से वह सब गुजरे।

"यह भूमिगत नदी या सोता है।" चार्ल्स ने मेहराब के ऊपर से गुजरते हुए बताया—"बौने तथा हम सब इसी नदी से अपने इस्तेमाल के लिये पानी लेते हैं।"

करण सक्सेना तथा प्रोफेसर भट्ट एक-एक चीज को बहुत ध्यानपूर्वक देखते हुए आगे बढ़ रहे थे।

वह सचमुच एक हैरतअंगेज दुनिया थी।

नदी और उसके ऊपर बने मेहराब से वह अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि फिर उन्हें हवा में हल्की-हल्की नमी का अहसास होने लगा तथा बरसात जैसी गंध आने लगी।

बरसात जैसी वह गंध मशरूमों में से आती थी।

करण सक्सेना पहले भी उस गंध का अनुभव कर चुका था।

"लगता है।" करण सक्सेना उस गंध को सूंघकर बोला—"हम सब मशरूम बाग के काफी नजदीक पहुंच चुके हैं?"

"यस कमाण्डर!" वरीस गड़बड़ ने काफी गरमजोशी के साथ कहा–"सचमुच आपके सूंघने की क्षमता काफी तेज है...आप काफी दूर से ही सूंघ लेते हैं।"

करण सक्सेना मुस्कराया।

"तुम भूल रहे हो मिस्टर वरीस...मैं एक जासूस हूं और जासूस के सूंघने की क्षमता हमेशा तेज ही होनी चाहिये।"

सबके होठों पर मुस्कराहट फैल गयी।

कमाण्डर करण सक्सेना से वह सब प्रसन्नचित्त नजर आ रहे थे।

सब खुश थे।

इस समय उनके अंदर एक जोश देखा जा सकता था।

अंत में वह एक मैदान जैसी गुफा में दाखिल हुए...जिसमें मशरूम का विशालकाय जंगल फैला हुआ था।

कुछ लोग उस जंगल में काम कर रहे थे।

करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट ने देखा...वहां मौजूद तमाम लोग पूरी तन्मयता से अपने काम में जुटे थे और उनका आसपास की गतिविधियों पर बिल्कुल ध्यान न था।

एकाएक चार्ल्स ने बहुत धीमी आवाज में कहा–"कमाण्डर!"

"यस!"

"आप बिल्कुल मेरे पीछे-पीछे चलें।" चार्ल्स की आवाज रहस्यमयी थी–"और बाकी आप सब भी।"

"ठीक है।"

वह सब एक कतार जैसी पोजीशन में आ गये और थोड़े-थोड़े फासले पर भी हो गये। उसके बाद वह मशरूम के तनों के बीच से आड़े-तिरछे होकर चलने लगे।

कमाण्डर करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट भी मशरूमों से बचते हुए चल रहे थे।

मशरूम बाग सचमुच बहुत बड़ा था।

करण सक्सेना ने कल्पना भी नहीं की थी कि वह बाग इतना बड़ा होगा।

इसके अलावा कमाण्डर करण सक्सेना ने एक खास बात और नोट की...चार्ल्स और सुधाकर बड़े चौकन्ने ढंग से इधर-उधर देखते हुए भी चल रहे थे।

यही हालत वरीस गड़बड़ की थी।

उसे आश्चर्य हुआ कि वह लोग अचानक चलते-चलते क्यों चौकन्ने हो गये हैं...इसके पीछे क्या वजह हो सकती है?

थोड़ी देर में वह जंगल के दूसरे किनारे पर पहुंच गये।

उससे आगे पत्थरों की एक विशाल दीवार थी और उससे आगे कोई रास्ता न था।

सबसे पहले चार्ल्स वहां पहुंचकर रुका और फिर बाकी सब भी रुक गये।

वहां पहुंचकर चार्ल्स और सुधाकर ने पुनः बड़ी चौकन्नी निगाहों से इधर-उधर देखा।

दूर-दूर तक अब कोई नजर नहीं आ रहा था।

मशरूम बाग में काम करने वाले लोग भी काफी पीछे छूट गये थे।

वहां सिर्फ सन्नाटा था।

गहरा सन्नाटा!

"क्या हम अपनी मंजिल पर पहुंच चुके हैं?" करण सक्सेना बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया।

"यस कमाण्डर...हमारी मंजिल आ चुकी है।"

"लेकिन...।"

"अब बस आप देखते जायें।"

तभी सुधाकर आगे बढ़ा और उसने आगे बढ़कर एक ही झटके में दीवार में लगे एक पत्थर को दोनों हाथों से पकड़कर अपनी तरफ खींच लिया।

तत्काल पत्थर लुढ़ककर आगे आ गया था और उसके पीछे इतना बड़ा छेद नजर आने लगा...जिसमें एक आदमी बड़ी आसानी के साथ दाखिल हो सके।

"क्या यही गुप्त सुरंग का दहाना है?"

"यस कमाण्डर!" चार्ल्स बोला-"चलो...अब अंदर चलते हैं।"

फिर वह सब एक-एक करके सुरंग में दाखिल हुए।

सुरंग बहुत लम्बी थी और संकरी थी। इसके अलावा उसका रास्ता भी ढलवां था...जो ऊपर की तरफ जा रहा था।

करण सक्सेना खड़ा हुआ मन्त्रमुग्ध-सा उस सुरंग को

देखता रहा।

"वरीस!" सुधाकर धीमी आवाज में फुसफुसाया—"रास्ता बंद कर दो।"

आदेश की देर थी...तत्काल वरीस गड़बड़ ने उस पत्थर को वापस सुरंग के दहाने पर रख दिया, जिस पत्थर को हटाकर वह सुरंग में दाख़िल हुए थे।

छेद पुनः बंद हो गया।

"कमाण्डर...हम इस बात का खास ख्याल रखते हैं।" चार्ल्स बोला—"कि मारकोस या उसके किसी आदमी को हमारी इस सुरंग की जानकारी न मिल जाये।"

"अच्छा करते हो...अगर यह तमाम सावधानी नहीं बरतोगे मेरे दोस्त, तो मारकोस और उसके आदमियों को इस सुरंग की जानकारी मिलने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।"

"हम जानते हैं कमाण्डर!"

फिर वह सब सुरंग में आगे की तरफ बढ़े।

वह कई किलोमीटर लम्बी सुरंग थी।

लेकिन फिर भी उस सुरंग में एक खास बात थी...वो अंधेरी सुरंग नहीं थी। बल्कि उसमें रोशनी का खास इंतजाम किया गया था। दरअसल उन्होंने ग्लोब ला-लाकर थोड़े-थोड़े फासले से उस सुरंग में लगा दिये थे और अब वही ग्लोब गुफाओं की तरह उस सुरंग को भी हरे रंग से प्रकाशित किये हुए थे।

"क्या यह ग्लोब पहले से ही यहां लगे हुए हैं?" करण सक्सेना ने पूछा—"या फिर इन्हें आप लोगों ने अभी लाकर लगाया है?"

"नहीं...यह ग्लोब इस सुरंग में पहले से ही लगे हुए हैं कमाण्डर!" सुधाकर एक और रहस्योद्‌घाटन करता हुआ बोला—"दरअसल सैकड़ों वर्ष पहले जिन लोगों ने यह सुरंग बनाने का कार्य शुरू किया...उन्होंने ही इस सुरंग को प्रकाशित रखने के लिये यह ग्लोब भी यहां लगाये। अलबत्ता अब हम लोग एक काम जरूर करते हैं।"

"क्या?"

"हम जब कोई पचास-साठ मीटर लम्बी सुरंग खोद लेते हैं...तो उसमें दो-तीन ग्लोब लाकर लगा देते हैं। इसलिये इस

। सुरंग में कहीं भी अंधेरा नहीं है।"

"गुड!"

"चलिये...अब हम वहां चलते हैं।" चार्ल्स बोला—"जहां हमारे साथी सुरंग खोदने का काम कर रहे हैं। वहां तक पहुंचने में भी हमें दो-तीन घण्टे लग जायेंगे।"

"दो-तीन घण्टे!" करण सक्सेना हैरान हुआ।

"यस कमाण्डर...मैंने बताया न, यह कई किलोमीटर लम्बी सुरंग है और इसमें हम सिर्फ पैदल ही चल सकते हैं।"

करण सक्सेना ने प्रोफेसर भट्ट की तरफ मुड़कर देखा।

"प्रोफेसर!" करण सक्सेना ने पूछा--"आपको तो सुरंग का यह रास्ता तय करने में मुश्किल पेश नहीं आयेगी?"

"नहीं।" प्रोफेसर भट्ट तुरन्त बोले—"मुझे कोई मुश्किल नहीं होगी। सच तो ये है...मैं आराम करते-करते थक गया हूं।"

"गुड!" तो चलो...फिर हम चलते हैं।"

वह सब सुरंग में आगे की तरफ बढ़े।

करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट सुरंग को बहुत ध्यान से देखते हुए आगे बढ़ रहे थे।

सचमुच वो सुरंग वर्षों के अथक परिश्रम का परिणाम थी और उसे देखकर पता चलता था...उस सुरंग को खोदने में कितनी मेहनत की गयी है।

वह सुरंग इंसान के बुलंद हौसलों की अपने आपमें जीवन्त मिसाल थी।

करण सक्सेना अपने शरीर में अजीब-सा रोमांच अनुभव कर रहा था।

वह आगे बढ़ते रहे।

बढ़ते रहे।

सुरंग वाकई बहुत लम्बी थी।

करण सक्सेना की कल्पना से भी लम्बी थी।

सुरंग के अंदर-ही-अंदर कोई दो घण्टे तक लगातार चलने के बाद वह सब उस जगह पहुंचे...जहां बड़े जोर-शोर के साथ खुदाई का काम चल रहा था।

वहां उस वक्त कोई सत्तर-अस्सी आदमी मौजूद थे और पूरी तन्मयता से काम कर रहे थे। यहां तक कि उन लोगों के

वहां पहुंचने के बाद भी उन्होंने अपनी खुदाई का काम जारी रखा और उन लोगों की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

उन सबके हाथों में कुदाल थे।

पत्थर के कुदाल!

इसके अलावा कुछेक पत्थर के फावड़े भी वहां थे।

करण सक्सेना तथा प्रोफेसर भट्ट पत्थर से बने उन औजारों को देखकर और भी हैरान हुए। वह औजार हालांकि पत्थर से बनाये गये थे...लेकिन वह इतने मजबूत थे और इतने नफीस ढंग से तराशे गये थे कि लोहे के औजारों को भी मात देते थे।

करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट ने उन औजारों को हाथ में लेकर देखा।

उनमें सिर्फ एक ही कमी थी...वह भारी थे। भारी होने की वजह से आदमी उन्हें इतनी स्पीड से नहीं चला पा रहे थे...जितनी स्पीड से लोहे के औजारों को चलाते।

"अभी सुरंग सतह से कितनी दूर होगी?" करण सक्सेना ने सुधाकर की तरफ देखकर पूछा।

"अभी इस बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता कमाण्डर!" सुधाकर बोला–"कि यह सुरंग सतह से कितनी दूर है। मुमकिन है...अभी हमारा कोई साथी यहां अगली कुदाल मारे और उसके कुदाल मारते ही सतह के ऊपर की रोशनी चमक उठे या फिर यह भी मुमकिन है कि सफलता हासिल करने में हमें बहुत दिन लग जायें।"

"यानी सब कुछ अंधेरे में है।"

"यस कमाण्डर!"

करण सक्सेना उन सबको सुरंग खोदते देखता रहा।

उस दिन वो काफी देर सुरंग के अंदर उन लोगों के साथ रहा।

वो सचमुच बहुत हिम्मतवाले लोग थे।

वह नहीं जानते थे कि सफलता मिलने में उन्हें कितना समय है...मगर फिर भी वो पूरे दिलोजान से उस काम में जुटे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना अब अपने अंदर जोश अनुभव कर रहा था।

असीम उत्साह!

❑❑❑

❑❑❑

रचना मुखर्जी की आंख खुली, तो सबसे पहले उसकी नजर पत्थरों की छत पर पड़ी।

पत्थरों की छत पर निगाह पड़ते ही उसे अहसास हुआ कि वह सभ्य संसार में नहीं है बल्कि भूमिगत प्राचीन जाति के बौनों की कैद में है।

रोजाना सुबह आंख खुलते ही वह सफेद प्रशस्त छत देखने की आशा करती। उसे न जाने क्यों ऐसी अनुभूति होती कि वह एक भयानक सपना देख रही है और जब कभी भी उस सपने से उसकी आंख खुलेगी...तो वह खुद को अपने फ्लैट में पायेगी।

अपना फ्लैट!

जिसे देखना उसका सपना बन गया था।

रोजाना जब सफेद छत की बजाय पत्थर की अप्रशस्त छत पर उसकी नजर पड़ती...तो उसका दिल बैठ जाता।

उसकी सारी उम्मीदें दफन हो जातीं।

एक बात को लेकर वह बड़ी हैरान थी कि उसने उस कैद और जीवन की उस एकरसता से ऊबकर अभी तक आत्महत्या क्यों नहीं की थी?

इसके पीछे भी शायद एक वजह थी।

क्योंकि जीवन बड़ी प्यारी चीज है और इस बात को वह जानती थी। या फिर उसके जिन्दा रहने के पीछे एक और बड़ी महत्वपूर्ण वजह भी थी...उसे कमाण्डर करण सक्सेना की फिक्र थी। वो कमाण्डर करण सक्सेना के लिये जीवित रहना चाहती थी...शायद कभी कमाण्डार को उसकी जरूरत पड़ जाये। यह रचना मुखर्जी को मालूम था कि कमाण्डर जीवित है और यह कि वो किसी निचली सतह पर कैद है। इतना ही नहीं...रचना मुखर्जी यह भी जानती थी कि उसको बौनों ने अपनी सतह पर केवल सुंबा बिल्ली के कारण रखा हुआ है। यहां आकर उसे पता चला था कि ऊपर जमीन की सतह पर रहने वाले स्थानीय लोगों की तरह यह बौने भी सुंबा देवी को पूजते थे और उसे शक्ति की देवी मानते थे।

यह उस बिल्ली का ही कमाल था कि अब वह भी बौनों के लिये एक पवित्र चीज थी।

बिल्ली चूंकि रचना मुखर्जी से हिल गयी थी...इसलिये वो हर समय उसकी गोद में रहती थी और यही वजह थी कि बौनों का ख्याल था कि वह देवी की चहेती विभूति है और यदि इसको हमने कष्ट पहुंचाया...तो देवी हमसे नाराज हो जायेगी।

जबकि सुंबा देवी की उनके बीच कड़ी मान्यता थी।

उस देवी के प्रति उनका बड़ा भक्तिभाव था।

रचना मुखर्जी ने मशरूम की सन जैसी छाल के टुकड़ों पर एक करवट बदली, जो उसके बिस्तर का काम देते थे।

"सुंबा!" फिर उसने बहुत धीमी आवाज में पुकारा।

फौरन ही सिरहाने की तरफ से बिल्ली ने 'म्याऊं' कहकर जवाब दिया।

बिल्ली वहीं पास में बैठी थी।

वह ज्यादातर उसके आसपास ही रहती थी।

रचना मुखर्जी उठकर बैठ गयी। सुंबा उछलकर अब उसकी गोद में आ गयी थी।

रचना मुखर्जी ने उसके नर्म-नर्म बालों पर हाथ फेरते हुए कहा—"स्नान और नाश्ते का समय हो गया है माई स्वीट हार्ट!"

"म्याऊं!"

सुंबा ने पुनः धीरे से आवाज निकाली।

शुरू-शुरू में जब रचना मुखर्जी और सुंबा उस गुफा में लायी गयी थीं...तो रचना मुखर्जी बहुत डरी हुई थी।

मगर जब रचना मुखर्जी ने देखा कि जो बौना भी उसके सामने आता था...वह दण्डवत् की मुद्रा में हो जाता था, तो उसे तुरन्त यह ज्ञान हो गया कि यह लोग बिल्ली की पूजा करते हैं और बिल्ली के कारण उसका सम्मान कर रहे हैं।

इससे उसके दिल को थोड़ा ढांढस बंधा था।

फिर एक मुसीबत का सामना उसे और करना पड़ा।

जब उसे पहली बार मशरूम से तैयार किया गया स्वादहीन खाना खाने के लिये दिया गया, तो उसे उलटी होते-होते रह गयी।

उसका सिर जोर से चकराया।

"नहीं।" वह जोर से चिल्लाई—"मैं इस खाने को नहीं

खा सकती।''

मगर वो कब तक न खाती।

कब तक!

भूख बड़ी खतरनाक चीज है। रचना मुखर्जी आखिरकार उसी स्वादहीन खीर जैसी चीज को खाने के लिये विवश हो गयी।

फिर एक संकट और आया।

घनघोर संकट!

सुंबा बिल्ली नें उस खीर को खाने से इंकार कर दिया।

यह बड़ा खतरनाक मामला था।

सुंबा बिल्ली ने दो दिन तक कुछ न खाया।

दो दिन!

रचना मुखर्जी कांप उठी।

वो जानती थी...अगर बिल्ली मर गयी, तो उसको भी वह बौने या तो मार डालेंगे अथवा किसी कैदखाने में डाल देंगे।

फिर वो क्या करे?

कैसे बिल्ली को बचाये?

रचना मुखर्जी सोच-सोचकर परेशान होने लगी।

❑❑❑

❑❑❑

रचना मुखर्जी ने बौनों को इशारों से यह बात समझायी...उनकी सुंबा देवी यह सब खाना नहीं खाती है।

बौने उसकी बात समझे भी।

मगर!

प्रॉब्लम ये थी कि समुद्र के नीचे बनी उन खौफनाक सुरंगों में और क्या खाना मिल सकता था।

वहां पशु नहीं थे...इसलिये मांस भी उपलब्ध नहीं था।

''दूध!'' रचना मुखर्जी ने इशारों से बौनों को समझाने की कोशिश की—''आपकी सुंबा देवी को पीने के लिये दूध चाहिये।''

परन्तु बौने उसकी बात नहीं समझे।

तब रचना मुखर्जी ने एक घिसने वाले पत्थर से पत्थर पर गाय का नक्शा बनाकर दिखाया।

लेकिन बौनों ने ऐसा पशु भी कभी नहीं देखा था।

बड़ी मुश्किल से वह दूध के बारे में समझे और तब वह
बौने अपनी पांच-छह औरतों को पकड़ लाये, जिनकी गो
बच्चे थे।

उन औरतों ने अपनी छातियों से उस देवी को दूध पिला-
चाहा।

लेकिन सुंबा देवी ने दूध पीने से इंकार कर दिया।

रचना मुखर्जी की चिन्ता बढ़ती जा रही थी।

"हे भगवान...क्या किया जाये?"

अगर बिल्ली मर गयी...तो फिर उसके जीवन का क
मूल्य ही नहीं था।

फिर तभी रचना मुखर्जी के दिमाग में एक बड़ा नाय
विचार कौंधा कि सुरंगों में पानी है...इसलिये वहां मछलियां भी
जरूर होंगी।"

मछलियां!

रचना मुखर्जी के दिमाग में एक साथ कई हजार वाट के
बल्ब जगमगा उठे।

वह सचमुच एक बेहतरीन उपाय था।

रचना मुखर्जी ने बौनों को 'मछलियों' के बारे में इशारे
से समझाया।

"सुंबा देवी को खाने के लिये मछलियां चाहियें...मछलियां।"

"मछलियां!"

बौनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

शायद 'मछली' शब्द से वह अपरिचित थे।

तब रचना मुखर्जी ने हाथ से उन्हें मछली का आकार
बनाकर दिखाया...तो वह फौरन समझ गये।

मगर!

एक और नया संकट आ गया।

बौने मछलियों को भी देवी मानकर पूजते थे।

फिर वो भला इस बात को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे कि
उनकी एक देवी दूसरी देवी को खाये!

असंभव!

नामुमकिन!

अंत में बड़ी कठिनाई से रचना मुखर्जी उनको समझा पाई।

"देखिये!" रचना मुखर्जी उन्हें इशारों से ही समझाते हुए बोली—"पानी में मछलियां असंख्य हैं और बिल्ली केवल एक है...अगर बिल्ली देवी ने अपना जीवन बनाये रखने के लिये कुछ मछलियां खा भी लीं, तो मछलियों की देवी नाराज नहीं होगी।"

यह बात बौनों की समझ में आ गयी वह कुछ मछलियां पकड़ लाये...उन मछलियों को बिल्ली ने बड़े शौक से खा लिया था।

बस उस दिन के बाद से सुंबा देवी निरंतर मछली देवियों से अपना पेट भरती रही थी।

इस तरह रचना मुखर्जी की जिंदगी वहां आराम से गुजरने लगी।

आंख खुलने के बाद रचना मुखर्जी बड़े राजसी ठाठ से चलती हुई पानी के एक बहुत बड़े कुण्ड तक पहुंच गयी। कुण्ड काफी लम्बा-चौड़ा था और कम-से-कम बीस फुट गहरा था...उसमें साफ पानी था।

रचना मुखर्जी ने एक पत्थर पर धीरे से बिल्ली को बिठाया और फिर उसे पुचकारते हुए बोली—"आराम से यहीं बैठी रहना माई डियर...मैं कुण्ड में नहाकर आती हूं।"

"म्याऊं!"

बिल्ली ने धीमी-सी आवाज निकाली और फिर वो वहीं बैठ गयी।

जबकि रचना मुखर्जी अब अपने कपड़े उतारने लगी थी।

कुण्ड के चारों तरफ लगभग अस्सी-नब्बे बौने खड़े थे। वह रोजाना सुबह उसको नहाते हुए देखने आते थे।

वह श्रद्धा से उसके सामने सिर झुकाये खड़े रहते थे।

लगता है। रचना मुखर्जी मुस्कराते हुए सोचती—उनको मेरा गोरा रंग और सुडौल शरीर बेहद पसंद है।

शुरू-शुरू में रचना मुखर्जी को उस भीड़ के सामने नंगे नहाते हुए बड़ी शर्म आती थी।

लेकिन अब वह उसकी आदी हो चुकी थी।

वह जानती थी कि बौने सैक्स के विषय में बहुत मासूम हैं...वह बिल्ली के कारण उसके शरीर के एक-एक अंग की

पूजा करते थे।

पहले दिन जब वह पानी में उतरकर कुण्ड की तह में चली गयी थी और फिर भीतर-ही-भीतर तैरकर कोई बीस गज दूर जाकर निकली थी...तो बौनों के लिये यह चमत्कार था।

''आश्चर्य!'' बौने अपनी जबान में बड़बड़ाये-''घोर आश्चर्य!''

दरअसल उनमें से बहुत कम लोग तैरना जानते थे और पानी में गोता लगाने के बारे में तो जैसे उन्हें कुछ मालूम ही न था। इसलिये रचना मुखर्जी का पानी की तह में दो-ढाई मिनट तक रहना और फिर दूर जाकर निकलना इस बात का सबूत था कि वह बौनों के संसार की विभूति नहीं बल्कि देवी-देवताओं के देश की कोई विभूति है।

उस दिन भी वह आधा घण्टा पानी में तैरती रही।

फिर जब वह किनारे पर आयी...तो 'गराम' उसके लिये बड़े आदर के साथ कपड़े लिये खड़ा था।

गराम!

जो उन बौनों का सरदार था।

''हैलो!'' गराम ने अपनी नजरें झुकाये-झुकाये कहा।

दरअसल 'गराम' से उसकी थोड़ी-बहुत बातचीत हो जाया करती थी। गराम के साथ रहकर जहां उसने उन बौनों के थोड़े-बहुत शब्द सीख लिये थे...वहीं गराम ने भी उसकी भाषा काफी कुछ सीख ली थी।

''आपको यहां कुछ परेशानी तो नहीं हो रही मैडम?'' गराम बेहद आदरपूर्वक बोला।

''नहीं...मुझे यहां कोई परेशानी नहीं है।''

जबकि रचना मुखर्जी को कमाण्डर करण सक्सेना की रह-रहकर याद आ रही थी।

''अगर कोई परेशानी हो तो मुझे बेहिचक बताना।''

''क्यों नहीं...अगर आपको नहीं बताऊंगी, तो किसे बताऊंगी मिस्टर गराम!''

रचना मुखर्जी अपने कपड़े पहनने लगी।

इस बीच गराम अपनी नजरें झुकाये पहले की तरह आदरपूर्वक खड़ा रहा।

❑❑❑
❑❑❑

वह एक बेहद गुप्त अंधेरी सुरंग थी...जहां दुष्ट मारकोस अपने साठ-सत्तर आदमियों के साथ मौजूद था।

वो सब एक मीटिंग कर रहे थे।

गुप्त मीटिंग!

उस सुरंग में जमीन पर मशरूम की सूखी हुई छाल बिछी हुई थी...जिस पर वह सब बैठे थे। पूरी सुरंग में सिर्फ एक ग्लोब जल रहा था और उसी एक ग्लोब के कारण वहां बहुत मद्धिम प्रकाश फैला था...जो उस घनघोर अंधेरे में ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे वहां कोई मोमबत्ती टिमटिमा रही हो।

सामने अपने साठ-सत्तर साथियों की तरफ मुंह किये मारकोस बैठा था और उसके बराबर में माना बैठी थी।

माना!

जो उस दुष्ट मारकोस की प्रेमिका थी और उससे दिलोजान से मोहब्बत करती थी।

माना लम्बे कद की, खूब गोरी-चिट्टी आकर्षक देह की स्वामिनी थी। वह उस जगह मौजूद तमाम औरतों में सबसे ज्यादा सुंदर थी। हालांकि माना पर बहुत सारे पुरुषों की निगाह थी...मगर शैतान मारकोस उसे अपने शिकंजे में जकड़ने में कामयाब रहा था।

''देखो दोस्तों!'' मारकोस अपने साथियों के सामने बैठा बड़ी गरमजोशी के साथ बोल रहा था–''यह हमारे लिये गोल्डन चांस है। ऐसा चांस यहां मौजूद कैदियों में आज तक कभी किसी को नहीं मिला। हम अगर एक बार ऊपर वाली तह पर पहुंच गये...तो फिर वहां से हमारे लिये बाहर भाग निकलना बहुत आसान काम होगा। और इसके लिये हमें बस एक मामूली-सा कार्य करना है। दोस्तों...हमें किसी तरह सिर्फ उस सुरंग का पता लगाना है...जिसे चार्ल्स, सुधाकर और बरीस गड़बड़ मिलकर खोद रहे हैं। अगर हमें उस सुरंग का पता चल गया...तो यूं समझो कि हम सात तालों से भी ज्यादा भयंकर इस कैद से आजाद हो गये। वरना फिर जन्म-जन्मांतर तक भी हम इस कैदखाने से आजाद नहीं हो सकते...हमें यहीं एड़ियां रगड़-रगड़कर मर

जाना होगा।"

"लेकिन वो सुरंग किस जगह खोदी जा रही है मि० मारकोस!" एक व्यक्ति बोला–"यह पता लगाना भी तो कु. आसान नहीं है।"

"मैं जानता हूं।" मारकोस बोला–"कि सुरंग के बारे पता लगाना आसान नहीं है। वह बहुत हरामजादे आदमी हैं। वो सारा काम बहुत गुप्त रूप से अंजाम दे रहे हैं। सुरंग किस जगह खोदी जा रही है...इसके बारे में वो किसी को भनक भी नहीं लगने देना चाहते। और सबसे बड़ी मुश्किल ये है कि उन्हें मेरे ऊपर शक भी हो गया है। मगर इसका मतलब ये नहीं दोस्तों!" मारकोस पुनः बड़े जोश के साथ बोला–"कि हम हताश हो जायें। हमने फिर भी किसी-न-किसी तरह उस सुरंग का पता लगाना है।"

"मगर कैसे मिस्टर मारकोस!" वह एक अन्य व्यक्ति की आवाज थी–"हम कैसे पता लगायें?"

"उसका भी एक तरीका मैं बताता हूं।"

"क्या?"

"सुरंग खोदने का काम वह तीनों अकेले नहीं कर रहे होंगे दोस्तों! जरूर और कैदी भी इस प्रक्रिया में उनके साथ शामिल होंगे।"

"फिर?"

"फिर कुछ नहीं...तुम में से अगर एक आदमी भी सुरंग खोदने वाले उन मजदूरों में शामिल हो गया, तो हम जीत जायेंगे। तुम्हें किसी तरह उनके विश्वस्त आदमियों के बीच घुसपैट करनी है और सुरंग के अंदर दाखिल होना है...उसी क्षण हमें कामयाबी हासिल हो जायेगी।"

"मिस्टर मारकोस!" सबसे पीछे वाली कतार में बैठा एक आदमी बोला–"मैं एक सवाल पूछना चाहता हूं।"

"पूछिये।"

"सुरंग की जानकारी मिलने के बाद इस बात की क्या गारंटी है कि वो आपके साथ-साथ हम सबको भी ऊपर वाली तह पर रहने की इजाजत दे देंगे?"

"गारंटी है।" मारकोस पूरे यकीन के साथ बोला–"जब

मैं उनसे गुजारिश करूंगा...तो वह मेरी बात नहीं टालेंगे। वो हर हालत में तुम सबको भी ऊपर रहने देंगे।''

उन सबने एक-दूसरे की तरफ देखा।

न जाने क्यों मारकोस की वह बात सुनकर एकाएक उन सबके चेहरे पर विश्वास के भाव नहीं उभरे।

''आप लोग मेरे ऊपर यकीन करें।'' मारकोस पुनः उत्साहपूर्वक बोला—''मैं बौनों से जो कहूंगा...वो वही करेंगे।''

''ठीक है मिस्टर मारकोस...हम आपकी बात मानते हैं। लेकिन चार्ल्स, सुधाकर तथा बरीस गड़बड़ के अलावा अब एक आदमी और हमारे लिये मुश्किलें पैदा करने लगा है।''

''कौन?''

''वह काला ओवरकोट तथा काला गोल हैट पहने जो नया आदमी आया है...वह शक्ल से उन तीनों से भी ज्यादा डेंजर आदमी मालूम होता है और सबसे बड़ी बात ये है...वह तीनों उसे बॉस जैसा रेस्पांस दे रहे हैं। उसके इशारों पर नाच रहे हैं।''

''मैं कुछ नहीं जानता।'' मारकोस जंगली भेड़िये की तरह गुर्राया—''मैं सिर्फ रिजल्ट चाहता हूं...रिजल्ट! किसी भी तरह उस सुरंग का पता लगाओ...जो वह खोद रहे हैं। हमें उस सुरंग का पता चलना जरूरी है। कुछ भी करो। यू कैन आस्क मी इफ देअर इज ऐनी डिफीकल्टी। टेक व्हाट एवर यू नीड।''

''ठीक है मिस्टर मारकोस...हम और कोशिश करते हैं।''

''कोशिश नहीं...मुझे कामयाबी चाहिये। सुरंग का पता चाहिये।''

''ओ०के० सर...हम बहुत जल्द सुरंग का पता लगाते हैं।''

फिर वो मीटिंग वहीं बर्खास्त हो गयी।

वहां जितने भी आदमी थे...वह सब एक-एक करके उठकर जाने लगे।

शीघ्र ही वह पूरी सुरंग खाली हो गयी।

अब वहां सिर्फ दो शख्स बचे।

मारकोस!

माना।

अन्त में माना भी अपने स्थान से उठी और बाहर की तरफ

चली।

''माना!'' तुरन्त मारकोस ने पीछे से उसका हाथ कपका पकड़ लिया और बड़े अनुरागपूर्ण शब्दों में फुसफुसाया-''क्या तुम भी जा रही हो माई डैलीशस डार्लिंग।''

माना के पूरे शरीर में रोमांस की लहर दौड़ गयी।

उसके कदम ठिठ्क गये।

मारकोस ने अब अपना सिर बडे प्यार से उसके कंधे पर रख लिया था और उसके हाथ फिसलकर माना की बगल में पहुंच गये।

इतना ही नहीं...उसकी उंगलियां माना के वक्षों की कठोरता का जायजा भी लेने लगीं।

''य...यह क्या कर रहे हो?'' माना कुलबुलाई।

''क्या तुम नहीं जानती डार्लिंग!'' मारकोस ने अपने होंठ माना के रसीले होंठों पर रख दिये-''कि मैं क्या कर रहा हूं?''

माना के होंठों से सिसकारी छूट पड़ी।

''चलो।'' मारकोस उसके होठों पर अपने होंठ रखते हुए बोला-''हम कहीं और चलते हैं।''

''नहीं...आज नहीं।''

''क्यों...आज क्या हुआ है?''

''अभी कल ही तो हमने सैक्स किया था स्वीट हार्ट!''

मारकोस खिलखिलाकर हंस पड़ा।

फिर उसने माना के रसीले होंठों पर चुम्बन अंकित कर दिया।

चुम्बन विस्फोटक था।

माना उन्माद से भर उठी।

उसके दिल में खलबली मच गयी।

जिस्म रोमांस से भरता चला गया।

जबकि मारकोस ने अब माना को और भी ज्यादा कसकर अपनी बांहों में दबोच लिया था।

''यह तो और भी अच्छी बात है माना डार्लिंग!'' मारकोस उसके बालों की लटों से खेलता हुआ बोला-''इससे यह साबित होता है कि हमारे बीच प्यार बढ़ रहा है।''

माना भी अब मारकोस से कसर चिपट गयी थी।

उसके होंठ भी मारकोस के कण्ठ पर फिसलने लगे।

सुरंग का माहौल हर गुजरते पल के साथ रंगीन होता जा रहा था।

परन्तु हैरानी की बात ये थी कि उन्माद के उन क्षणों में भी मारकोस का दिमाग सक्रिय था।

वो हर पल चौकन्ना रहने वाला शख्स था।

दरअसल, जब से कमाण्डर करण सक्सेना उस कैदखाने में आया था और मारकोस ने सुना था कि वह किसी पनडुब्बी के द्वारा अन्दर आया है...तभी से उसके दिमाग में एक स्कीम आ गयी थी। वह किसी तरह उस पनडुब्बी पर कब्जा करके फरार होने का प्रोग्राम बना रहा था। उसका ख्याल भी यही था कि पानी का वह स्रोत, जिसके द्वारा करण सक्सेना आया है...जरूर कहीं से धारा बनकर फूटा होगा और वह उसी पनडुब्बी के द्वारा वापस उस रास्ते से सतह पर पहुंच सकता था।

मारकोस को कैदियों की गुप्त सुरंग के बारे में भी बहुत पहले से मालूम था। लेकिन अभी तक फरार होने की कोई बढ़िया स्कीम उसके दिमाग में नहीं आयी थी...इसलिये वह चुप था। वह दोनों अवसरों की ताक में था। यदि कैदी सुरंग की सतह पर पहुंचने में सफल हो गये...तो वह उसके साथ फरार होना चाहता था, वरना कोई बढ़िया अवसर आने पर वह अपने साथियों से गद्दारी करके और बौनों को अपना दोस्त बनाकर फरार होना चाहता था। करण सक्सेना की पनडुब्बी ने उसको वह अवसर दे दिया था...अलबत्ता अभी उसको इस बात का ज्ञान नहीं था कि पनडुब्बी किस हालत में है। मारकोस ने तो पनडुब्बी के बारे में पता चलते ही प्रयत्न करके सुरंग का रहस्य मालूम किया था और बौनों से आधी आजादी का सौदा कर लिया था। वह जानता था कि पनडुब्बी बौनों की सतह पर किसी जगह है।

इतना ही नहीं...मारकोस ने यह भी तय कर लिया था कि अगर वह ऊपर जमीन की सतह पर पहुंच गया, तो किसी को कुछ नहीं बतायेगा। वैसे भी वो पृथ्वी पर जाकर किसी को कुछ बता भी नहीं सकता था, क्योंकि मारकोस जानता था कि कानून की नजर में आते ही उसकी मृत्यु निश्चित थी। वह दरअसल फौज में कर्नल जरूर था...लेकिन इसके साथ ही भगोड़ा

अपराधी भी था। वह एक अवारा औरत के लिये अपने एक साथी कनल को क़त्ल करके भागा हुआ था और कानून से छिपकर ही फिर रहा था कि हादसे का शिकार होकर सात तालों से भी ज्यादा भयानक उस कैद में आ फंसा।

❑❑❑

❑❑❑

सुरंग की खुदाई का काम जारी था...जोर-शोर से जारी था।

अगले दिन सुबह उठते ही करण सक्सेना सीधा उस सुरंग में जा पहुंचा। उस सुरंग को लेकर वह बहुत रोमांच अनुभव कर रहा था।

''मैं तो ईश्वर से रात-दिन बस एक ही प्रार्थना करता हूं कमाण्डर!'' सुधाकर बोला–''कि जल्द-से-जल्द यह सुरंग सतह पर पहुंच जाये।''

''चिन्ता मत करो।'' करण सक्सेना बोला–''जब तुम लोग इतनी मेहनत-मशक्कत से काम कर रहे हो...तो ईश्वर तुम्हारी प्रार्थना जरूर सुनेगा।''

''मुझे तो एक ही खतरा रहता है कमाण्डर!'' बरीस गड़बड़ अपनी ही 'टोन' में बोला।

''क्या?''

''जिस जगह मैं होता हूं...वहां कुछ-न-कुछ गड़बड़ जरूर होती है। बस मुझे यही खतरा है कि अभी सुरंग की खुदाई होते-होते कुछ ऐसी गड़बड़ न हो जाये, जो एक ही झटके में हमारी सारी मेहनत पर पानी फिर जाये।''

''शुभ-शुभ बोलो माई डियर...ऐसा कुछ नहीं होगा।''

मगर ऐसा हुआ।

गड़बड़ हुई।

और गड़बड़ भी ऐसी भयानक हुई...जो सुरंग खुदाई का सारा काम एकदम बीच अधर में लटक गया।

पिछले दिन के मुकाबले आज सुरंग खोदने वाले आदमियों की संख्या बढ़ा दी गयी थी और उस दिन कोई सौ-सवा सौ आदमी सुरंग खोदने के काम में जुटे थे।

उसी पल घटना घट गयी।

घटना कहने को मामूली थी...लेकिन उसने विकराल रूप धारण कर लिया।

दरअसल खुदाई करते-करते एक काफी बड़ी चट्टान धड़ाम् से सुरंग खोदने वाले आदमियों पर आ गिरी।

चीख-पुकार मच गयी वहां।

हड़कम्प मच गया।

तुरन्त ही उस चट्टान के नीचे दबकर आठ आदमियों की मौत हो गयी और कई घायल हुए।

करण सक्सेना खुद उस दृश्य को देखकर दहल उठा था।

बहरहाल लाशों का तो बेहद गुपचुप तौर पर सुरंग से निकालकर दाह-संस्कार कर दिया गया...परन्तु उस घटना का सुरंग खोदने वाले आदमियों पर जो खौफ तारी हुआ, उसने सारी स्थिति बदल कर रख दी।

अन्तिम संस्कार करने के बाद वह सब पुनः सुरंग के अन्दर एकत्रित हुए।

''अब हम सुरंग नहीं खोदेंगे।'' उनमें से कुछेक ने बहुत दृढ़ अंदाज में अपना फैसला सुनाया।

''क्यों?'' सुधाकर उस फैसले को सुनकर चौंका।

''क्योंकि चट्टान गिरने से जो घटना अभी घटी है...वह घटना दोबारा भी घट सकती है मिस्टर सुधाकर! और हम में से कोई भी ऐसी वीभत्स मौत मरना नहीं चाहता। हमने इस कैदखाने से भाग निकलने और अपनी जिन्दगी बचाने के लिये यह सुरंग खोदनी शुरू की थी...मरने के लिये हम यह सब नहीं कर रहे थे।''

वहां सन्नाटा छा गया।

गहरा सन्नाटा!

कमाण्डर करण सक्सेना भी उस परिस्थिति से हिल गया। सच तो ये है...उस हादसे ने थोड़ी देर के लिये करण सक्सेना को भी झकझोर डाला था और अब वह एक नई समस्या सामने थी।

वह सब हथियार डाल चुके थे...जो कि किसी भी मुहिम के लिये सबसे खतरनाक बात होती है।

उस वक्त उन सबके हौसले पस्त थे।

करण सक्सेना ने 'डनहिल' सुलगाई।

''देखिये।'' करण सक्सेना बहुत शान्त लहजे में बोला–''मैं जानता हूं कि आप सब लोग अपनी जगह बिल्कुल ठीक हैं। इसमें कोई शक नहीं...अपनी जिन्दगी हर किसी को प्यारी होती है, फिर अभी हमारे जो आठ साथी मारे गये हैं...वह भी एक हृदयविदारक घटना है। लेकिन आप लोग एक बात भूल रहे हैं।''

''क्या?''

सबकी निगाहें करण सक्सेना की तरफ उठीं।

''दोस्तों...अगर हमने सुरंग खोदना जारी न रखा।'' करण सक्सेना ने 'डनहिल' का कश लगाया और भरपूर गरमजोशी के साथ बोला–''तो इस कैदखाने से भाग निकलने का हमारा मिशन हमेशा-हमेशा के लिये फेल हो जायेगा। वो मिशन फेल हो जायेगा...जिसके पीछे बेपनाह इंसानों का सपना और सैकड़ों वर्षों की मेहनत जज्ब है। यह बिना उपयुक्त औजारों के जो कई किलोमीटर लम्बी सुरंग खुदी हुई आप देखे रहे हैं...यह हमारे पूर्ववत् साथियों के बुलन्द हौसलों के कारण ही मुमकिन हो सकी है। ऐसा नहीं है...सुरंग खोदते समय दुर्घटनायें उनके साथ नहीं घटी होंगी या उनकी जानें आहत् नहीं हुई होंगी। उनके साथ भी वही सब कुछ हुआ होगा...जो हमारे साथ हो रहा है। मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी...वह डटे रहे और यह उनके डटे रहने का ही परिणाम है...जो इतनी लम्बी-चौड़ी सुरंग खुदी हुई हम देख रहे हैं। जबकि सफलता के इतने नजदीक पहुंचकर अगर हमने अब हथियार डाले...तो यह हमारी सिर्फ...और सिर्फ मूर्खता होगी...सरासर पागलपन होगा।''

करण सक्सेना बोलता रहा।

बोलता रहा।

उसने उन लोगों को समझाने की हर मुमकिन कोशिश की...मगर वह तैयार न हुए।

वह इसी बात पर डटे रहे कि वह अब सुरंग की खुदाई नहीं करेंगे।

❑❑❑

❑❑❑

करण सक्सेना, प्रोफेसर भट्ट, चार्ल्स, सुधाकर और वरीस गड़बड़...उन सबके बीच उस वक्त सन्नाटा था।

वह पांचों उस समय सुरंग में नहीं थे, बल्कि गुफानुमा कमरे में थे और अभी-अभी भोजन करके हटे थे। अलबत्ता भूख उन सबकी उड़ी हुई थी...सिर्फ एक-दूसरे का ख्याल रखने के लिये उन्होंने भोजन किया था।

''अगर सुरंग की खुदाई का काम दोबारा शुरू न हुआ।'' प्रोफेसर भट्ट चिन्तित मुद्रा में बोले–''तो यह बहुत बुरा होगा। हमारी आजादी की वही एक उम्मीद है और अब उम्मीद की वो आखिरी किरण भी मुझे बुझती दिखाई पड़ रही है।''

उन पांचों ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

मामला सचमुच नाजुक बना हुआ था।

''इसमें कोई शक नहीं।'' करण सक्सेना बोला–''कि अगर खुदाई का काम शुरू न हुआ...तो ठीक नहीं होगा।''

सब मूकदर्शक बने बैठे रहे।

''अलबत्ता मेरे पास एक आइडिया जरूर है।'' एकाएक करण सक्सेना ने कहा।

''आइडिया...कैसा आइडिया?''

सबकी आंखें चमक उठीं।

सबकी बड़ी उत्सुक निगाहें करण सक्सेना की तरफ उठीं।

''देखो दोस्तों...सबसे पहले तो यह समझ लो कि हमने किसी भी हालत में सुरंग की खुदाई का काम जारी रखना होगा।''

''लेकिन कैसे?'' सुधाकर बोला–''हम लोग आखिर इन हालात में कैसे खुदाई का काम जारी रख सकते हैं कमाण्डर?''

''हम पांचों मिलकर सुरंग की खुदाई करेंगे।'' करण सक्सेना ने धमाका किया।

''हम पांचों!''

''यस।'' करण सक्सेना की आवाज में पुख्तगी थी–''हम पांचों।''

उन सबकी निगाहें पुनः एक-दूसरे से टकराईं।

''लेकिन हम पांचों मिलकर भला कितनी सुरंग खोद सकते हैं कमाण्डर?'' वरीस गड़बड़ बोला।

''यह बात मैं भी अच्छी तरह जानता हूं।'' करण सक्सेना

बोला—"कि हम पांचों मिलकर सुरंग खुदाई के काम में कोई इंकलाबी कार्रवाई अंजाम नहीं दे सकते। यह चिड़िया के पहाड़ में चोंच मारने जैसा काम होगा, लेकिन जहां तक मैं सोच रहा हूं...वहां तक आप लोग नहीं सोच पा रहे हैं। महात्मा गांधी जब आजादी की लड़ाई लड़ने के लिये निकले थे...तो उनके साथ कोई लाख-सवा लाख आदमियों का लश्कर नहीं था। वह बिल्कुल अकेले थे...तन्हां! उनके पास बस एक जज्बा था...कुछ कर गुजरने का जज्बा! अपनी कौम को, अपने मुल्क के लोगों को आजादी दिलाने का जज्बा। वह आगे बढ़ते गये और कारवां खुद-ब-खुद उनके साथ जुड़ता चला गया। इस समय ऐसा ही कुछ कर गुजरने का जज्बा हम पांचों के पास है। इसके अलावा मैं यह भी जानता हूं कि हमारे जो साथी सुरंग खुदाई का काम कर रहे थे...उनमें सभी ऐसे नहीं होंगे, जो अब सुरंग खोदना नहीं चाहते। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि जब हम पांचों मिलकर खुदाई काम शुरू करेंगे...तो हमारे साथ उनमें से कुछेक हाथ और जुड़ेंगे, फिर कुछ और जुड़ेंगे और फिर मुमकिन है कि सुरंग खुदाई का काम बिल्कुल पहले की तरह सहज रूप से शुरू हो जाये।"

सबकी आंखें चमक उठीं।

"दैट्स वण्डरफुल!" चार्ल्स ने उत्साहपूर्वक आगे बढ़कर करण सक्सेना का हाथ चूम लिया—"वाकई आपके विचार अद्भुत हैं।"

"कमाण्डर!" प्रोफेसर भट्ट ने भी जोश के साथ कहा—"आज मुझे यकीन हो गया...दुनिया के जासूसी जगत में आपके नाम का डंका ऐसे ही नहीं बजता।"

करण सक्सेना बस धीरे से मुस्कुराया।

"इसका मतलब सुरंग की खुदाई का काम जारी रहेगा।" वरीस गड़बड़ बोला।

"न सिर्फ जारी रहेगा।" सुधाकर ने कहा—"बल्कि हम लोग अभी जाकर खुदाई शुरू करेंगे। आपमें से किसी को अभी चलने में कुछ ऐतराज तो नहीं?"

"नहीं।" सबसे पहले प्रोफेसर भट्ट बोले—"भई, मुझे तो ऐतराज नहीं है।"

"और आप लोगों को?"

"हमें भी नहीं।"

"गुड!"

वह सब वापस सुरंग में जा पहुंचे।

वहां पहुंचते ही उन्होंने पत्थर के कुदाल सम्भाल लिये थे और पूरे जोर-शोर के साथ खुदाई का काम शुरू कर दिया।

उनके पीछे-पीछे उनके काफी सारे साथी भी यह देखने के लिये सुरंग के भीतर चले आये थे कि वह पांचों आखिर क्या कर रहे हैं?

उन्हें अकेले ही सुरंग खोदते देख वह चौंके।

बल्कि बुरी तरह हैरान हुए।

दो घण्टे तक वह पांचों पूरे दिलोजान से सुरंग खोदते रहे।

फिर वही हुआ...जैसा करण सक्सेना ने सोचा था।

सबसे पहले तीन आदमी आकर उनमें शामिल हुए।

"कमाण्डर!" उनमें से एक पूरे उत्साह के साथ बोला—"हम भी आपके साथ हैं। आपने सही कहा था...इन सात तालों में बन्द रहने से तो मर जाना बेहतर है...अगर आजादी की जद्दोजहद करते-करते हम मर भी गये, तो हमें परवाह न होगी।"

उन तीनों ने फौरन कुदाल उठा लिये और वह भी पूरे जोश से उनके साथ खुदाई करने लगे।

फिर दस और।

फिर और।

धीरे-धीरे वह सब उन्हीं में आ मिले तथा खुदाई का काम बिल्कुल पहले की तरह बड़े पैमाने पर शुरू हो गया।

करण सक्सेना के साथ-साथ उन चारों ने राहत की सांस ली।

बल्कि सच तो ये है...उस घटना के बाद उन सबकी आंखों में करण सक्सेना के प्रति सम्मान और बढ़ा।

❑❑❑

❑❑❑

रचना मुखर्जी इस समय खुद को बहुत तरो-ताजा अनुभव कर रही थी।

वैसे भी कुण्ड के शीतल जल में स्नान करने के बाद उसके शरीर में ताजगी की एक बड़ी अजीबो-गरीब सी लहर दौड़ जाती थी।

इसके अलावा बौनों के सरदार 'गराम' से बात करना भी उसे अच्छा लगता था।

गराम!

आखिर वहां वही तो एक ऐसा शख्स था...जिससे वो टूटे-फूटे शब्दों में अपनी बात कह पाती थी।

गराम के शरीर और चेहरे पर झुर्रियां पड़ चुकी थीं, लेकिन उसकी आंखों में चमक थी। साधारण बौनों की तरह उसकी कमर में भी एक डोरी बंधी रहती थी और मशरूम की छाल से बना हुआ एक मोटा कपड़ा घुटनों तक लटका रहता था। मगर उसकी कमर वाली डोरी में पत्थरों के चाकू और पत्थरों से भरी हुई थैलियां नहीं रहती थीं। उसके बदले उसके गले में मशरूम की छाल और पत्थरों के टुकड़ों से बनाये हुए कुछ जेवरनुमा चीजें पड़ी रहती थीं, जिनसे पता चलता था कि वह अपने कबीले का प्रतिष्ठित आदमी है।

कुल मिलाकर गराम बुद्धिमान व्यक्ति था।

गरमा उसका नाम या सम्मान...यह रचना मुखर्जी नहीं जानती थी।

"आओ मैडम!" रचना मुखर्जी ने जब कपड़े पहन लिये तो गराम बेहद सम्मानपूर्वक बोला—"मैं आपको आपकी गुफा तक पहुंचा दूं।"

"नहीं...इसकी क्या जरूरत है...?" रचना मुखर्जी ने तुरन्त कहा—"मैं खुद चली जाऊंगी।"

"फिर भी यह मेरा कर्त्तव्य है।"

रचना मुखर्जी जानती थी...गराम नहीं मानेगा।

वह रोजाना अपने पहरेदारों के साथ उसे गुफा तक छोड़कर आता था।

उस दिन भी वो रचना मुखर्जी को उसकी गुफा तक छोड़ने गया।

रचना मुखर्जी, सुंबा को हमेशा अपने साथ रखती थी।

उस दिन भी जब वो कुण्ड से लौटी...तो सुंबा को उसने

अपनी गोद में उठा लिया।

गुफा में पहुंचकर उसने देखा—वहां उसके लिये गरमा-गरम खाना तैयार था और बिल्ली के लिये मछलियां थीं।

''यह लो।'' गराम गुफा में पहुंचकर मुस्कुराया—''आपके लिये खाना भी रेडी है। मैं समझता हूं...अब आप पहले खाना खा लें।''

''नहीं...मुझे अभी भूख नहीं है।'' रचना मुखर्जी बोली।

वैसे भी वो खाना खाने की उसकी इच्छा नहीं होती थी।

मजबूरी में ही वह उस खाने को खाती।

''क्या सुंबा देवी भी अभी कुछ नहीं लेंगी?'' गराम ने पूछा।

''सुंबा देवी की अगर इच्छा होगी...तो वह खा लेंगी।''

रचना मुख़र्जी ने बिल्ली को अपनी गोद से उतार दिया और मछलियों के पास छोड़ दिया।

बिल्ली तुरन्त मछलियों के ऊपर टूट पड़ी।

गराम वहीं बैठ गया और सुंबा को मछलियां खाते देखता रहा।

गराम भी हालांकि देवी-देवताओं को मानता था...लेकिन उसमें सोचने-समझने की शक्ति थी। वह अपनी जाति का दार्शनिक था। जब से वह दोनों आपस में बातें करने के योग्य हुए थे, तब से गराम अक्सर रचना मुखर्जी की गुफा में आ जाता और घण्टों उससे बाहरी संसार की सभ्यता के बारे में पूछता रहता।

जैसे वह अक्सर उससे पूछता—''क्या तुम लोग ऊपर पशुओं की पूजा नहीं करते?''

''नहीं।'' रचना मुखर्जी जवाब देती।

और उसका वह जवाब सुनकर गराम हैरान रह जाता। आश्चर्यचकित।

''कमाल है...तुम लोग पशुओं की पूजा नहीं करते। क्या फिर भी देवता तुम पर नाराज नहीं होते?''

गराम का यह सवाल मुश्किल होता।

इसलिये रचना मुख़र्जी थोड़ा सोच-समझकर जवाब देती—

''नहीं...देवता हमारे ऊपर नाराज नहीं होते।''

वैसे भी कुण्ड के शीतल जल में स्नान करने के बाद उसके शरीर में ताजगी की एक बड़ी अजीबो-गरीब सी लहर दौड़ जाती थी।

इसके अलावा बौनों के सरदार 'गराम' से बात करना भी उसे अच्छा लगता था।

गराम!

आखिर वहां वही तो एक ऐसा शख्स था...जिससे वो टूटे-फूटे शब्दों में अपनी बात कह पाती थी।

गराम के शरीर और चेहरे पर झुर्रियां पड़ चुकी थीं, लेकिन उसकी आंखों में चमक थी। साधारण बौनों की तरह उसकी कमर में भी एक डोरी बंधी रहती थी और मशरूम की छाल से बना हुआ एक मोटा कपड़ा घुटनों तक लटका रहता था। मगर उसकी कमर वाली डोरी में पत्थरों के चाकू और पत्थरों से भरी हुई थैलियां नहीं रहती थीं। उसके बदले उसके गले में मशरूम की छाल और पत्थरों के टुकड़ों से बनाये हुए कुछ जेवरनुमा चीजें पड़ी रहती थीं, जिनसे पता चलता था कि वह अपने कबीले का प्रतिष्ठित आदमी है।

कुल मिलाकर गराम बुद्धिमान व्यक्ति था।

गरमा उसका नाम या सम्मान...यह रचना मुखर्जी नहीं जानती थी।

''आओ मैडम!'' रचना मुखर्जी ने जब कपड़े पहन लिये तो गराम बेहद सम्मानपूर्वक बोला—''मैं आपको आपकी गुफा तक पहुंचा दूं।''

''नहीं...इसकी क्या जरूरत है...?'' रचना मुखर्जी ने तुरन्त कहा—''मैं खुद चली जाऊंगी।''

''फिर भी यह मेरा कर्त्तव्य है।''

रचना मुखर्जी जानती थी...गराम नहीं मानेगा।

वह रोजाना अपने पहरेदारों के साथ उसे गुफा तक छोड़कर आता था।

उस दिन भी वो रचना मुखर्जी को उसकी गुफा तक छोड़ने गया।

रचना मुखर्जी, सुंबा को हमेशा अपने साथ रखती थी। उस दिन भी जब वो कुण्ड से लौटी...तो सुंबा को उसने

अपनी गोद में उठा लिया।

गुफा में पहुंचकर उसने देखा—वहां उसके लिये गरमा-गरम खाना तैयार था और बिल्ली के लिये मछलियां थीं।

"यह लो।" गराम गुफा में पहुंचकर मुस्कुराया—"आपके लिये खाना भी रेडी है। मैं समझता हूं...अब आप पहले खाना खा लें।"

"नहीं...मुझे अभी भूख नहीं है।" रचना मुखर्जी बोली।

वैसे भी वो खाना खाने की उसकी इच्छा नहीं होती थी।

मजबूरी में ही वह उस खाने को खाती।

"क्या सुंबा देवी भी अभी कुछ नहीं लेंगी?" गराम ने पूछा।

"सुंबा देवी की अगर इच्छा होगी...तो वह खा लेंगी।"

रचना मुखर्जी ने बिल्ली को अपनी गोद से उतार दिया और मछलियों के पास छोड़ दिया।

बिल्ली तुरन्त मछलियों के ऊपर टूट पड़ी।

गराम वहीं बैठ गया और सुंबा को मछलियां खाते देखता रहा।

गराम भी हालांकि देवी-देवताओं को मानता था...लेकिन उसमें सोचने-समझने की शक्ति थी। वह अपनी जाति का दार्शनिक था। जब से वह दोनों आपस में बातें करने के योग्य हुए थे, तब से गराम अक्सर रचना मुखर्जी की गुफा में आ जाता और घण्टों उससे बाहरी संसार की सभ्यता के बारे में पूछता रहता।

जैसे वह अक्सर उससे पूछता—"क्या तुम लोग ऊपर पशुओं की पूजा नहीं करते?"

"नहीं।" रचना मुखर्जी जवाब देती।

और उसका वह जवाब सुनकर गराम हैरान रह जाता।

आश्चर्यचकित।

"कमाल है...तुम लोग पशुओं की पूजा नहीं करते। क्या फिर भी देवता तुम पर नाराज नहीं होते?"

गराम का यह सवाल मुश्किल होता।

इसलिये रचना मुखर्जी थोड़ा सोच-समझकर जवाब देती—

"नहीं...देवता हमारे ऊपर नाराज नहीं होते।"

"क्योंकि हमारे देवता तुम्हारे देवताओं से बिल्कुल भिन्न हैं।"

"ओह!"

गराम के मुंह से गहरी सांस निकलती।

मगर सच तो ये है...गराम की समझ में रचना मुखर्जी की कोई बात नहीं आती।

वह तो यही नहीं समझ पाता था कि देवताओं को पशुओं से अलग कैसे समझा जा सकता है।

"अच्छा यह बताओ।" फिर गराम उससे वाल करता–"अगर तुम लोग देवताओं से नहीं डरते और तुम्हारे पशु बहुत-सी खुराक अकारण खा जाते होंगे...तो तुम उन सब पशुओं को मार क्यों नहीं डालते?"

"पशुओं को न मारने के पीछे भी एक वजह है।" रचना मुखर्जी कहती।

"क्या?"

"दरअसल पशु हमारे लिये काम करते हैं।"

"लेकिन तुम तो कहती हो कि तुम लोगों ने ऊपर मशीनों के पशु बनाये हुएं हैं...जो प्राकृतिक पशुओं से भी ज्यादा काम करते हैं।"

"इसमें कोई शक नहीं कि हमने मशीनों के पशु बनाये हुए हैं।" रचना मुखर्जी कहती–"परन्तु अभी बहुत-से काम ऐसे हैं...जो मशीनों से नहीं होते, बल्कि जिनमें पशुओं की ही जरूरत पड़ती है।"

"क्या बिल्लियां भी तुम्हारे काम आती हैं?"

"हां।" रचना मुखर्जी गर्दन हिलाकर कहती।

"क्या काम आती हैं?"

"वो चूहे खाती हैं।"

"चूहे!"

"हां।"

"यह चूहे क्या होते हैं?" गराम हैरानी से पूछता।

जब इस तरह की फिजूल बातें होने लगतीं...तो रचना मुखर्जी ऊब जाती और अकारण जम्हाइयां लेने लगती, ताकि

गराम यह समझ जाये कि उसे नींद आ रही है।

और!

समझदार गराम भी था।

वह तुरन्त उठकर चला जाता।

वो कभी उसके लिये बोझ नहीं बनता था।

इसके अलावा रचना मुखर्जी की गुफा में खाने-पीने की भी किसी चीज की कमी नहीं रहती थी। पत्थर के बर्तनों में हर समय पानी, मशरूम की खीर और मशरूम की शराब रखी रहती थी।

रचना मुखर्जी ने केवल एक बार वह शराब खाना समझकर एक घूंट पी ली थी।

और!

उसका वह एक घूंट शराब पीना गजब हो गया।

वह शराब इतनी कड़वी थी कि सारा दिन उसको खांसी उठती रही और वह अपने सीने में जलन महसूस करती रही।

कभी-कभी गराम उससे सवाल करता—"तुम पशुओं की पूजा क्यों नहीं करतीं?"

"इसलिये कि हम लोगों में मान्यता है।" रचना मुखर्जी कहती—"कि पशुओं में महान आत्मा नहीं होती।"

"आश्चर्य है...एक तरफ तुम लोग कहते हो कि पशुओं में महान आत्मा नहीं होती और दूसरी तरफ तुम लोग पशुओं को मारते भी नहीं। इसका मतलब है...तुम्हारे संसार के लोग अभी पूरी तरह समझदार नहीं हुए। खैर, कोई बात नहीं धीरे-धीरे एक दिन आयेगा, जब वह हमारी तरह समझदार हो जायेंगे और पशुओं की पूजा करने लगेंगे।" गराम अपनी बुद्धि के अनुसार उसको 'अर्तका' का दर्शन समझाने का प्रयत्न करता।

कभी-कभी रचना मुखर्जी, गराम से कैदियों के बारे में भी पूछती थी। वह दरअसल किसी तरह कमाण्डर करण सक्सेना के बारे में जानना चाहती थी कि वो कहां और किस हालत में है।

लेकिन गराम उसके उन सवालों को बड़ी सफाई के साथ टाल जाता था।

सचमुच इस मामले में वो बड़ा चालाक था।

इतना ही नहीं...रचना मुखर्जी को यह भी मालूम था।
बौने आजकल समुद्र के पानी की वजह से काफी डरे हुए हैं...क्योंकि समुद्र का पानी अब तक कई जगह जमीन तोड़कर भीतर आ गया था और बौनों की सुरंगें बंद करके उस पानी को रोकना पड़ा था।

रचना मुखर्जी को यह मालूम हो गया था कि कैदखाना निचली सतह पर स्थित है।

इसलिये वो हमेशा कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ से फिक्रमंद रहती थी।

उस दिन गुफा में आने के बाद उसने गराम से पूछा—"पानी के अब क्या हाल हैं?"

"ठीक हैं।"

पानी का जिक्र सुनकर गराम के चेहरे पर थोड़ी उदासी की परत पुत गयी।

"पानी किसी जगह से तो अंदर नहीं आता?"

"नहीं।" गराम उदास-उदास लहजे में बोला—"अभी तक तो नहीं आया है...लेकिन पानी के बारे में पूरे यकीन के साथ कुछ भी नहीं कहा जा सकता...वो किसी भी समय परत तोड़कर भीतर घुस सकता है।"

"यह तो आप बड़ी खतरनाक बात बता रहे हैं।" रचना मुखर्जी के चेहरे पर खौफ के भाव नमूदार हुए।

"बात खतरनाक जरूर है...लेकिन सच है।" गराम बोला—"मेरी आत्मा कहती है कि विनाश होने वाला है...देवता किसी कारण हमसे रुष्ट हो गये हैं।"

रचना मुखर्जी भी अब बहुत डरी-डरी नजर आने लगी।

वो जानती थी...अगर हिन्द महासागर का पानी जमीन की कोई बहुत बड़ी परत तोड़कर अन्दर घुस आया, तो वह सब उन सुरंगों में डूबकर मारे जायेंगे।

सब!

कमाण्डर सक्सेना भी।

कमाण्डर करण सक्सेना की मौत की कल्पना से ही रचना मुखर्जी सिहर उठी।

□□□

□□□

उस सुरंग में तूफान आया हुआ था।

सैक्स का तूफान!

वह एक अंधेरी सुरंग का बिल्कुल तन्हां कोना था...जहां इस समय मारकोस और माना एक-दूसरे से बहुत कसकर चिपटे हुए थे।

दोनों निर्वस्त्र थे।

शरीर पर कपड़े की एक धज्जी तक नहीं थी।

मारकोस ऊपर था।

माना नीचे।

"ओह, आई लव यू माना डार्लिंग...आई लव यू।" मारकोस उसके बेतहाशा चुम्बन ले रहा था।

वह दीवाना बना हुआ था।

और!

माना भी उसकी कम दीवानी न थी।

उसके शरीर में बेचैनी भर गयी थी।

सैक्स की बेचैनी।

"डियर...मैं भी तुमसे प्यार करती हूं...बेतहाशा प्यार।" माना की आवाज उस समय थरथरा रही थी।

मारकोस ने अपना चेहरा ऊपर उठाया तथा फिर उसे और भी ज्यादा कसकर अपने शरीर के साथ अमरबेल की तरह चिपटा लिया।

"यह भी कोई कहने की बात है डार्लिंग!" मारकोस के होंट उसके कोमल गाल पर सरसराने लगे–"क्या मैं जानता नहीं कि तुम मुझसे प्यार करती हो?"

माना बड़े मादक ढंग से खिलखिलाकर हंसी।

उसकी हंसी में भी खनक थी।

तांबे के सिक्कों जैसी खनक।

"हो सकता है...तुम न जानते होओ।" वह थोड़े शरारती अंदाज में बोली–"इसलिये मैंने बताना जरूरी समझा।"

"पगली कहीं की।"

मारकोस ने उसका एक और चुम्बन ले डाला।

मारकोस के हाथ अब माना की पीठ पर घूमते हुए उसके

नितम्बों की कठोरता का आनन्द लेने लगे।

इतना ही नहीं...वह अपने होंटों से माना के माथे, पलकों, गाल, होंठ और गर्दन पर प्यार की इबारत लिखने लगा।

वह दोनों बड़ी तेजी से उत्तेजना की सीढ़ियां चढ़ते जा रहे थे।

मारकोस ने माना के वक्ष-स्थलों की तरफ देखा।

वह गोल थे।

और कसे हुए।

जैसे आज तक किसी ने उन्हें छुआ भी न हो।

मारकोस ने दीवानावार आलम में उसके वक्ष-स्थलों का भी एक कसकर चुम्बन ले डाला। माना के वक्ष-स्थल उसकी खास पसन्द थे।

फिर मारकोस का हाथ धीरे-धीरे माना के पेट पर रेंगता चला गया।

माना के होंठों से सिसकारी छूटने लगी।

वह उसे भरपूर सहयोग दे रही थी।

माना की टांगों में अब हल्का-हल्का कम्पन्न होने लगा था और उसे इतना आनन्द आ रहा था कि उसने मारकोस की सुविधा के लिये अपनी दोनों टांगें फैला दीं।

मारकोस भी अब पूरे जोश में आ गया था।

उनके बीच उन्माद बढ़ने लगा।

दोनों के कण्ठ से आहें-कराहें फूटने लगीं।

फिर एक क्षण वह भी आया...जब उन दोनों के यौवन का बांध टूट गया।

मारकोस ने अब माना के शरीर को बहुत ज्यादा कसकर अपनी दोनों बांहों में जकड़ लिया।

फिर वह माना के वक्ष में मुंह छिपाकर गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

माना ने भी आनन्द के वशीभूत होकर अपनी आंखें मूंद लीं।

उन दोनों के कांपते जिस्म अब ठण्डे पड़ चुके थे।

❑❑❑

❑❑❑

वह दोनों कितनी ही देर उसी मुद्रा में लेटे रहे।
बिल्कुल शान्त!
निश्छल!
उनकी गहरी-गहरी सांसों की आवाजें एक-दूसरे में एकाकार होती रहीं।
फिर माना ने अपने बालों की लट पीछे की तरफ झटकीं और नीचे लेटे-लेटे बड़े प्यार से मारकोस की तरफ देखा।
"मुझे एक बात बताओगे मारकोस?" माना की आवाज में भावनाओं की गर्मी थी।
प्यार की तपिश थी।
"पूछो।" मारकोस की उंगलियां भी उसके उरोजों पर सरसराती हुई बोली—"क्या पूछना चाहती हो?"
"मैं तुमसे इतनी मोहब्बत क्यों करती हूं डियर?"
उसका सवाल सुनकर मारकोस हंस पड़ा।
"लवी बेबी!" उसने बड़े स्नेह से माना के गाल पर चिकौंटी काटी—"क्योंकि मैं भी तुमसे बेपनाह मोहब्बत करता हूं और मोहब्बत ही मोहब्बत को जन्म देती है। मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा?"
माना की आंखों में उस शैतान मारकोस के लिये और भी ढेर सारा प्यार उमड़ आया।
"तुम कभी कुछ गलत कहते हो डियर! लेकिन कभी-कभी मैं एक बात सोचकर बहुत परेशान हो जाती हूं।"
"क्या?"
"अगर बौनों ने तुम्हारे अलावा किसी और को ऊपर वाली तह पर रहने की इजाजत न दी...तो फिर मेरा यहां क्या होगा? मैं तुम्हारे बिना यहां कैसे रहूंगी मारकोस...मैं तो मर जाऊंगी।।"
"ऐसी बात क्यों बोलती हो डार्लिंग...तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हारे बिना ऊपर वाली तह पर रहने के लिये चला जाऊंगा...हरगिज नहीं।"
"लेकिन...।"
"देखो डार्लिंग...तुम बौनों की चिन्ता मत करो।" मारकोस उसकी बात सख्ती के साथ बीच में ही काटकर

बोला—"बौनों को तैयार करना मेरा काम है। कोई और मेरे साथ ऊपर वाली तह पर रहने के लिये जाये या न जाये...परन्तु मैं बौनों को इस बात के लिये तैयार जरूर कर लूंगा कि वह कम-से-कम तुम्हें मेरे साथ वहां रहने दें।"

"रियली?"

"ऑफकोर्स...रियली!"

"ओह माई स्वीट हार्ट...तुम सचमुच अच्छे हो, बहुत अच्छे।" माना उससे और भी ज्यादा कसकर चिपट गयी तथा उसने उसका एक बहुत कसकर चुम्बन ले डाला।

मारकोस ने भी उसे पुनः दबोच लिया।

परन्तु उस सयम उस शैतान मारकोस के दिमाग में क्या 'खिचड़ी' पक रही थी...यह कोई नहीं जानता था।

कोई नहीं।

यहां तक कि माना को भी उस खिचड़ी के बारे में कुछ मालूम नहीं था।

वह तो अंधी बनी हुई थी...उसके प्यार में अंधी।

उस दिन दुष्ट मारकोस को एक बड़ी अच्छी खबर सुनने को और मिली।

खबर थी...उसका एक आदमी सुरंग की खुदाई करने वाले ग्रुप में शामिल हो गया है।

"दैट्स गुड!" मारकोस ने खुशी में जोर से सुरंग की दीवार पर मुक्का मारा—"अब बाजी मेरे हाथ आयी है...अब तुम मेरा खेल देखना स्वीट हार्ट!"

❑❑❑

❑❑❑

अन्य दिनों की तरह सुरंग की खुदाई का काम उस दिन भी पूरे जोर-शोर के साथ जारी था।

करण सक्सेना का ज्यादातर समय अब उसी सुरंग में व्यतीत होता था। उस दिन सुरंग की खुदाई करने वाले आदमियों को चुनने का काम चार्ल्स, सुधाकर और बरीस गड़बड़ ने ही अंजाम दिया था...क्योंकि वो तीनों ही वहां काफी समय से थे और तकरीबन सभी आदमियों की अच्छी-बुरी आदतों को पहचानते थे। उन तीनों का कहना था...उन्होंने बहुत सोच-समझकर

एक-एक आदमी को अपने ग्रुप में शामिल किया है और उनमें कोई गलत आदमी नहीं है।

फिर भी न जाने क्यों सुबह से ही कमाण्डर करण सक्सेना की छटी इन्द्री खतरे का संकेत दे रही थी।

उसे लग रहा था...कोई गलत आदमी सुरंग के भीतर घुस आया है।

कौन?

यह पहचान कमाण्डर करण सक्सेना भी नहीं कर पा रहा था।

वह 'डनहिल' के बहुत छोटे-छोटे कश लगाता हुआ वहां काम करने वाले एक-एक आदमी पर बड़ी पैनी निगाह रखे था।

"जिस रफ्तार से काम चल रहा है।" प्रोफेसर भट्ट आज काफी खुश थे–"उसे देखकर लगता है कि बहुत जल्द हम इस कैद से आजाद होंगे।"

"इसमें कोई शक नहीं।" करण सक्सेना बोला–"सचमुच अब हमारी आजादी का दिन ज्यादा दूर नहीं है।"

"बशर्ते फिर कहीं कुछ 'गड़बड़' न हो जाये तो!" वरीस गड़बड़ बोला।

वरीस गड़बड़ की बात सुनकर सुधाकर भड़क उठा।

"क्या तुम इस तरह की बकवास बातें करने से बाज नहीं आ सकते?"

"मैं तो बकवास बात करने से बाज आ जाऊंगा मेरे दोस्त...लेकिन यह साली किस्मत अपनी अड़ंगेबाजी दिखाये बिना बाज नहीं आती।"

"फिर भी तुम इस तरह की बातें मत किया करो।"

"ठीक है...मैं नहीं करूंगा।"

वरीस गड़बड़ इस तरह खामोश हो गया...जैसे अब जिन्दगी में कभी नहीं बोलेगा।

खुदाई का काम जारी रहा।

करण सक्सेना कभी-कभी एक बात को सोचकर बहुत चिन्तित हो उठता था कि उसे प्रोफेसर भट्ट की खोजबीन अब रचना मुखर्जी सहित वो खुद भी गायब था।

जब कभी वो चीफ गंगाधर महन्त के बारे में सोचता...तो

उसकी परेशानी बहुत बढ़ जाती।

वह उन दोनों को लेकर कितना परेशान हो रहे होंगे।

ऊपर उनकी वजह से कितनी हलचल होगी...इसकी सिर्फ कल्पना ही की जा सकती थी।

करण सक्सेना ने चिन्तित भाव से 'डनहिल' के दो कश और लगाये।

खुदाई का काम बदस्तूर जारी था।

तभी करण सक्सेना की निगाह खुदाई करते एक आदमी पर जाकर टिठक गयी।

वह जापानी था।

और उनके ग्रुप का नया मैम्बर था...जो आज ही शामिल हुआ था।

करण सक्सेना को उस जापानी की गतिविधियां थोड़ी संदेहजनक लगीं। वह आम जापानियों की तरह ठिगने कद और पतले-दुबले शरीर का मालिक था...अलबत्ता फुर्ती उसके अंग-प्रत्यंग में कूट-कूटकर भरी हुई दिखाई पड़ रही थी। करण सक्सेना ने नोट किया...खुदाई करने में उसकी पूरी दिलचस्पी नहीं थी।

बल्कि वह जापानी कुदाल इस तरह चला रहा था...जैसे कुदाल चलाते हुए उसके ऊपर बड़ा भारी बोझ पड़ रहा हो।

इतना ही नहीं...वह बार-बार चोर नजरों से इधर-उधर देखता।

कभी सुरंग के एक-एक हिस्से को ध्यान से देखने लगता।

उसका कुछ अजीब हाल था।

बेचैनी से भरा।

अब वह पूरी तरह करण सक्सेना के शक के घेरे में आ चुका था...लेकिन करण सक्सेना ने किसी से कहा कुछ नहीं। उसने अपनी 'डनहिल' फेंक दी और वह बड़ी बारीकी से उसके ऊपर निगाह रखने लगा।

दो-तीन घण्टे तक कोई घटना न घटी।

वह सामान्य रूप से काम करता रहा।

फिर दिन के बीच में एक घण्टे का भोजन अवकाश हुआ। उस एक घण्टे के दौरान तमाम आदमी भोजन करने के साथ-साथ

थोड़ा आराम भी कर लेते थे।

भोजन अवकाश होते ही वह सब सुरंग में लाइन लगाकर बैठ गये।

"आज क्या बनाया है?" उनमें से एक बोला।

"यहां कोई मुर्ग-मुसल्लम तो मिलेंगे नहीं।" चार्ल्स थोड़ा तुनककर बोला—"वही खीर बनी है।"

"तौबा...इस खीर को खाते-खाते तो मैं तंग आ चुका हूं।" वह एक अन्य आदमी की आवाज थी—"न मालूम मेरे पाक परवर दिगार ने मुझे किस बात की सजा दी है...जो मुझे इस जहन्नुम में भेज दिया।"

"मियां...शुक्र भेजो, जो यहां खाने के वास्ते कुछ मिल रहा है।" चार्ल्स बोला—"वरना जैसी खौफनाक जमीन की तह के नीचे बनी हुई यह जगह है...ऐसी जगह में तो हमें बस भूखे ही मरना पड़ता।"

"इसमें क्या शक है?" सुधाकर बोला—"वाकई यह बहुत बड़ा करिश्मा है...जो ऐसी जगह रहकर भी हम जिन्दा हैं।"

तब तक वह सब लाइन में इत्मीनान से बैठ चुके थे।

फिर मशरूम के सूखे हुए छाल के टुकड़ों पर उन्हें भोजन परोसा जाने लगा।

यही वो क्षण था...जब खाने के उस वार्तालाप की वजह से करण सक्सेना की निगाह थोड़ी देर के लिये उस जापानी के ऊपर से हट गयी थी।

और!

उन्हीं चन्द सेकण्ड्स में वह जापानी सुरंग से गायब हो गया।

करण सक्सेना ने सुरंग में इधर-उधर निगाह दौड़ाई।

जापानी उसे कहीं न दिखाई पड़ा।

"अरे!" करण सक्सेना चीखा—"वह जापानी कहां गया?"

"जापानी!"

सबकी निगाह तुरन्त करण सक्सेना के चेहरे पर केन्द्रित हुई।

"कौन जापानी?" वरीस गड़बड़ बोला।

"वही...जो हमारा नया मैम्बर था और जो आज पहली

बार ही सुरंग में आया था।"

सबकी निगाह लाइन पर दौड़ी।

जापानी उनके बीच से सचमुच गायब था।

"अरे वो रहा जापानी!" तभी लाइन में बैठा एक व्यक्ति चिल्ला उठा—"वो रहा...वह देखो, वो भाग रहा है।"

करण सक्सेना ने तुरन्त जापानी की तरफ देखा।

वह दरअसल एक चट्टान के पीछे छिपा हुआ था, लेकिन जैसे ही उसने अपने नाम की वहां हलचल मचते देखी...तो वह बौखला उठा और उससे मूर्खता ये हुई कि वो चट्टान के पीछे से निकलकर सुरंग के दहाने की तरफ भागा।

और!

फौरन वह सबकी निगाह में आ गया था।

बल्कि कमाण्डर करण सक्सेना की निगाह जैसे ही जापानी के ऊपर पड़ी...तो वह चीते की भांति अद्वितीय फुर्ती के साथ उसकी तरफ झपट पड़ा।

"रुक जाओ!" करण सक्सेना ने भागते-भागते पत्थर की कुदाल उठा ली—"वरना आज तुम्हारी खैर नहीं है।"

परन्तु जापानी रुकने वाला कहां था!

उसके तो होश गुम थे।

उल्टा वह और तेजी के साथ भागा।

करण सक्सेना ने भागते-भागते पत्थर की कुदाल जापानी के ऊपर अपनी पूरी शक्ति के साथ खींचकर मारी।

"नहीं!"

जापानी की हृदयविदारक चीख निकल गयी।

पत्थर की कुदाल दन से उसकी टांगों में जाकर लगी थी। वो वहीं सुरंग में लड़खड़ाकर गिरा।

वह सम्भलकर खड़ा होता...उससे पहले ही करण सक्सेना उसके सिर पर जा सवार हुआ था।

परन्तु!

फुर्तीला वह जापानी भी कुछ कम नहीं था।

कुदाल टांगों में लगने के बावजूद वह एकदम जंगली तेंदुए की तरह हवा में उछला और जापानी समुराई की तरह करण सक्सेना के सामने तनकर खड़ा हो गया।

उसके उछलने के स्टाइल को देखकर ही करण सक्सेना भांप गया कि वह जापानी जबरदस्त फाइटर है और जूडो तथा ताइक्वांडो जैसी युद्ध-कलाओं में उसे महारथ हासिल है।

जापानी अब एकदम 'टाइगर क्लान' के एक्शन में आ गया था...जैसे करण सक्सेना को चैलेंज दे रहा हो।

उसकी आंखों में सर्प जैसी खूंखारता थी।

करण सक्सेना उसके ऊपर हमला करता...उससे पहले ही जापानी ने कुंगफू के 'स्नैक हैण्ड' का जबरदस्त प्रहार करण सक्सेना के चेहरे पर कर दिया।

चीख निकल गयी करण सक्सेना की।

वीभत्स चीख।

प्रहार वाकई शक्तिशाली था।

करण सक्सेना सम्भलता...उससे पहले ही जापानी ने कराटे के एक और एक्शन 'हिजागिरी' का प्रयोग किया।

करण सक्सेना फिर चीखा।

वह करण सक्सेना को सम्भलने का कोई मौका नहीं देना चाहता था।

शायद वो मार्शल आर्ट के इस 'सूत्र' को जानता था...दुश्मन को कभी कमजोर मत समझो।

मगर!

उस बेचारे को कहां मालूम था कि वो आज किससे भिड़ गया था।

कमाण्डर करण सक्सेना...जो न सिर्फ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का जासूस था, बल्कि एक्शन का भी ऐसा जबरदस्त महारथी था कि उसके सामने बड़े-बड़े योद्धा नहीं टिक पाते थे।

फिर उस बेचारे जापानी की तो उसके सामने हस्ती ही क्या थी।

करण सक्सेना अब तक उसका दमखम नाप चुका था।

वह जापानी जूडो का 'थ्रो एक्शन' दिखाने के लिये फिर उसकी तरफ झपटा।

मगर इस वार वो चूक गया।

उसने 'चूकना' ही था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने तभी 'कावासिकी गिरी' का

प्रयोग कर दिया था।

कावासिकी गिरी...यह कराटे का खास एक्शन है। इसमें दुश्मन को पहले इस तरह का धोखा दिया जाता है, जैसे हमला होने वाला हो, परन्तु हमला फौरन होने की बजाय थोड़ा रुककर होता है।

वह जापानी भी एक क्षण के लिये उस 'चाल' में फंस गया।

करण सक्सेना ने जैसे ही 'कावासिकी गिरी' का एक्शन दिखाया...तो जापानी ने फौरन उस हमले को रोकने के लिये हाथ से ब्लॉक लगाना चाहा।

परन्तु हमला हुआ ही नहीं था।

अगर उसी क्षण हमला हो जाता...तो विना शक जापानी उस हमले को ब्लॉक करने में कामयाव हो जाता।

जैसे ही जापानी का हाथ आगे वढ़ा...फौरन सेकण्ड के सौवें हिस्से की देरी से करण सक्सेना की टांग ने एक्शन दिखाया।

टांग भड़ाक् से सीधे जपानी के मुंह पर पड़ी।

जापानी यूं जंगली भैंसे की तरह डकराया...जैसे किसी ने हथौड़ा उसके मुंह पर पटक मारा हो।

वह चीखता हुआ कलाबाजी खाकर नीचे गिरा।

तव तक तमाम लोग उनके आसपास जमा हो चुके थे और बहुत विस्मित निगाहों से आंखें फाड़-फाड़कर उस फाइट को देख रहे थे।

उनमें से किसी ने भी अपनी पूरी जिन्दगी में इतनी हंगामाखेज फाइल नहीं देखी थी।

परन्तु वह जापानी भी गजव का दुस्साहसी था।

नीचे गिरने के बावजूद वह स्प्रिंग लगे खिलौने की भांति पुनः जम्प लेकर खड़ा हो गया और इस वार उसका हाथ 'शुगी' के एक्शन में करण सक्सेना की तरफ झपटा।

परन्तु!

सावधान था करण सक्सेना!

उसने तुरन्त अपने हाथ से 'शुगी' के उस एक्शन को ब्लॉक कर दिया और उस एक्शन को ब्लॉक करते ही करण सक्सेना की राउण्ड किक घूमी।

जापानी फिर चीखता हुआ नीचे गिरा।

इस बार करण सक्सेना ने उसे सम्भलने का मौका नहीं दिया। उसने जापानी के ऊपर 'उरेकान' का इतना भीषण प्रहार किया कि उसकी आंखों के गिर्द चांद-तारे नाच उठे, फिर उसने बॉक्सिंग के राइट और लैफ्ट पंच उसके ऊपर बरसा डाले।

जापानी की वीभत्स चीखें निकल गयीं।

उसके शरीर के तमाम अंजर-पंजर ढीले पड़ गये।

फिर करण सक्सेना ने बड़ी मजबूती के साथ उस जापानी को अपने शिकंजे में जकड़ लिया था और दूसरे हाथ से उसका गला दबोच लिया।

गला भी उसने पूरी सख्ती के साथ दबोचा।

जापानी के हलक से गूं-गूं की आवाजें निकलने लगीं।

उसकी आंखों में मौत की छाया दौड़ गयी।

"म...मुझे छोड़ दो।" वह छटपटाया—"मुझे छोड़ दो।"

गला दबोचने के कारण उसका चेहरा सुर्ख पड़ने लगा।

आंखें बाहर उबलने लगीं।

"छोड़ दूंगा।" करण सक्सेना अत्यन्त हिंसक लहजे में गुर्राया—"लेकिन पहले मेरे एक सवाल का जवाव दो।"

"प...पूछो।"

"क्या तुम मारकोस के आदमी हो...क्या उसी दुष्ट ने तुम्हें यहां जासूसी करने के लिये भेजा है...?"

जापानी चुप!

खामोश!

करण सक्सेना ने तुरन्त एक झन्नाटेदार झापड़ उसके मुंह पर रसीद किया...जापानी की चीख निकल गयी।

"मैं तुमसे जो सवाल कर रहा हूं...उसका जवाव दो बेवकूफ आदमी!"

करण सक्सेना ने अपने हाथ का शिकंजा उसकी गर्दन पर और भी ज्यादा कस दिया।

"जल्दी जवाब दो।" करण सक्सेना डकराया—"वरना घड़ी की चौथाई में तुम्हारी मौत निश्चित है।"

"ह...हां।" जापानी ने अब जल्दी-जल्दी अपनी गर्दन ऊपर-नीचे हिलाई—"हां...म...मुझे मारकोस ने ही यहां भेजा था। म...मैं मारकोस का ही आदमी...।"

जापानी के शब्द भी पूरे नहीं हो पाये...कमाण्डर करण सक्सेना ने एकदम बड़ी निर्दयता से उसकी गर्दन दोनों हाथों में कसकर पकड़ी और फिर झटके से उसे घुमा डाली।

कट्!

गर्दन की हड्डी टूटने की साफ-साफ आवाज हुई।

तत्काल वह जापानी एक लाश में परिवर्तित हो गया।

□□□

□□□

सुरंग में सन्नाटा छा गया।

गहरा सन्नाटा!

वहां इतने आदमी मौजूद थे...मगर किसी के सांस लेने की आवाज भी उस वक्त वहां नहीं हो रही थी।

सब सांस रोके खड़े थे।

स्तब्ध!

जापानी की लाश अभी भी उन सबके बीचो-बीच पड़ी थी और मौजूदा परिस्थितियों ने उन सबको दहलाकर रख दिया था। भूस्त्र तो न जाने उनकी कब की उड़ चुकी थी।

"मुझे हालात ठीक नजर नहीं आ रहे हैं दोस्तों!" करण सक्सेना एक और 'डनहिल' सुलगाता हुआ बड़ी बेचैनी के आलम में बोला—"आपकी तमाम सावधानियों के बावजूद, तमाम फूंक-फूंककर कदम रखने के बावजूद मारकोस का एक आदमी सुरंग के अन्दर घुस आया। जरा कल्पना करो...अगर यह आदमी मेरी आंखों को धोखा देकर सुरंग से बाहर भाग निकलने में कामयाब हो जाता और मारकोस को जाकर इस सुरंग की इन्फॉर्मेशन दे देता...तो क्या होता? हमारी सारी मेहनत पर तो उसी एक झटके में पानी फिर जाना था।"

सबके चेहरों पर भूकम्प जैसे भाव नजर आने लगे।

आंखों में दहशत थी।

"मैं एक बात बोलूं?" वरीस गड़बड़ ने शुष्क लहजे में कहा।

"बोलो।"

"अभी इस बात की क्या गारण्टी है भाइयों!" वरीस गड़बड़ अपनी ही 'टोन' में बोला—"कि हमारे बीच कोई और

मारकोस का आदमी नहीं है या फिर अब यहां कोई और गड़बड़ नहीं होगी?''

''यह साला जब बोलेगा।'' सुधाकर गुर्रा उठा—''काली जबान बोलेगा...अपशगुन बात बोलेगा।''

''नहीं...यह अपशगुन बात नहीं बोल रहा है।'' करण सक्सेना ने तुरन्त वरीस गड़बड़ की हिमायत ली—''बल्कि यह सच बोल रहा है। जरा सोचो...सचमुच इस बात की क्या गारण्टी है कि हमारे बीच अब कोई और मारकोस का आदमी नहीं है।''

''य...यानी...।'' चार्ल्स बोलते-बोलते सकपकाया।

''मैं बिल्कुल वही कह रहा हूं मिस्टर चार्ल्स...जो आप सोच रहे हैं।''

वह तमाम-के-तमाम आदमी अब बड़ी सन्देहजनक निगाहों से एक-दूसरे की तरफ देखने लगे।

क्या वाकई अभी कोई और भी उनके बीच मारकोस का आदमी मौजूद था?

अगर था...तो कौन था?

कौन?

सस्पैंस का नाग उस सुरंग में अपना फन फटकारने लगा।

□□□

□□□

रचना मुखर्जी सोकर उठी...उसने एक भरपूर नींद ली थी।

सोकर उठने के बाद वो हमेशा खुद को बहुत तरोताजा अनुभव करती थी।

फिर वो सभी नित्य-कर्मों से निवृत्त हुई। कुण्ड पर जाकर स्नान किया और पत्थर की कंघी से अपने बाल संवारे। जब वो वापस अपनी गुफा में पहुंची...तो दो बौने सादर उसकी सेवा में खड़े थे।

''मैडम!'' उन्होंने आदरपूर्वक गर्दन झुकाकर कहा—''पूजा का समय हो गया है।''

''हां...मैं जानती हूं।'' रचना मुखर्जी बोली—''चलो।''

रचना मुखर्जी ने सुंबा को अपनी गोद में उठाया और फिर उन बौनों के पीछे-पीछे मंदिर की तरफ चल दी।

दरअसल वहां रोजाना एक खास समय पर देवी की पूजा

होती थी और रचना मुखर्जी को पूजा के समय बौनों के मंदिर जाना पड़ता था।

जैसाकि पहले ही बताया जा चुका है कि वहां 'प्रतिदिन' शब्द अर्थहीन था, लेकिन बौने अपने किसी ज्ञानेन्द्रिय से समय का हिसाब रखते थे। ठीक समय पर पहरेदार आकर उसको याद दिलाते, कि पूजा का समय हो गया है।

मंदिर एक बहुत बड़ी और बहुत ऊंची गुफा में था...जिसमें बौनों के सभी देवताओं की मूर्तियां थीं। यह मूर्तियां बौनों ने स्वयं गढ़ी थीं। इससे पता चलता था कि उनका कला की तरफ भी लगाव था। दिलचस्प बात ये थी कि कोई भी मूर्ति आठ-दस फुट से कम नहीं थी।

इसके पीछे एक खास वजह भी थी।

दरअसल, बौने अपने देवताओं को अपने कद का बनाकर देवताओं का अपमान नहीं करना चाहते थे।

रचना मुखर्जी, सुंवा को लेकर जब मंदिर में पहुंची...तो उसे देखते ही वहां हलचल-सी मच गयी।

मंदिर उस वक्त बौनों से खचाखच भरा हुआ था।

मगर!

रचना मुखर्जी और सुंवा को देखते ही वह 'खाई' की तरह फटते चले गये।

"देवी आ गयीं!"

"देवी आ गयीं!!"

चारों तरफ एक शोर-सा उमड़ा।

वहां मौजूद तमाम बौनों के सिर रचना मुखर्जी और सुंवा के सामने आदर के साथ नीचे झुक गये।

बल्कि उनमें से कुछ बौनों ने तो आगे बढ़कर रचना मुखर्जी के पैर भी छुए।

जब बौने उसे इतना सम्मान देते थे...तो रचना मुखर्जी के शरीर में रोमांच की अजीब-सी लहर दौड़ जाती थी।

गराम भी वहां था।

सामने ही एक ऊंचे से चबूतरे पर मशरूम की छाल का एक काफी बड़ा आसान बिछा हुआ था...गराम सहित दूसरे कई बौनों ने रचना मुखर्जी को आदरपूर्वक ले जाकर उस आसन पर

बिठा दिया।

सुंवा अभी भी रचना मुखर्जी की गोद में थी।

फिर वहां पूजा-अर्चना शुरू हुई।

बौने अपनी भाषा में देवताओं का नाम ले-लेकर ऊंची आवाज में कोई प्रार्थना गीत गाने लगे।

❑❑❑

❑❑❑

उधर दुष्ट मारकोस हर पल एक-से-एक नये षड्यंत्र को जन्म दे रहा था।

मारकोस उस समय अपनी गुफा में था और अकेला था...तभी वहां उससे एक 'कैदी बौना' आकर मिला।

वह 'कैदी बौना' उसका खास दोस्त था।

''यह मैं क्या सुन रहा हूं मारकोस?'' बौना सुरंग में आते ही धीमी आवाज में फुसफुसाया।

''क्या सुन रहे हो?''

''मुझे मालूम हुआ है...तुम्हारा एक आदमी सुरंग तक पहुंचने में कामयाब हो गया था...लेकिन कमाण्डर करण सक्सेना ने उसे वहीं मार डाला।''

''कमाण्डर करण सक्सेना...हुंह!''

मारकोस की आंखों में नफरत के भाव उभरे।

उसका चेहरा अपमान से विवर्ण हो उठा।

''किसी दिन यह आदमी मेरे हाथों कुत्ते से भी ज्यादा बद्तर मौत मरेगा...मैं उस हरामजादे की अपने चाकू से बोटी-बोटी छितरा दूंगा।''

''यानी यह बात सच है।'' बौना शुष्क लहजे में बोला—''कि कमाण्डर करण सक्सेना ने तुम्हारे एक आदमी को मार डाला?''

''हां...यह सच है।'' मारकोस फुंफकारा।

मगर वह बात कहते हुए ऐसा लग रहा था...जैसे उसका कलेजा फटा जा रहा हो।

''इसके अलावा मैं यहां एक बात और भी सुन रहा हूं।'' बौने की आवाज रहस्यपूर्ण थी।

''क्या?''

"मुझे मालूम हुआ है कि तुमने अपने साथियों और माना को यह आश्वासन दिया है कि अगर तुम बौनों को सुरंग का पता बता देते हो...तो बौने तुम सभी को ऊपर वाली तह पर रहने की इजाजत दे देंगे। जबकि मुझे तो नहीं लगता कि 'गराम' तुम्हारे अलावा किसी और को ऊपर वाली तह पर रहने की इजाजत देगा, बल्कि मुझे तो यही बहुत बड़े अचम्भे की बात लग रही है कि 'गराम' ने तुमसे भी ऐसा कोई वादा कर लिया है...क्योंकि पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ कि तुम्हारी दुनिया का कोई आदमी ऊपर वाली तह पर रहा हो।"

"यह बात मैं भी जानता हूं।" मारकोस संजीदगी के साथ बोला—"कि 'गराम' मेरे अलावा किसी और को ऊपर वाली तह पर रहने की इजाजत नहीं देगा...यहां तक कि माना को भी नहीं।"

कैदी बौना, मारकोस की बात सुनकर चौंका।

"तुम यह बात जानते हो?"

"हां।"

"अगर तुम जानते हो...।" बौना विस्मित लहजे में बोला—"तो फिर तुमने अपने साथियों और माना से ऐसा झूठा वादा क्यों किया?"

"क्योंकि मेरे दोस्त...अगर मैं ऐसा वादा न करता, तो वह मेरा साथ देने के लिये कैसे तैयार होते? आखिर उनसे काम लेने के लिये मैंने उनके सामने लालच की कोई-न-कोई हड्डी तो डालनी ही थी।"

"ओह...अब मैं सब कुछ समझ गया।" कैदी बौना मुस्कुराया—"सचमुच तुम बहुत चालाक आदमी हो मारकोस...चालाक भी और हरामजादे भी।"

"हरामजादा!"

मारकोस जोर से ठठाकर हंस पड़ा।

"हां...मैं सचमुच हरामजादा हूं मेरे दोस्त...पक्का हरामजादा!" मारकोस ने बड़े गर्व के साथ सीना फुलाकर कहा—"क्योंकि इस दुनिया में आदमी ने जिन्दगी जीने के लिये हरामजादा ही बनना पड़ता है और इसीलिये मैं हरामजादा बन गया...एक नम्बर का हरामजादा!"

"और माना!" कैदी बौने के नेत्र सिकुड़े—"क्या तुम माना को भी यहीं छोड़ जाओगे...माना से तो तुम बेइन्तहां मोहब्बत करते हो?"

"गलत कहा तुमने...बिल्कुल गलत।"

"क्या मतलब...?"

"माई डियर!" मारकोसं जहरीले नाग की मानिन्द फुंफकारा—"मैं माना से नहीं, बल्कि माना मुझसे मोहब्बत करती है। मेरे लिये तो वह सिर्फ 'टाइम पास' करने का एक जरिया है...दिल बहलाने का एक साधन है। जहां तक औरत का सवाल है...अगर एक बार मैं इस कैदखाने से बाहर निकल गया, तो फिर मेरे लिये औरतों की क्या कमी है, फिर तो माना जैसी हजार औरतें मेरे पास होंगी। वह साली बेवकूफ है...अव्वल नम्बर की गधी! मैं तो कभी अपने देश, अपनी फौज यहां तक कि अपने बाप का होकर नहीं रहा...फिर उसकी तो औकात ही क्या है...हुंह!" मारकोस ने 'माना' का नाम लेकर एक बार फिर नफरत से मुंह सिकोड़ा।"

"यानी तुम अपने मतलब के लिये न सिर्फ अपने साथियों को, बल्कि माना को भी धोखा दे रहे हो?"

"यह तुम्हारी निगाह में धोखा हो सकता है।" मारकोस बहुत उदण्ड लहजे में बोला—"लेकिन मेरी निगाह में यह बुद्धिमानी है। इसके अलावा मैं तुम्हें एक बात और बता दूं मेरे दोस्त...आज शाम तक मुझे सुरंग का रहस्य भी पता चल जायेगा कि वो किस तरह खोदी जा रही है।"

"क्या कह रहे हो तुम?" कैदी बौना बुरी तरह चौंका—"तुम्हें सुरंग का रहस्य पता चल जायेगा।"

"हां।"

"मगर कैसे?"

"दरअसल, मेरा एक आदमी आज फिर उनके ग्रुप में जा घुसा है...अब बस किसी भी क्षण सुरंग का रहस्योद्घाटन होने ही वाला है।"

"ओह...वैरी गुड!" कैदी बौने के चेहरे पर भी हर्ष की लहर दौड़ी—"सचमुच तुम्हारे दिमाग का जवाब नहीं मारकोस!"

"मारकोस कभी हार नहीं मानता मेरे दोस्त...कभी

नहीं।"

मारकोस पुनः ठठाकर हंसा।

कैदी बौने तथा मारकोस के बीच थोड़ा-बहुत वार्तालाप और हुआ...फिर कैदी बौना वहां से चला गया।

□□□

□□□

मारकोस ने पत्थर के प्याले में मशरूम की काफी सारी शराब पलटी और फिर उसे गटागट एक ही घूंट में पीता चला गया।

उसी क्षण उसे ऐसा अनुभव हुआ...जैसे कोई गुफा में आकर खड़ा हो गया है।

मारकोस झटके से पलटा।

और!

पलटते ही उसे मानो चार सौ चालीस वोल्ट का करंट छू गया। उसका वह हाथ जोर से कांपा...जिसमें उसने पत्थर का प्याला पकड़ा हुआ था। यही शुक्र था...झटका लगते ही उसके हाथ से पत्थर का वह प्याला छूटकर नीचे न गिर पड़ा।

गुफा के दरवाजे पर माना खड़ी थी।

माना की आंखों में उस समय आंसुओं की नन्हीं-नन्हीं बूंदें टिमटिमा रही थीं। अभी-अभी कैदी बौने और मारकोस के बीच वहां जो बातें हुई थीं...वह वो सारी बातें सुन चुकी थी।

"त...तुम!"

"क्यों...हैरानी हो रही है मुझे इस वक्त यहां देखकर?"

मारकोस के होश गुम!

"अच्छा लगा मारकोस!" माना धीरे-धीरे मारकोस की तरफ बढ़ी-"बहुत अच्छा लगा तुम्हारे मुंह से यह सुनकर कि मैं तुम्हारे लिये सिर्फ दिल बहलाने का एक जरिया हूं। टाइम पास हूं।"

"माना!" मारकोस हड़बड़ाया-"मैंने वो सारी बातें मजाक में कही थीं।"

"मैं बच्ची नहीं हूं मारकोस!" माना अपने आंसू पोंछकर फुंफकार उठी-"जो तुम्हारे मजाक को न समझ सकूं। सच तो ये है...मैं मूर्ख थी, जो मैंने अपने तमाम साथियों को छोड़कर

तुम्हारे जैसे शैतान से। मोहब्बत की और हर षड्यन्त्र में तुम्हारी हिस्सेदार बनी। हर सुख-दुःख में तुम्हारा साथ दिया। मैं सचमुच पागल थी...बिल्कुल पागल। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।"

मारकोस की समस्त इंद्रियां सजग हो उठीं।

उसने पत्थर का प्याला वहीं चट्टान पर रख दिया और वह तेजी से माना की तरफ बढ़ा।

"क्या कहना चाहती हो तुम?" मारकोस सशंकित लहजे में बोला—"अब तुम क्या करोगी?"

"अब मैं तुम्हारे षड्यंत्र का भंडाफोड़ करूंगी मारकोस!" माना जहरीली नागिन की भांति फुंफकार उठी—"मैं कमाण्डर करण सक्सेना और चार्ल्स को अभी जाकर बताऊंगी कि तुम्हारा एक और आदमी सुरंग में दाखिल हो चुका है।"

मारकोस के चेहेरे पर जलजले जैसे भाव उभर आये।

"नहीं!" मारकोस आंदोलित लहजे में बोला—"नहीं माना...तुम ऐसा नहीं करोगी।"

"मैं ऐसा ही करूंगी मारकोस!" माना चिल्लाई—"तुमने अभी तक माना का प्यार देखा था...उसकी मोहब्बत देखी थी, परन्तु एक औरत किस कदर नफरत कर सकती है...यह तुम अब देखोगे। मैं जा रही हूं।"

माना तेजी के साथ मुड़ी और वापस गुफा के दरवाजे की तरफ बढ़ी।

"माना!" मारकोस चिल्ला उठा—"मुझे समझने की कोशिश करो माना!"

परन्तु माना अब रुकने वाली कहां थी!

मारकोस के हाथ-पांव फूल गये। इससे पहले कि माना गुफा के दरवाजे से बाहर निकल पाती...मारकोस उसके ऊपर झपट पड़ा और उसने उसे अपने शिकंजे में सख्ती के साथ जकड़ लिया।

"तुम पागल हो गयी हो?" मारकोस दहाड़ा।

"हां-हां, मैं पागल हो गयी हूं। मैं नफरत करने लगी हूं तुमसे मारकोस...मैंने सोचा भी नहीं था कि तुम मुझे इस तरह धोखा दोगे।"

मारकोस ने फौरन अपनी पैंट की बैल्ट में खुंसा एक लम्बे

फल वाला चाकू बाहर निकाल लिया। उसके चेहरे पर अब अत्यन्त हिंसक भाव उभर आये।

"य...यह तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं वही कर रहा हूं नादान लड़की...जो मेरे जैसे इंसान को तुम्हारे साथ करना चाहिये।"

"लेकिन...।"

"आगे के तमाम शब्द माना के अत्यन्त करुणादायी चीख में परिवर्तित हो गये।

मारकोस ने लम्बे फल वाला चाकू उसकी गर्दन पर रखकर बड़ी बेरहमी के साथ पीछे को खींच डाला।

माना की गर्दन से खून का फव्वारा छूट पड़ा। उसकी गर्दन आधे से ज्यादा कटकर पीछे को लुढ़क गयी।

□□□

□□□

सुरंग की खुदाई का काम जारी था।

पहले की तरह ही जोर-शोर के साथ जारी था।

कमाण्डर करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट उस समय वहां नहीं थे। दरअसल शाम का वक्त था और वह दोनों बस थोड़ी देर पहले ही वहां से गये थे।

तभी एक विचित्र बात हुई।

अचानक एक चट्टान के पीछे हल्की-सी सरसराहट हुई और फिर वहां से एक आदमी निकलकर सुरंग के दहाने की तरफ भागा।

चार्ल्स और वरीस गड़बड़ ने जल्द से पलटकर देखा, फिर सहसा वरीस गड़बड़ चिल्ला उठा–"पकड़ो उसे...वह मारकोस का आदमी है।"

मारकोस का आदमी!

पूरी सुरंग में हड़कम्प मच गया।

खलबली!

खुदाई का काम तत्काल बन्द हो गया।

चार्ल्स और वरीस गड़बड़ तुरन्त उसके पीछे भागे।

कुछ और आदमी भी उसके पीछे झपटे।

"पकड़ो उसे।" सुधाकर चिल्लाया–"वह जाने न पाये।"

चार्ल्स और वरीस गड़बड़ दौड़ने वालों में सबसे आगे थे।

तभी!

वरीस गड़बड़ ने उसके ऊपर छलांग लगा दी।

वह सीधा उसकी पीठ पर जाकर गिरा।

वह आदमी लम्बे कद का और पतले-दुबले शरीर का मालिक था। इसके अलावा उसमें फुर्ती भी बहुत थी।

वरीस गड़बड़ के छलांग लगाते ही वह मुंह के बल धड़ाम् से आगे जाकर गिरा।

अब वरीस गड़बड़ उसके ऊपर था।

वरीस गड़बड़ ने तुरन्त दो-तीन घूंसे उसके जड़ दिये।

परन्तु!

वह आदमी वरीस गड़बड़ से कहीं ज्यादा तगड़ा था।

वरीस गड़बड़ के घूंसों का उस पर कुछ असर न हुआ।

वो एकदम वरीस गड़बड़ की तरफ घूमा और उसने एक ऐसा प्रचण्ड घूंसा वरीस गड़बड़ के मुंह पर मारा कि उसे दिन में तारे नजर आ गये।

फिर उसने वरीस गड़बड़ को जोर से पीछे की तरफ धक्का दिया तथा द्रुतगति के साथ वहां से भागा।

''पकड़ो!'' वरीस गड़बड़ चीखा।

चार्ल्स ने झपटकर उसे पकड़ने की भी कोशिश की।

परन्तु वह अद्वितीय फुर्ती का मालिक था। वह बिल्कुल चीते की तरह सरपट भागा और इससे पहले कि कोई उसे पकड़ पाता...वह सुरंग से निकलकर गायब हो गया।

सुरंग में काम करने वाले तमाम आदमी धड़धड़ाते हुए बाहर निकले।

मगर अब उसका कहीं पता न था।

वह मशरूम के पेड़ों के पीछे जाकर कहीं लोप हो गया था।

जो लोग मशरूम बाग में काम कर रहे थे...वह उस हंगामे को देखकर अपना-अपना काम छोड़कर खड़े हो गये।

तभी कमाण्डर करण सक्सेना और प्रोफेसर भट्ट भी वहां पहुंच गये।

वो दरअसल मशरूम बाग में ही थोड़ी हवाखोरी कर रहे थे।

"क्या हुआ?" करण सक्सेना ने उन सबके नजदीक पहुंचकर पूछा।

"गड़बड़ हो गयी।" वरीस गड़बड़ बेहद आतंकित मुद्रा में अपने चेहरे का पसीना साफ करता हुआ बोला—"बहुत भयानक गड़बड़ हो गयी कमाण्डर!"

"कैसी गड़बड़?"

"हमारे बीच आज एक गद्दार और था...उसे सुरंग का रहस्य पता चल गया तथा उससे भी खतरनाक बात ये हुई कि वो हमारे हाथों से बचकर निकल भागा।"

"माई गॉड!" करण सक्सेना जैसा आदमी भी उस बात को सुनकर एक पल के लिए थर्रा उठा—"यह तो सचमुच बड़ी डेन्जर बात बता रहे हो तुम।"

तभी चार्ल्स और सुधाकर भी वहां आ पहुंचे।

वह दरअसल उसे ढूंढने के लिये मशरूम बाग में थोड़ा आगे निकल गये थे, परन्तु जब वह लौटे...तो उनके चेहरे पर निराशा थी।

गहरी निराशा!

"क्या हुआ?" करण सक्सेना ने पूछा—"क्या उसका कुछ पता चला?"

"नहीं...कुछ पता नहीं चला।" चार्ल्स हांफता हुआ बोला—"वह तो सुरंग से बाहर निकलते ही यूं गायब हो गया...जैसे वो कोई भूत था।"

"यह सचमुच ठीक नहीं हुआ।" प्रोफेसर भट्ट भी अब साफ-साफ भयभीत दिखाई पड़ रहे थे।

माहौल में दहशत व्याप्त हो गयी।

अब किसी भी पल कुछ भी हो सकता था...मारकोस जैसे दुष्ट आदमी को सुरंग का रहस्य पता चलना वाकई खतरनाक था।

❑❑❑
❑❑❑

चार्ल्स ने इस बीच मशरूम बाग में काम करने वाले सब कैदियों को जमा किया।

वह सब उनके साथी थे।

वो सब मारकोस से उतनी ही नफरत करते थे...जितनी उन्हें थी।

"अब सूरते-हाल बदल चुकी है।" चार्ल्स उन सबसे सम्बोधित होकर बोला—"तुम सब लोग बाहर जाने वाली सुरंग के सामने पेड़ों की आड़ में छिपकर खड़े हो जाओ। अगर मारकोस या उसका कोई आदमी इस तरफ आता दिखाई दे...तो उसे किसी भी हालत में इस तरफ न आने देना। इस दौरान हम यहां कमाण्डर करण सक्सेना के साथ मिलकर फैसला करते हैं कि हमें अब आगे क्या करना चाहिये। ठीक है?"

"ठीक है।"

"तो फिर जल्दी से जाकर अपनी-अपनी जगह सम्भाल लो।"

वह सब लोग तुरन्त पहरे पर चले गये।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना, प्रोफेसर भट्ट, चार्ल्स, सुधाकर और वरीस गड़बड़ सोचनीय मुद्रा में सुरंग के दहाने के नजदीक आकर खड़े हो गये।

चिन्ता की लकीरें उन सबके चेहरे पर खिंची हुई थीं।

"अब क्या किया जाये कमाण्डर?" चार्ल्स ने करण सक्सेना की तरफ देखा।

सबकी निगाहें इस समय सिर्फ करण सक्सेना के ऊपर थीं।

"देखो...इसमें तो कोई शक ही नहीं।" करण सक्सेना 'डनहिल' सुलगाता हुआ बोला—"कि एक बहुत बुरी घटना घट चुकी है, परन्तु अब हमें इस बात को भूलकर आगे की कार्यविधि के बारे में सोचना चाहिये। सबसे पहले हमें यह पता लगाना है कि मारकोस का अब अगला एक्शन क्या होगा?"

"क्या होगा?"

"जहां तक मैं समझता हूं।" करण सक्सेना बोला—"मारकोस संधि के अनुसार सबसे पहले हमारी सुरंग का पता बौनों को बतायेगा।"

"यह भी मुमकिन है।" चार्ल्स बोला—"कि वह दुष्ट बौनों के पास अब तक यह संदेश भेज भी चुका हो।"

"बिल्कुल मुमकिन है।"

सबके चेहरे पर आतंक के भाव और बढ़ गये।

"बहरहाल बौनों को जैसे ही सुरंग का रहस्य मालूम होगा।" करण सक्सेना बोला–"तो वह फौरन सुरंग पर आक्रमण कर देंगे और इसे नष्ट कर डालेंगे। वर्षों का परिश्रम एक ही दिन में तबाह हो जायेगा...पूरी तरह तबाह!"

सब गम्भीर हो उठे।

करण सक्सेना ने 'डनहिल' का एक छोटा-सा कश और लगाया।

"फिर अब हम क्या करें?" वरीस गड़बड़ ने पूछा।

"अब तो बस एक ही सूरत शेष है।'

"क्या?"

"सबसे पहले तो आप लोग यह समझ लें।" करण सक्सेना का दिमाग उस समय काफी तेज स्पीड से चल रहा था–"कि सुरंग की जानकारी मिलते ही बौने आक्रमण जरूर करेंगे और जहां तक मैंने देखा है...यहां आक्रमण करने का एक ही मार्ग है। ठीक?"

"ठीक।"

"चूंकि आक्रमण का एक ही मार्ग है...इसलिये हमें उस मार्ग पर पहरा लगा देना चाहिये।" करण सक्सेना बोला–"और सामना करने की तैयारी शुरू कर देनी चाहिये। अब गद्दारों से टक्कर लेने के अलावा हमारे सामने दूसरी कोई सूरत बाकी नहीं है।"

"कमाण्डर बिल्कुल ठीक कह रहे हैं।" चार्ल्स भी गरमजोशी के साथ बोला–"अब वो समय आ पहुंचा है...जब हमें गद्दारों से टक्कर लेनी होगी।"

"मगर उससे पहले तैयारी भी तो जरूरी है।" सुधाकर बोला।

"बिल्कुल जरूरी है।" करण सक्सेना ने कहा–"सुरंग में इस समय कुल कितने आदमी काम कर रहे थे?"

"लगभग डेढ़ सौ।"

"ठीक है...उनमें से आधे आदमी यहीं रहने दो और बाकी आर्यों को वापस सुरंग खोदने पर लगा दो। ध्यान रहे...खुदाई का काम बन्द नहीं होना चाहिये, वो जारी रहे। इसके अलावा

बाहर सुरंग में हमारे जितने भी साथी हैं...उनको भी यहीं बुला लिया जाये।"

"ओ.के. कमाण्डर...मैं अभी सारा इंतजाम करता हूं।"

चार्ल्स ने फौरन खुदाई करने वाले आये आदमियों को वापस सुरंग में भेज दिया और उनसे खुदाई जारी रखने के लिये कहा...जबकि कुछ आदमियों को रिहायशी गुफाओं की तरफ भेजा, ताकि वो वहां से अपने बाकी साथियों को बुलाकर ला सकें।

चार्ल्स बड़ी तेजी के साथ कमाण्डर करण सक्सेना के आदेश को अंजाम देने में जुट गया था।

"लेकिन अभी हमने यह भी सोचना है।" प्रोफेसर भट्ट बोले—"कि सामना किस तरह किया जाये?"

उस समय कई-कई दुर्धश मस्तिष्क उस सब्जैक्ट पर विचार करने में लगे हुए थे।

करण सक्सेना ने 'डनहिल' का एक छोटा-सा कश लगाया।

"मुझे एक बात बताओ।" करण सक्सेना बोला।

"पूछिये कमाण्डर!"

"आप लोगों के ख्याल में अगर बौनों ने आक्रमण किया...तो उनकी कितनी बड़ी संख्या होगी?"

सवाल थोड़ा जटिल था।

मगर!

चार्ल्स ने उसका भी जवाब दिया।

"कमाण्डर...मारकोस एक बात जानता है कि लगभग दो सौ कैदी हमारे साथी हैं। मैं गारण्टी से कह सकता हूं कि वो यह बात बौनों को भी बता देगा। इसलिये कम-से-कम यहां पांच सौ बौने आक्रमण करने जरूर आयेंगे।"

"पांच सौ!"

"यस कमाण्डर!"

"उनके पास हथियार क्या होंगे?"

"पत्थर, पत्थरों के तीर और पत्थरों के चाकू आदि।"

"हूं।" करण सक्सेना ने हल्का-सा हुंकारा भरा—"क्या हम लोगों के पास भी यह हथियार हैं?"

"हमारे पास भी ऐसे हथियार तो हैं...लेकिन उनकी संख्या कोई बहुत ज्यादा नहीं है। हमारे पास अधिकतर पत्थर हैं।"

करण सक्सेना के चेहरे पर चिन्ता के भाव उभर आये।

"यह काफी बड़ी प्रॉब्लम है।"

सब चुप रहे।

अपनी मजबूरी वह भी अनुभव कर रहे थे।

"सबसे पहले हमें ऐसा कोई इंतजाम करना होगा।" करण सक्सेना बोला–"जो हम उनके हथियारों का आसानी से मुकाबला कर सकें और उनके सामने कमजोर न पड़ जायें।"

"लेकिन हम ऐसा क्या इंतजान कर सकते हैं कमाण्डर?" वरीस गड़बड़ बोला।

"वह तरीका भी मैं बताता हूं।"

"क्या?"

"हमें यहां 'रोक' बनानी पड़ेगी...ताकि उसकी आड़ लेकर हम उनका मुकाबला कर सकें। 'रोक' बनाने में हमें यह फायदा होगा कि हम उनके पत्थरों से सुरक्षित रहेंगे।"

सबने एक-दूसरे की तरफ देखा।

"आइडिया बुरा नहीं।" सुधाकर बोला।

"परन्तु यहां हम रोक किस चीज की बना सकते हैं कमाण्डर...?" चार्ल्स ने पूछा।

करण सक्सेना कुछ देर सोचता रहा।

उसके माथे पर सिलवटें पड़ गयी थीं।

काफी सोच-विचारकर वह बोला–"क्या मशरूम के यहां तने सूखने के बाद कुछ सख्त हो जाते हैं।"

"बिल्कुल लकड़ी की तरह तो नहीं होते।" वरीस गड़बड़ ने कहा–"फिर भी कुछ सख्त तो हो ही जाते हैं।"

"वैरी गुड! मुझे यह बताओ...क्या इस जंगल में मशरूम के सूखे हुए पेड़ भी हैं?"

"एक क्या, यहां तो ऐसे सूखे हुए पेड़ जंगल में मशरूम के सूखे हुए पेड़ भी हैं?"

"एक क्या, यहां तो ऐसे सूखे हुए पेड़ काफी तादाद में हैं।"

"तो फिर मेरा सुझाव है।" करण सक्सेना बोला–"कि

वह सूखे हुए तने इकट्ठे कराये जायें और जिधर से आक्रमण की आशा है...उस सुरंग के दरवाजे पर उन तनों का ढेर लगाकर दीवार बना दी जाये। इस तरह 'रोक' बन जायेगी और हम उनके आक्रमण से सुरक्षित रहेंगे।''

''बात ठीक है।'' चार्ल्स की आंखों में तीव्र चमक पैदा हो गयी—''वाकई आप सिर्फ एक अच्छे जासूस ही नहीं हैं कमाण्डर...बल्कि फौज का एक बेहतरीन जनरल बनने की योग्यता भी आपके अन्दर है।''

''धन्यवाद!'' करण सक्सेना ने सहज मुद्रा में कहा—''मुझे एक दूसरी आवश्यक बात और बताओ।''

''पूछिये।''

''क्या यहां आग मिल सकती है?''

''नहीं...इस मशरूम बाग में तो आग नहीं मिल सकती। हां अगर आवश्यकता हो, तो आग यहां मंगवाई जा सकती है।''

''ठीक है...तो आग भी मंगवा ली जाये।''

सब चौंके।

''क्यों...आग का आप क्या करेंगे?''

''अगर मुकाबला करने में बौनों का पलड़ा भारी रहा दोस्तों...तो हम मशरूम की सूखी हुई छतरियां हथियार की शक्ल में इस्तेमाल कर सकते हैं।''

''वह कैसे?''

''हम इन छतरियों में आग लगा-लगाकर बौनों पर लुढ़का देंगे।''

''हुर्रा!'' वरीस गड़बड़ ने उछलकर एक नारा मारा...फिर पूरे जोश के साथ बोला—''बाई गॉड कमाण्डर...मुझे खुशी हो रही है कि आप हमारे साथी हो। कम-से-कम अब लड़ने में तो भरपूर आनन्द आयेगा।''

''कमाण्डर!'' चार्ल्स भी उत्साहपूर्वक बोला—''हम अपनी तरफ से आपको अपनी फौज का जनरल बनाते हैं...अब लड़ाई आपकी आज्ञानुसार होगी।''

''यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।'' करण सक्सेना बोला।

''इसमें कोई शक नहीं कि यह हकीकत में ही बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कमाण्डर!'' प्रोफेसर भट्ट ने कहा—''परन्तु कोई

आप जैसा शख्स ही इस जिम्मेदारी को निभा सकता है, क्यों सुधाकर?"

"यह सचमुच हम सबके लिये बहुत बड़ी बात होगी।" सुधाकर तुरन्त बोला–"कि कमाण्डर करण सक्सेना हमारे जनरल हैं।"

"वाकई इसमें कोई शक नहीं।" वरीस गड़बड़ भी बोला।

करण सक्सेना फिर चुप रहा।

□□□

□□□

दो घण्टे में वहां काफी आदमी जमा हो गये।

सुरंग की खुदाई करने वाले जहां आधे आदमी वहीं रह गये थे...वहीं बाकी आधे आदमियों ने वापस सुरंग में जाकर खुदाई का काम शुरू कर दिया। इसके अलावा दूसरी जगहों से भी उन्होंने अपने सभी साथी बुला लिये।

करण सक्सेना उन्हें अब जनरलों की तरह आज्ञा दे रहा था।

सब आदमी तुरन्त सूखे हुए मशरूम काटने पर लगा दिये गये थे...जब तमाम सूखे पेड़ कट गये, तो उनके तनों को ढेर की शक्ल में लगाकर सुरंग के सामने दीवार-सी चिन दी गयी।

कुछ खाने-पीने का सामान भी मंगवा लिया गया था।

इस काम में लगभग छह घण्टे लगे गये।

अब किसी समय भी बौनों की फौज आक्रमण कर सकती थी।

छोटे-छोटे पत्थरों के जगह-जगह ढेर लगा दिये गये और वहां अच्छी तरह फौजी किलेबंदी-सी कर ली गयी। फिर वह लोग उस किले में बैठकर आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगे।

समय धीरे-धीरे गुजरता रहा।

हर क्षण सस्पैंसफुल था।

हर पल यही लगता कि अभी किधर से हमला हुआ। अभी हुआ।

जब दस-बारह घण्टे तक कोई आक्रमण न हुआ...तो वह बेचैन हो उठे।

"कहीं हम लोग किसी भ्रांति में तो नहीं हैं।" करण

[illegible] संभव है...मारकोस [illegible] अभी सुरंग का रहस्य न पहुंचा हो।"

"नहीं...ऐसा नहीं हो सकता।" चार्ल्स दृढ़तापूर्वक बोला—"वह निश्चय ही मारकोस का आदमी था और मारकोस को अब तक सुरंग के बारे में जरूर मालूम हो गया होगा। इसके बाद मारकोस बौने कैदियों से जाकर मिला होगा तथा उनको बताया होगा कि वह सुरंग का रहस्य जान गया है। बौने कैदियों ने ऊपर किसी तरह संदेश भेजा होगा। उसके बाद ऊपर से कोई आदमी मारकोस से मिलने आया होगा।

"बिल्कुल ठीक।" सुधाकर बोला—"इन सब कामों में लगभग छह-सात घण्टे जरूर लग गये होंगे कमाण्डर! इसके बाद बौने अपनी फौज जमा करेंगे। नीचे उतरेंगे। तब हम पर आक्रमण करेंगे। इसलिये उनको मेरे हिसाब से अभी छह-सात घण्टे बाद यहां पहुंचना चाहिये।"

"हूं।"

करण सक्सेना के चेहरे पर विचारपूर्ण भाव उभर आये। वह कुछ सोचने लगा।

"तो फिर मेरी आप लोगों को एक सलाह है।" करण सक्सेना बोला।

"क्या?"

"कुछ आदमी पहरा दें और शेष लोग कुछ घण्टों के लिये सो जायें...इससे हम सब लोग लड़ाई से पहले अच्छी तरह चुस्त रहेंगे।"

"यह बात ठीक है।" चार्ल्स ने कहा।

"एक बात मुझे और बतायें।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला।

"क्या?"

"आपके ख्याल में सुरंग अब जमीन की तह से कितनी दूर रह गयी होगी?"

"कुछ नहीं कहा जा सकता।" सुधाकर बोला—"वैसे आज मैंने सुरंग की लम्बाई कदमों से नापी थी।"

"फिर?"

"जहां तक मैं समझता हूं...सुरंग कम-से-कम तीन

किलोमीटर लम्बी हो चुकी है।"

"तीन किलोमीटर!"

"यस!"

"बड़ी हैरानी की बात है...इसके बावजूद अभी तक सतह नहीं आयी।"

"इसके पीछे सिर्फ एक ही कारण है कमाण्डर!" सुधाकर बोला–"दरअसल सुरंग बिल्कुल सीधी नहीं है, बल्कि ढलवान है।"

"यानी इस बारे में एकदम साफ तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता कि दो-चार दिन में हम सतह तक पहुंच सकते हैं या नहीं?"

"हां...इस बात की कोई गारण्टी नहीं हैं।"

कमाण्डर करण सक्सेना के चेहरे पर एक बार फिर सोचनीय भाव उभर आये।

"मैं आप लोगों को एक राय और दूंगा।" करण सक्सेना काफी सोच-विचारकर बोला।

"क्या?"

"फिलहाल सुरंग की खुदाई का काम जारी रखना ठीक नहीं होगा, बल्कि सुरंग में काम करने वाले आदमियों को भी यहीं बुला लिया जाये।"

"क्यों?"

"क्योंकि खुदाई का काम जारी रखने के वास्ते मैंने इसलिये कहा था...क्योंकि मुझे यह लग रहा था कि बहुत जल्द हम सुरंग के मामले में किसी मुकाम पर पहुंचने वाले हैं, परन्तु अगर ऐसा नहीं है...तो फिर अभी खुदाई करानी मुनासिब नहीं। क्योंकि एक बार यदि हमने बौनों को हरा दिया तो वह दूसरा आक्रमण भी असफल करेंगे। यदि हमने उनका दूसरा आक्रमण भी असफल कर दिया...तो फिर या तो वह हमारे साथ समझौता करने पर विवश हो जायेंगे या नये आक्रमण की तैयारी करेंगे...इस तरह बीच में हमें दस-बारह दिन का समय मिल जायेगा। फिर इस अंतराल में हम अपनी पूरी ताकत लगाकर सुरंग में काम कर सकते हैं।"

"यदि आप ऐसा ठीक समझते हैं कमाण्डर!" चार्ल्स ने

जवाब दिया—"तो हमें कोई आपत्ति नहीं।"

फिर कमाण्डर करण सक्सेना की योजना के अनुसार उन सब लोगों को भी वहीं बुला लिया गया...जो थोड़ी देर पहले सुरंग में काम करने के लिये भेजे गये थे।

उसके बाद कुछ आदमियों को पहरे पर लगाकर बाकी सब लोग सो गये।

कुछ तो इतने थके-हारे थे कि लेटते ही उन्हें नींद ने आ दबोचा।

❑❑❑

❑❑❑

करण सक्सेना गहरी नींद सो रहा था...जब किसी ने उसका कंधा पकड़कर बुरी तरह झंझोड़ दिया।

करण सक्सेना फौरन घबराकर उठा बैठा।

"क्या बात है?" उसने अपनी आंखें साफ करते हुए पूछा।

"कमाण्डर...जल्दी खड़े होइये।" वह वरीस गड़बड़ था—"वो लोग आ गये हैं।"

"वो कौन?"

करण सक्सेना चौंका।

"बौने! क्या आप शोर की आवाज नहीं सुन रहे कमाण्डर?"

कमाण्डर करण सक्सेना ने ध्यान से सुना...तो सचमुच दूर कहीं लोगों के बोलने और दौड़ने की आवाजें आ रही थीं।

आवाजें!

जो हर लम्हा करीब होने पर थीं।

करण सक्सेना फौरन चीते जैसी फुर्ती के साथ उठकर खड़ा हो गया।

वह एकदम अलर्ट नजर आने लगा था।

"सब लोग अपना-अपना मोर्चा सम्भालें।" करण सक्सेना चिल्लाया—"जल्दी!"

तमाम लोग एकदम उठ-उठकर बाड़ के पीछे पत्थर ले-लेकर खड़े हो गये।

सबकी नींद उड़ चुकी थी।

सब बेहद चौकन्ने दिखाई पड़ने लगे थे।

सुरंग में बौनों की फौज का पहला दस्ता नजर आया।

परन्तु!

सामने बाड़ देखकर बौने कुछ फासले पर ही रुक गये और वह आपस में बातें करने लगे।

फिर उनमें से कुछ बौने धीरे-धीरे आगे बढ़े।

बहुत सावधानीपूर्वक!

अभी वह पत्थरों के घेरे पर नहीं आये थे। इधर सब लोग पत्थर लिये तैयार खड़े थे।

फिर एकाएक पच्चीस-तीस बौने सिर झुकाकर बड़ी तेजी के साथ बाड़ की तरफ दौड़ पड़े।

"मारो!" एकाएक करण सक्सेना चिल्लाया।

एक साथ पचास-साठ पत्थर हवा में झन्नाते हुए सुरंग की तरफ बढ़े।

आठ-दस बौनों के सिर पर पत्थर सरटि के साथ जाकर लगे और बौने जमीन पर गिरकर गला फाड़-फाड़कर चीखने लगे।

उनका सिर लहुलूहान हो गया।

फिर पत्थरों की दूसरी बाढ़ चली तथा आठ-दस बौने और गिर पड़े।

इससे बौनों में जबरदस्त घबराहट फैल गयी और बाकी सब बौने पीछे भाग खड़े हुए।

शायद उन्होंने सोचा न था...उन्हें इस तरह भी जवाब दिया जायेगा।

एक बार फिर सुरंग में बाड़ से काफी दूर खड़े होकर बौनों में कांफ्रेंस हुई।

इस बार उनमें से दस-पन्द्रह बौने आगे बढ़े।

उनके हाथ में पत्थर और रस्सियां थीं। बाड़ से थोड़ा फासले पर आकर वह लोग रुक गये। रस्सियों का उन्होंने कुछ किया, फिर रस्सियां घुमाईं तथा अचानक बौनों की तरफ से पत्थरों की एक बाढ़ बागियों की तरफ आयी।

इस बार बागियों में हलचल मची।

कुछ लोग जो बाड़ पर से झांक रहे थे...उनमें से तीन-चार घायल होकर गिर पड़े।

उनकी वीभत्स चीखें निकल गयीं।
दरअसल पत्थरों की रफ्तार बहुत तेज थी।
कमाण्डर करण सक्सेना समझ गया कि बौने 'गोपियां' जैसी किस्म के कोई हथियार इस्तेमाल कर रहे थे।
हिन्दुस्तान के गांवों में बहुत पहले किसान चिड़ियों को उड़ाने के लिये यह हथियार इस्तेमाल करते थे।
इस हथियार में दो रस्सियों के बीच में जरा-सा छींका बना होता है। उस छींके में पत्थर रखकर पहले उसको घुमाया जाता है और फिर उसी का एक सिरा छोड़ दिया जाता है। इस तरह पत्थर छींके से बड़ी तेजी के साथ निकलता है और दूर तक चला जाता है।
जबकि हाथ से इतनी तेजी के साथ पत्थर नहीं फेंका जा सकता।
"सब लोग सावधान रहें।" करण सक्सेना उनके 'हथियार' को समझते ही चिल्लाया—"जब वह लोग रस्सियां घुमायें...तो सब फौरन बाड़ की आड़ में बैठ जायें।"
बौनों ने दोबारा अपनी गोपियों में पत्थर रखे।
इधर सब लोग बैठ गये और उनके पत्थर या तो बाड़ के ऊपर से सरसराते हुए गुजर गये अथवा बाड़ से टकराकर गिर पड़े।
आधा घण्टे तक बौने इसी तरह अपनी-अपनी गोपियों से पत्थरों की वर्षा करते रहे।
इधर बागियों की तरफ से कोई जवाब न दिया गया।
सब खामोश थे।
वह करण सक्सेना की रणनीति थी।
जब बौनों ने देखा कि इस तरह कोई सफलता नहीं मिलेगी...तो फिर उसकी एक टुकड़ी पुनः सिर झुकाकर बाड़ की तरफ दौड़ी।
लेकिन बाड़ की तरफ लोग तैयार थे।
उन्होंने फिर पूरे जोशो-खरोस के साथ पत्थरों की वर्षा कर दी और बौनों को मुंह की खानी पड़ी।
इस तरह लड़ाई कोई चार घण्टे तक चलती रही।
बौने लड़ाई की कला में अनाड़ी मालूम होते थे...बिल्कुल

अनाड़ी।

उनके आक्रमण का ढंग एक ही था। पहले वह गोपियों से पत्थर फेंकते थे और फिर एक टुकड़ी भागकर बाड़ तक पहुंचने का प्रयत्न करती...लेकिन असफल रहती।

चार घण्टे की लड़ाई में लगभग पचास बौने और छः बागी घायल हुए।

आखिरकार बौनों ने पराजय स्वीकार कर ली और वह अपने घायलों को उठाकर वापस चले गये।

इससे बागियों में हर्ष की लहर दौड़ गयी।

"हुर्रा!"

बागियों ने जीत की खुशी में जोर-जोर से उछलकर नारे लगाये।

❑❑❑
❑❑❑

इसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने अपनी भी एक जंगी कौंसिल बुलाई।

"हमें अब अपने भविष्य की योजना बनानी चाहिये।" करण सक्सेना ने कहा।

"बिल्कुल।"

"देखो...सबसे पहले तो आप सब लोग यह समझ लो कि बौने फिर आक्रमण करेंगे और इस बार वह निश्चय ही कोई नया ढंग सोचकर आयेंगे।"

"आपने एकदम ठीक कहा कमाण्डर!" चार्ल्स बोला—"इसमें कोई शक नहीं कि बौने इतनी आसानी से खामोश नहीं बैठेंगे, बल्कि मैं कहता हूं...हमें भी उनका मुकाबला करने के लिये अब कोई नई तरकीब सोचनी चाहिये।"

"तरकीब मैंने सोच ली है।" करण सक्सेना ने शान्त लहजे में कहा।

"सोच ली है?"

"हां। दरअसल इस बार हम जलती हुई लकड़ियों का इस्तेमाल करेंगे...इसलिये सूखे हुए मशरूम के तने काटकर उनके छोटे-छोटे टुकड़े कर लिये जायें।"

कमाण्डर करण सक्सेना की बात सुनकर चार्ल्स सोच में

डूब गया।

"लेकिन आप एक बात भूल रहे हैं कमाण्डर!"

"क्या?"

"यदि बौनों ने हमारी जलती हुई लकड़ियां उठाकर हमारी तरफ ही फेंकना शुरू कर दिया...तो हमारी बाड़ में आग लग जायेगी और फिर बाड़ में आग लगने से यह सारा जंगल भी जलकर खाक हो सकता है। ऐसी हालत में हम क्या करेंगे?"

यह वास्तव में खतरे की बात थी।

ऐसा हो सकता था।

"इसके अलावा अभी एक बात और है।" सुधाकर बोला–"जिसकी तरफ आपने ध्यान नहीं दिया कमाण्डर!"

"क्या?"

"यदि बौने बुद्धिमान हैं...तो वह हमारी जलती हुई लकड़ियां फेंकने से पहले ही हमारी बाड़ में आग लगाने की कोशिश कर सकते हैं। उस हालत में भी हम लोग अपनी पराजय मानने पर मजबूर हो जायेंगे।"

"नहीं।" करण सक्सेना पूरी दृढ़ता के साथ बोला–"हम पराजय नहीं मानेंगे।"

"फिर क्या करेंगे?"

"तुम कहते हो...नई सुरंग तकरीबन तीन किलोमीटर लम्बी है।"

"हां।"

"अगर जंगल में आग लगी...तो हम सब उस सुरंग में घुस जायेंगे।" करण सक्सेना बोला–"उस सुरंग का मुंह बहुत छोटा है...केवल दस-पन्द्रह आदमी उसकी रक्षा के लिये काफी होंगे। अगर आग ने भयंकर रूम धारण कर लिया...तो हम सुरंग का मुंह बंद कर देंगे और सब-के-सब मिलकर सुरंग खोदना शुरू कर देंगे। मुमकिन है...इस तरह हम सतह तक पहुंच जायें।"

"यहां भी एक गड़बड़ हो रही है।" वरीस गड़बड़ बोला।

"क्या?"

भीतर हवा जाने का केवल यही एक मार्ग है।" वरीस गड़बड़ एक नई मुश्किल बयान करता हुआ बोला–"अगर आग लगी...तो हम सब भीतर घुटकर मर जायेंगे।"

यह सचमुच चिंता की बात थी।

वरीस गड़बड़ ने वाकई एक बड़ी मुश्किल उन सामने रखी थी।

बहुत देर तक वह सोच-विचार करते रहे...मगर ब बचने की कोई सूरत उन्हें नजर न आयी।

कोई हल्की-सी उम्मीद की किरण भी उन्हें न सूझी उन सब लोगों के बीच गहरी निराशा व्याप्त हो गयी।

"इसका मतलब है...हम हार जायेंगे।" चार्ल्स दुःखी अंदाज में बोला—"हमें अपनी यह सुरंग उन बौनों के करनी पड़ेगी तथा आजादी का हमारा पहला और आखिरी असफल हो जायेगा।"

"मैं इतनी आसानी से पराजय नहीं मानूंगा।" बरीस गड़बड़ फैसलाभरे अंदाज में बोला।

"फिर तुम क्या करोगे?"

"मैं लड़ते-लड़ते मर जाना पसन्द करूंगा, परन्तु मरने से पहले मैं कम-से-कम उन पांच-छः दुष्ट बौनों को मारकर जरूर मारूंगा।"

"मैं भी यही करूंगा।" सुधाकर बोला।

"अगर आप लोग ऐसा करेंगे...तो यह सरासर पागलपन होगा।" करण सक्सेना पूरी सख्ती के साथ बोला।

"परन्तु आप एक बात भूल रहे हैं कमाण्डर!" चार्ल्स बोला।

"क्या?"

"हम लोग अभी तक केवल सुरंग की आशा के सहारे ही जीवित थे कमाण्डर...और जब आजादी की यह आशा भी खत्म हो जायेगी, तो वास्तव में इस कब्र के अन्दर जीवित रहना बेकार है। आपको अभी इस कैद में आये केवल कुछ दिन गुजरे हैं...अगर आपको भी साल-छः महीने का अंतराल गुजर जाता, तो आप भी यही फैसला करते।"

"फिर भी हमें सब लोगों की राय लेनी चाहिये।" करण सक्सेना ने सुझाव दिया—"जो सब कहेंगे...हमें वही मंजूर होगा।"

"मुझे सबकी राय लेने में कुछ एतराज नहीं।"

फिर सब लोगों को इकट्ठा करके उन्हें सारी स्थिति बतायी गयी और उनसे सुझाव देने के लिये कहा गया।

फौरन उनमें से तीन-चौथाई लोगों ने चिल्लाकर कहा–"हम हथियार नहीं डालेंगे कमाण्डर...हम लड़ते-लड़ते मर जायेंगे, परन्तु सुरंग का कब्जा नहीं देंगे।"

"यानी बौनों से मुकाबला होगा।"

"बिल्कुल होगा।"

यह आखिरी फैसला था।

फिर उन सब लोगों ने लड़ने की तैयारी शुरू कर दी...अब जमकर जंग होनी थी।

❑❑❑

❑❑❑

लगभग बारह घण्टे के बाद बौनों का दूसरा आक्रमण हुआ।

यह आक्रमण करण सक्सेना या किसी की भी अपेक्षा के बिल्कुल विपरीत था।

बौनों ने आग इस्तेमाल की...लेकिन ढंग दूसरा अपनाया।

वह अपने साथ सूखे हुए मशरूमों की बहुत सारी छतरियां ले आये और उनमें आग लगा दी। फिर वह उनके पीछे थोड़ा दूर खड़े होकर कपड़ों से हल्की-हल्की हवा देने लगे।

परिणामस्वरूप धुएं के गुब्बार-के-गुब्बार उड़कर उनकी तरफ आये।

आधा घण्टे में ही सारा जंगल धुएं से भर गया।

अब उन सब लोगों की आंखों में धुएं से मिर्चें लगने लगीं।

वह जोर-जोर से खांसने लगे।

"अब क्या करें?" सबके सामने एक ही सवाल था।

वह आग से लड़ सकते थे...मगर धुएं से नहीं। वास्तव में ही बौने इस बार दूर की कौड़ी लाये थे।

सुरंग में घुसकर शरण लेना और भी खतरनाक था...वह भीतर ही घुटकर मर सकते थे।

"कमाण्डर!" चार्ल्स ने फौरन चिल्लाकर कहा–"अब हमें बाड़ गिराकर खुद ही आक्रमण कर देना चाहिये...इसके अलावा हमारे सामने कोई चारा नहीं।"

इसके अलावा वास्तव में ही अब कोई चारा नहीं था।

बस यही एक तरीका बचता था।

अतएव सब लोगों को एक जगह इकट्ठा किया जाने लगा...ताकि सब एक साथ बाड़ गिराकर बौनों की तरफ दौड़ पड़े।

देखते-ही-देखते तमाम लोग बाड़ के पीछे जमा हो गये। उस समय लगभग सभी अपनी आंखों पर हाथ रखे हुए थे और वह सब जोर-जोर से खांस रहे थे।

धुएं ने सबको हॉल से बेहाल कर डाला था।

करण सक्सेना ने अपनी कमीज भिगोकर आंखों पर डाल ली थी...ताकि धुआं न लगे।

वह आक्रमण की आज्ञा देने ही वाला था कि अचानक बौनों की तरफ एक शोर बुलंद हुआ।

शोर वहुत तेज था।

और अफरा-तफरी पैदा करने वाला था।

उन सभी ने धुएं के बावजूद आंखें खोल-खोलकर सुरंग की तरफ देखा।

वह सब विस्मित रह गये।

दृश्य बड़ा अनोखा था।

बौने खुद-ब-खुद उल्टे पांव भाग रहे थे...न जाने क्या मामला था?

''बड़ी विचित्र बात है।'' करण सक्सेना भी हैरान हुए बिना न रह सका–''यह बौने उल्टे पांव क्यों भाग रहे हैं?''

''मालूम नहीं...क्या चक्कर है?''

सब चकित थे।

''कहीं ऐसा तो नहीं...!'' सुधाकर बोला–''कि दूसरे कैदियों को भी आजादी का ख्याल आ गया हो और उन्होंने बौनों पर पीछे से आक्रमण कर दिया हो...?''

''यह भी मुमकिन है।

थोड़ी-सी देर में ही सुरंग बौनों से बिल्कुल खाली हो गयी।

शोर-शराबे की आवाज भी आ रही थी–मगर अब वो कहीं दूर से आ रही थी।

उधर वौनों के द्वारा जलाई गयी आग को हवा न मिली तो वह आग धीरे-धीरे बुझने लगी और धुआं कम होने लगा।

"आप सब लोग एक काम करें... !" करण सक्सेना ने थोड़ी तेज आवाज में कहा।

"बोलिये कमाण्डर... !"

"सब लोग अपने-अपने मुंह पर पानी के छपके मारें—इससे आंखों में मिर्चें लगनी कम होंगी और सबको काफी राहत भी मिलेगी... !"

सभी ने तुरन्त वैसा ही किया और वह अपने-अपने मुंह पर पानी के छपके मारने लगे।

सबको वास्तव में ही छपके मारने से काफी सुकून मिला।

फिर करण सक्सेना, प्रोफेसर भट्ट, चार्ल्स, सुधाकर और वरीस गड़बड़ यह देखने के लिये उस तरफ गये कि शोर कैसा है और बौने क्यों भागे हैं?

सुरंग में थोड़ी दूर चलने के बाद ही उन्हें ऐसी आवाजें आने लगीं—जैसे कोई नदी चढ़ रही हो या फिर झरना गिर रहा हो।

'ऐसी आवाजें पहले तो नहीं सुनी थीं।" प्रोफेसर भट्ट बोले।

"मैंने भी नहीं सुनीं।"

वह थोड़ा और आगे गये—"तो एकाएक दहशत से उन सबके नेत्र फट पड़े।

दृश्य सचमुच खतरनाक था।

सिहरन पैदा करने वाला।

उन्होंने आगे जाकर देखा कि ढलवा सुरंग में पानी भर गया था और पानी की सतह निरंतर ऊंची होती जा रही थी।

अब वह समझे कि वास्तव में क्या हुआ था?

दरअसल हिन्द महासागर का पानी फिर जमीन की परत तोड़कर भीतर घुस आया था और चूंकि कैदखाना बौनों की सतह से सौ-सवा फुट नीचे था—इसलिये कैदखाने की सब गुफाओं और सब सुरंगों में बड़ी तेजी के साथ पानी भर रहा था।

कुछ कैदी जो निचली सतर पर थे—पानी में तैर रहे थे।

कुछ डूब रहे थे।

दरअसल बौने उसी पानी से घबराकर भागे थे और ऊपर अपनी सतह पर चले गये थे।

"अब मौत निश्चित है।" सुधाकर बहुत घबराकर

बोला—"पानी जिस तेजी से बढ़ रहा है—उसे देखते हुए हम सब कुछ ही घण्टों में डूब जायेंगे।"

"नहीं—हम तैरते रहेंगे।" चार्ल्स तुरन्त बोला—"हो सकता है पानी ऊपर वाली सुरंगों की सतह तक जा पहुंचे फिर हम सब आसानी से बौनों की सतह पर पहुंच जायेंगे।"

तभी कमाण्डर करण सक्सेना के दिमाग में एक तरकीब आ गयी।

बेहद अनोखी तरकीब!

"तुम सब लोग यहीं ठहरो।" करण सक्सेना अपने साथियों से बोला—"मैं अभी आता हूं। और जब तक मैं वापस न आ जाऊं कहीं जाना नहीं।"

कोई भी करण सक्सेना की बात न समझ सका।

परन्तु फिर करण सक्सेना वहां एक सेकण्ड भी रुका नहीं था—वह तुरन्त दौड़ता हुआ वापस मशरूम बाग में पहुंचा।

मशरूम बाग में उस वक्त भी काफी लोग थे।

और सब बेहद आतंकित थे।

कोई नहीं समझ पा रहा था कि क्या होने वाला है? पानी काफी तेजी के साथ नीचे पहुंच रहा था।

कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही तमाम लोग उसके इर्द-गिर्द जमा हो गये।

"कमाण्डर!" सबने बड़ी उम्मीदभरी निगाहों से उसकी तरफ देखा—"अब क्या होगा?"

"कुछ नहीं होगा। मशरूम के जितने भी सूखे तने हैं—वह सब उठा लो। और अगर कुछ रस्सियां मिल सकें तो वह भी साथ ले लो।"

उन सब आदमियों ने बेहद आनन-फानन मशरूम के सभी सूखे हुए तने और रस्सियां उठा लीं तथा फिर वो उसके साथ-साथ चल दिये।

करण सक्सेना वापस उसी स्थान पर आया—जहां उसके साथी मौजूद थे, तो उसने देखा कि पानी दो फुट के लगभग और ऊंचा हो गया था।

"कमाण्डर!" चार्ल्स बेहद चिन्तित लहजे में बोला—"पानी बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा है।"

[illegible] करण सक्सेना के चेहरे पर भी पानी को देखकर परेशानी के चिन्ह उभरे—''लगता है इस बार जमीन की तह में कोई बहुत बड़ा छेद खुला है, जिसके कारण पानी इतनी तेजी के साथ भीतर आ रहा है।''

''जरूर यही बात है।''

मशरूम के सूखे हुए तनों और रस्सियों को देखकर प्रोफेसर भट्ट चौंके।

''इनका क्या करोगे... ?'' प्रोफेसर भट्ट ने आश्चर्य से पूछा।

करण सक्सेना ने जवाब देने के बजाय एक सूखा हुआ तना पानी में फेंक दिया।

तुरन्त वह सूखा हुआ तना डूबने की बजाय तैरने लगा।

''सारे तने पानी में डाल दो।'' करण सक्सेना ने अपने साथियों से चिल्लाकर कहा—''और जो लोग तैर सकते हैं वह तैरकर इन तनों को एक जगह करके रस्सियों से बांधना शुरू कर दें। जबकि जो लोग तैरना नहीं जानते वह इन बेड़ों पर बैठकर डूबने से बच सकते हैं।

यह तरकीब सबकी समझ में आ गयी।

''रियली वैरी गुड आइडिया।'' सुधाकर ने मुक्त कण्ठ से करण सक्सेना की तारीफ की—''सचमुच आपकी बुद्धि का जवाब नहीं कमाण्डर!''

सबने एक बार फिर प्रशंसनीय नेत्रों से करण सक्सेना की तरफ देखा।

निःसंदेह करण सक्सेना के आइडिये अद्भुत होते थे।

बेहद आनन-फानन उनमें से जितने भी लोग तैरना जानते थे वह पानी में कूद कर तनों को बांधकर बेड़ा बनाने लगे।

''नहीं इ...इ... !''

तभी कई आदमी जोर से चिल्ला उठे।

करण सक्सेना ने देखा—पानी अब और भी ज्यादा तेजी के साथ नीचे आना शुरू हो गया था।

उस पानी को देखकर सब डर गये।

अब तो साबित हो गया था कि सचमुच जमीन की तह में कोई बहुत बड़ा छेद हो गया है। वरना पानी इतनी तेजी के

साथ नीचे आने का मतलब ही नहीं था।

"कमाण्डर!" चार्ल्स चिल्लाया—"अब इस जगह को डूबने से कोई नहीं बचा सकता। सुरंग की खुदाई में हमने जितनी मेहनत की थी, वह सब भी बेकार हो गयी।"

करण सक्सेना के चेहरे पर अवसाद के चिन्ह उभर आये।

सचमुच!

सुरंग की खुदाई में जितनी मेहनत की गयी थी वह सब बेकार हो चुकी थी।

अब उस सुरंग के जरिये "कैद" से आजाद नहीं हुआ जा सकता था।

पानी धड़-धड़ करके लगातार नीचे की तरफ आ रहा था।

"जल्दी वेड़ा बनाओ—जल्दी!" करण सक्सेना पानी की रफ्तार देखकर फिर चिल्लाया।

इतना ही नहीं—अब कमाण्डर सक्सेना खुद भी पानी में कूद पड़ा था और सबके साथ वो भी तनों को बांधकर जल्दी-जल्दी बेड़ा बनाने लगा।

चारों तरफ से अब चीख-पुकार की आवाजें आ रही थीं। हर तरफ अफरा-तफरी का आलम था—जो लोग तैरना नहीं जानते थे, वह सबसे ज्यादा भयभीत थे।

रिहायशी सुरंगों में भी अब पानी भरने लगा था।

मौत एकदम सामने थी—बेहद करीब!

❑❑❑

❑❑❑

नीचे वाली तह पर क्या हंगामा हो रहा है—रचना मुखर्जी उस सबसे बिल्कुल अंजान थी।

वह हमेशा की तरह रात को बड़ी बेफिक्री की नींद सोकर उठी। तैयार हुई। और फिर नित्य-प्रति की भांति सुंबा को अपनी गोद में उठाकर पूजा के लिये मंदिर पहुंची।

मंदिर के पास पहुंचते ही उसके दिमाग में हल्का-सा खटका हुआ।

उसने देखा—उस दिन मंदिर में अन्य दिनों की अपेक्षा कुछ ज्यादा भीड़ थी। मंदिर की गुफा पूरी भर गयी थी। जिसमें चार सौ के लगभग बौने आ सकते थे। इसके अलावा बहुत-से बौने

गुफा के बाहर भी खड़े थे।

उस दिन उसने बौनों के बीच कुछ बेचैनी-सी देखी। कुछ हलचल-सी।

बेचैनी क्यों थी? यह रचना मुखर्जी न समझ सकी। वह गुफा के दरवाजे पर पहुंची—तो हमेशा की तरह बौनों की भीड़ 'खाई' की तरह फटती चली गयी। फिर वहां पूजा-अर्चना शुरू हुई।

लगभग आधा घण्टे तक पूजा चली।

पूजा समाप्त होने के बाद रचना मुखर्जी ने जैसे ही अपना सिर उठाया तो उसकी दृष्टि सीधे गुफा के दरवाजे पर गयी।

और!

वहां दृष्टि पहुंचते ही उसका हृदय उछलकर मानो कण्ठ में आ फंसा।

गुफा के दरवाजे पर कोई खड़ा था—कोई छः या सवा छः फुट का नॉर्मल इंसान, जिसके शरीर पर कपड़े भी थे— लेकिन अब वो बुरी तरह फट चुके थे।

''कमाण्डर!'' रचना मुखर्जी के दिल ने धड़क कर कहा। लेकिन नहीं वो कमाण्डर करण सक्सेना नहीं थे। रचना मुखर्जी ने जैसे ही उस आदमी के चेहरे को ध्यान से देखा—वो भांप गयी।

उस आदमी के चेहरे से तो भयानकता बरस रही थी।

खूंखारता!

इतने अंतराल में रचना मुखर्जी ने पहली बार एक अपने जैसे इंसान को वहां देखा था। इसके अलावा यह घटना इतनी अचानक हुई थी कि उसे अपना सिर चकराता महसूस हुआ लेकिन जल्द ही उसने खुद को संभाल लिया।

पूजा खत्म हो चुकी थी। इसलिये बौने उठ-उठकर वापस जाने लगे। अलवत्ता वो आदमी राक्षस की तरह दरवाजे की दीवार से चिपका वहीं खड़ा रहा। गुजरते हुए बौने केवल एक नजर उसकी तरफ देखते तथा बाहर निकल जाते।

रचना मुखर्जी हैरान थी कि वह कौन है और कहां से आया है?

क्या वह कोई नया कैदी है?

और अगर कैदी है तो यहां क्यों है? कैदखाने में क्यों नहीं

सैकड़ों प्रश्न उसके दिमाग में चकरा रहे थे।

एक बात साफ थी। वह जो कोई भी था कैदी नहीं था। अगर वह कैदी होता तो बौने उसको इस आजादी से घूमने नहीं देते।

वह आदमी धीरे-धीरे चलते हुए उसके नजदीक आया फिर उसके सामने आकर रुक गया।

धीरे-धीरे सब बौने जा चुके थे और पहरेदार बौनों की दृष्टि उसके ऊपर जमकर रह गयी थी।

उस आदमी ने हाथ बढ़ाकर बिल्ली का सिर सहलाया। बिल्ली ने धीरे से 'म्याऊ' किया तो पहरेदारों के चेहरों का तनाव कुछ कम हो गया। वह समझ गये कि उस अजनबी से देवी खुश है।

बिल्ली को पुचकराने के बाद उसने रचना मुखर्जी की तरफ देखा।

"तो तुम यहां देवी बन गयी हो।" वह रचना मुखर्जी के चेहरे पर दृष्टि जमाकर अंग्रेजी में बोला।

रचना मुखर्जी भी ध्यान से उसका चेहरा देख रही थी, न जाने क्यों उस आदमी की उपस्थिति से रचना मुखर्जी को कुछ बेचैनी हो रही थी।

शायद यह उस आदमी के नाक-नक्श और भयानक आंखों का प्रभाव था।

उसकी आंखों में न जाने क्या चीज थी—रचना मुखर्जी जिसको कोई नाम नहीं दे पा रही थी। लेकिन इतना जरूर समझ रही थी कि उन आंखों में शराफत नहीं है।

वह खामोशी से उसे देखती रही, तो अजनबी ने फिर कहा—"तो तुम्हारा ही नाम रचना मुखर्जी है?"

रचना मुखर्जी ने जल्दी से अपने हवास पर काबू किया।

"कौन हो तुम?" वह पूरी दिलेरी के साथ बोली।

उस अजनबी के तने हुए चेहरे पर एक भौंडी-सी मुस्कान उभर आयी।

"मेरा नाम मारकोस है।"

उसने बड़े शातिराना अंदाज में जवाब दिया।

□□□
□□□

मारकोस!

मारकोस!

वह नाम रचना मुखर्जी के दिमाग में घण्टी की तरह बजता चला गया।

उसने यह नाम पहले कभी नहीं सुना था।

इसके अलावा उस आदमी के फटे हुए लिबास से पता चलता था कि वह कोई फौजी था। लेकिन एक लम्बे समय से वहां रहने के कारण उसका लिबास फट गया था।

उसका हाल से बुरा हाल हो चुका था।

"तुम मेरा नाम कैसे जानते हो?" रचना मुखर्जी ने उससे फिर सवाल पूछा।

"जब यहां कैदखाने में कोई नया कैदी आता है।" मारकोस ने एक-एक शब्द बहुत नाप-तोलकर बोलते हुए कहा—"तो सब कैदियों को खुद-ब-खुद मालूम चल जाता है कि कौन आया है।

"ओह!"

"दरअसल नीचे कैदखाने में यह प्रसिद्ध था कि एक खूबसूरत लड़की कैदी बनकर आयी है।" मारकोस ने आगे कहा—"और उससे भी ज्यादा प्रसिद्ध यह बात थी कि उस लड़की को कैदखाने में नहीं भेजा गया है सिर्फ उसके साथी को भेज दिया गया है। इस खबर से कैदियों में बहुत हलचल थी और वह सब तुम्हारे बारे में जानने के इच्छुक थे। क्योंकि पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था कि बौनों ने किसी इंसान को ऊपर वाली तह पर अपने साथ रखा हो।"

रचना मुखर्जी को अपने शरीर में एकाएक जीवन की लहर दौड़ती महसूस हुई।

तो!

यह आदमी 'कमाण्डर' से मिलकर आया था।

कमाण्डर करण सक्सेना से।

"इसका मतलब है।" रचना मुखर्जी ने व्यग्रतापूर्वक पूछा—"तुम्हारी कमाण्डर से मुलाकात हुई है...?"

"हां...!"

"वह कैसे हैं...?"

रचना मुखर्जी के स्वर में छिपी बेचैनी उस वक्त साफ-साफ देखी जा सकती थी।

"तुम्हारे 'कमाण्डर' अब ठीक हैं।" मारकोस बोला–"अलबत्ता उन्हें बहुत घायल अवस्था में कैदखाने के अन्दर भेजा गया था। कई दिन तक मेरा मतलब है, हमारे संसार के एक सप्ताह के बराबर वो बेहोश रहे। हम तो समझे थे कि कमाण्डर मर जायेंगे...!"

रचना मुखर्जी को भी यही भय था कि शायद वो कमाण्डर करण सक्सेना को जीवित न देख सके।

परन्तु अब अजनबी से उसके जीवन का समाचार सुनकर उसकी आंखों में आशा की एक किरण चमकी थी।

इस बीच रचना मुखर्जी कई बार उस सुरंग में भी गयी थी जिसके किनारे वह अपनी पनडुब्बी का कैबिन छोड़कर आये थे।

कैबिन अभी तक वहीं था।

इसके अलावा पानी का बहाव भी पहले की तरह ही तेज था...इसलिये रचना मुखर्जी को आशा थी कि यदि वह पनडुब्बी में बैठकर पानी के साथ-साथ बहते चले जायें तो शायद किसी खुली जगह में पहुंच जायें। वो पानी जरूर कहीं जाता होगा। इस कैद से निकलने की उसकी सारी आशायें अब केवल उसी कैबिन पर केन्द्रित थीं। वही कैबिन उनकी आजादी का वायस बन सकता था। और अब कमाण्डर करण सक्सेना के जीवन की खबर सुनकर उसके भीतर एक उत्साह-सा भर गया था।

उसने पुनः पूरे जोश के साथ मारकोस से पूछा–"क्या कमाण्डर अब स्वस्थ हैं...?"

"हां...!" मारकोस बोला–"आखिरी बार जब मैंने उन्हें देखा था तो वह स्वस्थ थे...!"

"आखिरी बार तुम उनसे कब मिले थे...?"

"अभी मुझे उनसे मिले हुए ज्यादा समय नहीं गुजरा...।" मारकोस ने जवाब दिया।

"फिर भी कितना समय गुजरा होगा...?"

''यही कोई पन्द्रह या बीस घण्टे... ।''

रचना मुखर्जी कमाण्डर करण सक्सेना के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी पाने को व्याकुल थी।

फिर उसने मारकोस से सम्बन्धित कुछ प्रश्न पूछे।

''तुम कौन हो... ?'' क्या तुम भी यहां कैदी हो... ?''

''हां... ।'' मारकोस ने जवाब दिया-''मैं यहां पिछले कई साल से कैद हूं... ।''

''हैरानी है...अगर तुम एक कैदी हो, तो फिर इस वाली तह पर कैसे हो... ? जबकि यहां तो किसी भी कैदी को नहीं रखा जाता... ?''

मारकोस धीरे से मुस्कराया।

''क्या तुम कैदखाने से फरार होकर आये हो... ?''

''नहीं...उन लोगों ने मुझे खुद ही यहां रहने की परमिशन दी है... !''

''केवल तुम्हीं को यहां रहने की परमिशन मिली है... ?'' रचना मुखर्जी बोली-''या फिर तुम्हारे साथ-साथ कुछ और कैदियों को भी यह परमिशन दी गयी है... ?''

''नहीं... ।'' मारकोस गर्व से सीना तानकर बोला-''केवल मुझे अकेले को ही यह परमिशन मिली है... ।''

रचना मुखर्जी चौंकी।

वो हैरानी की बात थी।

''क्यों... ?'' रचना मुखर्जी ने पूछा-''केवल तुम्हें ही यह परमिशन क्यों दी गयी है... ?''

''इसलिये कि यह बौने समझते हैं कि मुझसे इनको कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा... ।''

''लेकिन इस विश्वास के पीछे भी तो कोई कारण होगा... ?'' रचना मुखर्जी ने उसको संदेहजनक नेत्रों से देखते हुए सवाल किया।

''तुम भी तो मेरी तरह ही हो... ।'' मारकोस बोला-''तुम भी कैदी हो...परन्तु तुम यहां हो... ।''

'सब अच्छी तरह जानते हैं... मैं इस बिल्ली के कारण यहां हूं। अगर बिल्ली मेरे पास न होती...तो यह बौने मुझे भी निःसंकोच कैदखाने में ही डाल देते... ।''

"मेरा कारण दूसरा है। मारकोस मुस्कराकर बोला–"मैंने इन बौनों पर एक अहसान किया है... जिसके बदले में इन बौनों ने मुझे अपनी सुरंगों में रहने की अनुमति दे दी थी।

"वो अहसान क्या था... ?" न जाने क्यों रचना मुखर्जी हर गुजरते हुए क्षण के साथ उसके प्रति संदिग्ध होती जा रही थी।

वह आदमी उसे कुछ ठीक नहीं लग रहा था।

"उन बातों की डिटेल में जाने की जरूरत नहीं... ।" मारकोस ने जवाब दिया–"तुम्हारे संतोष के लिये केवल इतना बता देना ही काफी है कि मैंने इनको एक ऐसा रहस्य बताया था... जो इनके फायदे का था... ।" यह कहकर मारकोस ने थोड़ा सावधान होकर पहरेदारों की तरफ देखा।

पहरेदार उनको बातें करते देखकर अब कुछ फासले पर खड़े थे।

मारकोस ने थोड़ी आवाज दबाकर पूछा–"क्या यह हमारी भाषा समझते हैं... ?"

"नहीं... !"

"फिर तो मैं बताता हूं–"मैं यहां अधिक देर तक रहने वाला नहीं हूं... ।" मारकोस फुसफुसाया... मैं बस यहां से फरार होने का रास्ता ढूंढ रहा हूं। नीचे कैदखाने से फरार होना बिल्कुल नामुमकिन था... इसलिये मैंने पहले यहां आने की कोशिश की। क्योंकि यहां से हवा आने वाले बहुत-से रास्ते सतह की तरफ जाते हैं। क्या तुम ऐसा कोई रास्ता जानती हो... ?"

"नहीं... मैं ऐसा कोई रास्ता नहीं जानती... ।" रचना मुखर्जी ने इंकार की सूरत में गर्दन हिलाई–"गराम ने एक बार मुझे सिर्फ इतना बताया था कि हवा आने वाली बहुत-सी सुरंगें ऊपर की सतह तक जाती हैं... लेकिन आज तक कभी कोई उन रास्तों से बाहर नहीं जा सका... ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है... ?"

"गराम ने तो मुझे यही बताया था... ।"

"यह गराम कौन है... ?"

"बौनों का सरदार है और यहां का बूढ़ा पुजारी भी... ।" रचना मुखर्जी बोली–"उसने मुझे बताया कि एक बार एक

आदमी ने हवा वाली उन सुरंगों के रास्ते फरार होने की कोशिश की थी। जानते हो... उसका नतीजा क्या निकला... ?''

''क्या निकला... ?''

''गराम ने मुझे बताया था कि उस भाग्यहीन ने एक सीधी सुरंग पाकर उसमें चढ़ना शुरू कर दिया। बौनों को इस बात की खबर हो गयी। उन्होंने उसको रोकने की कोशिश नहीं की... लेकिन जब वो आधी सुरंग में चढ़ गया, तो मालूम उन्होंने क्या किया... ?''

''क्या किया... ?''

''उन्होंने सूखे हुए मशरूम के पेड़ रखकर नीचे आग लगा दी। उस आदमी का बीच सुरंग में ही धुएं से दम घुट गया और वो धड़ाम से नीचे आग में आ पड़ा। बौनों ने उसको धधकती हुई आग में से निकालना भी जरूरी न समझा... ।''

''जरूर ऐसा हुआ होगा... ।'' मारकोस शुष्क लहजे में बोला—''मैं इन बौनों के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित हूं। हालांकि यह लोग हत्यारे नहीं हैं... परन्तु अगर इन्हें यह लगे कि फलां इंसान की किसी हरकत की बदौलत उनकी जाति का रहस्य खुल सकता है... तो फिर यह हत्या करने से भी नहीं चूकते... ।''

''इसके बावजूद तुम फरार होने की कोशिश करोगे... ?'' रचना मुखर्जी ने उसके चेहरे पर दृष्टि गड़ाकर सवाल किया।

''हां... मैं फिर भी फरार होने की कोशिश करूंगा... ।'' मारकोस बोला—''क्योंकि मैं सारा जीवन चूहों की तरह इन सुरंगों में नहीं रह सकता... ।''

''तुम्हें क्या लगता है... क्या तुम आसानी से ऐसी सुरंग तलाश कर लोगे, जिससे बाहर निकला जा सके... ?''

''मैं कोशिश तो पूरी करूंगा। फिर मेरे ऊपर यहां कोई प्रतिबंध भी नहीं है। मैं हर तरफ घूम-फिर सकता हूं। इसके अलावा मेरे पास समय की भी कोई कमी नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं कोई-न-कोई रास्ता जरूर तलाश कर लूंगा। मैं यह भी जानता हूं कि आजाद होने का यह मेरा पहला और आखिरी अवसर है। अगर मैं नाकाम हो गया... तो मुझे दूसरा कोई मौका नहीं मिलेगा। क्या तुम इस मामले में मेरी कुछ मदद नहीं कर सकतीं... ?'' आखिर तुम कम-से-कम मुझसे यहां

बेहतर स्थिति में हो... ।''

''मुझे अफसोस है...मैं इस मामले में तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती... ।'' रचना मुखर्जी बिल्कुल सपाट लहजे में बोली।

''क्यों... ?''

''दरअसल मैं अब इस नतीजे पर पहुंच चुकी हूं कि यहां से फरार होना नामुमकिन है... ।'' रचना मुखर्जी का चेहरा भावरहित था-''शुरू-शुरू में, मैं भी यहां से फरार होने के बारे में सोचती रहती थी...लेकिन कुछ दिनों की कोशिशों के बाद ही मुझे अहसास हो गया कि यह काम लगभग नामुमकिन है... ।''

''उहं... !'' मारकोस ने बुरा-सा मुंह बनाया-''इस दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं... ।''

रचना मुखर्जी ने अब विस्मय से उसकी तरफ देखा।

''तो क्या तुम्हारे दिमाग में यहां से फरार होने की कोई योजना है... ?''

''मेरे दिमाग में योजना तो कोई नहीं है...लेकिन मुझे अपनी अक्ल और अपने इरादों पर हमेशा से बहुत विश्वास रहा है और उसी विश्वास की बदौलत में कैदखाने से यहां तक पहंचने में कामयाब हो गया हूं... ।''

''यह तुमने कोई बहुत बड़ा तीर नहीं मारा है... ।'' रचना मुखर्जी बोली-''फर्क सिर्फ इतना हुआ है कि तुम एक कैदखाने से निकलकर दूसरे कैदखाने में आ गये हो... ।''

''मुझे इसकी परवाह नहीं। मैं बस अपनी आखिरी सांस तक आजादी के लिये संघर्ष करता रहूंगा। मैंने सुना है-तुम लोग किसी पनडुब्बी के द्वारा यहां पहुंचे थे... ?''

''हां! मगर वो पनडुब्बी नहीं थी... ।''

''फिर... ?''

''वो दरअसल पनडुब्बी का एअरटाइट केबिन था...जो किश्ती का काम दे रहा था... ।''

''अब वो केबिन कहां है... ?''

''वहीं जहां हम छोड़ आये थे... ।''

''क्या जिस रास्ते से तुम आयी थीं...वहां पानी बहाव पर

था... ?''

''हां... ।''

''मगर मैंने सुना है... !'' मारकोस आगे बोला–''कि जिस तरफ से तुम आयी थीं... उस तरफ उन्होंने एक सुरंग गिराकर रास्ता बंद-कर दिया है... ।''

''हां... उन्होंने ऐसा ही किया। लेकिन इसके बावजूद पानी एक तरफ को बह रहा है... ।''

मारकोस किसी सोच में डूब गया।

''इसका मतलब ये है... !'' वो काफी सोच-विचार कर बोला–''कि वह पानी संभवतः किसी स्रोत से जा मिला हो और वह स्रोत नदी या चश्मा बनकर किसी जगह सतह पर फूटा है... ।''

''यह संभव भी है और नहीं भी... ।''

अचानक एक नया विचार रचना मुखर्जी के दिमाग में आया।

उसने सोचा कि मुझे इस आदमी के फरार होने में मदद करनी चाहिये।

अगर किसी तरह केवल वो एक अकेला आदमी वहां से बाहर निकल गया... तो वह भारत सरकार को इन भूमिगत लोगों के बारे में बता देगा और फिर भारत सरकार फौज भेजकर सभी कैदियों को छुड़ा लगी। उन सब लोगों की आजादी के लिये सिर्फ एक आदमी का बाहर पहुंचना काफी था।

रचना मुखर्जी को अपना वह विचार उपयुक्त लगा।

''क्या तुम वास्तव में ही यहां से बाहर जाना चाहते हो... ?'' रचना मुखर्जी बोली।

''हां... आखिर इसीलिये तो मैं यहां तक आया हूं... ।''

''ठीक है... तो फिर तुम हमारी पनडुब्बी के एअरटाइट केबिन द्वारा यहां से बाहर निकलने की कोशिश कर सकते हो... ।''

''लेकिन उसमें खतरा है... ।'' मारकोस बोला–''अगर वह एअरटाइट केबिन धारा के साथ-साथ बहता हुआ किसी सतह पर जाकर न निकला... तो फिर मेरी जिंदगी तो और भी ज्यादा नरक बन जायेगी। फिर तो मैं समुद्र तल के नीचे ही न जाने

कहां-कहां और कब तक भटकता रहूंगा... ।"

"यह खतरा तो तुम्हें मोल लेना ही पड़ेगा। सच तो ये है... सालों तक किसी सुरंग को तलाश करने से यह खतरा मोल लेना अच्छा है। मुझे पूरा कहना है कि यह पानी किसी नदी से जाकर जरूर मिलता है और वह नदी सतह तक जाती है। मैं खुद यह खतरा उठाने को तैयार हूं... लेकिन कमाण्डर करण सक्सेना को अकेला छोड़कर जाने के लिये मेरा दिल गवाही नहीं देता। तुम यदि एक बार सतह पर पहुंच गये... तो तुम भारत सरकार की सहायता से बाकी कैदियों को आजाद करा सकते हो... ।"

"इस बारे में एकदम से कोई निर्णय लेना मुश्किल है... ।" मारकोरा ने कहा—"तुम यह बताओ... तुम्हारा वो एअरटाइट केबिन इस समय कहां है... ?"

"वहीं... जहां हमने उसे छोड़ा था... ।"

"किस जगह... ? मुझे समझाओ... ।"

"मैं इस तरह नहीं समझा सकती... फिर भी रास्ता मुझे याद है। मैं तुम्हें वहां जे जा सकती हूं... ।"

खुद रचना मुखर्जी को भी उस समय मालूम नहीं था कि वो क्या करने जा रही थी।

उसके हाथों कैसे बड़े शैतान की मदद हो रही थी।

"क्या तुम अभी चलकर मुझे वो जगह दिखा सकती हो... ?" मारकोस बोला—"जहां वो एअरटाइट केबिन मौजूद है... ?"

"हां... ।"

"तो फिर इन पहरेदारों को किसी तरह कहीं भेज दो... ।"

"इसकी जरूरत नहीं... क्योंकि बौने अभी तक हमारे केबिन को समझ नहीं सके हैं कि वो क्या चीज है। उन्हें यह ख्याल तक नहीं कि उस केबिन को किश्ती के तौर पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है... ।"

"तो चलो... फिर हम चलते हैं... ।"

रचना मुखर्जी ने चलने के लिये अभी एक कदम आगे बढ़ाया ही था कि दरवाजे पर बूढ़ा गराम नजर आया।

"गराम आ रहा है... ।" रचना मुखर्जी ने फौरन रुककर

थोड़े दबे स्वर में कहा–"फिर किसी समय चलेंगे... एक बात और?"

"क्या... ?"

"उसके सामने कुछ न बोलना... वह थोड़ी-थोड़ी हिन्दी और अंग्रेजी समझने लगा है... ।"

"ओह... !"

मारकोस के चेहरे पर अवसाद के चिन्ह उभर आये।

उसने सोचा... इस हरामजादे गराम ने भी अभी टपकना था।

उसी क्षण गराम भीतर दाखिल हुआ।

उसने थोड़ी अप्रसन्नता से मारकोस की तरफ देखा... फिर रचना मुखर्जी से अपनी भाषा में बोला–"क्या तुम चल रही हो... ?"

"हां... ।" रचना मुखर्जी ने जवाब दिया।

फिर वह मारकोस पर एक नजर डालकर चल दी। गराम उसके साथ-साथ था और पहरेदार चारों तरफ चलने लगे थे।

मारकोस अपनी फटी हुई पतलून की जेबों में हाथ डाले वहीं खड़ा रह गया।

उस समय उसके होठों पर मुस्कराहट थी।

शरारतपूर्ण मुस्कराहट!

"कोई बात नहीं... ।" वह होठों-ही-होंठो में बुदबुदाया–"अगर आज नहीं, तो फिर मैं कल उस एअरटाइट केबिन का पता लगा लूंगा। अब वही होगा... जो मैं चाहता हूं... ।"

❑❑❑

❑❑❑

रचना मुखर्जी को उन गुफाओं में आये अब कई दिन गुजर चुके थे और इस बीच उसे इस बात का पूरा विश्वास हो गया था कि जब तक बिल्ली जीवित है... उसको शारीरिक दृष्टि से कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जायेगा।

उसके बाद वो स्थिति को समझने की कोशिश करने लगी। उसने कुछ ही दिनों में देख लिया था कि यह बौने इक्कीसवीं सदी में भी दस हजार वर्ष पुराने युग में रह रहे थे... जब शुरू

में इंसान ने गुफाओं में रहना सीखा था और पत्थरों के हथियार इस्तेमाल करने शुरू किये थे। फर्क सिर्फ इतना था कि परिवर्तनों की लम्बी मंजिलों से गुजर कर यह लोग आग जलाने लगे थे और मशरूम उगाने लगे थे।

इंसानी विकास के इतिहास में यह दूसरा युग था...जब गुफाओं में रहने वाले इंसान ने खेतीबाड़ी करना सीखा था, आग पर काबू पा लिया था और घर बनाकर रहने लगे थे।

इसके बावजूद जब वह सुरंगों में उन ग्लोबों को देखती...जो बिना बिजली के प्रकाशित थे तो उसका बेहद आश्चर्य होता था। सबसे पहले तो शीशेनुमा किसी धातु के या न टूटने वाले शीशे के यह ग्लोब बनाना ही वैज्ञानिक कमाल था। फिर उसमें वह हरा प्रकाश कैसा था...और सबसे बड़ी बात ये थी कि वो प्रकाश वर्षों से कायम था। फिर उन ग्लोबों का एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध ा नहीं था...कहीं कोई जैनरेटर नहीं था जो उनको बिजली या किसी दूसरे किस्म की शक्ति पहुंचाता हो।

फिर यह प्रकाश कैसा था और किस तरह बना हुआ था...?''

यह सवाल रचना मुखर्जी को कई दिन तक परेशान करता रहा था। फिर अंत में जब वह और गराम आपस में कुछ बातें करने योग्य हुए थे...तो उसने गराम से ग्लोबों के बारे में सवाल पूछा था।

उसके सवाल के जवाब में गराम उसको कई पेंचदार और लम्बी सुरंगों से गुजारकर एक जगह ले गया था। यह एक गुफा थी...जो दूसरी गुफाओं की तरह तराशी हुई नहीं थी—बल्कि अपने प्राकृतिक रूप में ही मालूम होती थी।

रचना मुखर्जी ने उस गुफा के अंदर दृष्टि डाली...तो वह हैरान रह गयी।

आधी से अधिक गुफा उन ग्लोबों से भरी हुई थी...जो उस समय खाली थे।

यानी उनमें प्रकाश नहीं था।

जमीन पर एक कोने में रेत की किस्म की किसी चीज के ढेर लगे थे और उसके नजदीक ही जमीन में छोटे-छोटे गड्ढे थे...जो इस तरह काले थे, जैसे वहां कभी आग जलाई जाती

रही हो। उन गड्ढों के निकट ही मिट्टी या मिट्टी जैसे किसी पदार्थ के कुछ गोले से पड़े थे... जो साइज में फुटबाल से ड्योढ़े थे। उनमें से एक गोला बीच में से कटा हुआ था। रचना मुखर्जी ने करीब जाकर देखा और एक दृष्टि में ही पहचान लिया। वह मिट्टी के गोले वास्तव में सांचे थे... ग्लोब ढालने के सांचे।

रचना मुखर्जी फौरन समझ गयी कि ग्लोब किस तरह बनते थे।

इसके बाद गराम उसको एक वैसे ही पेंचदार तथा लम्बे से मार्ग से गुजारकर एक और जगह ले गया था।

वहां एक विचित्र दृश्य था।

इस मर्तबा वह उसको एक बहुत चौड़े मुंह की गुफा के किनारे पर ले गया था। गुफा जब उनसे कुछ फासले पर थी... तो रचना मुखर्जी ने देखा कि उस गुफा से हरे रंग का प्रकाश बाहर आ रहा था, जैसे भीतर तह में जबरदस्त हरी आग जल रही हो।

लेकिन जब रचना मुखर्जी ने अंदर झांककर देखा तो वह हैरान रह गयी। क्योंकि न वहां किसी तरह की गर्मी थी और न गुफा के भीतर शोले थे।

बस हरे रंग का प्रकाश था, जो भीतर से आ रहा था। यही ठण्डा हर प्रकाश उन ग्लोबों में था।

पहले कुछ क्षण तो वह विस्मय से उस ठण्डी आग को देखती रही। फिर अचानक उसको याद आया कि उसने किसी वैज्ञानिक पत्रिका में यूरेनियम के बारे में पढ़ा था। उसने पढ़ा था कि यूरेनियम तत्व से हर समय कुछ कण खारिज होते रहते है, जिन्हें 'अल्फा' कण कहा जाता है। इसी को 'रेडियेशन' कहा जाता है। रेडियेशन में अल्फा कणों के अलावा 'बीटा' और 'गामा' किरणें भी खारिज होती हैं। बीटा किरणें एक्स-रे किस्म की किरणें होती हैं और गामा किरणें उनमें सबसे ज्यादा खतरनाक होती हैं... क्योंकि वह दीवार के पार भी गुजर सकती थी।

इंसानी शरीर के लिये रेडियेशन बहुत खतरनाक होती है। यूरेनियम से यह रेडियेशन निरंतर होता रहता है। विज्ञान की भाषा में यूरेनियम की आधी आयु लगभग साढ़े चार अरब वर्ष होती है। यानी अगर किसी जगह एक विशेष मात्रा में यूरेनियम मौजूद है... तो उससे आज जितनी रेडियेशन हो रही है, साढ़े

चार अरब वर्ष बाद रेडियेशन उससे आधी रह जायेगी।

अब यदि यूरेनियम में फॉस्फोरस मिला दिया जाये तो उसी रेडियेशन के कारण फॉस्फोरस एक असीमित अंतराल तक हरे रंग का प्रकाश देता रहेगा, यानी जब तक यूरेनियम से रेडियेशन जारी रहेगा... फॉस्फोरस चमकता रहेगा।

फॉस्फोरस मिश्रित पदार्थ में जिसे 'फॉस्फोरस' कहा जाता है... यह गुण होता है कि वह रेडियेशन की एनर्जी अपने भीतर सोख लेता है और फिर उसे एनर्जी की शक्ल में खारिज करता रहता है। और यह प्रकाश एक ही 'वेव लैंग्थ' या यह कहिये कि एक ही रंग की होती है।

फिर उसे रेडियम घड़ियों का ख्याल आया... जिनके अंक और सुइयां रात को चमकते हैं। रचना मुखर्जी को मालूम था कि उन घड़ियो के अंकों और सुइयों पर यूरेनियम मिश्रित फॉस्फोरस लगा रहता है... जो हरे रंग में चमकता है।

अब वह समझ गयी कि इस गुफा में कहीं प्राकृतिक तौर पर फॉस्फोरस और यूरेनियम जमा हो गये हैं... जिससे यह ठण्डा हरा प्रकाश निकल रहा है। यही पदार्थ उन शीशे के गोलों में भरा हुआ है... जो प्रकाश दे रहा हैं और हजारों वर्षों तक देता रहेगा।

यह समझने के बाद रचना मुखर्जी ने गराम से पूछा—"यह शीशे के ग्लोब तुमने बनाये हैं... ?"

"नहीं... ।" गराम ने जवाब दिया—"बहुत साल पहले हमारे पुरखों ने बनाये थे... ।"

"पर तुम ऐसे गोले बना सकते हो... ?"

"नहीं... हम नहीं बना सकते। हमारे पुरखे बनाना जानते थे... ।"

"तुम्हारे पुरखों ने अपनी संतानों को इनके बनाने का रहस्य नहीं बताया... ?"

"नहीं... ।"

"क्यों... ?"

"हमारे पुरखों के पुरखे कहते थे कि जो यह बनाते थे... वह मर जाते थे... ।"

"मर जाते थे... ?" उसने हैरानीपूर्वक पूछा।

"हां। देवता नाराज होते थे... इसलिये मर जाते थे। इस गुफा में देवता रहते हैं... जो प्रकाश देते हैं। हमारे पुरखे यह प्रकाश चुराकर इन गोलों में भरते थे। इसमें देवता नाराज होते थे और वह मर जाते थे... जो प्रकाश चुराते थे... ।"

अब रचना मुखर्जी समझ गयी कि वास्तव में किस्सा क्या था।

दरअसल किसी युग में इस जाति के कुछ अक्लमंद बूढ़ों ने ग्लोब बनाने का रहस्य समझ लिया था। फिर उन्होंने सोचा कि क्यों न इन गोलों में यह प्रकाश बंद करके अंधेरी गुफाओं को प्रकाशित किया जाये? इसलिये वह प्रकाश लेने के लिये गुफा में उतरे होंगे। उन्होंने यूरेनियम मिश्रित फॉस्फोरस उन गोलों में भर लिया और ग्लोब प्रकाश देने लगे।

इससे अंधेरी सुरंगों में प्रकाश तो आ गया... लेकिन यूरेनियम के रेडियेशन से वह लोग मरने लगे, जो गुफा में उतरे थे।

हिरोशिमा और नागासाकी जापान के दो भाग्यहीन नगर... जिन पर अणु बमों का प्रयोग किया गया था। आज भी वहां यूरेनियम के रेडियेशन से हजारों लोग जीवन और मृत्यु के बीच लटके हुए थे। ज्यादा संख्या में रेडियेशन इंसानी शरीर के सैल्ज तोड़ देता है और इंसान मर जाता है... यह रचना मुखर्जी जानती थी। अतएव वह समझ गयी कि जब इन बौनों के प्राचीन पूर्वजों ने, जो अपने युग के वैज्ञानिक कहे जा सकते हैं... यह देखा कि जो भी प्रकाश चुराने के लिये गुफा में उतरता है, मर जाता है। इसलिये उन्होंने समझा कि इस तरह देवता नाराज हो जाते हैं। इसलिये उन्होंने यह सिलसिला खत्म करने के लिये ग्लोब बनाने और प्रकाश चुराने का रहस्य अगली जातियों को नहीं बताया और वो रहस्य सीने में लिये मर गये।

असभ्य जातियों की तरह ये लोग भी वहमी थे और देवताओं पर विश्वास रखते थे। इसलिये अब यह उस गुफा के निकट आते हुए भी डरते थे।

लेकिन उनके पूर्वज इतने ग्लोब बना गये थे कि अब सारी सुरंगें प्रकाशित थीं और हजारों वर्षो तक उसी तरह प्रकाशित रह सकती थीं।

□□□
□□□

रचना मुखर्जी गराम के साथ गुफा में पहुंची।

पहरेदार बाहर ही रह गये।

रचना मुखर्जी को अभी तक एक बात चकित कर रही थी। वो यह जानना चाहती थी कि अजनबी मारकोस ने बौनों के ऊपर वह क्या अहसान किया था... जिसकी बिना पर उसको बौनों ने अपनी सुरंगों में रहने की अनुमति दे दी थी।

गराम ने शांति से बैठने के बाद 'फैनी' का एक प्याला और पिया।

फिर रचना मुखर्जी से पूछा—"क्या तुम उस आदमी को पहले से जानती हो... ?"

"किस आदमी को... ?"

"वही... जो तुमसे बातें कर रहा था... ।"

"नहीं! मैंने आज ही उसको देखा है... ।" रचना मुखर्जी बोली—"मैं विस्मित थी कि वो यहां कैसे है... क्योंकि वह मेरे अलावा पहला इंसान है, जो इस जगह पर है... ।"

"दरअसल वो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है... ।" गराम ने गंभीर लहजे में कहा—"मगर हम मजबूर थे... ।"

"मारकोस बता रहा था... उसने तुम्हारा कोई काम किया है, जिसके बदले में उसे यहां रहने की अनुमति दी गयी है... ।"

गराम ने रचना मुखर्जी के चेहरे पर अपनी बूढ़ी नजरें जमाते हुए कहा—"दरअसल उसने हमें एक सुरंग का पता बताया था, जो कैदी बाहर निकलने के लिये चोरी-चोरी बना रहे थे... ।"

"इसका मतलब है... उसने अपने साथियों के साथ गद्दारी की है... ।"

गद्दारी!

गराम इसका मतलब न समझ सका।

"गद्दारी क्या होती है... ?" गराम बोला—"मुझे मालूम नहीं। लेकिन कैदी धोखेबाज हैं। यदि हम चाहते तो उन सबकी हत्या कर सकते थे, मगर हम बेमतलब किसी की जान लेना पसंद नहीं करते। हम केवल यह चाहते हैं कि तुम्हारे संसार के लोग हमें शांति से यहां रहने दें। हम जानते हैं कि एक बार

भी हमारी सुरंगों का पता बाहर के संसार वालों को चल गया... तो वह हमारी सभ्यता और हमें नष्ट कर देंगे। हम लोग ऊपर जमीन पर जीवित नहीं रह सकते। एक बार हमारे दो आदमी ऊपर गये थे। वापस आये... तो वह देख नहीं सकते थे और कुछ रोज में ही मर गये। इसलिये हम यहीं जमीन के नीचे खुश हैं। इसलिये हम इन कैदियों को बाहर नहीं जाने देते। इसके बावजूद हम उन पर कोई अत्याचार नहीं करते। उन्हें रहने के लिये हमने अलग जगह दे रखी है। वह हमारी तरह आराम से पूरा जीवन गुजार सकते हैं।

जहां तक जीवन के बारे में बौनों के दृष्टिकोण का सवाल था... गराम अपनी जगह ठीक था।

वह जानते थे कि वे ऊपर की जमीन की सतह पर सूर्य के प्रकाश में जीवित नहीं रह सकते।

इसीलिये वह संसार से अलग-थलग रहना चाहते थे। लेकिन जहां तक कैदियों का अपनी आजादी के लिये संघर्ष करने का सवाल था... वे भी अपनी जगह ठीक थे, क्योंकि वह इन अंधेरी सुरंगों में रहने के आदी नहीं थे।

"तुम्हारी बात ठीक है... ।" रचना मुखर्जी ने गराम के जवाब में कहा—"लेकिन यह भी तो सोचो कि कैदी खुली फिजां में और सूर्य के प्रकाश में जीवित रहने के आदी हैं। फिर वह सारी उम्र इन सुरंगों में कैसे गुजार सकते हैं... ? इसलिये वह बाहर निकलने का संघर्ष जरूर करेंगे... ।"

"हमें यह अंदाजा है... ।" गराम बोला—"लेकिन हम उनको बुलाने नहीं जाते। वह खुद यहां आते हैं और जब वे यहां आ जाते हैं...तो हमारी पूरी जाति की जिंदगी का सवाल हो जाता है... ।"

"खैर छोड़ो... ।" रचना मुखर्जी ने कहा—"यह बताओ कि तुमने उस गुप्त सुरंग का रहस्य मालूम होने के बाद क्या किया... क्या उस सुरंग को नष्ट कर दिया... ?"

"दरअसल यहां की स्थिति बहुत खराब होती जा रही है... ।" गराम ने मुंह लटकाकर कहा—"मालूम होता है किसी कारण देवता हमसे बहुत नाराज हैं। कैदियों ने हमारा मुकाबला

किया। हमारे बहुत- से आदमी मारे गये और फिर एकदम दो जगह से पानी आना शुरू हो गया तथा हम वापस आ गये... ।"

"पानी आ गया... ।" रचना मुखर्जी ने चिन्तित होकर पूछा–"फिर कैदियों का क्या हुआ... ?"

"हमें मालूम नहीं...उनका क्या हुआ? हमने काफी कोशिश करके वह रास्ते भी बंद किये, जहां से पानी आ रहा था। मगर बहुत कोशिशों के बावजूद भी हम उन रास्तों को पूरी तरह बंद नहीं कर सके। थोड़ा-थोड़ा पानी अभी भी आ रहा है... ।"

"और सुरंग... ?"

"सुरंग को हम चाहते तो नष्ट कर सकते थे। लेकिन हमने उसे इसलिये नष्ट नहीं किया... क्योंकि वहां नीचे वाली तह पर पानी भर गया था और वो सुरंग खुद ही नष्टप्रायः थी। कैदी भी अब उसे इस्तेमाल नहीं कर सकते थे... क्योंकि पानी के कारण उनकी जान के वैसे ही लाले पड़ गये थे... ।"

"ओह... !"

रचना मुखर्जी समझ गयी कि उन लोगों में अचानक अशांति और परेशानी की वजह क्या थी... ?"

हिन्द महासागर का पानी जमीन की परत तोड़-तोड़कर भीतर घुस रहा था।

एक तरह से अब तो पूरी जाति खतरे में थी।

कुछ देर इधर-उधर की बातें करने के बाद गराम चला गया।

मगर!

रचना मुखर्जी के दिल में एक डर-सा बैठ गया था।

उसे कमाण्डर करण सक्सेना की चिन्ता था।

कमाण्डर!

क्या उस जैसी अन्तर्राष्ट्रीय हस्ती का अंत इसी तरह लिखा था।

वो सोचने लगी... यदि कैदखाने वाले भाग में पानी भर गया है, तो कैदियों का क्या हश्र हुआ होगा।

सबसे बड़ी बात ये है कि उसे यह भी पता नहीं था... पानी कितना आया है।

यही सोचते-सोचते रचना मुखर्जी को नींद आ गयी।

□□□
□□□

सुरंगों में दिन-रात नहीं थे।

रचना मुखर्जी समय का हिसाब अपने सोने के समय और पूजा के समय से लगाती थी। वह सोने के बाद उठती और पूजा जाने के लिये मंदिर ले जाई जाती...तो वह समझ लेती कि एक दिन, एक रात गुजर गये हैं।

इसी हिसाब से दूसरे दिन पूजा के बाद फिर मारकोस की उससे भेंट हुई।

लेकिन कल की भेंट और आज की भेंट में फर्क था।

आज रचना मुखर्जी का हृदय मारकोस की तरफ से घृणा से भरा हुआ था...क्योंकि उसने अपने साथियों के साथ गद्दारी की थी और उनको निराशा व मृत्यु के मुंह में छोड़कर खुद वहां चला आया था।

अब वह मारकोस पर विश्वास नहीं कर सकती थी! किसी हालत में नहीं।

जो आदमी इतना खुदगर्ज था...उससे किसी सहानुभूति की आशा रखना बेकार था।

रचना मुखर्जी को यकीन था कि मारकोस अगर किसी तरह बाहर चला भी गया...तो वह दूसरे कैदियों को आजाद कराने की कोशिश नहीं करेगा।

यही सब बातें सोचकर उसने फैसला कर लिया था कि वह मारकोस को पनडुब्बी के केबिन का पता नहीं बतायेगी। उसे न जाने क्यों यह आशा-सी थी कि किसी दिन कमाण्डर करण सक्सेना जरूर आ जायेंगे और फिर वह दोनों अपने केबिन के द्वारा बाहर निकलने की कोशिश करेंगे या फिर उस संघर्ष में मर जायेंगे।

दूसरे दिन मारकोस उसको मंदिर से गुफा की तरह जाते हुए रास्ते में मिला था।

वह सुरंग में न जाने किधर से अकस्मात् प्रकट हुआ था कि रचना मुखर्जी भी हतप्रभ रह गयी।

"हैलो देवी जी...!" वह थोड़ा व्यंग्यपूर्वक बोला—"वापस जा रही हैं...?"

रचना मुखर्जी चलते-चलते रुक गयी।

उसके पैर ठिठक गये थे।

बौने पहरेदार भी रुककर मारकोस को कौतूहलभरी नजरों से देखने लगे।

रचना मुखर्जी भी रुककर मारकोस को कौतूहलभरी नजरों से देखने लगी।

रचना मुखर्जी ने उसके चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहा—"तो तुम अपने साथियों से गद्दारी करके ऊपर आये हो।

मारकोस के चेहरे पर एक क्षण में कई सारे रंग आकर गुजर गये।

"गद्दारी...!" मारकोस बोला—"गद्दारी कैसी...?"

"तुमने कैदियों की उस गुप्त सुरंग का रहस्य बौनों को बताया है...जो वह आजादी के लिये बना रहे थे...।"

मारकोस ने अपने दोनों कूल्हों पर हाथ रखकर बेहद घृणाभरे लहजे में कहा—"उंह...तो वह मनहूस बंदर गराम तुमसे यह झूठ बोल रहा है...?"

"झूठ कैसा...?" क्या तुमने कैदियों की गुप्त सुरंग का रहस्य उन लोगों को नहीं बताया था...?"

मारकोस एक क्षण सोचता रहा।

वो समझ गया कि अब इंकार बेकार है।

"आल राइट...!" वह बोला—"मैंने उन लोगों को यह रहस्य बताया है...।"

"तो यह गद्दारी है...।"

"यह गद्दारी नहीं है...।" मारकोस दृढ़तापूर्वक बोला—"मैं जानता हूं...वह सुरंग खोदने की जो कोशिश कर रहे थे उनकी वह कोशिश फिजूल थी और मूर्खतापूर्ण थी। कैदी वर्षों से वह सुरंग बना रहे हैं और आज तक वह सुरंग सतह तक नहीं पहुंच सकी। अभी तो उन्हें यही पता नहीं था कि सुरंग को पूरा करने के लिये और कितने वर्ष लगेंगे। मामूली से अनुमान के अनुसार वह सुरंग बनाने का काम सत्तर-अस्सी वर्ष पहले शुरू हुआ था। अगर वह सुरंग किसी पहाड़ी के नीचे जाकर निकलती...तो इतने ही वर्ष फिर उस पहाड़ी को तोड़ने में लग

जाते। इसलिये मैं समझता हूं कि उन लोगों की यह कोशिश बेकार है। मुझे एक चांस नजर आया। मैंने बीनों से एक सौदा कर लिया और कैदखाने से निकलकर यहां आ गया। यहां रहकर मेरे बाहर निकलने का एक चांस हैं और अगर मैं बाहर निकल गया...तो मैं उन सबको आजाद करा सकता हूं। इसी में कैदियों की भलाई है...।"

रचना मुखर्जी कुछ देर उसको घूरती रही।

"मिस्टर मारकोस...!" फिर वह शुष्क लहजे में बोली—"मैं समझती हूं कि जो आदमी अपने साथियों के साथ गद्दारी कर सकता है...वह कोई अच्छा और नेक काम नहीं कर सकता। इसलिये मैं तुम्हारे ऊपर यकीन नहीं कर सकती...।"

"यानी तुम मुझे उस जहाज का पता नहीं बताओगी...?" मारकोस बोला।

"नहीं...।"

मारकोस कुछ देर होंठ चबाता रहा और उसे घूरता रहा।

"यानी तुम्हारा ख्याल ये है...।" फिर वो बोला—"कि यदि मैं बाहर चला गया...तो खामोश बैठ जाऊंगा? उन कैदियों को आजाद कराने की कोशिश नहीं करूंगा...?"

"यह मेरा सिर्फ ख्याल नहीं है मिस्टर मारकोस...बल्कि मुझे पूरा यकीन है कि तुम ऐसा ही करोगे...।"

"इसका भी एक हल है...।"

"क्या...?"

"तुम खुद मेरे साथ पनडुब्बी के उस एअरटाइट केबिन पर चल सकती हो। यदि हम बाहर निकल गये...तो तुम सरकार की मदद से बाकी कैदियों को आजाद करा सकती हो। मैं समझता हूं...कम-से-कम इस हालत में तुम्हें कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये...।"

बात समझ में आती थी।

मारकोस के उस प्रस्ताव में दम था।

एक क्षण के लिये रचना मुखर्जी के दिल में ख्याल पैदा हुआ कि वह तैयार हो जाये।

लेकिन शीघ्र ही वो ठिठकी।

उसने सोचा—नहीं...मारकोस क्रूर और धोखेबाज है। वो किसी भी हालत में यकीन करने के लायक नहीं। वह दुष्ट रास्ते में कोई ऐसा नया खेल खेल सकता था...जिसके बारे में वह सोच भी न पाती...।

"नहीं...।" वो काफी सोच-विचार कर बोली—"मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती...।"

"तो फिर मुझे जाने दो...।" मारकोस ने कहा—"मुझे केबिन का पता बता दो...।"

"नहीं...मैं यह भी नहीं कर सकती...।"

मारकोस कुछ क्षण उसको घूरता रहा।

उसकी आंखों में एकाएक सख्ती उभर आयी थी।

"क्या तुम जानती हो...।" वह एकाएक भेड़िये की तरह गुर्राता हुआ बोला—"कि अगर यह बिल्ली मर जाये...तो फिर यह बौने तुम्हारा क्या हश्र करेंगे...?"

रचना मुखर्जी की भृकुटि भी तन गयी।

"क्या तुम मुझे धमकी देने की कोशिश कर रहे हो...?" रचना मुखर्जी ने भी गुर्राकर कहा।

"नहीं...मैं तुम्हें धमकी देने की कोशिश नहीं कर रहा हूं—बल्कि तुम्हें समझा रहा हूं। मेरे रास्ते में जो आता है...मैं उसको मसलकर रख देता हूं।

□□□

□□□

रचना मुखर्जी को मारकोस की धमकी और उसके खतरे का पूरा अनुमान अपनी गुफा में आकर हुआ।

उसने सोचा—यदि सचमुच किसी मौके पर मारकोस ने बिल्ली की हत्या कर दी, तो यह बौने ईश्वर जाने उसका क्या हाल करेंगे।

इसके अलावा बिल्ली चूंकि कभी-कभी गुफा से बाहर भी चली जाती थी...इसलिये मारकोस को अपनी धमकी पूरी करने का अवसर भी आसानी से मिल सकता था।

फिर वो हर वक्त बिल्ली की रक्षा भी तो नहीं कर सकती

थी...इसके अलावा बिल्ली को न ही कहीं बांध कर रखा जा सकता था।

इसलिये अब रचना मुखर्जी के लिये बेइन्तहां जरूरी हो गया था कि किसी तरह मारकोस को रोका जाये...मारकोस से बिल्ली को बचाया जाये।

कई घण्टे वो पड़ी हुई सोचती रही कि मारकोस से बिल्ली को किस तरह सुरक्षित रखा जा सकता है? उसके सामने अब केवल दो ही हल थे।

या तो वह मारकोस को केबिन का पता बता दे...वह केबिन लेकर चला जायेगा और इस तरह जो खतरा मंडरा रहा था, वह टल जायेगा।

परन्तु!

रचना मुखर्जी ऐसा करना नहीं चाहती थी।

उसकी इच्छा थी—वह केबिन को अपने और कमाण्डर करण सक्सेना के लिये सुरक्षित रखे...।

इसके अलावा दूसरा हल ये था कि वह गराम को बता दे...मारकोस सुरंग से फरार होने की योजना बना रहा है और यह भी बता दे कि वह बिल्ली को मार डालना चाहता है...उनकी जीवित देवी की हत्या कर देना चाहता है।

सबसे बड़ी बात ये थी...गराम से वार्तालाप के बाद उसको यह भी अहसास हो गया था कि गराम मारकोस की मौजूदगी पसंद नहीं करता है।

बहुत सोच-विचार के बाद उसने यही फैसला किया कि वो गराम को सब कुछ बता देगी...।

अब रचना मुखर्जी कुछ घण्टे सोने का खतरा भी मोल नहीं ले सकती थी...क्योंकि सोते समय बिल्ली बाहर जा सकती थी।

इसलिये उसने उसी समय एक पहरेदार को वहां बुलाया।

"जी, देवी जी! वह आकर अपनी भाषा में ही अत्यन्त सम्मानपूर्वक बोला—"कैसे याद किया...?"

"गराम को बुलाकर लाओ...।"

"अभी...?"

"हां...अभी...।"

पहरेदार गराम को बुलाने चला गया।

तकरीबन आधा घण्टे बाद गराम आ गया।

रचना मुखर्जी ने उसे बेधड़क बताया–"मारकोस कितना खतरनाक आदमी था और वो क्या करना चाहता था...।"

गराम पहले खामोशी से सब कुछ सुनता रहा।

फिर बहुत गंभीर होकर बोला–"मुझे यही डर था कि वह शैतान आदमी जरूर कोई-न-कोई ऐसी ही खुराफात सोचेगा। बहरहाल तुम चिन्ता मत करो...मैं अभी बंदोबस्त करता हूं।"

"क्या करोगे...?"

"देखती जाओ...।"

गराम ने फौरन पहरेदारों को वहां बुलाया और उनसे कहा कि वे रचना मुखर्जी के सोते समय बिल्ली का ख्याल रखें तथा उसे इधर-उधर न जाने दें।

वह आदेश देकर गराम वहां से चला गया।

वो अब साफ-साफ चिन्तित दिखाई पड़ रहा था...रचना मुखर्जी की बात ने उसे झकझोर डाला था।

□□□

□□□

दूसरे दिन गराम पूजा से पहले रचना मुखर्जी के नजदीक मुंह लटकाये हुए आया।

रचना मुखर्जी समझ गयी...जरूर कोई गड़बड़ हुई है। शायद सुरंगों में फिर पानी आने लगा है।

"क्या बात है गराम...?" रचना मुखर्जी ने पूछा–"तुम क्यों परेशान हो...?"

"मारकोस गायब हो गया है...।" गराम ने जवाब दिया।

"गायब हो गया...?"

"हां! उसको रहने के लिये जो गुफा दी गयी थी...उसमें वो नहीं है। बल्कि किसी जगह भी नहीं।

"लेकिन वो इन्हीं सुरंगों में होगा...क्या तुमने उसको तलाश कराया...?"

"उसको तलाश किया जा रहा है। उसके बाद से हमें अपने चार आदमियों की लाशें मिल चुकी हैं...जिनकी निश्चय ही

मारकोस ने हत्या की है। दरअसल गलती तलाश करने वालों की थी। वह दो-दो मिलकर उसको सुरंग में तलाश कर रहे थे। मारकोस बहुत शक्तिशाली है...वह दो आदमियों की विना पत्थर के हत्या कर सकता है...।"

"फिर तुमने क्या किया...?"

"मैंने कह दिया है कि सब चार-चार मिलकर रहें। मैं जानता हूं...वह ज्यादा देर छिपा नहीं रह सकता। हम उसको जरूर तलाश कर लेंगे...।"

"और यदि वह मिल गया...तब तुम उसका क्या करोगे...?"

"उसने धोखा किया है...।" गराम चिल्ला उठा—"इसलिये हमारी संधि खत्म हो गयी...उसको फिर वापस कैदखाने में डाल दिया जायेगा...।"

गराम उसके बाद वापस अपनी जगह से एक झटके में उठ खड़ा हुआ।

"चलो...।" फिर उसने कहा—"पूजा का समय हो गया है...।" रचना मुखर्जी उठकर उसके साथ चल दी।

❑❑❑
❑❑❑

रचना मुखर्जी अब काफी हद तक संतुष्ट थी और उसे ऐसा लग रहा था...जैसे वह किसी बड़ी चिन्ता से मुक्त हो गयी हो।

इसलिये सोने के समय पर वह अपने बिस्तर पर लेटकर गहरी नींद सो गयी।

फिर उसे नहीं मालूम...वह कितनी देर सोती रही।

कब तक सोती रही।

तभी अचानक कोई अजीब-सी आवाज सुनकर एकाएक उसकी आंख भक्क से खुली।

उसने बेहद हैरानीपूर्वक इधर-उधर देखा और फिर उसकी आंखें दहशत से फैलती चली गयीं।

गुफा के दरवाजे में मारकोस खड़ा था।

वह जल्दी से उठकर बैठ गयी और सहमी हुई आवाज में बोली—"तुम...!"

मारकोस की आंखों में उस वक्त घृणा बरस रही थी।

बेहद घृणा!

उसने अपने कूल्हों पर हाथ रखकर बेहद हिंसक अंदाज में कहा—"हां, मैं...कुतिया! मुझे यही डर था कि तुम मेरा प्रोग्राम उन लोगों को बता दोगी...इसीलिये मैं गायब हो गया था...।"

रचना मुखर्जी हैरान थी कि पहरेदार कहां गये! उसने पहरेदारों को उनकी जबान में पुकारा।

मारकोस ने जोर से एक कहकहा लगाया।

खतरनाक कहकहा।

फिर उसने दरवाजे में पीछे की तरफ झुककर कोई चीज खींची।

जब वह चीज सामने आयी...तो रचना मुखर्जी ने देखा, वह एक पहरेदार की लाश थी।

पहरेदार की लाश!

भय से रचना मुखर्जी का सम्पूर्ण शरीर पसीने से तर-ब-तर हो उठा।

"लो, यह रहा तुम्हारा परहेदार...।" मारकोस ने व्यंग्यात्मक ढंग से कहा—"दो बाहर सुरंग में पड़े हैं। दो यहां दरवाजे में हैं। इन मूर्ख बौनों की हत्या करना कुछ मुश्किल नहीं था। मैंने सुरंग में खड़े होकर अपने आपको जरा उनको दिखा दिया। मुझे विश्वास था...उनमें से दो मेरे पीछे आयेंगे। वही हुआ। दो पहरेदार मेरे पीछ-पीछे सुरंग में आ गये। मैंने दोनों के सिर टकराकर उनकी हत्या कर दी। उसके बाद इन दरवाजों वाले पहरेदारों को खत्म करना कुछ कठिन न था...।"

उसी समय बिल्ली ने जोर से 'म्याऊं' किया।

म्याऊं!

"ओह देवी...!" मारकोस ने बिल्ली की तरफ देखकर कहा—""लाओ...मैं इस देवी को भी खत्म कर दूं...।"

यह कहकर मारकोस बड़े खतरनाक इरादों के साथ बिल्ली की तरफ बढ़ा।

"नहीं...।" रचना मुखर्जी चिल्ला उठी—"नहीं...उसे छूना भी मत...।"

रचना मुखर्जी ने एकदम जम्प लगाई और वह उछलकर मारकोस तथा बिल्ली के बीच में आ खड़ी हुई।

मारकोस ने एक झन्नाटेदार थप्पड़ अपनी पूरी शक्ति से रचना मुखर्जी के मुंह पर मारा।

रचना मुखर्जी चीखकर नीचे जा पड़ी।

लेकिन!

शीघ्र ही वो उछलकर वापस खड़ी हुई और उसने एक घूंसा मारकोस के पेट में जड़ा तथा एक लात घुमाकर उसके मुंह पर मारी।

तब मारकोस को अहसास हुआ...उसका मुकाबला भी किसी साधारण लड़की से नहीं था।

आखिर वो सी.आई.डी. एजेन्ट थी।

मारकोस के मुंह से चीख निकली और वह गिरते-गिरते बचा।

इस बीच बिल्ली ने शायद खतरा भांप लिया था...वह दौड़कर मारकोस की टांगों के बीच से निकलकर बाहर भाग खड़ी हुई।

बिल्ली के भागने से मारकोस का क्रोध बहुत बढ़ गया।

वह एकदम बुरी तरह रचना मुखर्जी के ऊपर झपट पड़ा। वो भी आखिर फौज में कर्नल था...रचना मुखर्जी से कहीं ज्यादा जबरदस्त लड़ाका था वो।

उसने रचना मुखर्जी के बाल अपनी मुट्ठी में कसकर जकड़ लिये।

"कुतिया...!" वह गुस्से से बुरी तरह बेकाबू होता हुआ बोला—"अब तू मुझे बतायेगी कि पनडुब्बी का वो एअरटाइट केबिन कहां है...?"

"मैं नहीं बताऊंगी...।" रचना मुखर्जी फुंफकारी।

वह घूमी तथा उसने एक और जबरदस्त लात मारकोस की पीठ पर जड़नी चाही।

लेकिन मारकोस सावधान था।

उसने न सिर्फ खुद को उसके हमले से बचाया बल्कि रचना मुखर्जी के दोनों हाथ पकड़कर पीठ की तरफ करके इस तरह

मरोड़े कि कष्ट के मारे रचना मुखर्जी के मुंह से पुनः चीख निकल पड़ी।

"बोल...नहीं बतायेगी...?" मारकोस वहशियाना अंदाज में दहाड़ा—"कि वो केबिन कहां है...?"

"नहीं...नहीं! मैं नहीं बताऊंगी...।"

रचना मुखर्जी ने अपने हाथ-पैर पीटे।

उसके शिकंजे से मुक्त होने की कोशिश की।

मगर!

मारकोस अथाह बलशाली था। फिर उसने उसे पकड़ा भी बहुत कसकर हुआ था।

"तेरा तो बाप भी बतायेगा...।" मारकोस उसे बुरी तरह झझोड़ता हुआ चिल्लाया—"अभी मेरे पास ऐसी-ऐसी तरकीबें हैं कि मुर्दा भी मुंह खोलने पर मजबूर हो जाये...।"

"बचाओ-बचाओ...।"

रचना मुखर्जी ने एकाएक जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया।

तुरन्त मारकोस ने उसके मुंह पर एक और झन्नाटेदार झापड़ रसीद किया।

"साली-कुतिया...अब तुझे मेरे पंजे से कोई नहीं बचा सकता...।"

रचना मुखर्जी ने हाथ-पैर पीटे।

एक घूंसा मारकोस के और जड़ा।

लेकिन मारकोस पर उस घूंसे का कुछ असर न हुआ। उल्टे उसने रचना मुखर्जी को इस तरह उठाकर अपने कंधे पर डाल लिया, जैसे वह कोई बच्चा हो या घास-फूस से भरी कोई बोरी हो।

फिर वह उसे लेकर तेजी से एक तरफ को चल दिया।

□□□

□□□

रचना मुखर्जी जानती थी कि वहां बहुत-सी सुरंगें और गुफायें ऐसी हैं...जिनको बौने बहुत कम इस्तेमाल करते हैं।

कुछ सुरंगें और गुफायें अंधेरी भी थीं।

बहुत अंधेरी!

उनके प्रकाश देने वाले ग्लोब या तो किसी कारण से खराब हो गये थे या फिर टूट गये थे।

मारकोस चूंकि पिछले कई दिन से सुरंगों में घूम रहा था—"इसलिये उसको पता था कि वहां कौन-सी सुरंगें ऐसी हैं, जहां बौने बहुत कम जाते हैं।

कई पेंच-दर-पेंच सुरंगों से गुजरने के बाद आखिर उसने एक गुफा में ले जाकर रचना मुखर्जी को मशरूम की घास के बिस्तर पर डाल दिया, और फिर उसके हाथ-पैर इतनी बुरी तरह कसकर बांध डाले...जो वह उन्हें टस-से-मस न कर सके।

रचना मुखर्जी ने बेबस पंछी की तरह इधर-उधर देखा। गुफा में खाने-पीने का बहुत-सा सामान था......पत्थर थे, पत्थरों के चाकू थे।

रचना मुखर्जी समझ गयी कि मारकोस ने उस गुफा को अपना हैडक्वार्टर बना रखा है।

रचना मुखर्जी के हाथ-पैर बहुत कसकर बांधने के बाद मारकोस ने फैनी का एक प्याला भरकर पिया और फिर आस्तीन से अपना मुंह साफ किया। फिर एक प्याला और भरा तथा उसके बाद रचना मुखर्जी के सामने बड़े उदण्ड अंदाज में खड़ा हो गया।

"बोल—"अब भी बताती है या नहीं कि वो केबिन कहां है...?" मारकोस जहरीले नाग की तरह फुंफकारा—"मुझे औरतों पर अत्याचार करना कभी अच्छा नहीं लगा...।"

रचना मुखर्जी ने बिस्तर पर पड़े-पड़े बहुत कठोर निगाहों से उसे देखा।

उस पल उसे एक-एक क्षण कमाण्डर करण सक्सेना की याद आ रही थी।

"यह तो तुम भूल ही जाओ मारकोस...।" रचना मुखर्जी दृढ़ लहजे में बोली—"कि मैं तुम्हें कभी उस केबिन का पता नहीं बताऊंगी...।"

"रबिश! यू फिल्दी स्काउन्ड्रल...।" मारकोस ने उसे गंदी-सी गाली बकी और फिर उसके हाथ पर अपना पैर रखकर जोर डाला।

कष्ट से रचना मुखर्जी की चीख निकल गयी।

"साली...मैं तेरे जिस्म की सारी हड्डियां तोड़ डालूंगा...सबकी सब...।" मारकोस ने गुर्राकर कहा।

"तुम मुझे जान से भी मार डालोगे...मैं तब भी नहीं बताऊंगी...।"

मारकोस ने फैनी का दूसरा प्याला एक ही सांस में खत्म करके एक तरफ को डालते हुए कहा—"बताना तो तुझे पड़ेगा। मैं बता चुका हूं...मैं मुर्दों की जबान भी खुलवा सकता हूं...।"

मारकोस फिर गुफा के एक कोने में गया।

रचना मुखर्जी ध्यान से उसकी एक-एक एक्टीविटी देखती रही।

वह सचमुच शैतान था।

खतरनाक शैतान!

वह जमीन पर बैठ गया और पत्थरों के ढेर में कुछ चुनने लगा।

फिर वह रचना मुखर्जी की तरफ पलटा...तो उसने देखा कि मारकोस के हाथ में सुई की तरह बारीक-बारीक घिसे हुए पत्थर के टुकड़े थे और कुछ मछलियों के सूखे कांटे थे...जो बिल्ली खाकर छोड़ देती थी और वह सूखकर सुइयों की तरह रह गये थे।

बिल्ली से बचे हुए टुकड़े उसके पहरेदार वहीं सुरंग में एक तरफ डाल देते थे।

मारकोस ने जेब से एक डोरी निकाली तथा उसके निकट बैठकर बोला—"आखिरी बार पूछता हूं...मुझे उस एअरटाइट केबिन का पता बताती है या नहीं...?"

"नहीं...।"

"आल राइट! ऐसा ही सही...।" मारकोस ने अपने 'ग्रांडियल' शरीर को इधर-उधर हिलाया।

रचना मुखर्जी नहीं जानती थी...वह दुष्ट अगले ही पल क्या करने जा रहा है।

उसका एक-एक कदम सस्पेंसफुल था।

रहस्यपूर्ण।

वह रचना मुखर्जी के नजदीक आकर बैठ गया और उसने मछली का एक बड़ा बारीक-सा कांटा लेकर पहले उसकी उंगली में जरा-सा चुभोया।

रचना मुखर्जी के दर्द हुआ।

मगर वह उस दर्द को पी गयी।

उसी क्षण मारकोस ने एक पत्थर उठाकर अपनी पूरी शक्ति से उसकी उंगली पर पटक मारा।

रचना मुखर्जी की अत्यन्त हृदयविदारक चीख निकल गयी।

मछली का वह बारीक-सा कांटा पूरे का पूरा उसकी उंगली में घुस गया था और उसका नाखून तोड़ता चला गया।

वह पीड़ा से छटपटाने लगी।

ऐसा दर्द, ऐसा कष्ट उसने अपने जीवन में पहले कभी नहीं सहा था।

उसे अपनी आंखों के सामने लाल धुंध छाती हुई नजर आने लगी।

यह उसकी सहनशक्ति की सीमा थी।

जबकि मारकोस हंसा।

बहुत बुलन्द अंदाज में कहकहा लगाकर हंसा।

उसके बाद उसने दूसरा कांटा उठाया और बेदह दरिंदगीपूर्ण अंदाज में कहा—"बोल...अब भी बताती है या नहीं...?"

फिर उसने कांटा रचना मुखर्जी की दूसरी उंगली पर रखा।

कष्ट की तीव्रता का अहसास करते ही रचना मुखर्जी चिल्लाई—"नहीं, नहीं! ठहरो, मैं बताती हूं...।"

मारकोस के होंठों पर एक विजय और शरारत से भरी मुस्कराहट दौड़ गयी।

"अब तुमने अक्ल की बात की...।" वह बोला।

"लेकिन मैं रास्ता नहीं समझा सकती...।" रचना मुखर्जी ने कहा—"खुद चलकर बता सकती हूं...।"

"तो फिर चलो...।"

मारकोस ने अब रचना मुखर्जी के पांव खोल दिये।

मगर हाथ सावधानी के तौर पर फिर भी नहीं खोले।

"लेकिन एक बात कान खोलकर सुन ले. जंगली

बिल्ली...।" मारकोस उसे चेतावनी देते हुए गुर्राया—"अगर तूने मुझे धोखा देने की कोशिश की...तो मैं खुद मरने से पहले तेरा गला घोंट दूंगा...।"

"मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाली हूं...।"

"इसी में तेरा हित है...।"

मगर वास्तविकता ये थी...रचना मुखर्जी के दिमाग में उस समय एक नया षड्यन्त्र जन्म ले रहा था।

खतरनाक किस्म का षड्यंत्र।

वह उस दरिंदे के सामने आसानी से पराजित होने वाली नहीं थी।

अपने पैर खुलते ही वो उठ खड़ी हुई और मारकोस के साथ चल दी।

□□□

□□□

"पहले मुझे उस सुरंग तक ले चलो...जिसमें मैं रहती हूं। वहां से मुझे रास्ता याद है...।" रचना मुखर्जी ने गुफा से निकलने के बाद अपना 'पहला पत्ता' फेंका।

मारकोस ठिठका।

उसकी आंखों में संदेह के ढेरसारे भाव उभर आये।

"क्या तुम यह समझ रही हो ब्लडी बास्टर्ड...!" मारकोस दांत पीसकर बोला—"कि वहां अब बौने आ चुके होंगे और वह तुम्हें बचा लेंगे...?"

"नहीं...मैं ऐसा कुछ नहीं सोच रही हूं...।" रचना मुखर्जी ने फौरन अपने 'दांव' को थोड़ा हल्का किया—"अगर तुम्हें मेरे ऊपर शक है...तो मुझे उस सुरंग के पहले सिरे तक ही ले चलो...।"

"ठीक है...चलो...।"

वह रचना मुखर्जी का बाजू पकड़े उसके साथ-साथ चलता रहा।

रचना मुखर्जी ने बड़ी बेचैनीपूर्वक अपने हाथों को हिलाया।

मगर!

वो टस-से-मस न हुए।

मारकोस ने उन्हें खूब कसकर बांधा था।

काश...उस समय उसके हाथ भी खुले हुए होते...। रचना मुखर्जी ने गहरी सांस लेकर सोचा।

उस पल उसे रह-रहकर कमाण्डर करण सक्सेना की याद आ रही थी।

लगभग आधा घण्टे तक चलने के बाद वह उस सुरंग के पहले सिरे पर आ गये।

दुश्मन को किस तरह फांसा जाता है...यह रचना मुखर्जी ने कमाण्डर करण सक्सेना से बहुत अच्छी तरह सीख लिया था।

"अब किस तरफ चलें...?" मारकोस बोला।

रचना मुखर्जी तुरन्त वहां से बायीं तरफ वाली सुरंग में घूम गयी।

दो-तीन सुरंगों से गुजरकर वह जैसे ही एक चौथी सुरंग में दाखिल हुए...तो अचानक कहीं से बहुत-से लोगों के बोलने की आवाजें आने लगीं।

मारकोस चलते-चलते रुक गया।

उसके दिमाग में खतरे की एक साथ असंख्य घंटियां बज उठीं।

"साली...बद्‌जात...।" वह एकाएक रचना मुखर्जी की गर्दन पर हाथ रखकर चिल्लाया—"आखिर तूने मुझे धोखा दिया। तू मुझे ऐसी जगह ले जा रही है...जहां वह बौने मौजूद हैं। मैं तुझे खत्म कर डालूंगा...।"

यह कहकर उसने रचना मुखर्जी का गला दबाया।

"नहीं...इ...इ...।"

भीषण कष्ट के कारण रचना मुखर्जी के हलक से एक बार फिर भयावह चीख निकली।

मारकोस ने जल्दी से उसके मुंह पर हाथ रखकर दो-तीन घूंसे उसके पेट में मारे।

रचना मुखर्जी बुरी तरह छटपटाई और बेहोश हो गयी।

मारकोस उसका शरीर फिर कंधे पर डालकर एक अंधेरी सुरंग की तरफ भाग खड़ा हुआ।

□□□
□□□

उधर!

नीचे कैदखाने वाली तह पर पानी के कारण हंगामे जैसा माहौल बना हुआ था।

पानी बड़ी तेजी के साथ ऊंचा होता जा रहा था। कैदियों में अफरा-तफरी मच गयी। चारों तफर से चीखों की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं।

जो कैदी अचानक पानी बढ़ने के समय दूसरी गुफाओं और सुरंगों में थे...उनमें से बहुत-से डूबकर मर चुके थे।

कई जो तैरना नहीं जानते थे...वह दहशत के कारण मारे गये।

कमाण्डर करण सक्सेना ने हालांकि उन्हें समझाने की काफी कोशिश की...परन्तु ऐसे हंगामे के समय और इतने सारे लोगों को एक साथ समझाना कुछ आसान काम न था।

वहां तो भगदड़ जैसा आलम था।

जिस आदमी का जिधर को मुंह उठा...वह पानी से बचने के लिये उसी तरफ को भागा।

उस हंगामे में ज्यादातर कैदियों की मौत हो गयी।

पानी के कारण वहां कयामत बरपा हो गयी थी।

इस बीच कमाण्डर करण सक्सेना, प्रोफेसर भट्ट, चार्ल्स, सुधाकर, वरीस गड़बड़ और दूसरे काफी सारे लोगों ने मिलकर कई बेड़े बना लिये थे और अब वह सब उन बेड़ों पर सवार थे।

जो बेड़ों पर सवार थे...वह बच गये।

उन बचे हुए आदमियों की संख्या भी बहुत थी।

उधर फिर एक क्षण ऐसा भी आया...जब पानी के बढ़ने की रफ्तार धीरे-धीरे कम होने लगी। इसका मतलब था...ग्रीन पानी का रास्ता बंद कर रहे थे।

लेकिन पानी फिर भी धीरे-धीरे बढ़ता रहा।

उन बेड़ों पर तैरते हुए उन सबको सत्रह-अट्ठारह घण्टे गुजर गये।

उनके पास पीने का पानी भी नहीं था।

अब तो केवल एक ही उम्मीद थी कि पानी चढ़कर बौनों की परत तक पहुंच जाये...तो शायद वह बाहर निकल सकें।

आखिर लगभग तीस घण्टों की जानलेवा प्रतीक्षा के बाद पानी इतना ऊंचा हो गया कि उनको बौनों की एक सुरंग का रास्ता नजर आने लगा।

इससे उनका मनोबल बहुत बढ़ा।

कुछ घण्टों के बाद सुरंग का दहाना सिर्फ इतना ऊंचा रह गया कि कमाण्डर करण सक्सेना छलांग मारकर दहाने का किनारा पकड़कर लटक गया और फिर पांव दीवार की खुरदुरी सतह पर टिकाकर ऊपर चढ़ गया।

इसके बाद एक-एक करके सब ऊपर आ गये।

"चलो...।" बरीस गड़बड़ गहरी सांस लेकर बोला—"जान तो बची...।"

"अब हम क्या करेंगे...?" मुराकर बोला।

"एक तरीका है...।" करण सक्सेना बोला।

"क्या...?"

"हमें अब दस-पंद्रह बौनों को पकड़कर उन्हें मजबूर करना चाहिये कि वह हमें बाहर का रास्ता दिखा दें...।"

"उससे क्या होगा? बाहर का रास्ता मालूम चलना अलग बात है और सचमुच यहां से बाहर निकल जाना अलग बात है...।"

"तुम्हारी बात अपनी जगह बिल्कुल ठीक है...।" करण सक्सेना बोला—"लेकिन मुझे विश्वास है कि जिस जगह मैं अपनी पनडुब्बी का एअरटाइट केबिन छोड़कर आया हूं...वह नदी थी, क्योंकि पानी लगातार एक तरफ को बह रहा था। अगर हम यह बेड़े खोलकर साथ ले लें और उस नदी में ये बेड़े डालकर धारा के साथ-साथ चलें...तो शायद हम कहीं बाहर निकल सकें।

इस सुझाव पर थोड़ी देर बहस हुई और फिर कमाण्डर करण सक्सेना का वह सुझाव भी सबने सहर्ष कबूल कर लिया।

फिर सबने मिलकर बेड़े की रस्सियां खोलकर अलग-अलग कर लीं तथा उन्हें कंधों पर लेकर चल दिये।

"क्या आप अपना वो एअरटाइट केबिन तलाश कर लोगे कमाण्डर...?" चार्ल्स ने पूछा।

"कोशिश करने पर जरूर मिल जायेगा। अगर हम किसी तरह इस तह वाले मशरूम के जंगल तक पहुंच जायें...तो हम उस एअरटाइट केबिन तक भी पहुंच जायेंगे. ..।"

फिर वह सब उस केबिन की तलाश में निकल पड़े।

□□□

□□□

अभी वह केबिन की तलाश में सुरंगों में ही घूमते फिर रहे थे कि एकाएक उनको किसी लड़की की चीख सुनाई पड़ी।

चीख बहुत भयावह थी।

और कष्टदायक भी।

"यह कैसी चीख थी...?" चार्ल्स ने पूछा।

जबकि कमाण्डर करण सक्सेना के अंदर हलचल-सी मच गयी...उसने वो चीख पहचान ली थी।

"यह रचना मुखर्जी की चीख थी...।" वह एकाएक आंदोलित होकर बोला—"रचना मुखर्जी खतरे में है। उसको तलाश करो...।"

यह कहकर कमाण्डर करण सक्सेना आवाज की तरफ दौड़ पड़ा।

दूसरे लोग भी दौड़ने लगे।

आगे कुछ फ़ासले पर जाकर वह सुरंग दो भागों में बंट गयी थी।

"आधे उधर जाओ...।" करण सक्सेना ने तुरन्त चिल्लाकर कहा—"और आधे इधर...।"

वह सब दो भागों में बंट गये।

कमाण्डर करण सक्सेना, प्रोफेसर भट्ट और सुधाकर दायीं वाली सुरंग की तरफ दौड़ पड़े। जबकि दूसरा दस्ता चार्ल्स और बरीस गड़बड़ के अण्डर में बायीं वाली सुरंग की तरफ झपटा।

थोड़ी दूर पहुंचते ही प्रोफेसर भट्ट ने देखा कि एक आदमी कंधे पर कुछ लिये भाग रहा है।

"कमाण्डर...।" प्रोफेसर भट्ट चिल्लाये—"अरे यह तो मारकोस है। गद्दार! पकड़ो इसे...।"

मारकोस ने भी प्रोफेसर भट्ट की आवाज पहचान ली। वह

रचना मुखर्जी को एक तरफ फेंककर भागा।

लेकिन वह ज्यादा दूर न जा सका। कमाण्डर करण सक्सेना ने झपटकर उसे दबोच लिया। तुरन्त बाकी,तमाम कैदी भी उसे चिपट गये।

मारकोस की चीखें निकल गयीं।

वीभत्स चीखें।

जिसका जहां दिल चाहा...उसने उसी जगह मारकोस के दबकर मारा।

सब बहुत जुनून में थे।

गुस्से में।

मारकोस के प्रति उनका नफरत का गुब्बार फट पड़ा था।

मारकोस ने हालांकि उनसे बचकर भागने की बहुत कोशिश की...मगर बच न सका। वह आखिर दर्जनों लोगों की भीड़ से घिरा था।

वह चीखता रहा।

मुश्किल से पांच मिनट के अंदर ही वह एक लाश में परिवर्तित हो गया।

तब करण सक्सेना की निगाह रचना मुखर्जी पर पड़ी...वो अभी भी बेहोश थी।

वह अब रचना मुखर्जी को होश में लाने की कोशिश करने लगा।

शीघ्र ही रचना मुखर्जी को होश आ गया।

आंखें खुलते ही जब उसने कमाण्डर करण सक्सेना को अपने सामने देखा...तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

"ओह कमाण्डर...!" वह एकाएक करण सक्सेना से कसकर चिपट गयी—"मैं तो समझ रही थी...शायद ही अब कभी आपसे मुलाकात हो पायेगी...।"

"जहां विश्वास हो...वहां ईश्वर भी साथ देता है माई डियर...!"

"लेकिन मारकोस कहां है...?"

"वह सामने देखो...उसका अंत हो चुका है...।"

रचना मुखर्जी की निगाह जैसे ही मारकोस के शव पर

पड़ी...उसके चेहरे पर राहत के चिन्ह उभर आये।

मारकोस को उन लोगों ने इतनी बुरी तरह मारा कि उसका चेहरा भी अब नहीं पहचाना जा रहा था।

उस दुष्ट का ऐसा ही अंजाम होना था।

तभी चार्ल्स, बरीस गड़बड़ तथा बाकी लोग भी वहां पहुंच गये।

इतने लोगों को एक साथ देखकर रचना मुखर्जी की हिम्मत और बढ़ी।

"अब क्या करना है...?" रचना मुखर्जी ने पूछा...?"

"मैं दरअसल उस एअरटाइट केबिन को ढूंढ रहा हूं...जिसमें हम आये थे। लेकिन वो मुझे नहीं मिल रहा है...।"

"उस केबिन तक पहुंचना क्या मुश्किल है कमाण्डर! मैं अभी आपको वहां लेकर चलती हूं...।"

"यानी तुम उस केबिन तक पहुंचने का रास्ता जानती हो...?"

"बिल्कुल...।"

कमाण्डर करण सक्सेना की आंखों में विलक्षण चमक कौंध उठी।

फिर तो उसकी सारी समस्या ही हल हो गयी थी।

❑❑❑

❑❑❑

उसके बाद रचना मुखर्जी की मदद से वह सब उस एअरटाइट केबिन के नजदीक पहुंचे।

रास्ते में उन्हें दस-बारह बौने मिले...प्रोफेसर भट्ट के कहने पर उन्होंने उन्हें भी अपने साथ पकड़ लिया।

फिर केबिन के नजदीक पहुंचकर रस्सियों से दोबारा मशरूम के तने बांधकर बेड़े बनाये गये और उसके बाद बेड़े पानी में डाल दिये गये।

वह सब वहां से चलने के लिये तैयार थे।

कमाण्डर करण सक्सेना, रचना मुखर्जी, प्रोफेसर भट्ट, चार्ल्स, सुधाकर, बरीस गड़बड़ वह सब केबिन में बैठे।

जो बौने उन्होंने पकड़े थे...उनको भी साथ ले लिया

गया...ताकि अगर वह वापस बाहर के संसार में पहुंच जायें, तो उन बौनों को सबूत के तौर पर पेश कर सकें।

बाकी तमाम लोग पानी पर मौजूद बेड़ों पर सवार हो गये।

"चलें कमाण्डर...?" बेड़े पर बैठे एक आदमी ने थोड़ा चिल्लाकर पूछा।

"चलो...।" करण सक्सेना बोला।

काफिला वहां से चल पड़ा।

वह सब अब बहते पानी के सहारे-सहारे राम-भरोसे चल दिये।

लगभग बारह घण्टे तक वह उन्हीं सुरंगनुमा रास्तों में बहते रहे।

पानी की रफ्तार बहुत सुस्त थी...इसलिये वे बहुत धीरे-धीरे बह रहे थे।

कोई नहीं जानता था...वह कभी अपनी मंजिल पर पहुंच भी पायेंगे या नहीं...?"

कभी उन खतरनाक सुरंगों से बाहर निकलेंगे भी या नहीं...?"

□□□
□□□

वह बहते रहे।

बहते रहे।

सबके चेहरे पर सस्पैंस की रेखायें खिंची हुई थीं।

तभी चौदह-पंद्रह घण्टे बाद अचानक ऐसा महसूस हुआ जैसे वहां प्रलय आ गयी हो।

इधर-उधर चारों तरफ धमाके-से होने लगे।

सुरंगें बैठने लगीं।

उसी क्षण पानी का रेला इतनी जोर से आया कि सब कुछ गुडमुड़ होकर रह गया। वो पानी का रेला इतना जबरदस्त था कि पनडुब्बी का केबिन और बेड़े तैरने की बजाय उलट-पुलट होने लगे।

वहां भी चीख-पुकार मच गयी।

हंगामे जैसा माहौल बन गया।

सुरंगें लगातार गड़गड़ाती हुई नीचे बैठ रही थीं...जैसे सब कुछ ध्वस्त हो रहा हो।

सब कुछ!

आधे घण्टे तक यही भयानक स्थिति रही कि वह केबिन में कभी फर्श पर होते, तो कभी छत पर, सब बुरी तरह घायल हो गये थे और सबका बुरा हाल था। रचना मुखर्जी चूंकि पहले से घायल थी...इसलिये कमाण्डर करण सक्सेना ने सावधानीवश उसको कुर्सी पर बिठाकर बेल्ट से कस दिया था।

बेड़ों पर लोग तनों से बुरी तरह चिपटे हुए थे। उस हालत में कभी वह पानी के भीतर चले जाते थे और कभी ऊपर।

"सब हिम्मत के साथ अपनी-अपनी जगह डटे रहो...।" करण सक्सेना लगातार चिल्ला रहा था—"हिम्मत के साथ! लगता है यहां बड़ी तादाद में पानी घुस आया है और अब यहां की दुनिया पूरी तरह गरक हो रही है...सब कुछ नष्ट हो रहा है...।"

लगभग आधा घण्टे तक वो हंगामा होता रहा।

चीखें गूंजती रहीं।

फिर उस जबरदस्त तूफानी रेले के बाद पनडुब्बी का केबिन अचानक पानी की तह से यूं ऊपर उछला, जैसे किसी ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उसे ऊपर की तरफ उछाल दिया हो...सब बड़े भयानक अंदाज में चिल्लाये।

वह पानी का सबसे जोरदार रेला था।

लेकिन उस एक ही झटके में वो केबिन तह से उछलकर सतह पर आ गया और एकदम सीधा होकर तैरने लगा।

बेड़ों के तनों से अभी भी लोग छिपकली की तरह चिपके थे।

कुछ देर के बाद जब सबके होश-हवास ठिकाने हुए. तो उन्होंने इधर-उधर देखा।

जो केबिन में थे...उन्होंने पोर्ट होल से बाहर झांककर देखा।

"हुर्रा...!" सबसे पहले वरीस गड़बड़ ने खुशी से हवा में उछलकर जोरदार नारा मारा—"हम बाहर आ गये...हम अपने

संसार में आ गये...।"

बाहर चारों तरफ पानी था और दूर फासले पर पहाड़ियां नजर आ रही थीं।

कमाण्डर करण सक्सेना ने दौड़कर दरवाजा खोल दिया और वह सब भाग-भागकर केबिन की छत पर पहुंच गये।

उन्होंने देखा कि वह अब हिन्द महासागर में तैर रहे थे।

उनके साथ दस बेड़े चले थे...लेकिन उनमें से सिर्फ छः ही अब कुछ फासले पर तैर रहे थे और उनमें आदमी अभी भी चिपटे हुए थे।

हिन्द महासागर में उस समय सैकड़ों लाशें तैर रही थीं और वह सब लाशें बौनों की थीं।

गगम की लाश भी उनमें शामिल थी।

"आखिर बेचारों की जाति हमेशा-हमेशा के लिये खत्म हो गयी...।" चार्ल्स ने गहरी सांस लेकर कहा।

"हां...मालूम होता है, आखिरी बार में जमीन की परत कई जगह से टूट गयी थी। इसीलिये पानी इतनी शक्ति के साथ भीतर घुसा था...।" कमाण्डर करण सक्सेना अफसोसनाक लहजे में बोला—"उसी जबरदस्त रेले से ही हम बाहर निकले और उसी रेले से बौनों का भूमिगत नगर नष्ट हुआ। अब वह सब मुर्दा हैं...जिनमें से कुछ भीतर ही दब गये हैं और कुछ पानी के झटकेदार रेले के साथ बाहर आ गये हैं...।"

"यही हुआ है...।" रचना मुखर्जी ने भी गहरी सांस लेकर कहा—"शुक्र है...इतनी जबरदस्त तबाही के बावजूद हम सब जीवित हैं...।"

"सबसे बड़ी बात तो ये है...।" करण सक्सेना बोला—"कि पनडुब्बी के इसी एअरटाइट केबिन ने हमें मुसीबत में फंसाया और इसी केबिन की बदौलत हम इस मुसीबत से बाहर निकले...।"

"लेकिन एक बात समझ नहीं आयी कमाण्डर...!" सुधाकर बोला।

"क्या...?"

"हम समुद्र की तह के बिल्कुल नीचे थे...फिर हम सब

बाहर कैसे निकले...?"

"मेरा ख्याल है...जब हम भंवर में गिरे थे...।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला—"तो जमीन की परत टूटने पर तह में जो छेद हो गया था...हम उस तह में गिरते चले गये थे और सुरंगों में भरने वाले पानी के साथ-साथ बहते हुए अंदर चले गये। लेकिन उन बेड़ों को ऐसी ही किसी तह के छेद से बाहर समुद्र में धकेल दिया...जिसके कारण अब हम समुद्र की सतह पर आ गये...।"

"इसका मतलब तो ये है कमाण्डर...उस जबरदस्त प्रलय का आना हमारे लिये फायदेमंद रहा...।"

"बिल्कुल...अगर वह प्रलय न आयी होती...।" करण सक्सेना बोला—"तो शायद ही हम कभी उस जगह से बाहर निकले होते...।"

"चलो शुक्र है...हम सात तालों से भी ज्यादा खतरनाक उस कैदखाने से बाहर तो निकले...।"

"फिर भी मुझे उन बौनों की मौत का बहुत अफसोस है...।" प्रोफेसर भट्ट बोले—"वह स्वभाव से हत्यारे नहीं थे...वह सिर्फ अपनी जाति का रहस्य सुरक्षित रखने के लिये हम लोगों को कैद करके रखे हुए थे...।"

तभी उन्हें महासागर के ऊपर कुछ हेलीकॉप्टर मंडराते दिखाई पड़े।

वह वायु सेना के हेलीकॉप्टर थे...जो कमाण्डर करण सक्सेना और रचना मुखर्जी को बड़ी सरगर्मी के साथ ढूंढते फिर रहे थे।

उसके बाद उनकी दृष्टि कोस्टल गार्ड्स की काफी सारी बोटों पर भी पड़ी...वह भी कमाण्डर को ही ढूंढ रहे थे।

जल्द ही उन सभी ने एक-दूसरे को देख लिया और उनके बीच बेपनाह खुशी की लहर दौड़ गयी।

करण सक्सेना और रचना मुखर्जी जब चीफ गंगाधर महन्त से जाकर मिले...तो उन्होंने बहुत भाव-विभोर होकर दोनों को अपने सीने से चिपटा लिया।

उनकी आंखों में आंसू छलछला आये।

"ओह करण...तुमने तो इस मिशन के दौरान मेरी जान ही निकाल दी थी। मुझे लग रहा था...मैंने इस बार इस राष्ट्र के सबसे महान् सपूत को खो दिया है...।"

"जब तक लाखों-करोड़ों हिन्दुस्तानियों की दुआयें मेरे साथ हैं चीफ...!" करण सक्सेना ने भी बेहद भावुक होकर कहा—"तब तक मुझे कुछ नहीं हो सकता...कुछ नहीं...।"

"रियली...आई'म प्राउड ऑफ यू माई सन! दैट वाज वैरी ब्रेव ऑफ यू...।"

अगले दिन के तमाम समाचार-पत्र कमाण्डर करण सक्सेना के उस नये सनसनीख़ेज कारनामे से रंग पड़े थे।

जहां प्रोफेसर भट्ट के वापस आने की खबर उन समाचार-पत्रों में बड़ी प्रमुखता के साथ छपी हुई थी...वहीं समुद्र की तह के नीचे की उस विहंगमकारी दुनिया का वर्णन भी उनमें बहुत विस्तार के साथ छपा था।

कमाण्डर करण सक्सेना...जिसने एक बार फिर साबित कर दिखाया था कि मिशन चाहे कितना ही जटिल क्यों न हो, वो हिम्मत नहीं हारता।

समाप्त

रवि पॉकेट बुक्स प्रस्तुत करते हैं

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ जासूसी लेखक

अमित खान का

कमाण्डर करण सक्सेना

सीरीज का बेहद तेजरफ्तार उपन्यास

मेरे हाथ मेरे हथियार

रवि पॉकेट बुक्स

रवि पॉकेट बुक्स प्रस्तुत करते हैं

बहुचर्चित उपन्यासकार

अनिल मोहन

का

देवराज चौहान सीरीज़ का

दौलत के खिलाड़ी

रवि पॉकेट बुक्स प्रस्तुत करते हैं

करिश्मासाज लेखक

का

हॉरर सीरीज़ का

नया उपन्यास

कोरा कफ़न

रवि पॉकेट बुक्स

के इसी सैट में प्रकाशित

- हिन्दुस्तान टाइम्स : अमित खान हिन्दी पल्प फिक्शन का बेहद मशहूर और सबसे युवा चेहरा है।
- द फ्री प्रेस जर्नल : अमित खान-वह नाम जो लेखन की दुनिया का अद्भुत व्यक्तित्व है।
- फेमिना : हिन्दी साहित्य के सबसे युवा लेखक, जिनकी निगाह लेखन के इस बदलते युग में इंटरनेट व्यवसाय पर भी है।
- दैनिक जागरण : अमित खान—वह लेखक, जिन्होंने अपनी जिद और शर्तों पर जिंदगी जी।
- दिव्य भास्कर : चेतन भगत वर्सिस अमित खान।

सम्मान

- "विश्व हिन्दी अकादमी" मुम्बई द्वारा "हिन्दी सेवा सम्मान" से अलंकृत।
- 'नासिक इण्टरनेशनल फिल्म फेस्टीवल' में 'सर्वश्रेष्ठ कथा-पटकथा, लेखक' अवार्ड से सम्मानित।

₹ 80.00

ISBN 81-7789-947-1

E-mail : a2zcomputerbooks@yahoo.co.in

A.H.W. RAVI SERIES